श्री।

चिकित्सातत्त्व।

(होमियोपैथिक मतानुयायी)

स्वर्गवासी डाक्टर जगदीशचन्द्र लाहिड़ी प्रणीत।

वङ्गभाषाके तृतीय संस्करणका हिन्दी अनुवाद।

प्रथम सन्स्करण।

लाहिडी कम्पनीके मथुरा शाखा से प्रकाशित

मूल्य २॥)

श्रीगणेशचन्द्र भट्टाचार्य द्वारा देवकीनन्दन प्रेस वृन्दावनमें मुद्रित।

शुद्धिपत्र ।

३८६ पृष्ठा ६ पंक्तिमें "सप्तदश" स्थानमें अष्टा-दश" होगा ।

४४१ पृष्ठा ५ पंक्तिमें "अष्टादश" स्थानमें "ऊनविंश" होगा ।



भूमिका ।

गृहचिकित्सा पुस्तक में प्रस्तावित हमारा दूसरा ग्रन्थ "चिकित्सा तत्त्व" आज प्रकाशित होगया। इस के छापने के आरम्भ करने से हमारे ग्राहक लोग जल्दी छपजाने के लिये अत्यन्त आग्रह करतेथे परन्तु अनेक तरह के विघ्न और विपत्तियों से समयक विलम्ब हुआ। आशा है कि हमारी इस त्रुटिको कि जिसे हमने अपनी इच्छा से नहीं की, ग्राहक लोग क्षमा करेंगे।

गृहचिकित्सा पुस्तक विद्यार्थी और गृहस्थी लोगों के लिये लिखी गई है, इस से उसमें सब रोगों की विस्तृत चिकित्सा लिखना असम्भव था, परन्तु इस पुस्तक की सहायतासे होमियोपैथिक चिकित्सा में कुछ व्युत्पत्ति होसक्ती है, उस समय सब रोगों की चिकित्सा करने के किसी बड़े ग्रन्थ की अपेक्षा अनुभव होती है, उसी अनुभव के पूर्ण करने के लिये यह "चिकित्सा तत्त्व" छापा और प्रकाशित किया गया। चिकित्सा विद्या केवल धन कमाने की ही विद्या नहीं है परन्तु हरेक गृहस्थ को थोडी बहुत इस विद्या का जानना और उस के अनुसार कुछ चिकित्सा अपने कुटुम्ब की करना आवश्यक है। होमियोपैथिक चिकित्सा की रीति जैसी सहज है तैसी उपकारी है। क्या तुरत के जन्मे बालक ? क्या गर्भवती स्त्री ? यह सभी होमियोपैथिक औषध निर्भय सेवन करसक्ते हैं। इस पुस्तक के पढने से अंग्रेजी न जानने वाले चिकित्सक और गृहस्थ सभी होमियोपैथिक चिकित्सा में कृतकार्य हो

सके हैं। इस विषय में ग्रन्थकारने कुछ कसर नहीं रखी। अब पाठक लोगों से यह प्रार्थना है कि हमारी गृहचिकित्सा और विसूचिकाचिकित्सा इत्यादि पुस्तकों के समान यह पुस्तक भी उनका अभाव पूर्ण करसके तो हम लोग अपना श्रम और धनव्यय को सफल समझेंगे और आगे होमियोपेथिक की अन्यान्य पुस्तकों के प्रकाश करने में यत्न करेंगे।

विनीत

श्रीउपेन्द्र नाथ मल्लिक

कार्याध्यक्ष लाहिडी एण्ड कम्पनी

मथुरा ता०२०सितम्बर सन्१९०८। मथुरा शाखा औषधालय।



सूचीपत्र ।

प्रथम अध्याय ।

द्वितीय दूसरा अध्याय

स्वास्थ्य सम्बन्धि नियमावलि

तीसरा अध्याय

रोगी परीक्षा-

चौथा अध्याय

पंचम अध्याय

६ अध्याय

साधारण रोग

(क) रक्त विकार के रोग

सप्तम अध्याय

साधारण रोग समूह [ख] धाधुगतरोग समूह ।

अष्टम अध्याय

मानसिक रोग समूह

नवम अध्याय

स्नायु विधान के रोग

दशम अध्याय

चक्षु रोग समूह (आखों की बीमारी)

एकादश अध्याय

कर्ण रोग समूह

द्वादश अध्याय

नासा रोग समूह

त्रयोदश अध्याय

हृद रोग समूह

चतुर्दश अध्याय

श्वास यन्त्र सम्बन्धीय पीड़ा

तेईसवां अध्याय

आभिघातिक चिकित्सा

सूचीपत्र समाप्त ।

॥*श्रीहरि *॥

होमियोपैथिक।

चिकित्सातत्त्व।

प्रथम अध्याय।

होमियोपैथी।

ईश्वर की सृष्टिमें जीवन ही प्रधान है, और स्वास्थ्य ही जीवन का परम सुख है। स्वास्थ्य बिगड़ जाने पर मनुष्य उसको फिर किस तरह प्राप्त करसक्ता है और आजीवन आरोग्य रहकर किस प्रकार सुख पूर्वक समय बितासकाहै यही इस पुस्तकका मूल उद्देश्य है। शरीरमें कोई रोग उपस्थित होनेपर जितनी जल्दी और आसानीसे होमियोपैथिक द्वारा आराम होताहै दूसरी किसी चिकित्सा प्रणालीसे नहीं होता। होमियोपैथिक चिकित्सामें प्रवृत्त होनेसे पहिले पाठकोंको यह जानना चाहिये कि होमियोपैथी क्या है? इसलिये होमियोपैथी सम्बन्धीय कुछ मोटी मोटी बातें नीचे लिखते हैं।

होमियोपैथीका इतिहास — सौ बरस से अधिक हुए होंगे सन् १७९० ईसवीमें महात्मा हैनीमैनने पहिले पहिल इस चिकित्सा प्रणालीको चलाया। हैनीमैनके जन्म ग्रहणसे पहिलेभी यूरोप तथा भारतवर्षके चिकित्सा शास्त्र आयुर्वेदादि में इसकी सत्यताकी कुछ झलक दीख पड़तीहै, किन्तु इसका विज्ञान सम्मत उच्चपदवी पर पहुंचाकर सर्वसाधा-

रणमें प्रचार करनेका यश महात्मा हैनीमेनको ही मिला । उसके उपरान्त इसका रिवाज क्रमश देश देशमें फैलने लगा और इसके चमत्कारको देखकर प्रत्येक मनुष्य की श्रद्धा इसपर होने लगी । आजदिन इग्लेडमें ३०० और अमेरीकामें १०००० ऐसे चिकित्सक हैं जिन्होंने विधिपूर्वक इसमें शिक्षा लाभ कीहै। हिंदुस्तानमें इसका प्रचार हुए लगभग ६० बरस हुए होंगे। इसी बीचमें बहुतसे सुशिक्षित और चतुर चिकित्सकोंने पुरानी प्रणालीको छोडकर इस नये मतका अवलंबन कियाहै।बगदेशमें होमियोपैथिक चिकित्साका आदर और साथही साथ चिकित्सकोंकी सख्याभी प्रतिदिन बढती ही जातीहै।

होमियोपैथी क्याहै

स्वस्थ देहमें जिस औषधिके प्रयोग करनेसे जो लक्षण उपस्थित होते है,रोगमें यदि वैसे ही लक्षण दीख पडते हों तो उसी औषधि को विधि पूर्वक प्रयोग करने को ही होमियोपैथिक कहते हैं। जो दवा रोगी को रोग से उत्पन्न हुए लक्षणों को दूर करसती है अच्छे भले शरीर में वही दवा देने से वैसे ही लक्षण उत्पन्न कर सकती है । औषधि और रोग का यह जो नित्य स्वाभाविक सम्बन्ध है इसी का नाम होमियोपैथी अथवा सदृश चिकित्सा विधान है । कुनैन से कप ज्वर आराम होता है क्योंकि कुनैन ही अच्छे भले आदमी को देने से कपज्वर कैसे लक्षण उत्पन्न कर देती है । आर्सेनिकसे हैजे को आराम होता है क्योंकि यदि स्वस्थ मनुष्य आर्सेनिक खाले ,तो उसकी हालत हैजे के रोगी के समान होजाती है ।

होमियोपैथी कोई कल्पित मत नहीं है। यह प्रत्यक्ष प्रमाण

होमियोपैथी प्रत्यक्ष प्रमाणपर प्रतिष्ठित है

के ऊपर प्रतिष्ठित है-अर्थात जब इसका प्रत्यक्ष प्रमाण दीखता है तो इसको काल्पनिक अथवा फ़र्ज़ी कैसे कहसके हैं। यत्न पूर्वक परीक्षा द्वारा इससे जो प्रत्यक्ष प्रमाण दीख पड़े हैं उनका खंडन किसी प्रकार नहीं होसक्ता, और वह वाक़फ़ियत (अभिज्ञतापर) निर्भर हैं। हैनीमनने इस चिकित्सा प्रणाली को जिस समय निकाला था उसी समय उसको प्रकाशित नहीं करदिया था वरन कई वरस से उसको गुप्त रक्खा था। अखीर में परीक्षा प्रमाण और पूरी अभिज्ञता (वाक़फ़ियत) से निश्चय होगया कि इस इलाज से आराम होता है तब उसने इस मतको प्रकाशित किया। इस मत की बुनियाद इतनी मज़बूत है कि जब तक इसे कोई प्रमाण देकर इसे भ्रमपूर्ण साबित न करदे तब तक यह चिकित्सा प्रणाली अचल और अटल रहेगी।

होमियोपैथी लाक्षणिक चिकित्सा है

होमियोपैथिक चिकित्सा लक्षणों के अनुसार होती है। लक्षणों का उपस्थित से रोगका प्रकाश, इसके सिवाय रोग और कोई जुदी चीज़ नहीं है। होमियोपैथिक दवाइयों के जो २ लक्षण लिखेउनके साथही रोगी की वर्तमान दशाके लक्षणों का मिलान करलेना चाहिये और फिर जिस दवा के लक्षण रोगी के लक्षणों से विशेष मिले उसी दवा को देना चाहिय। जिस औषधि के लक्षण रोगी के लक्षणों से विशेष मिलते हों वही दवा विशेष फायदा करती है। रोगके जितने लक्षण हैं यदि वह सब दूर होगये तो समझलो कि आराम होगया।

होमियोपैथिक मत जिसप्रकार प्रत्यक्ष प्रमाणोंके ऊपर प्रतिष्ठितहै उसी प्रकार इसकी चिकित्सा प्रणाली भी अत्यन्त

सरल है । एक समयमें एकही औषधी रोगी को दीजाती है अतएव विना मिली हुई एकही दवाकी क्रिया बहुत जल्द समझी जासकीहै । बहुत सी दवाइयां एक साथ मिलाकर सेवन करानेसे यह स्पष्ट नहीं मालूम होसका कि किस दवाका क्या फल हुआ । प्रत्येक औषधिकी एक एक विशेष क्रियाहै । बहुतसी दवाइयां एक साथ मिलानेसे एक दवाकी क्रियाको दूसरी दवा बाधा पहुंचाती है । केवल यही बात नहींहै यदि मिलीहुई दवा दी जावे तो फिर उसमें यह कैसे मालूम होसक्ताहै कि किस दवाका क्या असर हुआ और यदि फायदा न हो तो फिर यह निश्चय करना भी कठिन है कि इनमेंसे किस औषधि को निकालदेना चाहिये और किसे इनमें मिलाना चाहिये । इसीलिये होमियोपैथी चिकित्सामें एक समयमें एकही औ- षधि प्रयोग कीजातीहै ।

अमिश्र औषधि

होमियोपैथी कहने ही से अल्पमात्रा (कम मौताज) नहीं समझना चाहिये । इस विषयमें आम लोगों की बडी भूल देखी जातीहै । होमियोपैथीमें औषधिका रोगके साथ विशेष संबन्धहै,मात्राके साथ नहींहै औषधिकी मात्रा चाहे थोडीहो चाहे बहुत है होमियोपैथी में दवाओंका रोगके साथ मिलान करके देनेका तरीका है । यहा पर यहभी कहदेना होगा कि इसमें मात्रा जिसे कहतेहै उसका कुछ ठीक परिमाणही नहींहै । जिस परिमाणमें औषधि देनेसे रोगीको आरामहो वही उसकी मात्राहै । यदि थोडी मात्रामें ही औषधि देनेसे रोगीको आराम हो तो बहुत सी दवा देडालना बेफायदाहै और नुकसानभी करताहै । हेनी- मैनने जिस समय होमियोपैथी मत निकालाथा उस समय

अल्पमात्रा

यह साधारण मात्रामें दवाओंका प्रयोग करतेथे । अंतमें तजुरबेसे और परीक्षासे उनकी समझमें यह बात आई कि अधिक मात्रामें बार बार औषधि देनेकी अपेक्षा थोडी मात्रा में औषधि देनेसे अधिक फल होताहै। हैनीमैनके बाद जितने होमियोपैथिक चिकित्सक हुएहैं सब इस मतका समर्थन करते आतेहैं।

होमियोपैथिक मतसे दवा कम मात्रामें दीजातीहै इसमें कोई आश्चर्य अथवा अविश्वासका कारण नहींहै । होमियो-पैथीके नियमानुसार किसी रोगीको औषधि देकर देखो । उप-रान्त उससे जैसा फलहो उसीके अनुसार विश्वास करना। प्रत्यक्ष प्रमाण की अपेक्षा और कोई अच्छा प्रमाण नहींहै । रोगमें देहकी और देहके जुदे जुदे यन्त्रोंकी उत्तेजनशीलता बढजाती है। दवाकी मात्रा कम होने पर भी वह थोडीसी मात्रा रोग ग्रसित यन्त्रोंकी उत्तेजकता करसक्तीहै। साधारण तरह पर शरीरमें यदि किसी जगह दवावें तो उस स्थान पर इतना दर्द न होगा जितना कि फोडेके स्थानको दवानेसे होगा, कारण यहीहै कि उसस्थानकी उत्तेजनशीलता अधिक होजातीहै । औषधि थोडी मात्रामें देनेके हम तीन कारण बतलासकेहैं । [१] रोगकी उत्तेजनशीलता अथवा उत्तेजनप्रवणता जितनी बढजाती है उसमें जितनी औषधि कम दीजायेगी उतनाही अधिक फायदा होगा। [२] रोगमें शरीरका जो स्थान आक्रान्त होताहै शरीरके किसी स्थानपर औषधिकी क्रिया प्रकाशित होतीहै और कही नहीं होती । [३] एक समयमें एकही औषधि सेवन करानेसे उसकी क्रियामें किसी तरहकी रोक नहीं होती। जो लोग एकसाथ बहुतसी दवाएं मिलाकर अधिक मात्रामें व्यवहार करते

आरहेहैं वह लोग एक एक विनामिली हुई दवाकी थोडी मात्रा का गुण किसप्रकार समझ सकेहैं ।

होमियोपैथी तजुरबेके खिलाफ नहीं है

होमियोपैथी आश्चर्य नहींहै । और तजुरवेके खिलाफ भी नहींहै । कोई बात कल तक नहीं हुई थी और आज हुई इस लिये वह झूट है यह नहीं होसक्ता । मनुष्यका तजुरवा और ज्ञान रोज२ एकसा बढता जाता है । होमियोपैथिक औषधि से आराम होता है ऐसा विश्वास न होने का कारण यह है कि पहिले तो ऐसा इलाज थाही नहीं ।

किसी किसी देश में जाडेके दिनोंमें पानी जमजाता है । श्याम देश के राजाने जब यह बात सुनी तो हसकर उडा दी और कहने लगे कि ऐसा कभी होही नहीं सक्ता । डाक्टर वैद्य आदि चिकित्सक मण्डली में श्याम देश के राजाकी तरह पण्डित बहुत से है ।

विश्वास होमियोपैथी नहीं है

होमियोपैथिक दवाओं की कृतकार्यता, विश्वास अथवा कल्पना के ऊपर निर्भर नहीं है । माताकी गोदीका अज्ञान तथा अस्फुट वाक्य [जिसके मुहसे आवाजभी न निकलतीहो] बालक, बकताहुआ और ज्ञानशून्य रोगी जो कि रोगशय्यापर पडाहुआ हो, घास खाने वाले गाय बैल आदि, आकाशमे उडनेवाले पक्षी सब औषधि सेवन करनेसे रोगसे छुटकारा पासक्तेहैं । जिनको होमियोपैथी मतपर बिलकुल विश्वास नहीं होता उनकोभी इससे आराम होते देखा जाताहै।आराम होनेसे उनका अविश्वास हट जाताहै विश्वास उनको आराम नहीं करता बल्कि आराम विश्वास करा देताहै ।

विश्वास होमियोपैथी नहींहै । पथ्यभी होमियोपैथी नहींहै । क्या कभी पथ्यकी सुव्यवस्थासे हैजा वात,आमाशय,खासी इत्यादि ,

पथ्यहोमियो पैथीनहीं है

रोगीको आराम होताहै? यह सच बातहै कि होमियोपैथी पथ्य सम्बन्धी कुछ नियम पालन करनेका उपदेश अवश्य देती है स्वस्थता का व्यतिक्रम ही रोग है, स्वस्थता ही स्वाभाविक अवस्था। रोग अनियम और अत्याचार का विषमय फल है। इसलिये रोग के समय जितने स्वाभाविक भाव से चलसके उतनी ही आराम होने में शीघ्रता होती है। इसलिये रोगी को भारी आहार, अतर, गुलाब आदि सुगंधि द्रव्य चादनी रात में जङ्गल फिरना, लहसन, प्याज इलायची कपूर आदि गरम मसालों से बचना चाहिये। पथ्य साधारण तरह पर अकल से सोचने से ही दिया जाता है। किसी चिकित्सा शास्त्र की व्यवस्था अथवा उपदेश नहीं है।

होमियोपैथिक के विपक्ष वाले हमेशा या कहा करते हैं कि जाओ तुमारी शीशीकी सब दवा खाए डालते हैं, देखें क्या होता है इसके उत्तरमें हम इतना तो स्वीकार करते हैं

स्वास्थ्यदहमे हेमियोपैथिक औषधि।

कि तीसरा छटा अथवा २०० शक्ति की एक शीशी दवा खाने से तत्काल कोई तीव्र लक्षणन भी दीख सक्ता है किन्तु उस से कुछ न कुछ क्रिया होगी। यह बात विज्ञान सम्मत है और इस लिये स्वीकार करने लायक है, किन्तु यदि यह भी स्वीकार किया जावे कि उससे कुछ भी फल न हुआ तो यह बात भी होमियोपैथीके लिये तारीफ कीहै कि निन्दा की? होमियोपैथी का उद्देश्यही यह है कि दवा का असर रोगी के शरीरपरही हो। इससे कुछ नुकसान होने की संभावना नहीं रहती। रोगमें देहकी और देहके सब यन्त्रों की उत्तेजनशीलता बढजाती है, इसीलिये यह थोडीसी मात्राकी औषधि

उस समय अपनी पूरी क्रिया प्रकाशित करती है। अच्छे भले शरीर में इस उत्तेजनशीलता का गुण नहीं रहता। अतएव स्वस्थ देहपर अल्पमात्रा में औषधि की क्रिया प्रकाशित कराने के लिये अतिमात्रामें औषधि देनी होती है। इस बात को अच्छी तरह समझाने के लिये नीचे दो एक उदाहरण देते हैं।

चौंधा

बहुतसे आदमियों को आंख दुखने पर थोरीसी रोशनी का भी बहुत चौंधा लगता है किन्तु साधारण तरह पर हम लोग खूब तेज रोशनी में भी काम करते रहते हैं, कारण यह है कि रोग में आंखों की उत्तेजनशीलता बढजाती है। स्वस्थ रहने की अवस्था में चाहे जैसी रोशनी आखों के सामने आवे बुरी नहीं मालूम होती बरन आनन्द आता है, किन्तु बीमारी की हालत में जरासी रोशनी से भी चौंधा लगने लगता है। इसी प्रकार अच्छे भले शरीर में औषधि सेवन करने से कुछ फल नहीं होता, लेकिन रोगमें शरीर की उत्तेजनशीलता बढजाने के कारण वही अति तीव्र क्रिया प्रकाशित करती है।

बीज

नदीतीर बालूरेतमें अथवा पत्थर के ऊपर बीज डाल कर बहुत नाज की आशा करना जैसा है, स्वस्थ शरीर में अति क्षुद्र मात्रामें औषधि सेवन कराना भी वैसा ही है। जिस प्रकार बीज से अंकुर निकलने के लिये अच्छी और सरस मिट्टी चाहिये, इसी प्रकार अल्प मात्रामें औषधि सेवन कर उसकी क्रिया प्रकाश करने के लिये शरीर में उस औषधि के सब लक्षण चाहिये।

चुम्बक की लोहे की ओर जिस प्रकार आकर्षण शक्ति है औषधि की भी रोग की ओर उसी प्रकार आकर्षण

शक्ति है। चुम्बकके पास एक तांबेका या चांदीका टुकडा रखने से यही मालूम होता है कि इसमें आकर्षण शक्ति बिलकुल नहीं है, इसीप्रकार स्वस्थ शरीरमें ऐकोनाइट प्रयोग करनेसे तुमको यही मालूम होगा कि इसमें भी कुछ शक्ति नहीं है। चुम्बकसे लोहा स्पर्श कराकर और द्रुत नाडी हो उस समय ऐकोनाइट देकर यह मालूम करसकेहै कि इनकी क्रिया प्रकाश हुई या नहीं।

चुम्बक।

सुविधा।

होमियोपैथिक चिकित्सामें बहुतसे सुभीते है। इसके अनुसार इलाज करनेसे उतना भोगना नहीं पडता, कष्ट भी कम होताहै और दवा की कीमत भी कम लगती है। ऐमेरीका आदि स्थानों में इसबात की परीक्षा की गईहै कि एलोपैथिक की अपेक्षा होमियोपैथिक प्रणालीसे इलाज विशेष उपकार करता है। वहाके अस्पतालों की जाच करने से जानागया कि होमियोपैथिक चिकित्सा से अपेक्षाकृत अल्प कालमें रोगसे पीछा छूट जाता है। और एकबार आराम होनेपर फिर दुबारा नहीं भुगतना पडता। यह चिकित्सा इतनी सहज है कि इसमें दस्त कराना, उल्टीकराना, रक्त मोक्षण अर्थात् फस्तखोलना इत्यादि दुर्बल करनेवाले उपाय अवलम्बन नहीं कियेजाते। अतएव रोगीको आराम होनेमें देर नहीं लगती और आराम होनेपर बहुत दिनतक चारपाईमें नहीं पडारहता। चाहे बालक चाहे वृद्ध औषधि सेवन करने में भी कष्ट नहीं होता, और चाहे धनी हो चाहे दरिद्र इस चिकित्सा को करनेसे खर्च भी कम पडताहै। इसलिये असह्य नहीं होती। और और चिकित्साओं में एक रोगका कष्ट उस के ऊपर फिर बुरी और दुस्वाद दवाओं के खानेका कष्ट

और आराम होनेके बाद रोगका भोगतो कटजाता है परन्तु औषधि का भोग पीछे भी भोगना पडता है। होमियोपैथिक चिकित्सा में इसप्रकार का कुछ भोगना भी नहीं पडता और यन्त्रणा भी नहीं होती।

होमियोपैथी और हैजा।

नये और पुराने सब तरहके रोगमें होमियोपैथिक चिकित्सा और चिकित्साओं से अच्छीहै। हैजे रोगमें होमियोपैथिक इलाज जो चमत्कार दिखलाताहै सब संसार में उसकी कीर्ति फैल रहीहै। हैजे की तरह तरुण और सांघातिक रोग शायद दूसरा कोई नहीं है। इस भीषण हैजे की यदि कोई चिकित्सा है तो होमियोपैथी ही है।

प्रतिषेधक।

होमियोपैथिक दवाइयों में प्रतिषेधक और आरोग्यकारी दोनोंही प्रकारकी शक्ति है। बहुतसे रोग यथा सर्दी, नानाप्रकारके ज्वर, हैजा इत्यादि के सूत्रपात होतेही दवा देदीजावै तो अकुरित होतेही रोग बिलकुल जाता रहता है। अथवा हलका पडजाता है। जब चारों तरफ चेचक खसरा इत्यादि संक्रामक रोग फैल रहेहों उन दिनोंमें एक एक मात्रा होमियोपैथिक औषधि सेवन करने से इन सब रोगों से बचा रहसक्ता है।

होमियोपैथिका भविष्यति

जिसकी बुनियाद सच पर कायमहै उसीकी सर्वदा जीत होतीहै। सैकडों विपत्ति बचाय और विघ्नोंको बातकी बातमें हटा कर यह चिकित्सा प्रणाली क्रमश देशभरमें फुर्तीसे फैलरहीहै। बङ्गालमें तो प्राय एक छोटेसे छोटे गावमें भी एक होमियोपैथिक चिकित्सक

अवश्य मिलेगा। पहिले जो लोग होमियोपैथिके नामसे मुह फेरलेतेथे अब वही लोग होमियोपैथिक सिवाय दूसरा कोई इलाज नहीं करते। होमियोपैथी मत सच्चा और विज्ञान की पक्की बुनियाद पर कायम है। इसके विषयमें ऐसी आशा की जातीहै कि थोडेही दिनोंमें देशभरमें सबसे अच्छी चिकित्सा प्रणाली यही समझी जावेगी।

॥ दूसरा अध्याय ॥

स्वस्थ्यासम्बन्धी नियमावली।

रोग होनेपर औषधि द्वारा उसको निवारण करनेकी अपेक्षा रोग न होनेदेना ही अच्छाहै। रोग हमलोगोंके पाप और अत्याचार तथा शारीरिक नियम पालनकी भूल तथा अशक्तता का विषमय फलहै। सर्व साधारणको स्वास्थ्य रक्षाके नियम जानना और उनके अनुसार चलना उचित है। स्वास्थ्य रक्षाके नियम पालन करनेसे प्राय भीषण रोगोंके हाथसे रक्षा मिलतीहै। शरीर सबल और तेज युक्त होताहै तथा अकाल मृत्यु बहुधा नहीं होसकी। अतएव स्वस्थ्य रक्षाकी जो मोटी मोटी बातेंहैं इस अध्यायमें उन्ही सबको लिखतेहैं। पाश्चात्य सभ्यताके साथ साथ हमारे देशमें रोगोंकी संख्याभी बहुत बढगईहै। मनुष्योंकी आदिम और प्राकृतिक अवस्थामें इतने सब रोग नहीं थे। हम सभ्यताके अभिमानसे जितने फूले जाते हैं उतने ही तरह तरहके कठिन रोग हम लोगोंमें प्रवेशकर हमारे सुख सम्पद को छीनकर उसके

सभ्यता की वृद्धिके साथ स्वास्थ्य सम्बन्धीय कृत्रिम उपाय।

बदलेमें दुःख शोक और विषाद हमारे ऊपर लादते चले जातेहैं। अतएव जिस प्रकार हमारा जीवन सभ्यताके कारण अस्वाभाविक होता चलाजाता है उसी प्रकार कृत्रिम उपायों द्वारा हमको अपने शरीरोंकी सुख स्वच्छन्दताकी रक्षा करनी पडती है।

स्वास्थ्य रक्षाका पहिला उद्देश्य शरीर और मनका पूर्ण विकाश है। जातीय स्वास्थ्य साधारण शिक्षाके ऊपर पूर्ण निर्भर है। स्वास्थ्य रक्षासम्बन्धी पुस्तकें विद्यालयमें पढाई जावे और उनकी समालोचना समाचारपत्रों में भी होती रहे तो सब लोग अपनी स्वास्थ्य रक्षाकर सक्तेहैं। रोगका कारण जितना निवारित होगा शरीर में स्वास्थ्यताकी पवित्र ज्योति उतनीही प्रकाशित होगी।

जातीय स्वास्थ्य रक्षा के लिये कर्तव्य।

(१) आहार।

विना आहार जीवन नहीं रहसक्ता। बच्चा पैदा होतेही माताका दुग्ध पीने लगता है। क्रमशः बडा होताहै और तरह तरह की द्रव्य आहारकर सबल होता है और बढने लगता है और पूर्ण यौवनावस्था को प्राप्त होकर पराक्रमी होताहै। जब क्रमशः खुराक घटने लगती है, वृद्ध होजाता है और अन्त में जब आहार क्षमता घटजातीहै जीवन प्रदीप बुझजाता है। भोजनकी सामग्री पेटमें पहुंच कर जल्दी पचजावे और देह में उसकी शक्ति पहुंचे इसके दो उपाय है। पहला

आहार का प्रयोजन।

रंधन और चर्वण इत्यादि।

रधन (पकाना) दूसरा चर्वण (चबाना)
भोजन करनेका उद्देश है कि खाईहुई चीज पचकर रक्त-
के साथ मिलजावे और शरीरके दैनिक अपचय (दिन में
जो कुछ शरीर घटे अर्थात जितनी शक्ति कम हो) को पूर्ण
करै। जो भोजन नहीं पचता उससे शरीरका अपचय पूर्ण
होना तो दूररहे और तरह तरह की व्याधियां उपस्थित हो
जातीहैं। इसलिये इसपर पूरी दृष्टि रखनी चाहिये कि भोजन
बनाते समय कोई सामग्री कच्ची न रहजावे। बहुत परिमाण में
घी, गरम मसाला, प्याज इत्यादि प्रतिदिन भोजन करनेसे परि-
पाकशक्ति कम होजाती है और कभी कभी उदरामय भी
होजाता है। भोजन करते समय ग्रास को धीरे धीरे अच्छी तरह
चबाकर खाना चाहिये। खाने का पदार्थ यदि अच्छीतरह
चबाया न जावेगा तो वह मुहकी लारके साथ अच्छीतरह
न मिलसकेगा और ठीक तरह से हजम भी न होगा।

प्रधान खाद्य।

हम लोगों का प्रधान भोजन पदार्थ दाल रोटी और
चावल इत्यादि हैं। सुबह को दाल रोटी
चावल इत्यादि भोजन करना और रात
को पूरी पराठे खाना ठीक है। बहुतों की रायहै कि जिन
जगहोंमें मेलेरिया का अधिक जोर होता है वहां रातको
चावल खाना अनुचित है। चावल के अपेक्षा रोटी अधिक
पुष्टिकर होतीहै। मयदाकी रोटी की अपेक्षा आटे की
रोटी अच्छी होतीहै, क्योंकि? उसमें किंचित परिमाण में
भुसी मिलीरहने के कारण दस्त साफ लातीहै। रोगीको इस
प्रकार की देरसे पचने वाली रोटी नहीं देनी चाहिये।

दाल।

दाल, शाक, भाजी, तरकारी आदि हमारे
भोजनके प्रधान उपकरण (अर्थात् साथ

लगाकर खाने की चीजें) हैं। रोगीको उरदकी दाल नहीं देनी चाहिये। मूग मसूर चना और मटर की दाल अच्छी होतीहै। दाल हम लोगों के लिये पुष्टिकर खाद्य पदार्थ है क्यों कि? इसमें मास जातीय यवक्षारज पदार्थ और और चीजों की अपेक्षा अधिक है। उदर रोगकी हालत में दाल देना ठीक नहीं।

दोयम मास उत्तम खाना है। अलावह इसके मच्छी अच्छा पुष्टाई को खाना है। मच्छी का सोरवा [रसा] खून को बढाता है परन्तु रोगी के लिये छोटे छोटे [कोई] और [मागूर] मच्छी का सोरवा देना चाहिये, बहुत बडा छिलकादार अथवा चोटीदार और बडी झींगा मछली रोगीके वास्ते नहीं देना चाहिये क्योंकि यह बहुत देर में हजम होती है, । *

हम लोगों के देशमें आज कल मांस खाना दिन प्रति दिन बढती परहै। इसमें शक नहीं कि मांस एक उम्दा चीज है क्यों कि जल्द पचकर थोडी खुराक में ज्यादा ताकत पैदा करता है। मांस इतनी उम्दा खाने की चीज होनेपर भी दो कारणों से उस से जहरका फल पैदा होताहै। पहले जैसा तैसा मांस का खालेना। यह सब जानते हैं कि वाज दफै जो मांस बजारों में विकता है वह ऐसा खराब होता है कि खाने काबिल नहीं होता। इङ्गलेण्ड में इस तरह का मास खाने के सबब से जो कठिन बीमारियां देखने में आती है, हिन्दुओं के यहा मांस खाने के

* सर्व साधारण से प्रार्थना है कि, जो बात ऊपर मछली और मास के बारे मे लिखी गई है वह उच्चजाति के इस्तेमाल करने के वास्ते नहीं है क्योंकि किताब के पढने वालों में से जिनके वास्ते यह किताब बनाई गई है बहुत ऐसे है जो इन चीजों का इस्तेमाल करते हे ॥

वह कई तरह के कायदे जारी रहने के सबब से वह सब बुराइयां देखने में नहीं आतीं। दूसरा ना पचने वाला मांस तैयार करना है। हम लोगों का कैसा यकीन है, यकीन काहेको भूल कहना-चाहिये, मांस तैयार कराने के साथ घी, मसाला, प्याज वगैरः चीजें भी बेअंदाज मिला देते हैं। ख्याल करना चाहिये कि ऐसी ऐसी चीजें जरूर बुराई पैदा करेंगी?

तरकारी शाक और फल।

तरकारियों में बहुतसी पुष्टिकर और उत्तम है। इङ्गलेण्ड आदि देशोंमें जहा अमिश्र मांस खानेका रिवाज है वहा भी केवल मात्र मांसके बदले उसके साथ तरकारीका अधिक भाग खाना चाहिये। इस विषय पर घोर आन्दोलन चलरहा है।

तरकारियों में आलू, परवल, कच्चा केला, अरवी, कटहल के बीज, तोरई, लौकी इत्यादि उत्तम तरकारिया हैं। कभी कभी कडवी तरकारी भी खानी चाहिये। जैसे करेले परवल के पत्तों का झोल, बहुत फायदेमन्द है। पत्ती शाक जाती के पदार्थ बहुत खाना उचित नहीं है किन्तु उनमें क्षार जातीय पदार्थ रहनेके कारण कभी कभी पत्ती शाकादि की भी हमारे शरीरको आवश्यकता पडती है। रोगीके लिये शाक कुपथ्य है। फलोंमें बहुतसे फल बडे सुस्वाद और फायदेमद होते हैं।

यथा आम, केला, पपीता, जामुन अगूर, सेब, अनार, नरगी, कच्चा नारियल कटहल बेल इत्यादि। नारियल सूख जानेपर देरसे हजम होताहै। कटहल अधिक खानेसे पेटका रोग उत्पन्न होताहै दूध अत्युत्तम पदार्थ है। ससारमें दूधके सिवाय और कोई ऐसा पदार्थ नहींहै जिसकेही द्वारा मनुष्य बहुत दिन-तक जीवित रहसके। दूधके भीतर हमारे शरीरके सब आव

श्यकीय उपकरण बड़ी अच्छी तरहसे मिलेहुए है। गायका दुध प्राय हमारे देशमें प्रचलितहै। परन्तु भैंसका दूधभी बुरानहीं होता। दुध इतना उपकारी और आवश्यकीय पदार्थ होताहै इसीलिये हमारे देशमें गौको पूजनीय जानाहै। आमाशय और खांसी रोगमें बकरीका दूध अच्छा होताहै। बच्चों के लिये माता के स्तन का दुग्ध जितना उपकारी होता है और सहज में पचजाता है,उतना दूसरा नहीं होता। यदि माता का दुध न मिल सके तो गधेया का अथवा गायका दूध पानी मिलाकर देना चाहिये। कभी कभी ऐसा देखा जाता है कि दूध के द्वारा बहुत से संक्रामक रोग जगह जगह फैल जाते हैं दूधसे और भी उत्तम उत्तम पदार्थ तयार होते हैं-यथा मक्खन, घी, खोआ अच्छा है।

दो समय प्रधान आहार और दो समय कुछ जलपान करना ठीक है। जलपान के समय अधिक मिष्टान्न भोजन करना दूषनीय है। कुछ थोड़े से फल, मूल, और अवस्थानुसार पूरी, कचौडी, छुकी हुई दाल, मुरमुरा, इत्यादि बहुत ठीक है। भोजन के समय निर्दिष्ट रहना उचित है। प्रतिदिन नियमित समय पर यथोचित आहार करने से मनुष्य प्राय बहुत सी पीडाओं के हाथ से बचा रहसक्ता है।

जलपान

भोजन के उपरान्त दांत और मुह अच्छीतरह साफ करने चाहिये। दातों में खाई हुई यदि कोई चीज लगी रहजाय तो वह मुह में दुर्गंध पैदा करती है और दांतों को कमजोर करती है। दांतों का समुचित से चालन नही होता इसी से देखा जाता है कि प्राय दांत जल्दी गिर

जातेहैं। दातुन करना सबको फायदा करताहै विशेषकर दांतको जिनके मसूडे शिथिल पडगयेहै और सहजही उनसे रक्त गिरनेलगताहै उनको आवश्यक है।

[२] जल—

बहुतसे साफ जलके विना जीवन रक्षा नहीं होसकी। स्वच्छ जलके अभावसे ही आजकाल हैजा आदि बहुतसे संक्रामक रोगोंका इतना प्रादुर्भाव दीखपडताहै, कहदेना होगा कि

पीनेकापानी स्वच्छ होना चाहिये

बंगाल देश में कोई अच्छा तालाव तो है ही नहीं और पुराने समयके जितने तालावहै सब सूखगयेहैं। और जो हैं वहभी इतने मैले होगयेहैं कि उनका जल पीनेवालोंको अवश्य रोग उत्पन्न करताहै। यदि नदीका पानी मिल सके तो वह सबसे अच्छाहै। यद्यपि वर्षा ऋतुमें नदीका जल मैला होजाताहै किन्तु साफ करनेसे वह असानीसे साफ होजाताहै। पश्चिम प्रदेशकी तरफ कूए का पानी व्यवहार कियाजाताहै। जिस तालावमें लोग स्नान करतेहों और कपड धोतेहों उसका जल कभी न पीना चाहिये। जिस तालावका जल पीनेके काममें आताहो उसमें स्नान करना और कपडेधोना वर्जितहै। जिस जगह तालावका स्वच्छ पानी न मिलसके वहा कूए का पानी व्यवहार करना चाहिये। अथवा पानी को खूब खोलाकर और बालू रेत और कोयले द्वारा साफ करलेना चाहिये। इस नियमपर चलनेसे और सावधान रहनेसे देखागयाहै कि सब लोग मैलेरिया और हैजेके मध्यमें रहते हुएभी रोगग्रस्त नहींहोते।

[३]

दूषित और मैला पानी ही हमारे देशमें रोग उत्पन्न करने का प्रधान कारण है। बंगाल के छोटे छोटे गांवोंके तलाव नरक कुण्डके तुल्य हैं और उनका जल मानो साक्षात् रोग-रूप है। जलके दोषसेही प्राय हैजा आदि सब संक्रामक रोग एकस्थान से दूसरे स्थान में फैलजाते हैं। सिर्फ पीने ही के लिये नहीं भोजन बनाने और स्नान करने के लियेभी स्वच्छ जलकी आवश्यकताहै।

स्नान करने और भोजन बनाने के लिये भी स्वच्छ जल होनाचाहिये

रोगी को किसी प्रकारकी उत्तेजक चीज नहीं पीनी चाहिये। रोगकी हालतमें चाय, काफी, शराब आदि बिलकुल वर्जितहै। अधिक तम्बाकू पीनाभी अनुचितहै।

३। वायु—

जलकी तरह स्वच्छ वायुभी जीव रक्षाके लिये परम आवश्यक है। स्वच्छ वायु बडीही सुलभ चीजहै, थोडी चेष्टा करनेसेही हम बिनामूल्य चाहे जितनी पासकतेहैं। वायु जो कि जीव जन्तु लता वृक्षादिके सडनेसे और मनुष्यों के सास से गन्दी होजातीहै फिर उसमें स्वच्छ वायु मिलने से वह दोषशून्य होजाती है। चाहे धनी हो चाहे दरिद्र सबको प्रतिदिन स्वच्छ वायु सेवन करनी चाहिये। गरीब लोग सर्वदा खुलेहुए मैदानमें कामकरतेहैं इसलिये उनको स्वच्छ वायुकी कमी नहीं रहती। हमारे देशमें यह बहुत बुरा रिवाज है कि एक कमरेमें प्राय बहुतसे आदमी सोतेहैं और उसमें खिडकी जंगला कुछ नहीं रखते। प्रत्येक मनुष्य

निश्वास प्रश्वास द्वारा प्राय' १८ घनफुट वायु प्रतिघन्टामें ग्रहण करता है। इसीलिे एक कमरे या कोठरीमें बहुतसे आदमियोंको सोना नहीं चाहिये। जाडेके दिनोंमें सर्दीके कारण बहुतसे मनुष्य खिडकी दरवाजे सब बदकर के सोते हैं, यहा तक कि कोई छोटा छेद होताहै उसेभी बद करलेते हैं और फिर बालबच्चों सहित उसीमें शयन करतेहैं। ऐसे कमरेकी वायु थोडी देरमेंही निश्वास प्रश्वास द्वारा जहरके समान होजातीहै। चाहिये कि ऐसे मौकेपर कोठेकी दो आमने सामनेकी खिडकिया अवश्य खोलदें।

रहनेका मकान

रहनेका घर सूखा और साफ रहना चाहिये सोनेका मकान गीला रहनेसे और उसमें सील रहनेसे वात खासी इत्यादि नाना प्रकार की कठिन पीडायें उपस्थित होती है। प्रात काल उठते ही मकान के सब दरवाजे खिडकिया खोल देना उचित है और फिर मकान साफ किया जाये। रात्रि के समय मकान की वायु श्वास द्वारा शरीर से निकले हुए दूषित भाप से तथा उत्तप्त और दुर्गन्ध मय हो जाती है जिससे स्वास्थ्यको अत्यन्त हानि पहुंचतीहै। इसबातपर ध्यान रखनाचाहिये कि प्रतिदिन स्वच्छ हवा घरके भीतर आती जातीरहे।

स्वास्थ्यरक्षाके लिये धूप भी प्रयोजनीय है।

स्वच्छ जल और वायुकी तरह स्वास्थ्य रक्षा लिये सूर्य का प्रकाश और उत्ताप परमावश्यकहै। जिस प्रकारसूर्यके

प्रकाश विना कमल नहीं खिलता, वृक्ष लतादि बढ़ते और परिपुष्ट नहीं होते उसी प्रकार जीवधारियोंके स्वास्थ्यका पूर्ण विकाश नहीं होता और पवित्र ज्योति नहीं दीखपड़ती। रहन के घरमें जिस प्रकार स्वच्छ वायुके आनेजानेका बन्दोबस्त रखना चाहिये उसी प्रकार सूर्यके प्रकाश काभी बन्दोबस्त रखना चाहिये। सूर्यकी गरमीसे दुर्गन्ध विनष्ट होतीहै और दूषित वायु शुद्ध होतीहै।

४—व्यायाम (कसरत)

कसरत करनेसे शरीर बलवान और रोगशून्य और फुर्तीला होताहै और चित्त प्रसन्न रहताहै। दीर्घ जीवनके लिये व्यायाम करना अत्यावश्यकीय है। विना परिश्रमके शरीरके सब पट्ठे शिथिल होजातेहैं, खूनका परिचालन मन्द होजाता है और सास आने जाने की क्रिया बहुत धीरे २ होने लगती है। आलस्य ही रोगका मूल है। यही कारण हैं कि हमारे देश के धनी लोग एक एक रोगके अस्पताल विशेष रहेआतेहैं अर्थात उनके शरीरमें इतने रोग रहेआतेहैं कि उनके शरीरको अस्पताल कहें तो अनुचित न होगा।

शरीरकीपुष्टि के लिये व्यायाम आवश्यकहै

व्यायाम करनेसे शरीर के सब पट्ठे परिपुष्ट, दृढ और बलिष्ट होतेहैं और रक्त सञ्चालन तथा श्वास प्रश्वास की क्रिया वर्द्धित होकर देहके सब दूषित पदार्थोंको पसीनेके द्वारा निकाल देतीहै और परिपाक शक्तिकी उन्नति करतीहै जिससे कि क्षुधा बढ़तीहै।

जिनका शरीर जितना व्यायाम और परिश्रम सहन करसके उनको उतनाही व्यायाम करना उचितहै । टहलना सबसे उत्तम व्यायाम है और अत्यन्त सहजहै । सब अवस्थाके मनुष्य हर हालत में अच्छी तरह टहल कर शरीर के उपयुक्त व्यायाम कर सके है । इस के सिवाय घोडे पर चढना, दौडना, तैरना, मुगदर फिराना और कुश्तीकरना आदिभी अच्छे व्यायाम समझे जातेहैं ।

भिन्न भिन्न व्यायाम

थकेहुए और दुर्बल शरीरसे व्यायाम करना उचित नहीं और रोगी मनुष्योंको सावधानीसे व्यायाम करना चाहिये । उनकेलिये थकान पैदाकरे इतना घूमना तथा प्रबल वायुमें फिरना निषिद्धहै हमारे देशके लोग जब थोडी सी भी उमर खिच जातीहै तो व्यायाम करनेमें लज्जाकी बात समझतेहैं, किन्तु ऐसा विचार करना पूर्ण अन्यायहै । उमर बढने पर हमलोगोंके शरीरकी यान्त्रिक क्रिया जिस जिसप्रकार मन्द होती जातीहै बाहर घूमने फिरने आदिका परिश्रम कम होताहै और अधिक समय घरमे बैठे बैठ ही कटताहै तथा मानसिक चिन्ताकी वृद्धि होतीहै उसी प्रकार हमको कृत्रिम व्यायाम अवलम्बन करके शरीर तेजशाली और मनको प्रफुल्ल रखना चाहिये ।

वृद्धावस्था में व्यायाम

हमारे देशके लोगोंके स्वास्थ बिगडनेका प्रधान कारण यहीहै कि लोग उपयुक्त व्यायाम नहीं करते । जितनी मानसिक शिक्षा बढती जातीहै उतनाही शारीरिक परिश्रम कम होताजाताहै । पढेलिखे और धनी लोग समान आलसी होने

हैं। साधारणतः बहुतसे रोगोंकी उत्तम औषधि मैदानमें भ्रमण करना और खेलना यही एक मात्रहै। हमारे पूर्वज लोग परिश्रमी होतेथे इसीसे उनकी आयुभी दीर्घ होतीथी। आज कालके युवक कम उमरमें ही विलासी होजातेहैं। और परिश्रमसे डरने लगतेहैं, बस यहीं कारणहै कि उनको रोगोंसे कष्ट पाना पडताहै।

५। परिधेय (कपडे पहिनना)

कैसे कपडे पहनने चाहिये

सभ्यताके अनुसार तरहतरह के कपडे पहने जातेहैं सर्दी गर्मी से शरीरकी रक्षा करनाही कपडे पहननेका प्रधान उद्देशहै। ऋतु बदलने के साथ ही कपडेभी बदलने चाहिये। हम लोगोंका देश ग्रीष्म प्रधानहै, अतएव सर्वदा गरम कपडे पहननेकी हमारे देशमें आवश्यकता नहीं है। सर्वदा गरम कपडेसे शरीरको ढके रखने से (यथा फलालेन मोजे इत्यादि) शरीरकी सहन शीलता नष्टहोजातीहै और जरासी सर्दी लगतेही जुकाम, खासी, गलेमें दर्द इत्यादि तरह तरहके रोग उपस्थित होने लगतेहैं।

बलिष्ठ और परिश्रमी मनुष्योंकी अपेक्षा रोगी और दुर्बल मनुष्योंको तथा युवा पुरुषोंकी अपेक्षा वृद्ध और बालकोंको गरम कपडेकी अधिक आवश्यकता पडतीहै किन्तु सरदी के भयसे सर्वदा फलालेनसे शरीरको ढके रखना और मकानके खिडकी जङ्गले सब बन्द रखना अनुचितहै। गरमीके दिनोंमें सूती कपडा और सरदीके दिनोंमें अवस्थानुसार गरम कपढा पहिनना चाहिये।

पहिनने के कपडे स्वच्छ रखने चाहिये

हमारे देशमें एक ऐसीबुरी रिवाजहै कि उसका जिकर किये विना हमसे यहां रहा नहीं जाता। वहुतसे मनुष्य जिस समय कहीं जातेहैं सभ्यताके मारे शरीरके ऊपर अनापशनाप कपडे लादलेतेहैं। गरमीके दिनोंमें पसीनेसे तरहोकर शरीर और कपडों में कैसी दुर्गंध आने लगतीहै और कैसे मैले होजाते हैं यह कुछ कहने की वात नहीं है। इतनी हैसियत तो होती नहीं कि उनको ठीक समय पर धोवीसे धुलवाते रहें फिर इन्हीं दुर्गंधमय कपडोंको पहिनते पहिनते शरीरमें पीडाये उपस्थितहों तो इसमें नई वात क्याहै? कपडा चाहे जैसा पहिना जावे उसका स्वच्छ रहना परम आवश्यकहै। पहिनके कपडोंको स्वच्छ जलसे धोकर और धूपमें सुखाकर फिर पहनना चाहिये। मैलापन और अनाचार हमारे देशमें प्रतिदिन वढताही जाताहै।

पहिननेके कपडोंकी तरह ओढने विछानेके कपडोंकाभी साफ रहना नितान्त आवशकीय हैं। दो तीन दिनवाद विछोनेकी

शय्यावस्त्र स्वच्छरखने आवश्यक हैं

चादर इत्यादि सव पानीसे धोकर धूप में सुखालेनी चाहिय। वालकोंके पहिनने तथा ओढने विछानेके कपडोंकी और भी अधिक सफाई दरकारहै। यदि कपडोंमें मल मूत्रादि की किसी प्रकार भी दुर्गंध आती रहेगी तो वच्चेका वीमार पडजाना संभवहै।

६। स्नान

स्नान करना चाहिये हमारे देशमें यह किसीको सिखा-

नेकी व समझानेकी आवश्यकता नहींहै। स्नान करनेसे शरीर स्वस्थ, स्वच्छ, और शीतल होता है।

स्नानकी आवश्यकता

चर्मके जितने छिद्रहैं सब खुलजातेहैं शरीरकी दुर्गन्धि दूर होजातीहै और शीत सहन करनेकी शक्ति बढजातीहै।

नदी तलाव आदि में गोता लगाकर स्नान करना अति उत्तम होताहै। प्रति दिन भोजनकी तरह स्नान का भी एक नियत समय होना चाहिये। स्नान करनेसे पहिले भोजन अनुचितहै। रोगी और दुर्बल मनुष्योंको ठण्डे पानीसे स्नान नहीं करना चाहिये। उन लोगोंको गुनगुन पानीसे नहाना चाहिये।

शारीरिक परिश्रमके उपरान्त स्नानकरनानिषिद्ध है।

शारीरिक परिश्रमके उपरान्त जबतक कि बिलकुल शान्ति मालूम नहो नहीं नहाना चाहिये। जिस समय पसीने आरहेहों नहानेसे नुकसान होताहै स्नान करनेके थोडीदेर बादभोजन करना चाहिये स्नानकरने से पहिले शरीरसे तेल लगाना बहुत फायदा करताहै। विशेष-कर जिसको काश रोग (खांसी) हो उसकोतो परम आवश्यक है।

जिन लोगों को प्राय सर्वदाही सर्दी लगजाती है अथवा खांसी होजाती है, उनको ठंडा पानी ही व्यव-हार करना चाहिये। उनको इस बात की चेष्टा करनी चाहिये कि ठंडा पानी सहा होने लगे।

स्नान करना हमारे देश में विशेष कर हिन्दुओं का नित्यकार्य है। पहिले धर्मके नामसे स्वास्थ्य सम्बन्धीय

नियमावली पर लोग चलतेथे किन्तु बड़े शोकका अवसर है कि आजकल शिक्षाके दोषसे धर्मका बन्धन ढीला होता जाताहै और इसी कारण शारीरिक नियमावलीकी आवश्यकता और भलाईकी ओरसे लोगोंको विमुख देखतेहैं। ऐसा होने से ही अर्थात् स्नान आहार वस्त्र पहिनने आदिके व्यतिक्रमसे बहुतसा कुफल होताहै।

तीसरा अध्याय।

रोगी की सुश्रूषा।

रोगीके लिये जिस प्रकार औषधि उपकारीहै उसी प्रकार उसकी सेवा शुश्रूषा उपकारीहै, अतएव रोगीकी सेवा शुश्रूषा के लिये होश्यार दयालु हृदय और परिश्रमी एक स्त्रीको नियुक्त करना चाहिये। रोगी जिस मकान में हो वह मकान, ओढने विछानेके और पहिननेके कपडे आदि साफ और सुथरे रखने चाहियें।

रोगीका मकान अच्छा लम्बा चौड़ा हवादार और सूखा रहना चाहिये। यह सबसे पहिली बात है कि रोगीके मकान में इतनी हवा आती जाती रहे कि दूषित हवा बिलकुल न रहसके। दिनके समय दरवाजे खिड़की

घर

इत्यादि खुले रहना अच्छाहै परन्तु इतनी जोरकी हवाभी नहो कि रोगीके शरीरको लगे। रातको दरवाजे खिड़की बदभी रखी जासकती है। सक्रामक और विशाक्त(स्पर्शसे लगनेवाले और जहरीले) रोगग्रसितमरीजके मकानेंमे हवा जितनी आती जाती रहेगी उतनाही अच्छाहै। जिस मकानमें रोगीहो उसमें फिजूल चीजोंको न रखना चाहिये और उसमें बहुतसे आदमियोंकी भीड़ रहना उचित

नहीं। रोगीकी पास किसी तरहकी गड़बड़ और बेफायदा बकवाद नहीं होनेदेना चाहिये।

शय्या

रोगीकी शय्या कोमलहो। साफ सुथरा रहना सबके लिये ही अच्छा है विशेष कर रोगीके लिये तो आवश्यकहै ही। यदि रोगी बहुत दिनतक बीमार पड़ा रहे तो उसके ओढ़ने बिछानेके कप-ड़ोंको रोज धोकर तेज धूपमें सुखाना चाहिये। साधारण तौरपर भी शय्यादि वस्त्रोंका धूपमें सुखाना अच्छा है इससे शय्या कोमल रहतीहै और दुर्गंध मिटजातीहै। रोगी के कपड़े रोज बदलवादनाही अच्छा है, परन्तु यदि सब मनुष्य ऐसा न करसकें तो दो जोड़ी कपड़े रखनेसे काम चलसक्ताहै। रोज उन्हींमेंसे, एकको बदलवादे और दूसरेको साबुन और गरमपानीसे धोडाले। कपड़े बहुमूल्य भलेही नहो परन्तु उनका स्वच्छ रखना परम आवश्यकीय है। और ऐसा सब करसक्तेहैं।

यह पहिलेही कहाजाचुकाहै कि सफाई मानो रोगीका जीवनहै।

स्वच्छता

प्रतिदिन दोनोसमय घर और शय्यादि झाड़ डालना, बिछौने धूपमें सुखलादेना और कपड़े उन्हें धोडालना परम आवश्यकहै। प्रतिदिन रोगीका मुह धुलवाना, दातुन जिभी करवाना यदि आवश्यकता पड़े तो शरीरको गीले कपड़ेसे अंगोछदेना और यदि रोगी अतीव अशक्त होगयाहो तो मल और मूत्रापद्वार सावधानीसे साफ करदेना परमावश्यकीयहै जिस रोगी को जितना साफ रक्खा जायगा वह रोगी उतनाही जल्दी अच्छा होजावेगा।

तरुण पीडा (नयेरोग) में कठिन पथ्य कभी न देना चाहिये। रोगीकेलिये पतली खानेकी चीज

पथ्य

अच्छी होतीहै। यह जल्दी पचजातीहै। साबूदाना वार्ली दूध इत्यादि बहुत देरतक रक्खेरहनेसे खराब होजातेहैं इसलिये ५। ६ घंटेतक रक्खेरहनेकेबाद फिर इनको न खिलावे। जिस जिस तरह रोगीकी हालत बदलती जावे उसी उसतरह उसके पथ्यकोभी बदलते जाना चाहिये। यदि उदरामय होतो फल मूल और दूध न देना चाहिये। यदि कोष्ठ बद्धता होतो यह सब चीजें थोडी थोडी दीजासक्तीहैं। यदि रोगीको प्यास लगेतो उत्तम स्वच्छ जल जितना चाहिये देना उचितहै। रोगीको प्यास लगीरहै और उसको ठंडापानी न दियाजावे तो तकलीफके ऊपर उस वह एक और तकलीफ होतीहै। जिस समय रोगीकी प्रकृतिको जलकी आवश्यकताहै यदि उस समय उसको जल न दियाजाय तो यह बडी मूर्खताहै।

रोगीको एकसाथ बहुतसा खानेको देना अनुचितहै। बहुतसा परिश्रम बचानेकेलिये और रातको रोगी बार बार उठकर खानेको न मांगे इसलिये उसे पेटभर कर खिलादेना बहुतही बुराहै। नियत समयपर थोडा थोडा रोगीको कई बार करके पथ्य देना उचितहै। रोगी यदि बिलकुलही दुर्बल होजावे, तो आवश्यकता के अनुसार एक घंटा अथवा आधे घंटाके अन्तरमें पथ्य दियाजाताहै। "थोडा थोडा किन्तु वारवार" यही रोगीको पथ्य देनेका नियमहै।

रोगीके मकानमें उसके सामनेही खानेकी चीजें रखदेना अनुचित है। जिस मकानमें रोगी रहताहै उसकी हवा दूषित होनेके कारण खानेकी चीजें बहुत जल्द बिगडजा-

सक्तीहै। इसके सिवाय हर वक्त खानेकी चीज रोगीके सामने रहे तो उस में रोगी की अरुचि हो जाती है। जब पथ्य देनेका समय हो उसी समय रोगीके एक वारके ही खाने योग्य लाकर उसके सामने रक्खे।

आरोग्य होनेके समय सावधानी

आराम होनेके समय यदि पथ्यकी थोडी बहुत भी गडबडी होगी तो रोग फिर लौटकर आजावेगा इसलिये आराम होनेके समय पथ्यादि के विषय में सावधान रहना आवश्यक है। आरोग्य होने के समय पथ्य की गडबडी से यदि उदरामय हो जावे अथवा पेट अफर जावे तो फिर ज्वर लौट आसक्ता है। ऐसे उदाहरण बालकों में विशेष कर छोटे छोटे गांवोंमे बहुत देखनेमे आतेहैं। जिसदिन जितनी भूखहो उस दिन उतनाही खानेको देना उचितहै। आहार कमहो तो कुछ हर्जनहीं परन्तु अधिक होनेसे नुकसान करताहै कभी कभी ऐसा देखाजाताहै कि आराम होनेके उपरान्त भूख बहुतही बढजातीहै, उस समय बडी सावधानीके साथ यदि खाने को न दियाजावेगा तो अजीर्ण होकर भूख बिल्कुल मारी जावेगी।

जिस प्रकार अज्ञान बालकके सब दोष क्षमा करनेके योग्य होतेहै, उसी प्रकार रोगीके भी सब अपराध क्षमा करनेके योग्य होतेहैं। रोगीके प्रति कभी असन्तोष अथवा क्रोध नहीं दिखलाना चाहिये। रोगीकेलिये

साधारणबातें

शारीरिक और मानसिक विश्राम परम आवश्यकहै, इसलिये बारबार रोगीसे प्रश्न कर उसके विश्रा

मर्ममें बाधा डालना और उसकी इच्छाके विरुद्ध काम करके उसको असन्तुष्ट करना अनुचितहै। यदि कोई बात रोगी से कहनी भी हो तो बहुत रास्तीमें समझाकर कहनी चाहिये। रोगीको प्रसन्न और सन्तुष्ट रखनेका हरवक्त ध्यान रक्खे। रोगीके पास बैठकर रोगकी प्रकृति और उसके भावी-फलाफल के विषयमें कहना सुनना बिलकुल निषिद्धहै। हमारे देशमें स्त्रिया ऐसी मूर्ख होतीहैं कि जब कभी वह किसीको देखने जातीहैं तो कुछ वृथा अट्टपट्ट बकेबिना और दोचार आंसूकी बूंदे गिराकर उसके विषयमें अपनी अशुभ मतामत प्रकाशित किये बिना नहीं रहतीं।

चौथा अध्याय—

रोगी परीक्षा॥—

१।—शरीरका उत्ताप और तापमानयन्त्र।

स्वाभाविक उत्ताप

जीव जन्तु जितने दिन तक जीवित रहतेहैं उतने दिन तक उनके शरीरका उत्ताप एक प्रकार समान भावसे ही रहताहै। मनुष्य देह सर्वदाही उत्तप्त रहताहै कारण देहमें बराबर उत्ताप उत्पन्न होताही रहताहै। भोजन कियेहुए पदार्थ देहमें पहुंचतेहैं और सांसके साथ लियेहुए प्राणप्रद वायुसे (oxygen) दग्ध होते रहतेहैं। यद्यपि यह दाह क्रिया दीख नहीं पड़ती परन्तु उसका फल अर्थात् गरमी पैदाहोना सर्वदाही अनुभव किया जासकाहै। जबतक खानेकी शक्ति कम नहीं होती तबतक यह स्वाभाविक गरमी भी कम नहीं होती। जिस दिन आहार बंद होजाताहै उसदिन सब

शरीर ठंडा होकर सुन्न पडजाताहै ।

मनुष्य देहकी साधारण गरमी ९८·४ डिग्री होतीहै । बहुतसे कारणोंसे और बहुतसी अवस्थाओंमें इस स्वाभाविक गरमीमें परिवर्तन [तबदीली] हो सक्ती है । शरीरकी

स्वाभाविक गर्मीका कमती बढतीहोना

गरमी सब जगह समान नहीं होती ढके हुए स्थान और भीतरी यन्त्रोंकी गरमी खुले हुए और बाहरी स्थानो की अपेक्षा अधिक होती है । मुख, गुह्यद्वार, बगल इत्यादि स्थानों की गरमी खुले हुए स्थानों की अपेक्षा अधिक और निर्दिष्ट होतीहै, इसलिये गरमी जाचनेकेलिये इन्हीं स्थानोंकी गरमीको जाचतेहैं । अवस्था दिनके जुदे जुदे समय व्यायाम मानसिक चिन्ता इत्यादि भिन्न भिन्न कारणोंसे शरीर की स्वाभाविक गरमी में हेर फेर होसक्ताहै । अधेड मनुष्योंकी अपेक्षा युवा और बालकोंमें उष्णता अधिक रहतीहै । प्रभात समय मनुष्यके शरीरमें जितनी गरमी रहतीहै दिन चढने पर उससे कुछ अधिक होजातीहै और रातके समय कम होतेहोते प्रातःकालके समय बहुत कुछ कम होजातीहै । भोजन करनेके उपरान्त जब भोजन पचताहै गरमी बढतीहै और उपवास के समय कम होती है । शारीरिक परिश्रम करने से शरीर की गरमी बढती है और लगातार पढने से अथवा मानसिक चिन्ता करनेसे कम होतीहुई दीख पडतीहै ।

जिस के द्वारा गरमी मालूम की जाती है उसको तापमान यन्त्र या थर्मामेटर कहते हैं । शरीरकी गरमी मालूम करनेकेलिये एक खास तरहका तापमान

यन्त्र काममें लायाजाताहै । तापमान यन्त्र रोग निर्णय करने और उसके सांघातिक भावको निर्णय करनेमें बडी सहायता करताहै ।

तापमान यन्त्र

मुह बगल और गुह्य द्वारके भीतर ताप मान यन्त्र लगानेसे गरमी निर्णय कीजासकतीहै । साधारण तरहपर बगलसे ही गरमी देखतेहैं । रोगी यदि बहुतही दुबला हो जावे तो मुहमें लगाकर शरीरकी गर्मी देखतेहैं । यदि बगलमें पसीना होतो थर्मामेटर लगानेसे पहिले सूखे कपडेसे उसे अच्छी तरह पोंछ डालना चाहिये । साधारण तरहपर । ५ । ६ मिनट तक रखनाही ठीक होताहै किन्तु विशेष आवश्यकता होनेपर आधे घंटे तक भी रखना पडताहै । तापमान (थर्मामेटर) का उत्तम होना जरूरीहै । नहीं तो उस तापमान यन्त्रके ऊपर विश्वास नहीं किया जासक्ता ।

रोगसूचक उत्ताप

तापमान यन्त्र रोग और उसके शेष फल निर्णय करने में तथा चिकित्सा करने में बडी सहायता करताहै । ९९ .६ डिग्री के ऊपर और ९७ .४ के नीचे यदि थर्मामेटर का पारा होतो कहना चाहिये कि उस मनुष्य के शरीर में कोई न कोईरोग अवश्यहै । शरीरकी गरमी बढनेके साथ साथ नाडीकी धडकनभी बढजातीहै । नाडी

नाडीऔर उत्तापकासम्बन्ध

और गरमी इन दोनोंमें विशेष सम्बन्ध देखाजाताहै । यदि गरमी १ डिग्री बढ जावे तो नाडी की धडकन १ मिनटमें १० बार बढजावेगी । जैसे यदि शरीरमें गरमी ९८ डिग्री होतो नाडी

की धड़कन प्रति मिनट ६० वार रहेगी। ९९ डिग्री होतो ७० वार, १०० डिग्री होतो ८० वार और १०१ डिग्री होतो ९० वार इत्यादि।

कठिन रोगोंमें सावधानीसें वारवार तापमान यन्त्र लगाना चाहिये। साधारणत. दोवार सुवह शाम थर्मामेटर लगाना ठीकहै। कठिन और पुराने रोगोंमें दिनमें कईवार सावधानी से थर्मामेटर लगाकर शरीरकी गरमी को क्रम से एक कागज पर लिखलेना चाहिये।

तापमानव्यवहार करनेकेनियम

२। नाड़ी

प्रतिसकोचन कालमें (जब हृत्पिण्ड सकोचित होताहै) हृत्पिण्डसे रक्त वेग पूर्वक टक्कर खाकर नाड़ियों मेंसे जानेके समय नाड़ियां चलतीहै अर्थात् उसी समय नाड़ी स्पन्दित होती है हृत्पिण्ड की शक्ति और धमनियों के सकोचन क्षमता दोनों ही नाड़ी स्पन्दन के प्रधान कारण हैं, अतएव हृत्पिण्ड नाड़ी अथवा रक्त में किसी प्रकारका परिवर्तन होतो नाड़ीकी गति में भी परिवर्तन उपस्थित होने लगताहै।

नाड़ीस्पन्दनका कारण

रोग निश्चय करनेकेलिये नाड़ी परीक्षा अत्यन्त आवश्यकहै। ज्वरमें नाड़ी परीक्षा के विना कुछ नही हो सकता। तजुरबे और अभ्याससे नाड़ीकी जांच समझमें आतीहै। जिस स्थानमें धमनीहै उसी जगह नाड़ी की परीक्षा कीजासकी है

नाड़ी परीक्षा का स्थान और नियम

साधारणतः कलाई परही नाडी की परीक्षा किया कर ते हैं, क्योंकि इस जगह नाडी देखने में बहुत सुभीता रहताहै। नाडी देखते समय बहुत सावधानी और धीरता रखनी चाहिये, क्योंकि अचानक चिकित्सकके उपस्थित होने या और कुछ गडबड होने से रोगीके हृत्पिण्डकी गति बढ जातीहै और नाडी बेहिसाब धडकने लगतीहै। नाडी देखते समय ध्यानमें रखना चाहिये कि हाथ किसी जगह बधा हुआ टिकाहुआ या दबाहुआ न हो। ऐसा होनेसे रक्तकी स्वाभाविक गति बंद होकर नाडीका असली हाल मालुम न होगा। बहुत सावधानीसे कलाई पर अगूठे और तीन अगुलियोंसे दबाकर नाडी देखते हैं। नाडी देखते समय नाडीकी प्रत्येक अवस्थाको ध्यानपूर्वक विचारना चाहिये। नाडीकी गति अर्थात् प्रति मिनिट उसके धडकने की सख्या, धडकनेका नियम अर्थात् एकके बाद दूसरी धडकन ठीक नियमित रूपसे होतीहै कि नहीं, उसकी पूर्णता और कोमलता, नाडी दबानेसे दबी रहतीहै और मालूम होताहै कि नहीं, अगुली रखने से मालूम होता है मानो नाडी अगुली को जोर से हटाये देती है। नाडी अत्यन्त क्षुद्र हो अर्थात् बेमालुम होना। इत्यादि बातों पर पूरा ध्यान देना चाहिये।

स्वस्थ शरीरमें अर्थात् जब शरीर में कोई रोग न हो, नाडी की गति समभाव, पूर्ण और धीर होती है। अगुली के नीचे नाडी धीरे २ चलती रहती है। वृद्ध अवस्था होने पर धमनी प्राचीर (घेरा) कठिन होनेके कारण नाडी भी कठिन होजाती है। जुदी २ अवस्थाओं में नाडी की

भिन्न अवस्था में उमर और अवस्था के कारण

स्वाभाविक पेशाव थोडा कुछ रगतदार और वदवूदार होता है । बहुत तेज वदवू होने से रोग समझना चाहिये । स्वाभाविक पेशाव को रखदेने से उसमें नीचे कुछ जमता नही है । बुढापे में पेशाब कुछ गहरी रंगत का और तेज वदवूदार होता है । जो लोग अधिक मेहनत करतेहैं उनका पेशाव भी कुछ गहरी रंगत का होता है । निरोग अवस्था में २४ घण्टे में प्राय. चार वार से लेकर ६ वार तक पेशाब होता है, पेशाव करते समय किसी प्रकार का दर्द नहीं होता और न जोर करना पडता है । स्वाभाविक पेशाव जलकी अपेक्षा कुछ भारी होता है, अर्थात् जलके साथ तुलना करने से १००० और १०१५ का सम्बन्ध होता है अर्थात् यदि जलका गुरुत्व १००० है तो पेशाव का १०१५ । साधारणत. पेशाव के गुरुत्व १०१५ से १०२५ तक रहा करता है । जवान आदमी दिन रात में प्राय. ५० औंस पेशाव करता है ।

रोग की हालत में ऊपर लिखे हुए स्वाभाविक लक्षणों में बहुत अन्तर पडजाता है । इस हालत में पेशाव की परीक्षा करने से रोग निर्णय करने में बहुत सहायता मिलती है । पीलिया अथवा यकृत में गडवड होने से पेशाव पीले रगका होता है, ज्वर में पेशाब थोडा और लाल रग का होता है, मूत्र यन्त्र वा मूत्राधार के रोग में पेशाव खून मिला हुआ और चिपचिपा अर्थात् गोन्ध के समान कासा होता है । वायु और वायुगोला रोग में पेशाव पानी सा और बहुत होता है । इसके सिवाय किसी विशेष स्थान में प्रदाह होने से कभी २ पेशाव

भिन्न २ रोगों में पेशाव की कमी बेशी

थोड़ा और निकलते समय बहुत दर्द और वेग के साथ होता है। कभी बहुत कमी। वार २ पेशाब की हाजत होना, पेशावके समय बहुत जलन होना और कभी अखीर में दो चार बूंद पेशाव होनेके समय दर्द होना इत्यादि देखाजाताहै। किसी २ रोग में पेशाव के स्वाभाविक गुरुत्व में भी अन्तर पाया जाताहै। शर्करा[शक्कर मिलाहुआ]वहुमूत्र रोगमें पेशावका गुरुत्व अर्थात भारीपन १०३० से १०७० तक होजाना है और वायुगोला रोगमें १००७ ही रहजाता है। [ध्यान रहे कि पेशावका गुरुत्व पानीके गुरुत्वके साथ आपेक्षिक अर्थात उसीके हिसावसे शुमार कियाजाताहै जैसाकि ऊपर लिखआये है]

८। साधारण परीक्षा

रोगी परीक्षा होमियोपैथिक चिकित्सा की बुनियाद है। रोगीके देह में जो लक्षण प्रकाशित होतेहैं अथवा अनुभवमें आतेहै वही रोगहै। रोगके लक्षणोंके समान मिलान करकेही औषधी देजानी चाहिये। सदृश औषध, लक्षणोंके अनुसार बहुत सावधानीसे तजवीज करनी चाहिये।

प्रत्येक रोगके कुछ साधारण और कुछ विशेष लक्षण होतेहैं। शरीरका उत्ताप वृद्धि होना ज्वरका साधारण लक्षणहै क्योंकि ज्वर होनेसेही सबके शरीरकी गर्मी बढजातीहै। ज्वरमें किसीको प्यास, किसीके देहमें आग जलना, किसीको सर्दी लगना, किसीको उलटीहोना, किसीके हाथपैर टूटना और भडकन होना और किसीके शिरमें दर्दहोना इत्यादि प्रत्येक मनुष्य की धातुके अनुसार जुदे २ लक्षण प्रबल देखेजाते हैं। इन्हीं को विषदा लक्षण कहतेहैं। आख, कान, नाक इत्यादि सबकेही होतेहैं, लेकिन रामका चहेरा श्यामके चहेरेसे नहीं मिलता। रोगीकी परीक्षा करते समय इन्हीं सब साधारण और विषेश लक्ष-

णोको एक साथ न समझनेसे रोगकी प्रकृति और मर्म समझमें नहीं आसकते और उस रोगकी असली औषधि भी तजवीज नहीं कीजासकती ।

साधारण और विशेष लक्षणोंके सिवाय रोगी देखते समय और दो लक्षणोंकी परीक्षा करनी चाहिये । पहिले रोगीके देहके उपरी दीखने वाले लक्षण दूसरे वह लक्षण जो कि रोगीको अपने देहमें मालूम होतेहैं नाडीकी गति जिगर और तिल्ली का बढना, फेफडे वा हृत्पिण्डका दोष इत्यादि परीक्षा ऊपरी दीखने वाले लक्षणोंकी परीक्षा कहलातीहै । चिकित्सकको सबसे पहिले इन्हीं सब लक्षणोंकी परीक्षा करना चाहिये । उपरान्त रोगी और रोगीके पास वाले आदमियोंसे कष्टदायक भीतरी लक्षणोंके विषयमें प्रश्न करना चाहिये यथा दर्द, बेचैनी, भूखलगना वा भोजनकी अनिच्छा इत्यादि रोगीसे प्रश्न करते समय सावधानी से धीरे२ एक२ बात पूछनी चाहिये । इस तरह सब लक्षणोंको मालूमकर औषधिके सब लक्षणोंके साथ मिलाकर ठीक सदृश औषधि तजवीज करनी चाहिये । जो जितनी जल्दी रोगकी ठीक सदृश औषधिया तजवीज कर सकता है वह उतनाही चतुर चिकित्सक समझा जाता है । लक्षण ही रोग है । औषधि द्वारा यदि सब लक्षण दूर किये जासकें तो रोगी अच्छा होगया । होमियोपैथिक लक्षणों के अनुसार चिकित्सा है रोगके नामके अनुसार चिकित्सा नहीं है । केवल ज्वर होनेसेही चिकित्सा शुरू करदीजाय यह होमियोपैथी के अनुसार नहीं होसकता क्योंकि सबको एकसा ज्वर नहीं आता, जिसको जिस प्रकार के लक्षणों के साथ ज्वर आता है उसको उन्हीं लक्षणों से मिलती हुई दवाई दीजाती है ।

५वां अध्याय।

होमियोपैथिक औषधि सम्बन्धी नियमावली।

होमियोपैथिक औषधि विश्वास पात्र और रसायन जाननेवाले दूकानदारसे खरीदनी चाहिये। इस विषय में बहुतसे अशिक्षित व्यवसायी लोग छुपाकर तरह २ की कृत्रिमता करतेहैं। इस दगाबाजीके कारण होमियोपेथिक औषधियोंका कुछ फल नहीं दीखता। प्राय. नुकसानसी होजाताहै और इसका फल यह होताहै कि रोगीके प्राण जाते हैं और इलाज करनेवाले को बदनामी मिलतीहै।

होमियोपेथिक औषधिका तीन प्रकारसे आभ्यन्तरिक अर्थात् भीतरी प्रयोग होताहै। पहिला टिंचर वा अर्क. दूसरा गिलोब्यूल और पिल्यूल अर्थात् छोटी और बडी गोली और तीसरी ट्राइट्यूरेशन वा चूर्ण।

प्रथम,–टिञ्चर वा अर्क। वृक्ष लतादिकी जड, पत्ते, छाल और फल इत्यादि को एलकोहलमें भिगोकर किसी विषेश क्रिया द्वारा असली अर्क अर्थात् मदर टिंचर तयार होताहै। इस मदर टिंचरकी १ बूंद लेकर इसमें नौ बूंद एलकोहल मिलाकर फास्ट देसीमिल डाइल्यूशन [प्रथम दशमिक क्रम] तयार होताहै। और ९९ बूंद एलकोहल में १ बूंद मदरटिञ्चर मिलाकर फर्स्ट सेन्टेसीमेल डायल्यूशन [प्रथम शततमिक क्रम] तयार होताहै। इसी प्रथम दशमिक वा शततमिक क्रमकी १ बूंद लेकर उसमें ९ बूंद मिलानेसे द्वितीय दशमिक और ९९ बूंद मिलानेसे दूसरा शततमिक क्रम बनताहै। इसी प्रकार तीसरा चौथा १००, २०० आदि बहुत तरहके क्रम [डाइल्यूशन] तयार होतेहैं।

द्वितिय,–गिलोव्यूल वा छोटी गोली और पिल्यूल बडी गोली। गिलोव्यूल देखनेमें, सरसोंके समान और पिल्यूल मटरके समान होतीहैं। पवित्र शकर, वा, साफ कीहुई चीनीकी यह गोलिया सबसे पहिले तैयार होतीहैं। जो औषधि देना आवश्यक हो उसके अर्कमें अच्छी तरहसे भिगोली जातीहैं। घरेलू चिकित्सामें, या, जहां अच्छा पानी न मिलसकताहो वहां गोली देना ठीकहै। विदेशमें गोलियों से बहुत सुभीता मिलताहै। यत्न पूर्वक रखनेसे गोली बहुत-दिन तक खराब नहीं होती।

तृतीय,–ट्राइटयूरेशन वा चूर्ण। जा द्रव्य बहुत कडी होती है। और एलकोलहल में आसानी से नहीं गलती, जैसे सोना लोहा तावा आदि धातु, हैं, और और पदार्थ उनको दूध शकर के साथ खरलमें पीस कर अच्छीतरह मिला लिया जाता है। इस ट्राइटयूरेशन को तयार करने में बहुत परिश्रम और सावधानता की जरूरत है।

अकृत्रिम औषधि– औषधि असली और अच्छी होगी तो रोगी के आराम होजाने की आशा की जासकती है। आजकल जिस तरह चाहे जिस औषधालयसे अच्छी औषध मिलना कठिन होगया है। जो लोग चिकित्सा करना नहीं जानते और औषधि तयार करने में नहीं समझते उन के पास से दवा कभी न खरीदनी चाहिये। होमियापैथिक औषधि तयार करने में रसायनिक ज्ञान, चिकित्सा विद्या, धर्म भय, और सत्य परम आवश्यक है। होमियोपैथिक दवा की सूरत देखकर नहीं कहा जासकता कि दवा अच्छी है या बुरी। झूठे आदमी एक नामके बदले प्राय हमेशा

ही दूसरे क्रमकी औषधि देदेते हैं। प्रत्येकके दुकान में सब दवाई तो रहती ही नहीं इस लिये एक दवा के बदल दूसरी दवा देने में भी नहीं चूकते। अतएव सबको सावधानी से अच्छी तरह जांच परताल कर विश्वास पात्र दुकानदार से दवाई खरीदनी चाहिये। औषधि के दोष में बहुत से जगह होमियोपैथिक चिकित्सा की निन्दा होती हुई हमने सुनी है।

दवाइयों का बक्स।—प्रत्येक गृहस्थ को एक दवाईका भरा हुआ बक्स और एक पुस्तक अवश्य रखनी चाहिये। उस बक्स में सिवाय दवाईयों के दूसरी कोई चीज न रखी जाय। दवा के बक्स में ताला लगाकर ऐसी जगह रक्खे जहां कि प्रकाश वा तेज गन्ध आदि कुछ न हो। एक शीशी से दवाई निकाल कर फौरन उस में डाट लगा देना चाहिये। एक शीशी की दवा अथवा डाट दूसरी शीशी में न लगाना चाहिये। असावधानीसे दवाई जल्द खराब होजाती है और फिर वे फायदा नहीं करतीं।

औषधी व्यवहार करने के नियम।—छोटी वा बड़ी गोली सूखीही जीभ के ऊपर रख देने से खाई जासकी है। यदि अर्क हो तो वह साफ पानी के साथ मिलाकर पिलायाजाता है। निटिन (ठोस) एक काच का टेढ़ा टुकड़ा बूंद गिरने के लिये काम में लाया जाता है। यह बहुत कम दाममें मिलताहै। इस कांचके टुकड़े का बड़ा हिस्सा शीशीके भीतर डालकर सावधानीसे शीशी टेढ़ी करके छोटे हिस्सेकी तरफ दवाईकी बूंदे डालीजाती है। जितनी बूंदोंकी जरूरतहो डालकर शीशीमें डाट लगादेनी चाहिये, फिर यदि दूसरी दवाईकी बूंद डालनेकी जरू-

रत पडे तो उस कांचके टुकडेको अच्छीतरह धोलो ; किसी तरहकी पोली नली या और कोई चीज बूंद डालनेके काममें न लानी चाहिये, क्योंकि वह फिर अच्छीतरह नहीं धोई जासकती । जिस बरतनमें दवाई तयार करे यह बिलकुल साफ हो और किसी तरहकी गन्ध न हो । बरतन कांच, चीनी, पत्थर या मिट्टीका होतो ठीकहै । दवाई तयार करनेके बाद उसको किसी कागजसे वा, पत्थरके बरतनसे ढकदेना चाहिये । इस बरतनसे किसी पत्थरकी कटोरी वा कांचको चम्मचमें औषधि डालकर रोगीको पिलावे फिर उस कटोरी वा चम्मच को पानीसे अच्छीतरह धोकर रक्खे। हरवक्त जुदी २ दवाईके लिये जुदे २ पात्र होना अच्छाहै । होमियोपथिक औषधि व्यवहारमें हरतरहसे सफाई बहुत जरूरीहै ।

समय ।—यदि दोवार औषधि सेवन करनेके लिये कहा जाय तो प्रातःकाल और सन्ध्याका समय सबसे अच्छा है। पुराने रोग में इन दो समय औषधी देनाही बहुत है। तीन बार औषधि सेवन करना आवश्यकहो तो भोजन के दो तीन घण्टे बाद दुपहर के समय एक मात्रा औषधि दीजासकती है । हैजा आदि नय और साघातिक रोगों में रोग की अवस्था के अनुसार औषधि दीजाती है।

मात्रा ।—पहिले यह बात निश्चय करलेनी चाहिये कि कोनसा डायल्यूशन या क्रम देना होगा । इस में बडी होशियारी की जरूरत है । मामूली नय रोगों में नीचे का और बीचका क्रम जैसे पहिला दूसरा तीसरा छठा, और बारहवा दियाजाता है, और पुराने रोगों में तीसवां । १०० और २०० अथवा इससे अधिक डायल्यूशन दियाजाता है।

पूरी उमर के रोगी के लिये चाहे जिस डायल्यूशन का हो एक बूंद अर्क दियाजाता है । पाव छटांक साफ पानी में मिलाकर एक वार पिलाया जावे । उम्र कम होने के अनुसार एक बूद औषधि जल में मिलाकर उसको दो वार या चार वार पीनेको दे । छोटी गोली चार, वडी गोली एक और ट्राईट्टरेशन वा चूर्ण एक ग्रेन मात्र मुंह में डालकर खिलादे । वालकों के लिये इसकी आधी और वच्चों के लिये इसकी चौथाई मात्रा होती है । गोली पानी में मिलाकर भी खिलाई जाती है ।

मात्रा का दुवारा देना—जरूरत के माफिक औररोग की अवस्था के हिसाब से कभी १५, १५ मिनिटमें कभी दिन में दो तीनवार, कभी हफ्ते में एकही दफै दवाई खिलाई जाती है । हैजा वायंठे क्रूप आदि कठिन रोगों में आधे घण्टे या पन्द्रह मिनिट के अन्तर से दवाई दीजाती है । पुराने रोगों में जितनी कम दवा दीजायगी उतनाही अच्छा है । फायदा दीखने पर दवाकी मात्रा कम करते २ क्रमश वन्द करदेना चाहिये ।

होमियोपैथिक मत के अनुसार दो वा अधिक औषधि एक साथ मिलाकर देना वर्जित है । जब एक औषधि के सब लक्षण रोग के साथ न मिलें तो दोनों औषधि पर्य्यायक्रम से दीजाती है । पर्य्यायक्रमसे औषधि जितनी कम दीजायगी उतनाही अच्छा है ।

होमियोपैथिक सब दवाइया बहुत साफ गंध शून्य और ऐसी जगह रखना चाहिये जहा धूप न लगे। कपूर प्राय सब औषधियों का प्रतिषेधक है, इस लिये जिस मकान में दवाई रक्खीजाय उसमें कपूर न रखना

चाहिये। औषधि देनेके समय साफ पानी में और साफ काच मिट्टी अथवा पत्थर के बरतन में दवा तयार कर पिलानी चाहिये फिर किसी प्रकार का तेज मसाला अथवा गंध युक्त पदार्थ खटाई या कपूर व्यवहार न करे। हीगकी गन्धि से भी औषधिका फल माराजाता है। दवाई खाने से एक घन्टे पहिले या पीछे तक तमाखू पीना या कुछ खाना निषिद्ध है। बाहरी प्रयोग करने के लिये बिना मिला हुआ मूल अर्क काम में लाया जाता है इस लिये मिले हुए मूल अर्क से कभी लोशन, कभी लिनीमेन्ट वा कभी मरहम तयार कियाजाता है। नौ भाग साफ जल, ओलिव या नारियल का तेल अथवा मक्खन में एक भाग बिना मिला हुआ असली अर्क मिलाने से यथाक्रम लोशन लिनीमेन्ट वा मरहम तयार होता है।

हमेशा काम में आने वाली दवाइयों की कुछ तालिका नीचे दी है। इसमें जो २ क्रम लिखे है प्रायः वेही काम में आते हैं। विशेष २ रोगों में जिन विशेष, २ क्रमों की आवश्यकता होती है उनको रोगों के वर्णन के समय लिखेंगे॥

प्रधान २ औषधियों की तालिका।

औषधि	क्रम	औषध	क्रम
आरम्	६	इउफ्रेसिया	३
आर्सेनिक	६,३०	इग्नेशिया	३
आर्निका	६	एकोनाइट	६
आइरिस्	६	एन्टीमोनियमटार्ट	६
आर्टिका	६	एन्टीमोनियमक्रूड	६
इपीका	३	एसिड नाइट्रिक्	३

औषधि	क्रम	औषध	क्रम
ᐧ्रसिड फास्फोरिक	६	ग्रायओनिया	६,३०
ᐧर्विस	६	वेराट्रम-एल्बम	६
ᐧोपियम	३	वेराट्रम विरिड	६
ᐧमोमिला	१२	मार्कुरियस-कर	६,३०
ᐧालि-ब्राइयड	३	मार्कुरियस-सल	६
ᐧालिबाईक्रोमिकम्	६	मार्कुरियस-ब्राइयड	६
ᐧल्चिकम्	६	मास्कस	६
ᐧालिहाईड्रो	६	रसटक्स	६
ᐧफिया	३	लैकेसिस	६
ᐧयालकेरिया—कार्ब	६,३०	लाईकोपोडियम्	६
ᐧार्वो-वेजीटेबलिस	६,३०	साइलिसिया	६,३०
ᐧालोसिन्थ	६	सलफर	६,३०
ᐧोलिन्सोनियां	६	सिपिया	६
ᐧनाबिस	३	सिना	३,२००
ᐧन्थारिस	६	सिकेलि	६
ᐧकुलस	३	सिमिसिफिऊगा	३
ᐧायना	६	सैबाइना	३
ᐧलसिमिनम्	३	स्पञ्जिया	३
ᐧजिटेलिस	३	स्ट्रामोनियम	६
ᐧसेरा	६	स्टाफिसेग्रिया	६
ᐧकामारा	६	हीपर-सल	६
ᐧसभोमिका	६,३०	हमामेलिस	३
ᐧसेडिला	६	हाईड्रास्टिस	३
ᐧडोफाइलम	६	हायोसायमस	६
ᐧसफोरस	३	हेलीबोरस	३
ᐧडोना	३		

आवश्यकीय २४ औषधियों के नाम ।

औषधि	क्रम	औषधि	क्रम
१ आर्सेनिक	६	१३ पलसेटिला	६
२ आर्निका	६	१४ फोस्फोरस	३
३ इपीकाक	३	१५ बेलेडोना	३
४ एकोनाइट	६	१६ ब्रायओनियां	६
५ कैमोमिला	१२	१७ वेराट्रम	६
६ कफिया	३	१८ मार्कुरियस सल	६
७ कैलकोरिया-कार्ब	६	१९ रसटक्स	३
८ कार्ब वेजिटेबिलिस	६	२० सलफर	६
९ चायना	६	२१ साइलिसिया	६
१० जेलसिमिनिम	३	२२ स्पञ्जिया	३
११ ड्रसेरा	६	२३ सिना	६
१२ नक्सभोमिका	६	२४ हीपर-सलफर	६

लगानेकी औषधि ।

औषधि	औषधि
आर्निका	केलेन्डुला
केन्थेरिस	रसटक्स
हमामेलिस	लिडम

रुबिनिका स्पिरिट केम्फर

६ अध्याय।

साधारण रोग —(क) रक्तविकारके रोग

चेचक।

चेचक साघातिक और सक्रामक रोग है, अर्थात् बहुधा इस रोगसे पीडितहोकर विशेष आदमी मरतेहैं और छूनेसे एक दूसरेकेभी होजाताहै। हमारे देशमें खासकर उत्तर पश्चिम प्रदेशमें यह रोग बडे जोरसे फैलताहुआ देखा गयाहै। रोगी के पहिने हुए कपडे इत्यादि द्वारा यह रोग एक स्थान से दुसरे स्थान में बहुत दुर तक जा पहुंचता है। यह भीषण रोग प्रत्येक अवस्था और प्रत्येक जाति के लोगों को होता हुआ देखा गया है।

लक्षण—इस रोगकी तीन जुदी २ अवस्था है। (१) अप्रकाशावस्था। चेचक का बीज लगजाने के १०। १२ दिन बाद शरीर में रोगके लक्षण दीख पडते हैं। (२) आक्रमणावस्था। इस समय सर्दी से या कपकपी लगकर बुखार आता है और क्रमश शरीर की गर्मी १०४ डिगरी से १०६ डिगरी तक होजाती है, इस ज्वर को मुख्य ज्वर कहते हैं। ज्वर के साधारण लक्षणों के साथ पेट में दर्द, जी मिचलाना या कष्ट दायक उलटी होना, सब शरीर में विशेष कर पीठ में और कमर में दर्द, शिरमें दर्द, चेहरे की लाल रंगत और कभी २ इसके उपरांत स्पष्ट स्नायविक लक्षण जैसे बेचैनी, बकना, बायटे आना, भनाभना इत्यादि दीख पडते हैं। बहुधा इस अवस्था में गले में दर्द होता है, और नाक से पानी बहता है। (३) स्फोटावस्था अर्थात्

फुंसी निकलना। चेचक की फुसी पहिले पहिल तीसरे दिन और यदि देर होतो चौथे दिन निकलती हैं। पहिले चेहरे पर विशेष ललाट पर दिखाई पडती हैं और दोही एक दिन में तमाम शरीर में फैलजाती हैं। फुन्सियों की सख्या सबको एक समान नहीं होती और जगह की अपेक्षा चेहरे परही अधिक दिखलाई पडती है।

चेचक की फुन्सिया आदि से लेकर अन्ततक नीचे लिखी हुई जुदी २ आकृति धारण करती हैं। पहिले उज्वल लाल रंग के दाग की तरह और तीसरे वा चौथे दिन धीरे २ ऊंची होकर चमडे के नीचे सरसों के समान अथवा बन्दूक के छर्रे की तरह दाबने से कडी मालूम होती हैं। इन फुन्सीयों में भीतर जल्द ही बहुत साफ पानी सा एकत्रित होजाता है। और प्राय पांचवे दिन उनके भीतर पीव पैदा होकर ऊपर दाग सा ऐसा मालूम होता है मानों दबा दिया गया है। पीव अच्छी तरह से इकट्ठा होजाने से ऊपर का दबा हुआ सा गड्डा मिटजाता है। और सब फुन्सीयां पूरी गोलाकार या ऊपर की तरफ अधिक उठी हुई दिखलाई पडती हैं। आठवें दिन पककर फूटजाती है और मवाद निकलजाता है अथवा यदि नहीं फूटती तो योंही सूखजाती हैं। फुन्सिया सूखजाने पर ग्यारहवे या चौदहवे दिन उनको खुरन्ट उचलजाता है। उनके नीचे का दाग सात आठ सप्ताह तक रहता है। यदि चमडा नष्ट होजाय तो फुन्सी के नीचे के स्थान में हमेशा के लिये गड्डा सा रहजाता है।

फुन्सीयों की सख्या के अनुसार ऊपर लिखे हुए लक्षणों कम या ज्यादा होते हैं। यदि फुन्सीयों की संख्या अधिक

होतो शिर चेहरे और कभे कुछ फूल से जाते हैं। और इन सब जगहों में लपकनसी मालूम होती हैं। आखों के पलक इतने सूजजाते हैं कि बिलकुल बन्द होजाते हैं। चमड़े के ऊपर फुन्सियों के बीचका स्थान उजले रंगका होजाता है और सब जगह बड़ा दर्द मालूम होता है। रोगी के शरीर से एक प्रकार की तेज दुर्गन्ध निकलती है। इसी से चेचक का रोगी पहिचाना जाता है।

फुन्सीयां मुह और गले के अन्दर भी निकलती हैं इसलिये गले और मुहमें दर्द होता है, लार बहुत गिरती है और निकलने में कष्ट होता है। नाक से पानी गिरता है। श्वास नली के बीच में फुन्सी निकलने से आवाज बैठना खांसी और श्वास कष्ट उपस्थित होते हैं, और पेशाब करते समय बहुत जलन होती है। चेचक रोग में उदरामय होते हुए अकसर देखागया है। आख के भीतर फुन्सी निकलने से घाव होजाता है और हमेशा के लिये दर्शन शक्ति जाती रहती है। चेचक रोगमें दो प्रकार का ज्वर होते हुए देखा गया। फुन्सी निकलने से पहिले जो ज्वर उपस्थित होता है उसको मुख्य ज्वर कहते हैं। फुन्सी निकलने के साथ २ यह ज्वर कम होजाता है। और शरीर की गरमी लगभग स्वाभाविक होजाती है। इस ज्वरके बारे में पहिले लिखा जाचुका है। फुन्सीयों में मवाद पैदा होने के साथ ज्वर फिर बढ़ता है। इसको गौण या फुन्सीयों के कारण ज्वर कहाजाता है। इस ज्वर के लक्षण यह है पहिले सर्दी या कपकपी, नाडी तेज, बहुत प्यास, जीभ और मुह सूखी हुई और शरीर की गरमी १०४ या १०५ डिगरी तक होती है।

विपदाशङ्का—फुन्सियों में मवाद पड़ने के कारण गौण ज्वर उत्पन्न होने के समय आठवें और तेरहवे दिन के भीतर विशेष कर ग्यारहवे दिन मृत्यु की आशङ्का अधिक होती है। वेगपूर्वक ज्वर, अत्यन्त दुर्बलता, श्वास कष्ट, खून की हालत विगड़ी हुई, खून वहना आदि कारणों से मृत्यु होती है। बच्चे और वृद्ध लोग इस रोग से बीमार होकर मुश्किल से बचते हैं। चेचक के साथ जो उपसर्ग होते हैं कभी २ वह साघातिक आकार धारण करते हैं, जैसे फेफड़े का रोग, फेफड़ा, वायुनली, फेफड़े को ढकने वाली झिल्ली और आत इत्यादि में प्रदाह और उदरामय, तरह २ से शरीर के जुदे २ हिस्सों में प्रदाह, घाव, फुन्सीया और फोड़ा, पेशाव और योनिद्वार तथा मुह से खून वहना, आखों में घाव और इसी कारण दिखलाई न पड़ना, कान से मवाद निकलना इत्यादि उपसर्गों के कम अथवा अधिक होने से रोग का सामान्य अथवा साघातिक आकार अनुमान किया जाताहै।

चिकित्सा:—

१। मुख्य ज्वर—एकोनाईट, वेलेडोना, वेपटिसिया, वेराट्रम-विरिडि।

२। स्फोटावस्था (फुन्सी निकलने की हालत)—एन्टिमनि टार्ट, थूजा, सारासिनिया, सलफर।

३। पूयोत्पत्ति अवस्था (पीव पैदा होने की हालत)—एन्टिमोनिटार्ट, मार्क्युरियस साव, एपिस, लेकेसिस।

४। स्फोट अर्थात् फुन्सीयों का बैठजाना—केम्फर, सल्फर।

५। उपसर्ग सकल (सब उपसर्ग)—फोसफोरस,

एन्टिमोनि टार्ट (फेफड़े में प्रदाह), एकोनाइट ब्रायग्रोनिया (फेफड़े के रक्तकी अधिकाई), ब्रायग्रोनिया, कालिबाई, क्रमिक्रम (वायुनली में प्रदाह), रसटोक्स (पीठ में अत्यन्त दर्द), मार्क्यूरियस (गांठ का फूलना), एपिस, वेलेडोना (सूजन, आख बन्द होना गले के भीतर सूजन), वेलेडोना हायोसायमेस, स्ट्रामोनियम, विरेट्रम विरिड (बकने में),

एकोनाइट ३.६ शक्ति—कम्प, उत्ताप, शरीर सूजना, नाड़ी तेज, शिर दर्द, उबकाई वा उल्टी, कमर और पीठमें दर्द, अत्यन्त वेचैनी और मृत्यु भय। पहिली और दूसरी अवस्था में दियाजाता है, लेकिन यदि ज्वर अधिक हो तो सब हालतों में दे सके हैं। ज्वर के साथ बहुत तकलीफ और नाड़ी बहुत तेज, बहुत तेज ज्वर और साथ ही असह्य दर्द और वेचैनी होतो एकोनाइट के परिवर्तन में विरेट्रम विरड दीया जाता है।

एन्टीमोनीटार्ट—३० शक्ति—चेचक रोग की यह प्रधान दवा है। चेचक रोग मालूम होते ही यह दवा शुरू की जाती है। यह दवा फूंसियों की हालत में बहुत फायदा करती है। मुख्य ज्वर के साथ यदि जी मिचलाना और उल्टी तथा आक्षेप इत्यादि उपसर्ग हों तो इस दवा को देते हैं। चेचक रोग की प्रायः सब अवस्थाओं में यह एक मात्र दवा दीजासकी है अथवा यह और किसी औषधि के साथ पर्यायक्रम से [एक के बाद एक] व्यवहार की जाती है।

वेलेडोना ६ शक्ति—रोग की पहिली हालत में तेज ज्वर के साथ मस्तिष्क लक्षण तथा मस्तिष्क में रक्त की

अधिकता, वकना, रोशनी असह्य मालुम होना, पीठ में बहुत दर्द, फुन्सी बैठने को हो, चर्म और मुह सुजा हो, सराटे के साथ खासी, पेशाव करते समय दर्द, सोने की इच्छा रहने पर भी नींद न आना और आखों में जलनहो इत्यादि लक्षणों में यह दवा दीजाती है। रोग के अन्त में फुन्सी सुखकर जब खुरन्ट उचलता हो और सुरसुराहट हो तो वेवेडोना देनेसे खुजली मिटजाती है।

मरक्यूरियस ३, ६,३० शक्ति—फुन्सी पकजाय और इसी सवव से ज्वर हो तो यह दवा दीजाती है। मुह से लार गिरना, गले में घाव, श्वांस में वदवू, खून के साथ उदरामय, सुजी हुई नरम और शिथिल जीभ, जीभ में दातों के दाग पडजाय, पसीने आना किन्तु तव भी कुछ चैन मालुम न पडना।

एपिस-मेल ६,३० शक्ति—वहुत ज्वर और साधारण हिलने से ठंड मालूम होना, चमडा और गले में विसर्प (एक तरह का जहरीला प्रदाह) की तरह लाल रगत, और सुजन तथा उसके साथ चवके मारने का सा जलन, जलन पैदा करने का दर्द, टॉसिल गाठ और गले में सूखे हुए घाव, जी मिचलाना और उलटी आना, पेशाव वन्द, श्वास कष्ट साथही वेचैनी और कपकपी ॥

आर्सेनिक ६, १२ ३०, शक्ति—अत्यन्त दुर्वलता और साथमें जलन पैदा करने वाला उत्ताप तथा अत्यन्त वेचैनी, नाडी तेज, क्षुद्र और कांपती हुई, हृत्पिण्ड की क्रिया वहिम्माव, जीभलाल सूखी और फटीहुई, मूहे सूखाहुआ, अत्यन्त प्यास, वार २ लेकिन थोडा २ पानी

पीना, श्वास कष्ट, इधर उधर करवट लेना, अत्यन्त उदरामय, विकार के लक्षण।

वेपटिशिया —अत्यन्त सिरमें दर्द, जीमिचलाना, पीछे उलटी होना, अत्यन्त कमजोरी और पीठ के नीचे की तरफ अत्यन्त दर्द, चमडे की अपेक्षा गले में बहुत फुन्सी निकलना, बदबूदार श्वास और बहुत लार गिरना, चेहरे की काली रंगत, श्वास कष्ट और अत्यन्त स्नायविक अस्थिरता (बेचैनी), आमाशय रोग की तरह मल, शरीर से निकलने वाले सब पदार्थों में बदबू। प्राय इस दवाकी नीचे की शक्ति व्यवहार में लाई जातीहै।

हायोसाइमस ॥ ३, ॥ ३० ॥ शक्ति —फुंसियों के निकलने में देर और उसी कारणसे स्नायविक उत्तेजना, बिछौने से उठनेकी चेष्टा करना, लाल रंग की चमकती हुई आंखें और पलक न मारना, गले में सुकडन मालूम पडना, निगलने की शक्ति न रहना, रात में बेमालूम दस्तनिकलजाना, पेशाब बन्दहोना, दांत किडकिडाना।

लेकेसिस ६, ३० शक्ति—नींद के बाद सब लक्षणों का बढना, बेहोशी और गुनगुनाहट के साथ बकना, जीभ सूखी हुई, लाल या काली रंगत की, फटी हुई जिसमें से खून बहताहो, श्वास निकालने समय छाती में दर्द मालूम होना, पानी पीते में कष्ट, निगलते समय कण्ठ में सुई चुभोने का सा दर्द, गले की गांठों में पीब पैदा होजाना, शरीर की सडने किसी हालत, काले रंग का पतला खून गिरना।

ओपियम ३, ३० शक्ति—बिलकुल ज्ञान शून्यता, साथही घर्राटे के साथ श्वासे आना जाना, चेहरा काले रंग का, गरम और सूजाहुआ, बिछोना गरम मालूम होना, अतएव बिछोने पर न सोसकना, कष्टदायक और रुद्ध कर सांसलेना, पेशाब रुकना, बिछाने समेटना। यह दवा बच्चों बूढ़ों के लिये बहुत फायदेमन्द है।

सलफर ३० शक्ति।—यह दवा रोगकी अस्वाभाविक अवस्थामें बहुत फायदा करतीहै। अचानक फुन्सियोंका लोप होजाना, फुन्सियां पीले रङ्गकी नहोकर लाल हरे वा काले रंगकी होना, फुन्सिया फूटने पर रोगकी खुजली रोकनेके लिये अन्तिम अवस्थामें यह दवा बहुत फायदा करतीहै।

रसटाक्स ६, ३०—बैठनेसे वा लेटनेसे पीठमें चोट लगने कासा दर्द मालूमहोना, हिलनेसे आराम मालूम होना, थकना और बिलकुल गिरा पड़ासा रहना, ऐसे स्वप्न देखना मानों शारीरिक परिश्रम करतेहैं। लालिपन लिये हुये चेहरेकी लाल रङ्गत, जीभके आगेका हिस्सा तिकोने आकारका और लाल रंग, फुन्सिया सब सुकड़ी हुई और फीके रंगकी, लिसी हुई चेचकके कारण टाईफोयड अवस्था।

थूजा ३, १२ शक्ति।—कपाल, रंग और आखोंके ऊपर कील चुभाने कासा दर्द। आखें खूनकी तरह लाल रंगकी। फुन्सियोंके चारों तरफ स्याही लिये हुये लाल रंग का घेरावाला (फोड़ोंके चारों तरफ लाल रंगका घेरा), गलेमें दर्द और खुश्की, बैठे रहने से सेफरम, कोदिसक्स और

दोनों छातियोंमें खिंचावटका सा दर्द, यह दवा मवाद पैदा होनेके समय बहुत फायदा करती है ।

प्रतिषेधक उपाय—(रोकनेके उपाय) टीका लगनाही सब से अच्छा रोकनेका उपायहै । इसके सिवाय खानेके लिये भी बहुतसी औषधियां व्यवहारकी जातीहैं, उनमेंसे प्रधान नीचे लिखतेहैं —

(१) मिलान्ड्रीनम ३० शक्ति ।—रोकने वाली अच्छी दवाहै ।

(२) वेक्सिनिन् ६,१२ शक्ति।—चेचक होनेका भय इस औषधिका प्रधान लक्षणहै । चेचक फैली हुईहो उस समय दो तीन दिनके अन्तरसे १ मात्रा सेवन करनी चाहिये । इसके बाद सलफर दी जातीहै ।

(३) सैरासीनिया ।—इस दवामें चेचक रोकने और आराम करनेकी दोनों शक्तियांहैं । बहुतसे चिकित्सकोंने इस दवा का प्रतिषेधक रूपसे व्यवहार कर अच्छा फल पायाहै । इसके सिवाय वेपटीशिया, हाईड्रास्टिस, एन्टिमटार्ट और सिमिसिफिउगा चेचक आराम करने के लिये दीजातीहै ।

सहकारी उपाय—चेचक के रोगी की सेवा तथा और २ नियमों के विषय में पूरा ध्यान रखना चाहिये । जिस मकान में रोगी हो वह हवादार बड़ा और कुछ अन्धेरा होना चाहिये । जाडेके दिनों में मकान कुछ गरम रखना अच्छा है । बिछोने आदि कपडों को बहुत साफ रखना चाहिये ताकि उनमें बदबू नहो । बिछोने की चद्दर को हमेशा बदलकर पानी से धोडालना चाहिये । दुर्गन्ध मिटाने वाली और संक्रमण निवारक अर्थात् छूत को मिटाने वाली औषधियों को जल में मिलाकर घर में तथा

विछौने के ऊपर छिडकना चाहिये । इसके लिये पुटांस परमैङ्गनेट, कार्वोलिक एसिड आदि बहुत अच्छे हैं । चिकित्सक लोग तथा रोगी की सेवा करने वाले लोगों को जितनी बार रोगी के शरीर को छूए उतनी ही बार लोशन से हाथ धोने चाहिये।

थोडे गरम पानी में कार्वोलिक एसिड मिलाकर कभी२ रोगी के शरीर को पोंछ देना चाहिये। जब फुन्सियां फूटजावें तब कार्वोलिक एसिड मिले हुए पानी से शरीर धोडालाजाय तो खुजली मिट जाती है और फुन्सियां सूखजावें तब शरीर में तेल मलकर गुनगुने पानी से स्नान कराया जाय तो खुंट उतर जाता है । फुन्सीया पकजाने पर यदि बहुत कडी हो तो गरम पानी से भिगोकर सुईसे उनको तोड देने से तकलीफ कम होजाती है।

गले की श्लैष्मिक झिल्ली में यदि अधिक प्रदाह हो तो मुह में वरफ का टुकडा डालने से बहुत चैन मालूम पडता है । एकही बगल के लेटे रहने से रोगी की पीठ आदि स्थानों में घाव न होजाय इस लिये हमेशा करवट बदलवाते रहना चाहिये।

चेचक के दाग न पडजाय इसलिये बहुत होशियारी के साथ चिकित्सा करना उचित है । बहुत बारीक सुई से फुन्सीयों को फोडदेने के उपरान्त और सर्वदा कार्वोलिक लोशन से धोनेपर दाग पडने की बहुत कम सम्भावना है। यह स्मरण रखना चाहिये कि यदि फुन्सियां चमडे के ऊपर२ कम गहरे स्थान में उत्पन्न हों तो बहुत कम दाग पडेगा। चमडे के गहरे स्थान में फुन्सीयों होने से फिर दाग

पडना रोका नहीं जा सकता है।

पथ्य—हलका पथ्य जैसे बारली, अरारोट, दूध इत्यादि देना चाहिये। पीने के लिये जितना चाहे पानी दिया जा सकता है। दाल, रोटी, चावल, खिचडी आदि रोग आराम होने की अन्तिम अवस्था में धीरे२ दिया जासकता है।

संक्रमण निवारण छूत (मिटाना) छूत मिटाने का सब से अच्छा उपाय यह है कि रोगी के कपडे और बिछौने वगैरह सब जलाडाले जांय। यदि जलाये न जासकें तो पानी में खूब ओटाकर उनको अच्छी तरह धो डालना चाहिये। जिस घरमें रोगी रहा हो उसके खिडकी दरवाजे सब बन्द कर गन्धक जलावे। सब जगह कार्बोलिक लोशन छिडके और दीवारों पर सफेदी करादे॥

चेचक के भेद—हमारे देश में इस रोग का सर्वत्र एक नाम नहीं है, जुदे २ प्रान्तों में बसन्त, चेचक, माता आदि जुदे२ नामों से यह रोग पुकारा जाता है। इसकी साधारण और भीषण अवस्थाके अनुसार छोटी माता, बडी माता, मोटी माता, इत्यादि कहते हैं। प्रचलित भाषा में नियमित नाम नहोने से इसके भेदों को वरणन करने में कठिनाई पडती है, अतएव अंग्रेजी चिकित्सा के अनुसार जो जुदे २ नाम दिये गये हैं उन्हीं को लिखना पडा है।

चिकिन्पोक्स।

यह रोग सक्रामक तो है परन्तु सांघातिक नहीं है। प्रथम देखने में चेचक के समान होता है यहां तक कि चेचक का ही भ्रम होजाता है किन्तु चेचक की अपेक्षा

इस का जोर बहुत कम होताहै इसही लिये शारीरिक उपद्रव भी कम दिखलाई पडते हैं ।

कारण—बहुत से इस रोग को चेचकहीका दूसरा आकार समझते हैं किन्तु यह बात अच्छी तरह से प्रमाणित होगई है कि यह रोग जुदे २ हैं । चेचक के समान इसका बीज भी एक स्थान से दूसरे स्थानमें पहुंच जाता है । सक्रामक होने परभी यह दोनों रोग जुदे २ हैं । अक्सर ऐसा देखागया है कि इससे चेचक उत्पन्न होजाती है टीका लगाने से भी यह नहीं रुकता विशेषकर बालकों को ही होताहै परन्तु कभी २ जवान आदमियों को भी होते हुये देखा गया है ।

लक्षण।— (१) अप्रकाशावस्था ।—यह अवस्था (अर्थात बीज ग्रहण और शरीरमें रोगके लक्षण प्रकाशित होने के पहले तक) प्राय बारह दिन तक ठहरताहै किन्तु कभी कभी १० दिनसे १६ दिन यह हालत रहतीहै । इस समय कोई लक्षण प्रकाशित नहीं होते ।

आक्रमणावस्था (२)—कभी २ यह अवस्था होती ही नहीं। एक दम फुन्सीया निकल पडतीहै । कभी २ फुन्सीयोंके निकलनेमें २४ वा २६ घन्टे पहिले थोडा बुखार, शिर दर्द, खांसी आदि लक्षण उपस्थित होतहे ।

स्फोटावस्था (३) (फुन्सी निकलनेकी हालत)।—फुन्सियां च्यार पाच दिनमें निकल आतीहैं । कभी कभी दस १२ दिन भी लग जाते हैं । यह फुन्सियां पहले शरीर में अर्थात पीठ और छातीमें निकलतीहै इसके उपरान्त हाथ पैर माथे और कभी २ चेहरे परभी निकलतीहैं । फुन्सियां पहिले मच्छर

के काठे हुयेके समान लाल रंगतकी सी दीख पडतीहैं और फिर धीरे२ कुछ एक घन्टोंमें ही उनके भीतर पानी इकट्ठा होजाताहै। उन फुन्सीयोंमें प्रदाहके लक्षण कुछ नही होते, शरीर पर गरम तेल या पानी पडनेसे जिस प्रकार छोटे२ फफोले पड जातेहैं इसकी फुन्सियां भी ठीक वैसेही होती है। ३ से ५ दिनके भीतर सब पक कर फूट जातीहैं अथवा योंही सूख जातीहैं। फुन्सीयों पर जो खुरन्ट जमतेहैं वेभी ४ या ५ दिनमें उचल जातेहैं। चमडेके गहरे स्थानमें फुन्सीया नहीं होती इस लिये सिर्फ कुछ दिन तक सामान्य लाल सा दाग रहताहै। चेचककी तरह गढे कभी नहीं पडते। इस रोगकी फुन्सिया सब एक साथ नहीं निकल आतीं इसलिये सब एक साथ सूखती भी नहीं। फुन्सी निकलनेके समय रोगीके शरीरमें खुजली चलतीहै इसके सिवाय और कोई उपसर्ग उपस्थित नहीं होता।

यह रोग साधातिक नहीं है अतएव इसका भावी फल भी कभी बुरा नहीं होता। इसका ज्वर प्राय साधारण होताहै, शरीर की गरमी शायदही कभी १०१ डिगरीसे ऊपर उठतीहै। सरदी प्राय रहतीहै। इस रोगसे मृत्युका भय बहुतही कम होताहै।

चिकित्सा।—पथ्यका अच्छा बन्दोबस्त और रोग आराम होजानेके बाद थोडे दिन तक सावधानी से रहने के सिवाय किसी दूसरे इलाज की आवश्यकता नहीं पड़ती। एक मात्र खानेकी औषधि रसटक्स है। यदि ज्वर अधिक तीव्र पडे तो एकोनाइट दिया जासकाहै। फुन्सिया निकलने के समय यदि खुजली बहुत होतो एपिस फायदा करताहै। अधिक सिर दर्द और गलेमें दर्द होतो बेलोडेना देसकतेहैं।

यदि फुन्सियोंमें मवाद पडजावेतो मरक्यूरियस वा एन्टीमोनी-टार्टकी आवश्यक्ता होसकतीहै।

सहकारी उपाय।—रोगीको बहुत हिलाना डुलाना न चाहिये और हलका पथ्य देना चाहिये। पथ्यके लिये दूध सबसे अच्छाहै। शरीरमें तेल मलनेसे खुजलीको बहुत कुछ फायदा होताहै। बच्चोंकी बहुत कुछ सावधानी रखनी चाहिये कि बहुत न खुजा डालें।

टीका।

बहुत दिनों से हमारे देश में नृ-मसूर्य्याधान प्रथा अर्थात मनुष्य देह से चेचक के बीज को लेकर दूसरे देह में प्रयोग करना प्रचलित था। यूरोप में सब से पहिले सन् १७८० ई० में कोन्स्टेन्टीनोपिल नाम नगर में प्रचलित हुई और सन् १७२१ ई० में इङ्गलैन्ड देश में इसका रिवाज हुआ। सन् १८०२ ई० में हमारे देशमें इस प्रथा के बदले गो-मसूर्य्याधान अर्थात गोबीज टीका इंग्रेज गवरमेन्ट ने प्रचलित किया।

गो-मसूर्य्याधान या बीज टीका गाय की चेचक से अथवा गाय की चेचक के बीज से उत्पन्न हुये मनुष्य के देह से बीज लेकर दूसरे देहमें प्रविष्ट कर देने को गोबीज टीका कहते हैं। भयानक चेचक से रक्षा पानेके लियेही यह टीका लगाया जाताहै।

इङ्गलेन्ड वासी माहात्मा जेनरने सबसे पहिले इसको चलाया था। सन् १७९६ ई० में ८ वर्ष के लडके को सबसे पहिले गोबीज टीका लगाया गया। दो तीन महीने बाद उसी बालक के देह में चेचक के बीज को प्रवेश कर

परीक्षा की गई थी किन्तु चेचक के कोई लक्षण प्रकाशित नहीं हुये। हमारे देशमें गोवीज टीका प्रचलित होगया है। गवर्न्मेन्ट ने सर्व साधारण की स्वास्थ रक्षा के लिये प्रत्येक बालक के टीका लगाने का कानून जारीकर दिया है।

प्रतिषेधक प्रभाव—चिकित्सा संसार यह बात सब की सम्मति से निश्चय हो चुकी है कि गोवीज टीका लगाने से चेचक का रोग बहुत रोका जाताहै यदि किसी को हो भी तो प्राण संशय नहीं रहता।

डाक्टर मार्शन ने २० वर्ष में ५००० चेचक के रोगियो को देखकर अपनी सम्मति इस विषय में निम्न लेखानुसार प्रकाशित की है —

वसन्त रोग की जुदी २ श्रेणी।	प्रत्येक श्रेणी की सैंकडे पीछे मृत्यु संख्या।
(१) जिनको टीका नहीं लगा	३५
(२) टीका लगाया गया किन्तु टीके का कोई चिन्ह नहीं	२३ ५७
(३) जिनको टीका लगाया गया उनमें	
(क) जिनको १ टीके का दाग है	७ ७३
(ख) जिनको २ टीके के दाग हैं	४ ७०
(ग) जिनको ३ टीके के दाग है	१ ९५
(घ) जिनको ४ टीके के दाग है	० ५५

इससे स्पष्ट मालूम होता है कि गोवीज टीका देनेसे चेचक रोग की मृत्यु संख्या बहुत कम होजाती है यहां तक कि प्राय नहीं के ही बराबर है। इसके सिवाय और भी देखा गया है जिनको गाय के टीके का दाग जितना

अधिक अगाडी रहा उनको इस रोग से उतनाही कम मृत्यु भय है।

टीके का बीज—गाय की चेचक का बीज अथवा उसी द्वारा मनुष्य की देह से उत्पन्न करा हुआ बीज लेकर टीका लगाया जाता है। गोबीज द्वारा टीका लगाने से मनुष्य की देह में कोई दूषित रोग यथा उपदश [आतशक] गण्डमाला, बहुत तरह के चर्मरोग आदि होने का भय नहीं रहता। यदि गोबीज के बदले में मनुष्य बीज व्यवहार करना होतो तो दो बात विशेष ध्यान रखने की हैं—(१) गोबीज द्वारा पहिले जिनके देह में टीका लगाया जावे और उससे लेकर फिर और जितनो के लगाते जांय उतनाही वह कमजोर होता जायगा, इस लिये देखना चाहिये कि जिसका टीके से बीज लिया गया है वह कितने देहों में होता हुआ आया है, (२) जिसका टीके से बीज लिया जाता है उसको स्वयं वा पैतृक (पिता माता से) उपदश की तरह कोई दूषित धातु गत रोग है कि नहीं। इसलिये सम्पूर्ण स्वस्थ और दोष शून्य मनुष्य के देह से बीज लेना चाहिये। यह बात ध्यान में रहे कि बीज लेते समय खून न निकले।

टीका लगाने का समय।—यदि बच्चा स्वस्थ हो तो दांत निकलने से पहिले ही टीका लगाना चाहिये। बच्चे को २ तीन महीने की उमर में ही टीका लगाना उचित है। सामान्य थोडा ज्वर या उदरामय होने से टीका लगाने में देर न करनी चाहिये। यदि चेचक फैला हुआ हो तो सब उमर में ही टीका लगाया जा सका है।

दुवारा टीका लगाना। बचपन में टीका लगायें जाने पर यौवनावस्था के आरम्भ में फिर टीका लगाना चाहिये। १५ वर्ष से १८ वर्ष तक दुवारा टीका लगाने का समय है। जिनको पहिली बार टीका ठीक न लगा हो उनको दुवारा अवश्य टीका लगाना चाहिये। अथवा पहिली बार के टीके में किसी प्रकार का भी सन्देह रहा हो तो दूसरी वार टीका लगाने से न रुकना चाहिये।

टीका लगाने का स्थान। दोनों बाहों में चमड़े को खींच के एक२ बाहों में दो २ जगह के हिसाब से कुल चार जगह टीके लगाने चाहिये।

चिकित्सा। टीका लगाने के बाद टीके के स्थान की खुजली से रक्षा करनेके सिवाय और किसी चिकित्सा की बहुधा आवश्यका नहीं होती। यदि टीके के स्थान में बहुत जलन हो तो गीला कपड़ा उस पर रख देना अच्छा है। टीका लगाने के बाद ज्वर होता है, यदि ज्वर सामान्य हो तो किसी औषधि की आवश्यकता नहीं। किन्तु यदि ज्वर वेग पूर्वक आवे और टीके के स्थान में अत्यन्त जलन हो तो 'बेलेडोना' अथवा 'एकोनाईट' देना चाहिये। टीका सूख जाने के समय दो एक मात्रा सलफर देना अच्छा है। टीका देने के बाद यदि किसी प्रकार का उपद्रव यथा उदरामय आदि उत्पन्न हो तो सायलेशिया फायदा करता है। टीका जल्दी सुखा देने के लिये उसके ऊपर कोई दवा लगाना उचित नहीं। टीकेके ऊपर सफेद चन्दन को घिसकर लगा दिया जा सक्ता है, उस से जलन की जगह तर रहती

है। जितने दिन ज्वर आदि कोई प्रवल उपसर्ग रहे उतने दिन पथ्य की ओर दृष्टि रखना चाहिये।

मीज़िल्स।

(इस को कोई२ खसरा भी कहते हैं)

सब प्रकार के स्फोट ज्वरों में यह एक अति सामान्य और सर्वव्यापी ज्वर है। यह भी सक्रामक रोग है। घर में एक को होने से सब को ही होना सम्भव है। यह सब अवस्थाओं में हो सकता है लेकिन विशेष कर बच्चों को ही होता है। यह रोग हमारे देश में मारात्मक (मारने वाला) कभी नहीं होता है। लेकिन कभी २ इस के पीछे होने वाले उपसर्ग बडे कष्टदायक हो जाते हैं। यह रोग होने के साथही मास्तिष्क वा फेफडे में गडबड होकर जीवन का संशय हो जाता है।

लक्षण— इस में तीन प्रधान २ अवस्था दीख पडती हैं.—

(१) अप्रकाशावस्था।-प्राय आठ दिन तक रहती है। लेकिन कभी २ छे दिन से १४ दिन तक रहती हुई देखी गई है। इस अवस्था का किसी प्रकार लक्षण प्रकाशित नहीं होता।

(२) आक्रमणावस्था।—पहिले अकसर सरदी या कपकपी से ज्वर आता है। साधारणत ज्वर बहुत ज्यादा नहीं होता। शरीर की गरमी १०१ या १०२ डिगरी होती है किन्तु कभी २ ज्वर अत्यन्त प्रवल होकर १०४ तक हो जाता है। सरदीके लक्षण ही सब से स्पष्ट प्रकाशित और प्रवल होते हैं। आखों की रगत लाल और पानी भरा

हुआ, आंखों में दर्द और किरकिराट, रोशनी से चौधा मालूम होना, पलक कुछ२ लाल और सूजे हुये रहत हैं, नाक से बराबर पानी गिरता रहता है और छींक आती है, हमेशा खासी रहती है, सांस जल्दी आता जाता है, पेट और गले में दर्द और स्वर भग आदि लक्षण भी दीख पडते हैं। यह अवस्था तीन दिन से ५ दिन तक रहती है साधारणत: ४ दिन तक रहती है।

(३) स्फोटावस्था।—शरीर पर फुन्सियां प्राय चौथे दिन निकल आती हैं। कभी२ सात आठ दिन की देर भी हो जाती है। साधारणत चेहरे पर विशेष कर ललाट पर पीछे शरीर में और सब से पीछे हाथ पैरों में प्रकाशित होती हैं। यह इतना साधारण रोग है कि इस का वर्णन विशेष करने की आवश्यक्ता नहीं।

फुन्सियां जैसे२ निकलती जाती हैं वैसे ही वैसे सर्दी के लक्षण ज्वर चढता जाता है तथा शरीर में खुजली और जलन मालूम होने लगती है। नाडी की गति प्रति मिनिट १०० से १४० यहा तक कि १६० तक हो जाती है और शरीर की गरमी १०४ से १०६ डिगरी तक होते हुए देखी गई है। अक्सर शरीर की गरमी १०२ वा १०३ डिगरी से ऊपर नहीं होती। इस हालत में नाक मुह और गले में जलन भी बहुत होने लगती है।

फुन्सिया पूरे तौर पर निकलने पर प्राय: दूसरे दिन से मिटने लगती हैं। फुन्सियों के मिटने के साथही शरीर की गरमी कम होने लगती है। नाडी की गति धीमी होने लगती है और सर्दी के लक्षण भी घटने लगते हैं। फुन्सियां निकलने के समय जिस स्थान में और

जिस समय निकली थीं मिटने के समय भी क्रमसे एक के बाद १ उसी स्थान में मिटने लगती हैं। फुन्सिया लोप होने के समय शरीर से पतले२ खुरन्ट उचलने लगते हैं और रोगी को आराम होने लगता है।

परवर्ती (पीछे होने वाले) उपसर्ग।---इस रोग के बाद इस के साथ के बहुत से रोग उपस्थित हो जाते हैं। इस रोग के आराम होने पर भी बाजे बक्त यह सब रोग कष्टसाध्य हो जाते हैं। इन में नीचे लिखे हुये प्रधान हैं—

(१) श्वास यन्त्रों के रोग, जैसे खांसी, फेफडे में प्रदाह, यक्ष्मा की खासी इत्यादि। (२) बहुत से स्थानों में प्रदाह जैसे आख, नाक, कान इत्यादि और उन से पीव गिरना। (३) कधा, बगल आदि शरीर के जुदे२ स्थानों की गाठों में प्रदाह होना। (४) उदरामय, कभी२ यह उदरामय पुराने उदरामय के समान आकार धारण करता है।

चिकित्सा।---एकोनाईट खसरा निकलने के पहिले ज्वर और सर्दी के लक्षणों में फायदा करती है। यह ज्वर को कम करती है और रात्रि के समय खांसी और ज्वर के कारण जो बेचैनी होती है उस को रफा करती है। यदि फुन्सिया देर से निकले या बैठ जाय और अत्यन्त प्रबल ज्वर के साथ निद्रालुता और वांयटे आने का ढग मालूम हो तो 'जैलसीमीनम' देना चाहिये। मस्तिष्क या स्नायुविक उत्तेजना और उस के साथ२ वांयटोंकी अधिकाई हो, किंवा फेफडे के रक्ताधिक्य (रक्त की अधि-

काई) होने का भय होय तो 'विरेट्रम विरिड' फायदा करता है। खसरे की पहिली हालत में यदि कंठ या गले के भीतर उत्तेजना, खुशकी और ठहर २ कर आक्षेपयुक्त खांसी, थकना इत्यादि लक्षण उपस्थित हों तो बेलेडोना फायदा है। नाक और आखों में सरदी के लक्षण यथा लगातार बहुत पानी गिरना, आखों में दर्द होना आदि लक्षण हों तो, 'यूफ्रेसिया' देना चाहिये। सूखी खांसी यूफ्रेसिया का प्रधान लक्षण है। सूखी खांसी स्फोटावस्था के प्रारम्भ में स्नायविक उत्तेजना, पाकाशय की गड़बड़ हो तो 'पलसेटिला' देना चाहिये। फुन्सिया यदि और रंगत की हों अथवा वे समय में बैठ जाने को हों और विकार के लक्षण दीख पड़ें तो 'आमोनिया' देना चाहिये।

एकोनाइट ६ शक्ति। अत्यन्त प्रबल ज्वर, नाड़ी पूर्ण कठिन और तेज, अस्थिर निद्रा, नींद के समय में हाथ पैर चलाना और चमक उठना, नाक की जड़ में बहुत बोझ मालूम होना, दांत किडकिडाना, छाती में सुई चुभौने वाला दर्द सरदी और छींक, पाकाशय और आन्तों में दर्द, साथ ही उलटी और उदरामय।

एपिस १२ शक्ति। एक स्थान में बहुत सी फुन्सी निकलना और चमड़े का सूजना, आखों के पलकों का सूजना, लाल रंगत, अत्यन्त लाल रंग की फुन्सी. आंतों में सरदी के लक्षण और उदरामय, दुर्बलता और थकना।

आमोनियम कार्ब ६ शक्ति। नाक रुकी हुई और जलन पैदा करने वाला पानी गिरना गले के भीतर

फांस पडना और वार२ खखारने की इच्छा करना, आधी रात के बाद खासी बढना फुन्सियां बैठ जाने के कारण श्वास कष्ट, बच्चे का सोते २ चमक उठना, ऐसा मालूम होना मानों श्वास नहीं लिया जाता, सांघातिक दुर्बलता ।

बेलेडोना ६, ३० शक्ति । क्रमागत निद्रालता अथवा आंखें झुकी पडना परन्तु नींद न आना, चेहरा और आखों का लाल रंग, सोते समय चौंक उठना और उछल पडना, नाक की खुशकी, सिर दर्द, बार २ छींक, गले में दर्द और स्वर भंग, सूखी आक्षेप युक्त और स्वरभंग के साथ खांसी, रात में खासी का बढना, थोडे कारण से ही सब इन्द्रियों का अधिक उत्तेजित होना, बांयठे आना ।

ब्राइओनियां ६ शक्ति । सूखी तकलीफ देने वाली खांसी और साथ ही गले में खुशकी मालूम होना, अत्यन्त श्वास कष्ट और जल्दी सांस चलना, फेंफडे में रक्त अधिक होना, छाती में चबके चलना या सुई सी चुबना, गहरी सांस लेने में या छोडने में इस दर्द का बढना, खांसते समय पेशाब निकल जाना, सब शरीर में गठिया के बात समान दर्द होना, फुन्सियों का बैठ जाना और उसी कारण अत्यन्त दुर्बलता और ज्वर, कबजियत, बिछौने से उठ बैठने पर जी मिचलाना और मूर्छा ।

जेलसिमियम १,३,३० शक्ति । मेरु दण्ड में सरदी लगना, छींक आना और नाक में विशेष कर बायें नथने का सुरसुराना, दाहिने नथने का बन्द रहना, बायें नथने से श्लेष्मा गिरना और जलन आखों में दर्द मालूम

होना, निगलनेके समय कानमें दर्द, गलेमें दर्द और श्लेष्मा इकट्ठा होना, बहुत कष्ट देनेवाली खांसी, ज्वर के साथ बहुत झपकी लगना (नींद सी आना), फुन्सी बैठ जाना और मस्तिष्क विकार के लक्षण। सर्दी के लक्षण अधिक रहने से निम्न क्रम, मस्तिष्क और स्नायुमण्डल आक्रान्त होने से उच्चक्रम दिया जाता है।

इपीकाकूआना ६ शक्ति। सरदी और सुरसुराहट के साथ खांसी, गले में कफ घरांना, बहुत जी मिचलाना और उलटी होना, फुन्सी निकलने में बिलम्ब और सांस लेने में तकलीफ। यह दवा बच्चों को बहुत फायदा करती है।

मरक्यूरियस ६ शक्ति —नाक से बराबर पानी गिरना और छींक आना, आखों में जलन और पानी गिरना, टॉन्सिल गांठों में प्रदाह और घाव, छींकते में या खांसते में छाती में दाहने तरफ सुई सी चुभना, कब्ज अथवा आम मिला हुआ उदरामय, रक्त मिला हुआ आमाशय।

पल्सेटिला ६ शक्ति —पतला या सूखा कफ, साथ ही बार बार छींके, स्वाद और सूंघने का शक्ति का नाश होना, आखों से पानी बहुत गिरना, रात मैं चक्कर चलना, दाहिने कानमें लपकन होना या फटे जाने कीसी तकलीफ होना, कान में दर्द, कान के भीतर जल गिरने कासा शब्द होना, रातमे या सन्ध्याके समय सुखी खांसी विशेष कर सोने के बाद, गीली खासी और उबठाके साथ कफ निकलना तथा रात्रि में उदरामय, पाकाशय की गड़बड़। खसरा निकलने के

बाद गीली खांसी पुरानी होजाने पर यह दवा बहुत फायदा करती है।

सलफर ३० शक्ति।—फुन्सियां बैठ जाने के समय और जरूरत पड़ने पर बीच २ में एक एक मात्रा दी जाती है। शाम के वक्त सोने से सूखी खांसी, कान से पुराना पीव गिरना और पुराना उदरामय।

पीछे होनेवाले उपसर्गों की चिकित्सा—

चक्षु प्रदाह [आंखों में जलन]—मरकुरियस कर, सलफर, हीपर-सल, एकोनाईट, वेलेडोना।

कान बहना वा बहरापन।—पलसाटिला, सलफर, साईली शिया, मार्कुरियस, हीपर-सल।

गांठ फूलना।—मरकुरियस-आइयोड, केलकेरिया-कार्व, लाईकोपोडियम।

फेफड़े में प्रदाह।—फासफोरस, एन्टीमनी-टार्ट।

पुरानी खांसी स्वर भग इत्यादि।—फासफोरस, हीपर सल, काली-बाईक्रोमिक, स्पञ्जिया, आर्सेनिक, कस्टीकम, कार्बो वेजिटेबिलिस, सलफर।

चर्मरोग।—सलफर, आइयोडियम, आर्सेनिक।

अत्यन्त दुर्बलता।—चायना, एसिड-फास्फोरिक।

प्रलाप।—हायोसायमस, एपिस, वेलेडोना।

प्रतिषेधक उपाय।—रोगी से छुआ छूत न करना ही इस रोग से बचे रहने का सबसे अच्छा उपाय है। ज्वर और फुन्सियां बैठ जाने के ... छूत से बचना चाहिये। किसी ...

सेट्रिला दिन में दो बार सेवन करनेसे इस रोग का भय नहीं रहता।

सहकारी उपाय। जब तक फुन्सियां न बैठ जावें और शरीर बिलकुल ठीक न हो जाये घर से बाहर जाना उचित नहीं। रोगीके घर में कुछ अन्धेरा तो जरूर हो किन्तु अच्छी तरह हवा के आने जाने के लिये मार्ग रहना चाहिये। बिछौने की चादर, पहिनने के कपड़े हमेशा बदल कर तथा गरम पानी से धोकर व्यवहार में लाने चाहिये।

रोगीको ठंड लगना या ठंडे पानी से स्नान कराना वर्जित है क्योंकि थोड़ी सर्दी लगने से ही फेफड़े में प्रदाह आदि साघातिक उपसर्गों का उपस्थित होना सम्भव है। पीने के लिये ठंडा पानी दिया जा सकता है। छोटे गावों की अपेक्षा बड़े शहरों में यह रोग सांघातिक होते हुये अधिक देखा गया है। इस लिये कह सके हैं कि पूर्व काल में यह रोग भी सामान्य था और इसकी चिकित्सा भी सामान्य थी। परन्तु आज कल इसको सामान्य समझना उचित नहीं क्योंकि इस के द्वारा सैंकड़ों मृत्यु होते हुये प्रत्यक्ष देखते हैं।

पथ्य।—हलका पथ्य देना चाहिये। ज्वरके समय अरारोट, बारली या साबूदाना और ज्वर घटजानेपर दूध-दलिया दिया जासकताहै। आहार के विषयमें कुछ दिन बाद तक भी सावधानी रखना उचित है क्योंकि सहज में ही उदरामय होजाना सम्भव है।

प्लेग।*

निर्वाचन।—पहिले समयों में प्लेग कहनेसे किसी पीडा द्वारा बहुत से आदमियों का पीडित होना और मरना समझा जाता था किन्तु आजकल प्लेग शब्द से ब्यूबोनिक प्लेगका अर्थ समझा जाता है। यह एक प्रकार नया तेज संक्रामक ज्वर रोगहै। ज्वर के साथ राग आदि स्थानों की गाँठें फूल जाती हैं और जलन होने लगती है तथा कभीर भयानक घाव या फोडा भी होजाता है।

इतिवृत्त।—१८९६ ई० पहिलेसेही भारतवर्ष के कितने स्थानों में यह रोग दीख पडाथा, किन्तु इस वर्ष बम्बई महा नगरी में बड़े भीषण और संक्रामक रूपसे इसका प्रादुर्भाव हुआ। यह क्रमश भारत वर्ष के सबही स्थानों में पहुच चुका है, काल में कोई देश भी इसके आक्रमण से वंचित नहीं होगा।

कारणतत्त्व।——कोको-बेसिलस (cocco-bacillus) नामक जीवाणु (बहुतही छोटेर जीव) किसी तरह से शरीर के भीतर प्रवेश करके इस पीडा को उत्पन्न करते हैं। रोगी के मलमूत्र और श्लेष्मा आदि में यह जीवाणु दीख पडते हैं। बहुतों की यह राय है कि प्लेग का विष मिट्टी में रहता है। नंगे पैर घूमने से यदि पैर में किसी जगह घाव या खुरसट होतो इस रोग के होने की विशेष संभावना है। प्रत्येक उमरमें ही यह रोग होसक्ता है किंतु

* इस रोग के विषय में यदि विशेष विवरण या चिकित्सादि जानना हो तो प्लेग चिकित्सा नाम की पुस्तक मगाकर देखिये।

बहुत कम उमर बच्चे और वृद्धों को नहीं होती। इस रोगको पूर्व वर्त्ती कारण स्वास्थ्य रक्षा के नियम भंग करना और उत्तेजक कारण संपर्क दोषहै।

संक्रमण। छूतकी बीमारियाँ की तरह यह भी एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य को हो सक्ती है। स्पर्श द्वारा, श्वास प्रश्वास द्वारा, यहां तक कि खाद्य द्वारा भी इस पीडा का शरीर में प्रवेश होसक्ता है। सेप्टसेमिक प्लेग और न्यूमोनिक प्लेग जितनी संक्रामक हैं ब्यूबोनिक प्लेग उतनी सक्रामक नहीं है।

प्रकार भेद। रोग-विष अथवा जीवाणु सब के एक होने पर भी यह जुदे जुदे लक्षण होने के कारण जुदे जुदे नामों से ही पुकारे जाते हैं। यथा :—

(क) ब्यूबोनिक अथवा गाठ बढ़ने के साथ पीड़ा।— साधारण तरह पर इस को पांच भागों में विभक्त किया है। (१) फिमोरल (पैर में), (२) इनगुईनाल (राग में), (३) एकजिलरी (बगल में), (४) सर्वाईकेल [गरदन में]; (५) टानसिलर (तालुमूलीय अर्थात् तालू की जड़ में)।

(ख) बिना गाठ फूलने के रोग।—यह भी कितने ही भागों में बांटा गया है। [१] सेप्टिसेमिक [रक्त दोष के कारण], (२) न्यूमोनिक [फेफडे के प्रदाह के कारण], (३) गेस्ट्रइन्टेस्टाइनेल (आंत और पाकाशयका), (४) नेफ्राइटिक (मूत्र ग्रन्थि सम्बन्धीय); (५) सेरीब्रल [मस्तिष्कीय]।

लक्षण।—[क] <u>ब्यूबोनिक या ग्रथी वृद्धि युक्त पीडा।</u> [गाठ बढने के साथ रोग], इसमें गांठ बद की तरह

फूल उठती है इसी कारण इसको ब्यूवोनिक प्लेग कहतेहै । पहिले शरीर में अस्वच्छन्दता उपरान्त सिर दर्द, सिर घूमना और प्रबल कपकपी के साथ ज्वर के लक्षण उपस्थित होते हैं। बात कहते में जीभ कांपती है, और मुंह से साफ आवाज नहीं निकलती, बेचैनी, जी मिचलाना, उलटी, उजाले से भय मालूम होना, और आंखों का कुछ कुछ लाल रंग होना आदि लक्षण दिखलाई पडते हैं । शरीर की गरमी १०२ से १०४ तक बढ जाती है यहां तक कि कभी कभी १०६ से १०७ तक हो जाती है । नाड़ी की गति साधारणत १०० से १३० तक देखने में आई है । पहिले नाडी सबल और द्विघात पूर्ण [दुहरी] (Dicrotic) पीछे क्षीण और वेग युक्त हो जाती है। जीभ सफेद मैल से ढकी हुई, नींद न आना, बिछोने से उठने की चेष्टा करना, असह्य प्यास लगना, भय मालूम होना, चेहरे चिन्तायुक्त, बकना, बगल, रांग, और कान की गांठों में से किसी एक का फूल उठना, और ठहर ठहर कर चबक मारने का सा दर्द मालूम होना आदि लक्षण दिखलाई पडते हैं । कभी कभी ज्वर अधिक होकर मस्तिष्क के लक्षण भी दिखलाई पडते हैं । बच्चों को इस रोग में बांयठे आने लगते हैं । साधारणत उनके शरीर की गरमी १०३।१०४ से अधिक नहीं होती । इस के सिवाय विशेष विशेष प्रकार के और लक्षण नीचे लिखे हैं —

[१] फिमोरल [(Femoral-Type)] —नीचे के अंग यथा पैरों के तलवे आदि स्थानों में होकर यदि प्लेग का विष शरीर में प्रविष्ट हुआ होतो गोलाकार फीमोरल स्थान के नीचे अथवा उस के पास वाली सब गाठें एक साथ अथवा अलग अलग फूल उठती है। यह फूली हुई सब-

गांठें कभी पक कर फूट जाती हैं और कभी योंही बैठ जाती हैं ज्वर १०२। १०३ वा इस से अधिक भी होजाता है। दाहिनी ओर की गांठ यदि फूल उठे तो इसको बुरा लक्षण समझना चाहिये।

[२] इगुइनेल (Ingunul Type) यह भी पहिली श्रेणी मेंही गिना जाता है। साधारणतः इस में रोग की गांठ फूल जाती है। यह दोनों प्रकार की पीड़ायें अधिक वेग पूर्वक प्रकाशित नहीं होती।

[३] ऐकजीलेरी (Axillary Type) ऊपरका अंग यथा हाथ आदि द्वारा यदि प्लेग का विश, शरीर में प्रविष्ट होतो इस प्रकार के लक्षण शरीरमें प्रकाशित होते हैं। बगल के भीतर गहराई में गांठ फूल उठती है, इससे अकस्मात् कम्पकपी लगती है। वेग पूर्वक ज्वर होता है, स्पष्ट बात मुखसे नहीं निकलती इत्यादि ऐसे लक्षण प्रकटित होते हैं।

(४) सर्वाईकैल (Cervical Type) यदि प्लेग का विष टान्सिल गांठ के द्वारा शरीर में प्रविष्ट हुआ हो यह गरदन के पास वाली गांठ के फूलने से ही जाना जाता है। इससे अकस्मात् ज्वर होता है, मानसिक अवसाद [मनका सुस्त पड़जाना] इत्यादि लक्षण प्रकाशित होते हैं।

[५] टांसिलर (Tonsillar Type) इसमें पहिले की तरह सब लक्षण प्रकाशित होते हैं। गर्दन की जगह सूजकर दूनी वा चौगुनी होजाती है। इस प्रकार के रोग में श्वास रुक जाने के कारण रोगी के प्राण जानाभी सम्भव है। फूली हुई गांठ मस्तकके जितनी ही अधिक पास होगी उतनी ही मृत्युकी अधिक सम्भावना है। इस प्रकार लक्षण प्रायः बच्चों में ही अधिक देखे जाते हैं।

(ख) बिना गांठ के फूलने वाले रोगों के विशेष लक्षण :—

(१) सेप्टिसेमिक (Septicæmic Type) यही विष रक्त में प्रवेश करता है और रक्त दोष के लक्षण प्रकाशित होतेहैं। इस प्रकार की पीडा अत्यन्त सांघातिक होती है। शरीर में फुन्सियों की तरह लाल, काले, नीले और अनेक तरह के दाग उत्पन्न होते हैं। नाक, मुह, फैफडा, मूत्राधार आदि स्थानों से रक्त बहने लगता है और अखीर सब शरीर में गलन शुरू होजातीहै।

२ न्यूमोनिक (Pneumonic or Thoracic Type) इस के लक्षण यह हैं कि श्वास वायु के साथ मिलकर प्लेग का बीज शरीर के भीतर प्रवेश करता है। इससे ब्रौंकाईटिस अथवा लोबूलर न्यूमोनिया के लक्षण प्रकाशित होते हैं। यह रोग बहुत ही साघातिक है। प्राय दूसरे ही दिन रोगी की मृत्यु हो जाती है। कभी कभी इस में गाठ फूलती हुई भी देखी जाती है।

(३) गेस्ट्रो-इन्टेस्टाइनल (Gastro Intestinal Type) इन्टेस्टाइनल अर्थात् इससे पाकाशय और आंतों पर सदमा पहुचताहै। कुछ लक्षण सन्निपात ज्वरके और कुछ हैजेके से दिखलाई पडतेहैं। उबकाई, सूखी उल्टी, अफरा, उदरामय आदि लक्षण प्रकाशित होते हैं इसकी भी मृत्यु सख्या कम नहीं है।

(४) नेफ्राईटिक (Nephritic Type) —इस प्लेग में मूत्रपिण्ड अथवा दोनों वृक्क (मूत्र पैदा करने वाली गांठ) प्रधानत आक्रान्त होते हैं और पेशाब कम उतरता है। पेशाब के साथ खून गिरता है, ज्वर, अवसन्नता, तन्द्रा और मूत्र विकार उपस्थित होजाते है।

(५) सेरीब्रेल मास्तिष्क विकार की एक तरह पीडा है । (*Cerebral Type*) इसमें मस्तिष्क बिगड़कर रोगी अचानक दुर्बल होजाता है । थोडे २ चायठे आते हैं, बेहोशी या कोमा आदि आकर नाडी लोप होजाती है । यह रोग भी बहुत साङ्घातिक है । साधारणतः रोगी १२ घंटे से लेकर २ दिन के भीतर मरजाता है । यदि रोगी थोडी ही देर में न मरे तो गांठ फूल उठती हैं ।

गांठ फूलना ।— प्राय एक ही गांठ फूलती है । फूली हुई गांठ के ऊपर अंगुली रखने से रोगी को बहुत कष्ट होता है । पहिले और दूसरे दिन से लेकर गांठ का फूलना शुरू होता है । सातवें या आठवें दिन पकजाती है और पकने से आराम होने की आशा भी कीजासकती है । मवाद में बडी दुर्गन्ध आती है । पेशाब लाल या काला होता है और उसमें अण्डलाल (*Albumen*) रहता है ।

रोगी का अवस्थान ।— प्लेग रोगी की कोई गांठ फूलने से जिस तरफ की गांठ फूली हो उसके दूसरे ओर करवट दिवाने से आराम मालूम होता है । पैर पसार कर नहीं सोयाजाता ।

भावीफल ।— प्लेग बहुत साधातिक पीडा है । इसके रोगी ७० से ८० फीसदी मरजाते हैं । बगल की गांठ फूलने से ७० आदमी और नीचे के किसी हिस्से की गांठ फूलने से ५८ आदमी मरजाते है । गर्भिणी को यह रोग होने से दूसरे ही दिन गर्भ पात होजाता है ।

शुभलक्षण ।— यदि आराम होना शुरू होजाय तो

बुखार कम होने लगता है। पसीने बहुत आते हैं। मस्तिष्क की उत्तेजना कम होजाती है और नाडी सवल चलने लगती है। गाठ पक कर घाव सूखजाता है और सडन आरम्भ नहीं होती।

चिकित्सा ।—— डाक्टर सरकार का मत है कि प्रारम्भ में ही इगनेशिया देने से रोग उतना ही होकर नष्ट होजाता है अथवा और नहीं बढता। दूसरी अवस्था में अर्थात रोग बढना शुरू होने पर ज्वर, प्यास, बेचैनी आदि लक्षण उपस्थित हो तो एकोनाईट देना चाहिये। यदि इससे ज्वर कम न हो और शिर का दर्द अधिक होतो बेलेडोना अच्छी दवा है। इसके सिवाय बहुत से चिकित्सक कहते हैं कि पहिले से ही रसाटक्स देने से इन सब हालतों में बहुत फायदा दीखता है। अतएव नीचे लिखी हुई दवाईयों में से लक्षण मिलाकर दवा तजवीज करें।

इकोनाईट १×, ३× शक्ति ।— अत्यन्त ज्वर, प्यास, बेचैनी, मृत्युभय, शिरघूमना, शरावी कीसी हालत, मुह से बात साफ न निकलना, अत्यन्त शिर दर्द, दस्त और जी मिचलाना, होट और पेट में जलन, दिल की धडकन और नाडी की गति कमजोर। नाडी पूर्ण, तेज और कठिन, पट्ठों की दुर्बलता और सबरे शरीर मे चिनचिनाहट होना।

बेलेडोना ६ शक्ति ।—— पागलपन, कभी २ हसना, चिल्लाना और दात किडकिडाना, अत्यन्त शिर दर्द, आखों का लाल रगत, बिछौने खीचना, रोशनी और शब्द न सह सकना, जावडे बन्द करना, तालुए और कनपटी की गांठ में तथा

में बोझ मालुम होने कीसी तकलीफ होना, बांई बगल की गाठ का सूजना और दर्द होना, सोते २ चमक उठना और बहुत पसीने आना।

क्रोटेलस ६ शक्ति।—जिस प्रकार की प्लेग में खून गिरने के लक्षण अधिक हो उसमें यह दिया जाता है। बेहोशी, बकना, जीभ सूजना, फेफडे में प्रदाह, राग और बगल की गाठ में प्रदाह और सूजन।

लेकेसिस ६ शक्ति।—अवसन्नता और रक्त में मवाद विषलापन (सेप्टीसेमिक) आदि लक्षणों में दिया जाता है। बेहोशी, शिर दर्द, बदबूदार दस्त, स्वर नली और कंठ नली में छूनेसे दर्द होना, श्वास कष्ट के साथ चलना और घाव में सडन शुरू होना।

नेजा वा कोबरा ६ शक्ति।—क्रोटेलस वा लैकेसिस की अपेक्षा यह बहुत तेज दवा है। इसका असर रक्त की अपेक्षा स्नायु मन्डल के ऊपर अधिक होता है। दुर्बलता और हृत्पिन्ड की क्रिया के लोप होने की आशङ्का होने पर यह दिया जाता है। नाड़ी तेज और अनियमित।

फोस्फोरस ६ शक्ति।—फेफडा आक्रान्त होने पर यह बहुत फायदा करता है। बकना, बेहोशी, शिर दर्द, कान नाक और मसूडे से खून गिरना, राग वा गांठ सूजी हुई, बेमालूम दस्त या रक्तातिसार, श्वास कष्ट, खून मिला हुआ कफ, फेफडे से खून गिरना, चक्की के शब्द के समान हृत्पिन्ड का पहिला शब्द। नाडी बहुत छोटी और बेमालूम या औरर सन्निपात के लक्षण।

वेप्टेशिया १ x शक्ति।—सन्निपात ज्वर के लक्षणों में दिया जाता है।

आर्सेनिक ६, ३० शक्ति।—पाकाशय और आन्तों पर असर करने वाले प्लेग में तथा सन्निपात के लक्षणों में यह दवा दी जाती है। बहुत प्यास लगना, दस्त और उलटी, रात में बकनां, लक्ष्यहीन दृष्टि, चेहरे पर मुर्दनी, निगलने में कष्ट, पेट में जलन, राग में सुईसी डूबना, पेशाब बन्द होना वा कम होना, श्वांस कष्ट, हृत्पिण्ड की उत्तेजना। नाडी क्षुद्र, तेज, एकसी न चलना प्रायः मालूम ही न होना, ठंडे पसीने आना।

मरक्यूरियस-कर ३ शक्ति।— गांठों के, पाकाशय और आन्तों के लक्षण उपस्थित होने पर यह दवा दीजाती है। बकना, बहुत शिर दर्द, नाक और मुह से खून गिरना, उलटी होना, रागों में दबाव सा मालूम पडना और दर्द होना मानों गांठ फूल उठी है, हृत्पिण्ड का शब्द ठहरर कर होना, नाडी कम, अनियमित, पसीने बहुत आना।

कार्बोवेजिटेबलिस १२ शक्ति।—बहुत कठिन, साधातिक शरीर के ठंडे होने की अवस्था, नाडी लोप, ठंडा पसीना, श्वांस तक ठंडा होना, सब शरीर बरफ की तरह ठंडा आदि लक्षणों में यह दवा दी जाती है। औरर लक्षण हैजे की चिकित्सा के बयान में देखो।

रसटक्स ६, ३० शक्ति।— अधिक ज्वर, बेचैनी, खांसी, उदरामय, तन्द्रालुता (तन्द्रा अर्थात नींदसी आना) शरीर में दर्द, बार २ नाक से खून गिरना, कनपटी और

(तालुये की जड) की गांठ सूजने आदि लक्षणों में यह दवा दी जाती है अर्थात् सन्निपात के लक्षणों में इस से बहुत फायदा होता है।

पाईरोजीनम् ६, ३० शक्ति । रोगी के अचानक मृत्यु न होकर ज्वर तेज हो, सान्निपात के लक्षण दीख पडे, फेंफडा आन्त्र और पाकाशय के लक्षण दिखलाई पडे, बकना आदि लक्षण उपस्थित हो तो यह दवा आश्चर्य्य रूप से फल दिखलाती है। यदि दो एक मात्रा से आराम न हो तो धैर्य्य के साथ और भी दो एक मात्रा देना चाहिये।

बेडीयागा ३×शक्ति ।—गांठ बढने की पीडा में यह एक प्रसिद्ध औषधि है। बहुत से रोगियों को इस से फायदा हुआ है। गांठ कडी हो उस में मवाद पडजाय, गर्दन और गला सूज जाय यदि ऐसे लक्षण हो तो यह दवा देनी चाहिये। फूली हुई गांठ के ऊपर लगाने के लिये इस दवा का मूल अर्क वा १ + शक्ति व्यवहार करना चाहिये।

प्रतिषेधक उपाय ।--यदि चारों तरफ प्लेग रोग फैला हुआ हो तो नीचे लिखे हुये नियमों का पालन करना उचित है।

(१) हमेशा साफ रहे और साफ कपडे पहिनें, घर के भीतर तथा बाहर किसी प्रकार मैलापन न होने दे। रहने के घरमें हवा आने जाने के लिये मार्ग रहना चाहिये तथा एक घर में बहुत से आदमियों को कदापि न रहना चाहिये। प्लेग रोगी अथवा उसके कपडे बिछौने आदि कदापि न छूने चाहिये। नीचे के घर की अपेक्षा ऊपर की

मंजिल में रहना अच्छा है। प्रातःकाल और सन्ध्या समय तमाम घर में राल और गन्धक की धूनी देने से हवा साफ रहती।

(२) अनियमित और अपरिमित भोजन करना अर्थात कुसमय और अधिक खाना, रात में जगना, शराब पीना इत्यादि वर्जित हैं।

(३) सब तरह की खटाई खाना अच्छा है, नमक भी प्लेग के विष को नाश करता है। इसी लिये रोज नीबू के रस और नमक का अधिक व्यवहार करना चाहिये, शरबत में नमक और नीबू का रस मिलाकर भी पीते हैं।

(४) जो लोग तेल का व्यवसाय करते हैं उन को यह रोग बहुत कम होते हुए देखा गया है। इसी सबब से बहुत से डाक्टरों का मत है कि सब शरीर में विशेषकर मुह और हाथ पैरों में प्रतिदिन तेल मर्दन करने से, यह रोग होता ही नहीं।

(५) सन् १८३६ ई० में कोन्स्टेन्टीनोपिल में जिस समय भयानक रूप से प्लेग हुआ था उस समय डाक्टर हेनिंगबरजर ने सब से पहिले देखा कि उस शहर के लोगों में से जिन२ ने हाथ पर इगनेसिया बीन बांधा था उन में से एक भी नहीं मरा इसके उपरान्त उन्हों ने इगनेशिया द्वारा बहुत से प्लेग रोगियों के प्राण बचाये। इसी लिये स्वर्गीय डाक्टर महेन्द्रलाल सरकार ने इस के विषय में लिखा है कि इगनेशिया बीन हाथ पर बांधने से प्लेग बहुत कुछ रुक जाता है, डाक्टर सरकार के मत से, प्लेग रोग के आरम्भ में ही इगनेशिया ३० शक्ति देने से बहुत फायदा होता है।

(६) ब्यूबोनिम प्लेग की ओर एक अच्छी रोकने वाली दवा है। प्लेग फैलने के समय इसकी १२ वा ३० शक्ति प्रतिदिन एक मात्रा सेवन करने से बहुधा प्लेग रोग के आक्रमण से रक्षा होती है।

(७) यदि घर में किसी को प्लेग हो तो रोगी को घर में अलग एक तरफ एक सूने मकान में रखना चाहिये और उस कमरे हवा आने जाने के लिये अच्छी तरह रास्ता रहना चाहिये। रोगी का मल मूत्र उलटी इत्यादि किसी एक बरतन में लेकर अलग फेंक देना चाहिये तथा रोगी के कपड़ों को जला देना चाहिये।

[८] जिस घर में रोगी रहा हो उसको अच्छी तरह से साफ करने के बाद वह काम में लायाजाय, इसमें कार्बोलिक ऐसिड छिड़कना गन्धक और राल की धूनि देना तथा कुछ दिनतक इसके दरवाजे बिलकुल खुले रखना चाहिये ताकि स्वच्छ हवा इसके भीतर आती जाती रहे।

पथ्य।—— पहिले पानी में साबूदाना पका कर उस में नमक और नींबू का रस डाल कर दिया जावे। दूध सब से अच्छा पथ्य है। कभी २ मसूर दाल का पानी भी दिया जासकता है।

विसर्प।

[यूरीसीपेलस्]

चमड़े के नीचे वाले कोष में तन्तुओं के विशेष प्रदाह युक्त ज्वर को विसर्प रोग कहते है। साधारण तरह पर यह रोग चोट लगने से या खून बिगड़ने के कारण उत्पन्न होता है। यह भी एक सक्रामक रोग है।

लक्षण ।—अकस्मात कपकपी, शरीर में जलन, उलटी, पीडित स्थान बहुत लाल रग का, सूजा हुआ और गरम, उसमें जलन होना और दर्द होना, शिर दर्द ज्वर और गल के नली के भीतर दर्द इत्यादि लक्षणों के साथ साधारणत. इस पीडा का प्रकाश होता है । यह रोग कितने दिन रहता है इसका कुछ निश्चय नहीं. एक से दो सप्ताह तक रहता है । यह प्रदाह क्रमशः व्याप्त होकर सब चेहरे पर फैल जाता है । आखों के पलक इतने सूज जाते हैं कि आंख की पुतली दिखलाई नहीं पडती । प्राय चमडे के ऊपर छोटी २ फुसियां होजाती हैं । इन के फूटने से पानीसा गिरने लगता है अथवा कहीं २ मवाद भी पड जाता है । हाथ पैर आक्रान्त होने से कुल शरीर में भी व्याप्त होसकता है । नाडी तेज, अधिक ज्वर, भूख न लगना, मस्तिष्क के लक्षण उपस्थित होना और बकना आदि लक्षण उपस्थित होकर रोग का सांघातिक रूप होजाता है ।

चिकित्सा ।— **एकोनाइ ३ शक्ति**-- अत्यन्त ज्वर प्रदाह, बेचैनी, मृत्यु भय ।

बेलेडोना ३, ६ शक्ति ।---- सूजे हुये स्थान की लाल रंगत और चिकना, अत्यन्त ज्वर, बकना, मस्तक गरम, पैर ठंडे नाडी पूर्ण और कठिन, शिर दर्द, प्यास और पीडित स्थान में चबके चलना ।

पलसेटिला ६ शक्ति ।---- एक स्थान अच्छा होकर यदि रोग फिर किसी दूसरे स्थान में हो तो दिया जाता है । पीडा का स्थान बढा हुआ सा मालुम हो विशेषकर नितम्ब और छाती नीलापन, शिर दर्द, उदरामय ।

ब्राईओनिया ३, ३० शक्ति ।---- जोड की जगह में पीडा हो, हिलाने से बढ़ती हो, रोग हटजाने पर श्वांस कष्ट और उदरामय आरम्भ हो।

एपिस ३, ६ शक्ति ।--- आखों में पानी भरना, फुंसियों का काला कभी बैगनी रंग, जलन, चबके चलना, चोट लगने के कारण पीडा।

आर्सेनिक ३, १२ शक्ति ।--- अत्यन्त बेचैनी, विकार, शरीर में नीचे की ओर गांठों के पास वाले स्थान का आक्रान्त होना, सडना, प्यास।

कैन्थेरिस ६, ३० शक्ति ।--- नाक के ऊपर से लेकर दोनो ओर के नथनों पर विशेष कर दाहिनी ओर आक्रान्त होना, फफोलों के साथ प्रदाह, जलन, अत्यन्त प्यास किन्तु पानी पीने की अनइच्छा।

रसटक्स ३, ३० शक्ति ।... उजले लाल रंग के फफोले, अत्यन्त बेचैनी।

पथ्य ।---- यदि ज्वर होतो पानी में साबूदाना या बार्ली इसके उपरान्त पुष्टिकर पथ्य दूध इत्यादि देना अच्छा है।

सान्निपातिक विकारज्वर।

(टाईफोस फीवर)

यह ज्वर संक्रामक और सांघातिक होता है। और स्फोटज्वर अर्थात फोरा फुन्सी वाले ज्वरों की तरह इस में भी एक प्रकार का विष होताहै, जो इस ज्वर

को उत्पन्न करता है। यह विष बहुत आदमी से भरे हुये दुर्गन्धमय और ऐसे स्थानमें होता है कि जहाकी हवा खराब हो। अत्यन्त दुर्बलता, सब शरीर में दर्द, तेज बुखार और बकना आदि इस के विशेष लक्षण हैं। औरर संक्रामक ज्वरों की तरह यह भी एक दफे के सिवाय फिर दुसरी दफे नही होता।

कारण ।---- पहिले ही कहा गया है, कि यह ज्वर सन्निपात के विकार के कारण विष से उत्पन्न और अत्यन्त सक्रामक है। यह विष क्या है सो आज तक निश्चय नहीं हुआ। यह विष रोगी के चमडे और फेंफडे से निकलता है। रोगी के शरीर से एक प्रकार बदबू आती है। इस ज्वर का विष बहुत दूर तक नहीं जासकता। हवा के साथ क्रमश हीन तेज होता है। रोगी के व्यवहार किये हुये कपडे औरर चीजें अच्छी तरह साफ रखनी चाहिये नहीं तो एक स्थानसे दूसरे स्थानमें इन के द्वारा रोग पहुचना सम्भवहै। जब रोगी को आराम होने लगताहै तबही इस विषकी छूत दूसरे पर पडने की अधिक आशका रहती है। कोई २ कहते हैं कि बहुत आदमियों से भरे हुये स्थान में और अनाहार से भी यह विष उत्पन्न होजाता हैं। दूसरे कोईर कहते हैं कि यह सब अवस्थायें विष उत्पन्न करने में सहायता करती हैं और विष उत्पन्न होने पर इन सब अवस्थाओं में वढ जाता है।

पूर्ववर्ती कारण ।---- इस ज्वर का विष सब को एक ही तरह से आक्रमण करता है यह बात नहि है। किसी २ के शरीर में पहिले से बहुत से पूर्ववर्ती कारण

रहते हैं, जिन की सहायता से यह विष उनके शरीर में सहजही प्रवेश कर जाता है। यह कारण रोग के आक्रमण करने में अधिक सहायता देते हैं। कारण यह है —(१) अमिताचार अर्थात खाने पीने सोने इत्यादि स्वास्थ्य सम्बन्धीय नियमों का पालन न करना, कम खाना अथवा पुराने किसी रोग के कारण स्वास्थ्य विगडना, (२) बहुत आदमियों से भरे हुये ऐसे स्थान में रहना जहां अच्छी तरह से हवा न आती जाती हो; (३) स्वय अथवा परिवार का मैलापन, (४) अधिक मानसिक श्रम, चिन्ता अथवा रोग का भय होने से उदासी। इन्हीं सब कारणों से सन्निपात विकार ज्वर गरीब आदमियों को अधिक होता है, जो बहुत आदमियों से भरे हुये मैले स्थानों में छोटे२ घरों में एक साथ बहुत से आदमी रहते है।

लक्षण।— (१) अप्रकाशावस्था, यह अवस्था प्राय ६ दिन से १२ दिन तक रहतीहै, कभी२ छै दिनसे अधिक नहीं रहती। इस अवस्था में सर्दी लगती है, साधारण तकलीफ और तबीयत खराब रहना, बेचैनी, शिरमें दर्द, भूख न लगना आदि लक्षण उपस्थित होते है और कभी २ ऐसा भी होता है कि कोई लक्षण दिखलाई नहीं पडते।

(२) आक्रमणावस्था; यह अवस्था अचानक अथवा क्रमशः आरम्भ होसकतीहै। सन्निपात विकारके प्रारम्भमें कपकपी देकर बुखार आता है। यह कपकपी का बुखार लगातार दो तीन दिन तक होता है। शारीरिक और मानसिक अत्यन्त दुर्बलता इस ज्वर का एक प्रधान लक्षण है—रोगी बहुत ही जल्दी गिरजाता है। उठने की शक्ति नहीं रहती और दुर्बल होजाता है।

सब अङ्गों के पट्टों में दर्द मालुम होता है और हिलाने से हाथ पैर कांपते हैं। स्नायविक विकार के लक्षण धीरे२ अच्छी तरह प्रकाशित होकर प्रगट होजाते हैं। अत्यन्त शिर दर्द, माथा भारी और माथे में लपकन, शिर घुमना, कुछ सुनाई कम पडना, कान में तरहर के शब्द सुनाई पडना, उजाला बुरा मालुम होना, बेचैनी और तकलीफ के साथ नींद आना परन्तु अक्सर झपकी सी लगी रहना आदि प्रधान स्नायविक लक्षण हैं। मानसिक अवस्थाभी ठीक नहीं रहती,—स्थान, समय, सामने क्या होता है, कौनर आदमी खडे हैं यह सब रोगी ठीक नहीं बतलाय सकता, चौथे दिन आठवें दिन के भीतर बकना शुरू होता है। पहिले इस बकने की हालत हरवक्त एकसी नहीं रहती इस लिये रोगी को चेताने से कभीर प्रश्न का उत्तर पा भी सकते है। बकने की अवस्था हमेशा सब को एकसी नहीं होती, कभी बहुत धीरे अथवा कभी बडे जोर से बकने लगता। रोगी बिलकुल बेहोश होजाता है, अपने आस-पास की किसी घटना को नहीं समझ सकता, दोनों आंखें लाल होजाती है और चेहरे की रंगत बदल जातीहै।

जी मिचलाना और उलटी हरवक्त नहीं होती। जीभ पहिले गीली और सफेद रंगकी मैल से ढकी हुई रहती है किन्तु जल्द ही धुधले रंग की होजाती है। रोगी जीभ को बाहर निकाल कर स्थिर नहीं रख सकता किन्तु कांपती रहती। बहुत प्यास, भूख बिलकुल न लगना अकसर कब्ज रहना और कभीर उदरामय तथा प्राय तिल्ली बढजाना आदि पाया जाता है। शरीर बहुत गरम, नाडी बहुत तेज

और भरी हुई, धडकन मिनिट में १०० बार और कभी नाडी दुर्बल कम और ऐसी मालुम होती है मानो एक साथ दोचार भडकती है। सर्दी और खांसी प्राय बढती ही है।

(३) स्फोटावस्था साझिपातिक विकार ज्वर की फुंसियां प्राय चौथे वा पाचवे दिन निकलती हैं किन्तु कभी २ तीसरे दिन से सातवे वा आठवें दिन के भीतर भी निकलती हुई देखीगई हैं। बालकों के प्राय फुसी नहीं निकलती। यह फुसियां कलाई के पीछे की तरफ बगल में और पेट के ऊपर सब से पहिले दिखलाई पडती है, तथा पीछे शरीर में और हाथ पैरों में निकलती हैं। चेहरे पर वा गरदन में एक भी नहीं दिखलाई पडती। सन्निपात की फुसियां एक दो वा तीन दिन के भीतर ही निकल आती हैं; इस के बाद फिर और नई फुसियां नहीं निकलती हैं। बैठने के समय भी निकलने की तरह सब फुसियां एक साथ बैठजाती ह। फुसियों के ठहरने का कोई स्थिर समय नहीं है, यह प्राय १४ वा २१ दिन के भीतर बैठजाती है।

स्फोटावस्था में पहिली आक्रमणावस्था के प्राय सब लक्षण बढ जाते हैं। रोगी अत्यन्त दुर्बल होजाता है बिस्तर से उठा नहीं जाता और उसके होशहवाश में फरक पडजाता है। रोगी में हिलने झुलने की भी शक्ति नहीं रहती, चित्त पडा रहता है, आंखे मुदी हुई या अधिखुली रहती है, धीरे २ बका करता है, और प्रश्न करने से कुछ उत्तर नहीं देता, होते २ रोगी बिलकुल अज्ञान होजाता है, पट्टे कापने और झुकडने लगते हैं, बिछौना खींचने लगता है, कभी २ वायटे भी आने लगते हैं, ऐसा भी देखाजाता है कि रोगी को

होश रहता है और टकटकी लगाकर एक ओर देखता रहता है। हाथ पैर का चमडा ठंडा होजाता है, पसीने आने लगते हैं, जीभ की रंगत धुधली होजाती है तथा जीभ सूख जाती है फटजाती है और हिलाई नहीं जासकती, दांत और होट एक प्रकार मैले होजाते हैं, रोगी पानी पीता है परन्तु निगला नहीं जाता, कभी २ पेट फूलजाता है, नाडी की धड़कन प्रति मिनट १२०, १४० और १५० तक होजाती है और कभी २ इससे भी अधिक देखने में आती है। रोगी जिस तरफ सोता रहता है उसी तरफ शय्याक्षत (बिछौने पर पड़े रहने से घाव) होने की अधिक सम्भावना होती है।

इस ज्वर से मरने का भय सब रोगियों का एक समान नहीं होता। जो रोगी अच्छे नहीं होते वह अत्यन्त ही दुर्बल होजाते हैं। मृत्यु के पहिले इस रोग के साथ और २ उपसर्ग उपस्थित होकर रोगी मरजाता है।

(४) उन्नति की अवस्था, रोग का परिणाम यदि सांघातिक न हो तो यह अवस्था१३ या १७ दिन के भीतर अर्थात् दूसरे सप्ताह के अन्त में आरम्भ हो जाती है। अचानक एक दिन रात्रि में रोगी को गहरी नींद आती है। नींद से जगने पर रोगी का चेहरा और लक्षण बहुत अच्छे दिखलाई पडते हैं। नाडी की चाल और शरीर की गरमी कम होने लगती है। शरीर पसीज ने लगता है और चमडा मुलायम मालूम होने लगता है। जीभ गीली और क्रमशः साफ होने लगती है, थोडी २ भूख मालूम होने लगती है, बकना जाता रहना है, रोगी पास वाले मनुष्यों का पहचान सक्ता है और यदि किसी तरह का उपसर्ग उपस्थित न हो तो रोगी जल्द आराम होने के

रस्ते पर पड़जाता है। जीभ थोड़े समय में साफ हो जाती है। भूख बढ़ जाती है। और सन्निपात के विकार का ज्वर फिर आक्रमण नही करता।

शरीर की गरमी।—सान्निपातिक विकार ज्वर में शरीर की गरमी के विषय में अच्छी तरह समझ लेना बहुत जरूरी है। यह गरमी चौथे या पाचवें दिन के सन्ध्या समय तक धीरे२ बढती रहती है। उस समय सुबह को ज्वर बिल्कुल कम नहीं होता। इस ज्वर में शरीर की गरमी कभी १०४-६ अथवा १०५ डिगरी से कम नहीं होती, वरन कभी कभी १०७ डिगरी तक बढ जाती है। यदि रोग कठिन हो तो तीसरे या चौथे दिन सन्ध्या के समय शरीर गरमी १०५ डिगरी और सामान्य हो तो १०३-५ डिगरी से ऊपर नहीं बढती।

परिणाम और ठहराव।—होमियोपेथिक चिकित्सा से अधिकांश रोगी आराम होते हैं। इस रोग से मृत्यु सख्या सैकड़ा पीछे ८, १५ वा २० तक होती है। यह रोग अधिक १४ दिन किन्तु कभी कभी २१ दिन तक ठहरता है। उपसर्ग प्रबल होने पर रोगी बहुत दिन तक भोगता रहता है।

चिकित्सा:—

१। ज्वर के लक्षणों में—एकोनाईट, आमोनिया, जैलसिमियम, बैपटीशिया।

२। मस्तिष्क लक्षण—हायोसायमस, बेलेडाना, वेराट्रम-विरिड, म्ब्रामोनियम, टेरीबिन्थ।

३। अतिद्रा—काफिया, बेलेडोना, जैलसीमियम।

४। मोहभाव (बेहोशी,—ओपीयम, रसटक्स)।

५। अत्यन्त दुर्बलता—एसिड-नियूरेटिक, आर्सेनिक, एसिड फोस्फोरिक।

६। फेंफडेके लक्षण—फोस्फोरस, ब्रायोनियां, एकोनाईट।

७। पक्षाघात [लकवा] रसटक्स, स्ट्रिक्नियां, बिजली लगाना।

८। गलन—कार्बोवेजिटेबिलिस, आर्सेनिक, रसटक्स, बेपटीशिया।

९। आराम होने के समय में—एसिड फोस्फोरिक, एसिड नाईटिक, चायना, सलफर।

ज्वर सम्बन्ध में।—अत्यन्त मानसिक परिश्रम के बाद अचानक यदि ज्वर उपस्थित हो तथा अत्यन्त दुर्बलता मालूम दे तो जैलसीमियम; ज्वर के प्रारम्भ में ही अत्यन्त शिर दर्द, जीवनी शक्ति का कम होना, और आरोग्य होने की आशा जाती रहने पर, बेपटेशिया, पहिले सप्ताह में जब सूखी खासी, शिर में लपकन, माथे का फटा जाना, हिलाने से दर्द बढना और जो काम रोगी करता हो उसी के विषय में बकता हो तो ब्रायओनियां दिया जाता है। मस्तिष्क वा विकार के लक्षणों के सम्बन्ध में।—मस्तिष्क में रक्त अधिक होना, गरदन की धमनीयों में लपकन और रोगी बहुत जोर २ से बकता हो तो बेलेडोना देना चाहिये। मस्तिष्क के लक्षण यदि उत्तेजना के कारण न होकर यदि दुर्बलता के कारण हों, रोगी क्रमशः अज्ञान और बे खबर हो, मस्तिष्क में भारी दर्द, बहुत बकना और बिछौने से उठ २ कर भागना इत्यादि लक्षणों में हायोसायमस

दिया जाता है; विकार और बकने के लक्षण इतने अधिक हों कि रोगी अचानक बहुत दुर्बल हो जावे और मृत्यु सम्भव मालूम हो तो स्ट्रामोनियम दिया जाता है, बेचैनी और हाथ पैरों का कांपना साथही बिछौने से उठने की इच्छा करता हो तो एगारीकास; ज्वर का वेग कम हो किन्तु स्नायविक दुर्बलता अधिक होतो फास्फोरिक एसिड, बार २ बहुत जोर से बकना और कभी कभी बेहोश हो जाना, घर्राटे के साथ श्वास चलना अथवा मोहभाव इतना अधिक होना कि मस्तिष्क के पक्षाघात की सम्भावना हो, पेशाब बन्दहोना और इसी कारण बेहोशी होना इत्यादि हालतों में ओपियम देते हैं। बेहोशी की हालत में बदबूदार दस्त होना, जीभ के ऊपर काले रंग का श्लैष्मा इकट्ठा होजाना इन हालतों में रसटक्स दिया जाता है। पेशाब बन्द होने के कारण वायठे आना, बेमालुम दस्त निकल जाना, अत्यन्त दुर्बलता, जीभ सूखी और फटी हुई होने से आर्सेनिक देते हैं।

जिस गांठ से लार निकलती है उसका सूजना और प्रदाह होतो मरक्यूरस-विनायड, मोनकाटिस होतो सेनेगा अथवा एन्टीमनीटार्ट, फेफड़े के लक्षण और स्नायविक दुर्बलता होतो फास्फोरस, गलन होना मालुम होतो आर्सेनिक अथवा कार्बोवेजिटेबलिस।

एकोनाईट ३, ६ शक्ति।— अत्यन्त मृत्युका भय, मस्तक खाली मालुम होना। ललाट पर बोझ और भारी मालुम होना मानो मस्तिष्क से आंखें जोर के साथ निकल पड़ेगी, जलन के साथ शिर दर्द ऐसा मालुम होना कि मस्तिष्क में गरम पानी घूमरहा है। तीव्र प्रदाह के लक्षण, रक्त प्रधान

और ताकतवर आदमियों के लिये यह बहुत फायदेमन्द है।

एपिस ६, १२ शक्ति।— मोहभाव और उसके साथ २ आहिस्ते २ बकना, नींद सी आना और बीच २ में जोर से चिल्ला उठना, जीभ में सूजन सूखी और फटीहुई तथा घाव होगये हों और मुश्किल से निकाली जाय। पाक स्थली के स्थान को छूनेसे दर्द मालुम होना, पेट में दरद और अफरा, बार २ बदबूदार बेमालुम दस्त होजाना, पेशाब बन्द होना, अत्यन्त दुर्बलता और बिछौने में बार बार खिसल जाना।

आर्निका ६,१२ शक्ति।—गुमहोजाना, चमडे के ऊपर कुछ२ पीले रंग के और बडे२ पीलापन लिये हुए हरे रंग के दाग होजाना, बहुत थकावट मालुम होना इसी लिये मजबूरन बिछौने में पडा रहना तथापि ऐसा कहना कि मैं बिलकुल अच्छा हूं, बात कहते२ भूल जाना, प्रश्न का उत्तर देनेकी इच्छा न करना, शिर के भीतर गडबड मालुम होना, और ललाट में दाहिनी ओर बोझ मालुम पडना, सोते सोते न थकना, सोते समय चमका देनेवाले स्वप्न होना, बिछौना बहुत कडा मालुम होना इसी लिये सरक सरक कर सोने की इच्छा करना, होंट और जीभ सूखी हुई, नीचे का होंट कांपना, बे मालूम पेशाब और दस्त निकल जाना शरीर के चमडे के ऊपर खून जम जाना और चमडेकी नीचेवाली नसें नीली पडजाना।

आर्सेनिक ६, ३० शक्ति।—अत्यन्त बेचैनी और चिन्ता, मृत्युके दिन गिनना, शिरऔर हाथ पैर चलना, चेहरे पर मुर्दनी, आंखें बैठजाना, होठ सूखजाना, फटजाना और उनपर मैल जम जाना, जीभ काले रंग की और चमडे की

तरह, मुंह सूखा हुआ और प्यास वारवार किन्तु थोडा पानी पीना, जीभ कडी पडजाना, आवाज साफ न निकलना, ठहर ठहर कर बहुत उलटी आना, वे मालुम पेशाव निकल जाना, दुवलापन और कापना और स्वर भगकी तरह आवाज निकलना, नाडी तेज, छोटी, कापती हुई और रुककर चलती हुई।

वेप्टेशिय १×३× शक्ति।---- मन के भाव की और चित्त की स्थिरता न रहना, अत्यन्त स्नायविक अस्थिरता विशेष कर रात्रि में, शिर दर्द मानो बेचैन किये देता है, माथा मानो चूरण हुआजाता है उस चूर्ण के इकठ्ठे करने की चेष्टा, विछौने पर ऐसा मालुम होना कि और कोई दुसरा सोरहा है, हाथ बडे मालुम होना, पठ्ठों में दर्द, विछौना कडा मालुम होना, दुर्गन्ध युक्त मल, मूत्रादि निकलना।

वेलेडोना ६,३० शक्ति।—विकार की पहिली अवस्थामें मस्तिष्क के भीतर रक्त अधिक मालुम होना अत एव चेहरा और आखें लाल रग की, नींद बहुत आना परन्तु सो न सकना, सोते समय चोक पडना, जोरसे वकना भागना, पास के आदमी को मारना काटना अथवा ऊपर थूकना, एक ओर टकटकी बाधकर देखना, माथे पर, गले में और रग में धमनी का बहुत फडकना।

जेलसिमियम १×३× शक्ति।— आक्रमणावस्था में अत्यन्त दुर्बलता के कारण कापना, इच्छा रहने परभी हाथ पैर न हिल सकना, मस्तक पीठ और प्रत्येक अग में दर्द, सर्दी लगना, हाथ पैरों में ठड मालुम होना, कभी

आधा सोता हुआ कभी आधा जगता हुआ मालुम होना, बेसिलसिले बकना, शिर घुमना तथा स्नायविक लक्षणों का वेग।

कार्वोवेजीटेबिलस १२, ३० शक्ति ।—अन्तिम अवस्थामें तथा ऐसी अवस्थामें जबकि मृत्यु निकट आजाती है तब यह औषधि बहुत फायदा करती है। सब जीवनी शक्ति क्रिया शून्य होजावे, हाथ पैर ठंडे और उनपर ठंडा पसीना आना, हृत्पिण्ड बन्द होजाना, नाडी बहुत दुर्बल और तेज और छोटी तथा करीब २ डूबी हुई, बेहोशी, बेहोशी से चेताने पर भी चेत न करना, कानों से सुनाई न पडना और आखों से न दीखना, नाक और मुह से खून गिरना।

हाओसायमस ३, ६ शक्ति ।— पूरी बेहोशी, सब इन्द्रियों की क्रिया रुकीहुई, अपने इष्ट मित्रों को न पहिचानना, धीरे २ और गडबड बकना, बकते २ बिछौने को खैंचना, बहुत बेचैनी, बिछोने से उछल उठना, बोल बन्द अथवा साफ न निकलना, मलद्वार, मुत्र और पक्षाघात, बेमालुम बिछौने पर मल त्याग, सामने की चीजें बहुत बडी वा जलती हुई दीखना, प्रश्न करने पर ठीक उत्तर देना किन्तु बोलते २ फिर बकने लगना, शरीर के कपडे उतार कर शरीर खुला रखने की इच्छा करना, गले के भीतर सुकडन मालूम होना, कोई चीज निगल न सकना, दांत किडकिडाना, चमडे की अनुभव शक्ति की अधिकता।

म्यूरियटिक एसिड ६ शक्ति ।—दिन में नींद आना और रात में नींद न आना और आहिस्ते आहिस्ते बकना, इन्द्रियों की तीक्षणता, जीभ अत्यन्त सूखी हुई और छोटी

की तरह भारी, इस लिये मुह से बात न निकलना, नीचे के जावडे का लटक पडना, बेमालुम मल मूत्र निकल जाना, नाडी तेज किन्तु अत्यन्त दुर्बल, अत्यन्त दुर्बलता।

ओपियम ३ शक्ति—नींद आना या वेहोशी, किसी तरह से जगाया न जासके अथवा बडी मुशिकल के साथ जगाया जाय, बोल बन्द, आंखें खुली हुई, हाथ पैर सख्त, सास धीरे धीरे चलना, लम्बे गहरे श्वास की तरह, गले के भीतर कफ घडघडाने का शब्द होना, कब्ज अथवा दुर्गन्ध युक्त पानीसा उदरामय, बे मालुम दस्त निकलजाना, पेशाब बन्द होना।

रसटाक्स ३० शक्ति।—प्रश्न का ठीक उत्तर देना किन्तु आहिस्तेर, वकना, सिर दर्द करना, आखें खोलने और इधर उधर देखने में तकलीफ बढना, नाक से खून गिरना विशेषकर आधी रातके बाद, होट सूखना, जीभ का आगेका भाग त्रिकोनाकार लाल रगत का, उदरामय, रात में बहुत दस्त होना, सोतेर बेमालुम दस्त होजाना, खासी, प्रत्येक अग में बात(गठिया) का सा दर्द, स्थिर रहनेसे दर्द बढना, हिलनेसे और करवट बदलने से कुछ आराम मालुम होना, हमेशा बेचैन रहना और तडफडाना, बेचैनी के साथ नींद आना, भयानक स्वप्न दीखना और बार बार जग पडना, गांठ सूजी हुई, ठडा पानी और ठडा दूध पीने की इच्छा करना, अत्यन्त कमज़ोरी और थकावट।

ऊपर लिखी हुई औषधि के सिवाय लक्षणों के अनुसार और बहुतसी औषधियां दीजाती हैं। नीचे लिखी हुई दवाईया भी इस लिये प्राय जरूरी पडतीहै—एगारीकस, आमो-

नीया, चायना, कोकूलस, हेलीबोरस, लैकेसिस, लाई-कोपोडियम, मारकूरियस, नक्सवोमिका, फास्फोरस, फोस्फोरिक-एसिड, स्ट्रामोनियम।

सहकारी उपाय।—सन्निपात वाले विकार ज्वर में स्वास्थ्य रक्षा के नियम पालन करना और रोगी की सेवा शुश्रूषा करना औषधि की अपेक्षा अधिक आवश्यकीय और उपकारी है। बहुतों की यह राय है कि औषधि के द्वारा इस ज्वर की गति को रोकना अथवा इसको जल्द हटा देना नहीं होसकता किन्तु रोग बढ़कर साघातिक न होजाय इस लिये स्वास्थ्य रक्षा के नियम पालन करना और मन लगाकर सेवा शुश्रूषा करना तथा जीवनी शक्ति की सहायक लिये अच्छी तजवीज की हुई दवा का सेवन कराना अत्यन्त आवश्यक है।

इस रोगके शुरू होतेही रोगीको चारपाईमें लिटा देना चाहिये और ऐसे उपाय करने चाहिये कि जिससे वह स्थिर रहे, कोई भी कारण से यहां तक कि मलमूत्र त्याग करने के लिये भी विछौने से उठाना ठीक नहीं। शारीरिक अथवा मानसिक सब प्रकार का परिश्रम वर्जित है। रोगी के घर में भीड न रहनी चाहिये, हवा आने जाने के लिये रास्ता रखना चाहिये, रोगी को पूरा आराम मिले और किसी तरह का कष्ट नहो यह परम आवश्यकीय बात है। बहुत एवं स्वच्छ वायु की रोगी को अत्यन्त आवश्यकता है, इस लिये मकान के खिडकी दरवाजे बन्दकर बहुत से आदमियों को उस में बैठे रखना उचित नहीं।

यह रोग संक्रामक है। इस लिये संक्रमण

(छूत) निवारण करने की जरूरत रहती है । रोगी को व्यवहार किये हुये कपडे तथा और और चीजें अच्छी तरह साफ दोष शून्य कीये विना किसी दूसरे के काम में न लाना चाहिये । रोगी का बिछौना और शरीर के कपडे साफ रहना जरूरी हैं।

पथ्य।—यह पीडा ३५ दिन तक ठहरने वाली होसक्ती है इसलिये इतने अरसे तक रोगी को सहज में अच्छी तरह पचने वाला तथा पुष्टिकर आहार थोडा२ देना चाहिये। चारली, अरारोट और यदि पेट की कुछ गडवड न होतो थोडा२ दूध दिया जासकता है। काबुली अनार का रस अच्छा पथ्य है। पीडा के अन्त में दाल दलिया अथवा और कोई ऐसी चीज देसकते हैं। रोगी को जगाकर भोजन कराने की आवश्यकता नहीं किन्तु यदि जगता होतो दो तीन घन्टे के अन्तर से कुछ थोडा २ खाने को देना चाहिये। पानी जितना इच्छा हो पिलाया जासकता है। यदि मुह से निगलने की शक्ति न होतो मलद्वार से खाने की चीजों की पिचकारी देना आवश्यक होता है।

यदि कब्ज रहता होतो गरम पानीमें साबुन मिलाकर पिचकारी देना अच्छा है । विकार के लक्षणों में भय पाकर रोगी को अकेला छोडना अच्छा नहीं। रोगी यदि बहुत विकार ग्रस्त होतो उसपर क्रोध करना अथवा असन्तोष प्रगट करना अन्याय है। बेहोशी के सबब रोगी जो कुछ करे उसके कारण उस को मारना या धमकाना कभी नहीं चाहिये।

रोगी जब अच्छा होनेलगे तब उसको होशियारीसे रखना आवश्यक है। सब तरह अत्यन्त परिश्रम अथवा अनियमित

आहार उचित नहीं। इस रोग के बाद आबहवा बदलना बहुत अच्छा है।

तृतीय, पञ्चम, सप्तम, नवम, त्रयोदश इत्यादि अयुग्म दिनों में रोग बढता है इस लिये इन दिनों में सावधानी और होशियारी से रोगी के पास विशेष कर रात्रि में आदमी रखना आवश्यकहै। इस बात पर ध्यान रखना चाहिये कि रोग के बढने के दिन आसानी से और अच्छी तरह कटजावे। उचित औषधि तजवीज होने से प्राय इस प्रकार रोग नहीं बढता।

आतिसारिक विकार ज्वर।

(टाईफोयड फीवर।)

यह बहुत साधातिक और तरुण ज्वर है। यह प्रायः २८ दिन अथवा इस से अधिक रहता है। इस को वातश्लेष्मा विकार ज्वर और आन्त्रिक ज्वर भी कहते है।

कारण।—यह ज्वर एक विशेष प्रकार विषसे उत्पन्न होता है। सन्निपात विकार ज्वर से यह बिलकुल जुदा है। यह सक्रामक नहीं होता। रोगी का मल ही विषाक्त हो जाता है और उसी से यह ज्वर पैदा होता है। रोगी के मल से दूषित भाप उठकर हवा को जेहरीली कर देती है, इसी जेहरीली हवा से रोग उत्पन्न हो सकता है। जलके कारणही यह रोग मनुष्य को लगजाता है। किसी तरह सेभी विषाक्त मल पानी के साथ मिलकर इस पानी को पीता है उसी को बीमार करदेता है। पानी मिला हुआ दुध भी इस बीमारी का दूसरा कारण है।

कभी कभी आतिसारिक विकारके बीज मलसे निकलनेके

समय तीव्र और तेजशाली नहीं रहने, वह निकल कर विशेष किसी किसी अवस्था में सरचित होने पर उत्सेचन क्रिया द्वारा अर्थात किसी तरह पर सींचे जाने से भयातक आकार धारण करते हैं। यह रोग छूत से नहीं होता; इस रोग के मल में रहने वाले बहुतही छोटे जीव ही बीज होते हैं जो कि देह में प्रवेश कर असख्य बीज उत्पन्न कर देते हैं, जिस समय में यह बीज बढते हैं उसीको इसकी अप्रकाशावस्था कहते हैं।

पूर्ववर्ती कारण।—इस रोग का प्रधान पूर्व वर्ती कारण उमर है। बहुत छोटे बच्चे अथवा बूढे मनुष्य को यह रोग बहुत कम होता देखा गया है। प्राय १५ वर्ष से लेकर ३० वर्ष तक होता है। स्त्री और पुरुष, धनी और दरिद्र, सबको समान रूप से इस के द्वारा बीमार होनेकी आशका रहती है। यदि पुराना अथवा और कोई रोग हो तथा गर्भवती स्त्रियोंको यह रोग प्राय नहीं होता। अत्यन्त परिश्रम, मानसिक कष्ट, दुर्बलता रहने पर इस रोगको होना बहुत सभव है।

लक्षण।— (१) अप्रकाशावस्था, आन्त्रिक ज्वर की अप्रकाशावस्था कितने दिन ठहरती है इस का कुछ नियम नहीं है। यह अवस्था १० दिन अथवा उस से अधिक समय तक ठहर सकती है। इस समय विशेष किसी प्रकार के लक्षण वर्तमान नहीं रहते। प्राय यह अवस्था बहुत थोडे समय तक रह कर अचानक, उलटी ज्वर आदि उपस्थित होकर रोग आरम्भ होते देखा गया है।

(२) यथार्थ आक्रमणावस्था, इस रोग को जुदी जुदी

अवस्थाओं में विभक्त करना कठिन तो है, किन्तु जुदे जुदे समयों में विशेष विशेष लक्षणों से इस के विभाग किये जासकते हैं। आक्रमणावस्था बहुत धीरे धीरे उपस्थित होती है, इस लिये यह निश्चय नहीं होसकता कि रोगी किस दिन बीमार हुआहै। शिर दर्द, शिर घूमना, कानों में शब्द, प्राय सर्वदा शरीर में दर्द और आलस्य होना, बेचैनी, सोते समय बार बार जग उठना, थोडी थोडी सर्दी लगना, उदरामय, भूख की कमी, जीभ मैली, जी मिचलाना और उलटी होना इत्यादि लक्षण रोगके आदि में देखेजाते हैं। कभी कभी पेट में बहुत दर्द होता है, प्राय उदरामय ही एक मात्र प्रधान लक्षण प्रकाशित होता है। प्राय बारबार नाक से खून गिरना देखा जाता है इस के बाद ही ज्वर दिखलाई पडता है यह ज्वर सन्ध्या समय बढ़ता है। प्राय यह रोग धीरे धीरे वे मालुम आकर उपस्थित होता है कि रोगी बहुत दिन तक उस के विषयमें न कुछ जानसकता है न समझ सकता है।

प्रथमावस्था।— इस रोग से बीमार होकर पहिले आठ दश दिन के भीतर नीचे लिखे हुये लक्षण पाये जाते हैं। रोगी का चेहरा देखने से अधिक दुर्बलता नहीं मालुम होती। ज्वर रहता है, शरीर गरम प्राय सूखा हुआ, कभी कभी पसीजा हुआ, नाडी की धड़कन १०० से १२० तक कुछ कमजोर और कोमल, दोनो होट सूखे हुये, प्यास लगना, भूख बन्द, प्राय जी मिचलाना, उलटी होना, जीभ पर सफेद अथवा पीले रंग का मैल जमा हुआ और पहिले जीभ का गीली रहना आदि लक्षण उपस्थित रहते हैं।

पेट के लक्षण।—यथा दर्द विशेषतः पेट के नीचे दाहिनी ओर, थोड़ा बहुत पेट अफर जाना और उस में हवा भरजाना, पेट दाबने से गड़ गड़ शब्द होना तथा उदरामय बहुत ज्यादा रहना। परीक्षा करने से तिल्ली बड़ी हुई दीख पड़ती है, कभी कभी आन्तों से रक्त गिरता है। उदरामय की तेजी बढ़ने घटने लगती है, २४ घण्टे के भीतर दस्तों की सख्या दो से लेकर बारह २० अथवा-इस से भी अधिक देखी जाती है। प्राय तीन से लेकर ६ बार तक दस्त होता है। इन दस्तों के कुछ विशेष लक्षण है, जिन के द्वारा आन्त्रिक ज्वर के दस्त निर्णय किये जाते हैं। दस्त की शकल मटर की फली के पानी में औटे हुये के समान, दुर्गन्ध और प्राय एमोनिया भाप के समान गन्ध। निकलते समय यह दस्त एकसाही रहता है किन्तु किस बरतन में कुछ समय तक रखने से उस के ऊपर पीले पीले रंग का पानीसा संश्लित होजाता है और नीचे खाई हुई चीज के अश, एपीथीलियम, रक्त, आन्तों के सडे हुये टुकडे आदि नीचे पडे रहते हैं।

इस समय मस्तिष्क के लक्षण प्रबल नहीं होते। शिर दर्द रहता है, साथ साथ सिर घूमता है, और कानों में शब्द सुनाई पडते हैं। रात्रि के समय नींद अच्छी तरह नहीं आती, किंतु, मानसिक अवस्था ठीक रहती है, रात्रि में भी रोगी नही थकता। उस समय नाक से खून प्राय गिरता है और थोडी थोडी खांसी के लक्षण प्राय रहते हैं॥

स्फोट।—आंत्रिक ज्वर के सब स्थानों में न होतो

अधिकांश स्थानोंमें शरीर में एक प्रकार की फुंसियां दीख पडती है। यह फुसियां बच्चे अथवा अधिक उमर के लोगों के शरीर में प्राय नहीं निकलती। यह सात और १२ दिन के भीतर ही निकलआती है किंतु कभी कभी २० दिन की देर भी होजाती है। पेट, छाती और पीठ में अक्सर निकलती है। यह फुसियां सब स्थानों में सब एक साथ नहीं निकलती, दो दिन से लेकर ५ दिन तक रहकर बैठजाती हैं। रोग २८ वा तीस दिन तक इस प्रकार फुसियां निकलते हुये देखाजाता। है इन फुसियों की संख्या एक साथ अधिक दिखलाई नहीं पडती, लगभग १२, २० या ३० एक २ स्थान में एक एक बार दीखपडती है।

रोग बढने की हालत।—ऊपर कहे हुये लक्षण नहीं बढकर आराम होने के समय तक इसी हालत में रहसकते हैं—ऐसी हालत में जीभ गीली रहती है, बहुत ज्यादा दुर्बलता या स्नायुविक लक्षण नहीं रहते, किंतु कभी वह सब लक्षण बदल कर और बढकर रोग को बहुत कठिन कर देते ह। रोगी दुबला और कमजोर होकर अतमें गिर जाता है और उठने की शक्ति नहीं रहती। यदि छाती पर अगुली द्वारा जोर से चोट मारी जाय तो ऐसा मालुम होता है कि पठे सुकडकर और कठिन होकर फूलते है ऊचे होजाते हैं, चेहरा की रगत लाल आखें खून से भरी हुई, आंखकी पुतली फैली हुई। ज्वर का एक समान रहना, नाडी बहुत तेज किंतु दुर्बल तथा हृत्पिण्ड की क्रिया और भी दुर्बल होजाता है। जीभ सूखी हुई और गहरी फटी हुई, दात, और होट मैले, श्वांस में दुर्गंध आना आदि

जाते है और कभी कभी आंतों से खून गिरता है और बेमालुम दस्त और पेशाब भी निकल जाता है, तिल्ली बहुत बढजाती है।

स्नायुविधान में स्पष्ट तबदीली मालुम पडती है। १० दिन से लेकर १४ दिनके भीतर शिर दर्द और शरीर में दर्द कम होता जाता है किंतु अधिक सिर घूमना और बहरापन मालुम होता है। मानसिक अवस्था में भी फरक पडजाता है यथा नींद सी आना, मानसिक गडबड, बकना इत्यादि। बकना पहिले केवल रात्रि में ही होता है और दिन के समय रोगी नींद कीसी हालत में रहा आता है। पहिले केवल गडबड बकता है और यौंही चिल्लाता है, पीछे क्रमश भयानक आकार धारण करता है, बिछोनेसे खडा हो जाताहै, भय पाकर चिल्लाता है, बिछोने खोंचना आरम्भकरता है इस समय भी नाक से खून गिरता है।

सास जल्दी जल्दी चलता और सरदी और खांसी के लक्षण दिखलाई पडते हैं। पेशाब बहुत और वजन में साधारण पेशाब की अपेक्षा हल्का होता है। कभी पेशाब बन्द होजाता और कभी दस्त जाते समय बेमालुम पेशाब निकल जाता है। जिस करवट रोगी सोता है उन्हीं स्थानों में शय्याक्षत उपस्थित हो जाते हैं। आन्त्रिक ज्वर जिस समय कम होने लगता है बहुत धीरे २ घटता है, शरीरकी गरमी धीरे धीरे कम होकर स्वाभाविक हो जाती है। आरोग्यावस्था अर्थात् रोग न रहना और नाडी की बहुत धीर गति दिखलाई पडती है। इस अवस्थामें कभी कभी फिर बढजाता है और पीछ होने वाले बहुत से उपसर्ग आराम

होने को रोक देते हैं॥

शरीरकी गरमी।--आन्त्रिक ज्वर में शरीर की गरमी बडे विलक्षण ढगसे बदलती हुई देखीजाती है। पहिले चार दिन तक यह बढती रहती हैं। प्रातःकाल की अपेक्षा सन्ध्या को दो डिगरी अधिक होता है, शरीर की गरमी प्रातःकाल पहले दिनकी सन्ध्याके अपेक्षा एक डिगरी कम होती है अर्थात् प्रति दिन एक डिगरी बढती जाती है। शरीर की गरमी का ठीक इस प्रकार बढना घटना आन्त्रिक ज्वर का प्रधान लक्षण है।

पहिले सप्ताह के अन्त में शरीर की गरमी को देखकर भावी शुभाशुभ निश्चय किया जा सक्ता है। इस समय १०३ डिगरी से १०५ डिगरी तक शरीर की गरमी का क्रमशः बढना अच्छा है। पहिले सप्ताह के बाद कई दिन तक शरीर की गरमी का १०५ डिगरी रहना अशुभ समझना चाहिये, तथा तीसरे सप्ताह में शरीर की गरमी का अधिक बढना घटना भी बुरा लक्षण है।

डाक्टर विलसन ने ४०० रोगियों की चिकित्सा करके शरीर की गरमी के अनुसार इस रोग द्वारा सैकडे पीछे मृत्यु संख्या इस प्रकार निश्चय की है।

१०४ डिगरी से अधिक जिनके शरीर की गरमी नहीं बढती उन में सैकडे मृत्यु संख्या ९.६। १०४ अथवा इस से अधिक जिनकी गरमी बढ जाती है उनकी सैकडे पीछे मृत्यु संख्या २९.१। १०५.८ अथवा इससे अधिक जिन की गरमी बढती है उन की सैकडे पीछे मृत्यु संख्या ५० होती है तथा १०७ डिगरी तक जिन की गरमी बढ जाती है वह प्रायः सब ही मर जाते है।

ज्वर जब कम होने लगता है तो शरीर की गरमी बहुत धीरे २ कम होती है। प्रातःकाल और सन्ध्या के समय शरीर की गरमी में दो तीन डिग्री की घट बढ दीख पडती है। पूरा आराम होने में अर्थात शरीर की स्वाभाविक गरमी होने में बहुत समय लगता है; यदि उपसर्ग आदि कुछ उपस्थित होजाय तो इस समय बहुत कुछ बढकर तथा दुबारा आक्रमण होने के कारण शरीर की गरमी फिर अधिक होजाती है। इस रोग में प्रतिदिन दोनों समय नियमितरूप से शरीर की गरमी को लिख लेना बहुत आवश्यक है। यह रोग मालुम होते ही फौरन एक तापमान यन्त्र अर्थात थरमामेटर लाकर रखना चाहिये।

पुनराक्रमण (बीमारी का एक बार आराम होने के बाद फिर बढना) आन्त्रिक ज्वर आराम होते होते कोई दोष उपस्थित हो अथवा नहीं, फिर भी वह आकर उपस्थित होजाता है, यहां तक कि एक एक रोगी को तीन तीन चार चार बार भोगते हुए देखा गया है। कभी केवल ज्वर और कभी इस रोग के सब लक्षण लौट आते हैं। शरीर की गरमी स्वाभाविक होजाने के दशदिन बाद यह पुनराक्रमण उपस्थित होता है। यह रोग लौटने पर भी प्रायः रोगी अच्छा होजाता है। इस समय भोजन और, और और स्वास्थ्य सम्बन्धीय नियम प्रतिपालन करने से जल्दी आराम होने की आशा होती है।

आनुसंगिक (साथ में रहने वाले) और **परवर्ती उपसर्ग।** [अर्थात पीछे उपस्थित होने वाले उपसर्ग।]—

सन्निपात विकार ज्वर में जो सब उपसर्ग लिखे गये

हैं इस ज्वर में भी वे सब उपसर्ग उपस्थित होते हैं। इस के सिवाय आंतों में छेद होजाना तथा आंतों के ढकने वाली झिल्ली में प्रदाह होना इस रोग में सबसे अधिक चिन्ता करनेवाला उपसर्ग है। प्रायः तीसरे चौथे सप्ताह में ही आन्तों में छेद होजाते हैं। आन्तों से खून गिरना भी बहुत साङ्घातिक उपसर्ग है। यह लक्षण १४ से २४ दिन के भीतर प्रकाशित होता है।

परवर्ती, उपसर्गों में यक्ष्माखांसी, मानसिक शक्ति की कमजोरी अथवा पागलपन, थोडी देर रहने वाला अथवा बहुत देर रहने वाला साधारण अथवा स्थानीय पक्षाघात स्नायु-सूल, कान से मवाद निकलना बहिरापन, अध्यायन खून की कमी कमजोरी और दुबलापन प्रधान हैं।

अवस्थिति और परिणति (रोगका ठहराव, तथा अन्त)

पहिले ही लिखा जाचुका है कि आन्त्रिक ज्वर इतने धीरे २ और बे मालुम उपस्थित होता है कि रोग किसी दिन शुरू हुआ है यह रोगी निश्चय नहीं कर सकता। यह रोग प्राय तीन वा चार सप्ताह तक ठहरता है, कभी ३० दिन से अधिक भी लगजाते हैं। बहुत से रोगी इक्कीस वा अट्ठाईस दिन के भीतर ही अच्छे होजाते हैं। उपसर्ग, रोगका फिर होना इत्यादि द्वारा इसके ठहराव का समय और भी बढसक्ता है।

आक्रमणावस्था १ से ५ दिन तक। गांठ बढना १२ वा १९ दिन तक, घाव की अवस्था, १४ से, २१ या २८ दिन तक रहती है। तीसरे सप्ताह के अन्त में सब से अधिक आशङ्का होती है। मृत्यु प्राय २४ दिन से पहिले नहीं होती है॥

आन्त्रिक ज्वर का परिणाम तीन प्रकार से होता है, आराम होजाना, मरजाना अथवा हमेशा के लिये स्वास्थ्य बिगड़जाना। मृत्यु होयतो नीचे लिखे हुए कारणों से होती है॥

(१) दुर्बल होते जाना और साथ साथ खून की कमी। (२) रक्तस्राव—नाक और आतों से, (३) रक्त दूषित होना ४। अति प्रबल ज्वर ५। उपसर्ग यथा आतों में छेद होना या आतों को ढकने वाली झिल्ली में प्रदाह। साधारणतः इस रोगकी मृत्यु सङ्ख्या फी सैकड़ा २० होतीहै।

सान्निपातिक विकारज्वर।	आन्त्रिक विकार ज्वर।
१-एपीडेमिक।	१-एण्डमिक।
२-अत्यन्त सक्रामक।	२-सक्रामक नहीं।
३-अचानक आक्रमण।	३-धीरे धीरे आक्रमण करताहै।
४ ठहरता १४ दिन तक।	४-तीन ४ सप्ताह तक ठहरताहै।
५-शायदही कभीलौटकर आताहै	५-प्राय लौटकर आता है।
६ आंखकी पुतली सुकड़ जातीहै	६-आंख की पुतली प्राय फैल जाती है।
७-नाकसे खून नहीं गिरता।	७-नाकसे प्राय खून गिरता है।
८—चमड़ा बहुत गरम कभी कभी एमोनिया की तरह गन्ध निकलती है।	८-शरीरपर प्राय खट्टा पसीना आता है।
९-फुन्सियाकी अधिकता सब अङ्गों में देखी जाती है।	९-फुन्सिया कम और प्राय छाती और पेट पर दिखलाई पड़तीहैं।
१०-फुन्सी पाचवे या छटे दिन निकलती हैं; एक एक दाग रोग के अन्त तक रहता है।	१०-फुन्सिया ७ व और ९ वें दिन के भीतर निकल आती है। एक एक दाग सिर्फ तीन दिन तक रहता है।

११-शरीर की गरमी बहुत जल्दी बढजाती है, दूसरे दिन के बाद ही १०४ या १०५ डिगरी होजाती है ।	११-शरीर की गरमी सुबह से शामतक २ डिगरी ज्यादा होती हैं और दूसरे दिन सवेरे १ डिगरी कम होजाती है ।
१२-शरीरकी गरमी १२वें या १४वें दिनके बाद ही बहुत जल्दी कम होने लगती है ।	१२-शरीर की गरमी चौथे दिन प्रातः काल १०४ डिगरी होजाती है और चौथे सप्ताह में क्रमश स्वाभाविक होजाती है ।
१३-बकना और बेहोश रहना पहिले से ही इन दोनो हालतों का स्पष्ट प्रकाशित होना	१३-मस्तिष्क के लक्षणों का क्रमश उपस्थित होना और बहुत दिन तक ठहरना ।
१४-पेटके लक्षणोंका न रहना । (क)कब्ज,(ख) पेट अफरना नहीं रहते ।	१४-पेट के लक्षण प्रधान हैं (क) उदरामय, (ख) पेट का अफरना और गडगडाहट करना, पेट की दाहिनी और नीचे तरफ दाबने से दर्द होना ।
१५-दुबलापन कम, कमजोरी ज्यादा ।	१५-दुबलापन बहुत ।
१६-दश दिन के भीतर मरजाता है ।	१६-शायदही कभी १४ दिन के भीतर मृत्यु होती है। प्राय तीनसप्ताह और इससे ज्यादा लगते हैं ।
१७ सैंकडे पीछे मृत्यु सङ्ख्या १५ से ५० तक ।	१७-सैकडे पीछे मृत्यु सङ्ख्या २० ।
१८-शरीर में कोई स्थानीय रोग नहीं रहते ।	१८-छोटी आंत और वहां की गांठों में स्थाई रोग होते रहते हैं ।

९-सब उमरों में हो सकता है।	१९—केवल जवानो कोई ही अधिक होता है।

चिकित्सा।—यह रोग बहुत सांघातिक है, इसलिये सको चिकित्सा का भार किसी होशियार चिकित्सक के ाथ में देना चाहिये। जब तक रोग निश्चय नहो सामान्य तरकी औषधि दी जासकती है।

चिकित्सा सार संग्रह।

१। आक्रमणावस्था—बैप्टेशिया—

२। उपसर्ग शून्य साधारण रोग—बैप्टेशिया, आर्सेनिक, रसटक्स।

३। अत्यन्त दुर्बलता—आर्सेनिक, म्यूरेटिक-एसिड।

४। प्रबल उदरामय—आर्सेनिक, विरेटम-अल्बम, इपीका, कार्बोवेजिटेबिलिस।

५। आंतों से रक्त गिरना—हेरीविन्थ, नाइट्रीक—एसिड इपीका।

६। सब उपसर्ग—फास्फोरस, बेलेडोना, ओपियम,।

७। रोग आराम होने के बाद कमजोरी-फास्फोरिक-एसिड, इग्नेशिया, एमोनियम-कार्ब, फेरम, सलफर, चायना, नक्सवोमिका।

प्रधान प्रधान औषधि।—जिस समय इस रोग का विष शरीर में प्रवेश करने लगता है उस के कारण जो ज्वर आता है उस का रोकना बहुत कठिन है। यदि आन्त्रि क विकार ज्वर के कोई विशेष लक्षण प्रकाश होने से पहिले ही यदि रोगी चिकित्सा के अधीन होयतो बेप्टेशिया और ब्रायओनिया देने से रोगकी तेजी कम होस-

कती है, अथवा उसका बढ़ना रोका जासकता है ।

इस रोग के प्रथम सप्ताह में एक मात्र उत्तम औषधि वेप्टेशिया है । नाडी कोमल और पूर्ण किन्तु तेज, शिर, दर्द और बकना, आराम होने का भरोसा न रहना, श्वास में बदबू आना, सब शरीर में दर्द, सोने से कष्ट मालुम होना इत्यादि वेप्टेशिया के लक्षण हैं । जिस रोग में जीवनी शक्ति बहुत कम होती हुई दीखपड़े उस में यह बहुत फायदा करती हे । रोग के प्रारम्भ में यह दवाई दीजाने पर रोगकी तेजी बहुत कुछ कम होसकती है ।

ब्रायओनिया भी एक उत्तम औषधि हे । घाव होने से पहिले यह दवा अच्छी है । स्नायविक लक्षण रहने परभी विशेष कर रात्रि में पहिले दिन के किये हुये कामों के विषय में बकना इत्यादि हालतों में दीजाती है । कभी कभी यही एक दवा बहुत अच्छा फल दिखलाती है ।

रसटक्स अधिक तेज रोगों में फायदा करता है, यह सब अवस्थाओं में विशेष कर आन्त्रिक अर्थात आतिसारिक लक्षण प्रकाशित होने पर दिया जाता है । इस रोग के, विशेष प्रकार का मल दिखलाई देना, मल मूत्रादि बहुत होना, जीभ सूखी हुई, आगे के हिस्से में लाल रंग का त्रिकोनाकार दाग, और गठिया की तरह सब शरीर में दर्द होना, (स्थिर रहने से वृद्धि) लक्षणों में यह दवा दी जाती है । रसटक्स से यदि उदरामय आराम न होतो आर्सेनिक देना चाहिये । दूसरे सप्ताह के दूसरे हिस्से में और तीसरे सप्ताह में यह बहुत फायदा करता है । मल काले रंग का बहुत बदबू दार और जब रोग के शुरु में ही शय्याक्षत होते हुये दीखे तो आर्सेनिक देना चाहिये।

आर्सेनिक देने से वार वार पेशाव का वेग, पेशाव कम होना और जलन होना इत्यादि को जल्द आराम हो जाता है।

शारीरिक और स्नायविक शक्तिका कम होना, अत्यन्त दुर्बलता के कारण रोगी का सब तरफ से दिल हट जाना आदि लक्षणों में फोस्फोरिक-एसिड अच्छी दवा है। रोग के प्रारम्भ में यह दवा देने से उदरामय बन्द हो सक्ता है, विशेषकर मल यदि पीले रङ्ग का और पानी सा होय, जीभ की रंगत बदली हुई, गीली और थोड़ा लेप सा लगा हुआ। कम साघातिक रोगा में कम सुनाई पड़ना और स्नायविक दुर्बलता रहने पर यह दवा बहुत फायदा करती है। दो चार मात्रा केलकेरिया कार्ब देकर पीछे लाइकोपोडियम देनेसे, फुन्सिया निकलने में देर होने के कारण जो उपसर्ग बढ़ जाते हैं, रोगी धीरे धीरे थकने लगता है और पेट फूल जाता है इत्यादि लक्षणों को बहुत फायदा होता है।

शरीर में गलन सी मालूम पड़ने पर म्यूरियेटिक—एसिड फायदा करता है। कभी कभी सड़े हुये गले में घाव इत्यादि उपसर्ग होते है। उन में म्यूरियेटिक-एसिड फायदा करता है। इसके सिवाय यदि आतों के घाव से रक्त गिरता हो और नाइट्रिक-एसिड से कुछ फायदा न हुआ हो तो यह बहुत फायदा दिखलाती हैं। बिछौने मे बराबर सरक जाना इस का एक प्रधान लक्षण है। कठ और स्वर की जगह में घाव हो जाना और अत्यन्त दुर्बलता मरक्यूरियस-सायनाईड का लक्षण है। मल केवल हरे रंग का श्लेष्मा मिला हुआ, और जीभ मोटी, सफेद मैल से ढकी हुई, आतों में

घाव और उन से खून गिरना, खून देखने में ताजा और लाल रंग का इत्यादि लक्षणों में नाईट्रिक-एसिड प्रधान औषधि है। काले रंग का खून गिरने में क्रियोजोट या हेमामेलिस दिया जाता है। आतों से रक्त गिरने के साथ बहुत पेट का सूजना और पेशाब बन्द होना इत्यादि हालतों में टेरीबिन्थ दिया जाता है। बार बार पेशाब बन्द होना रोकने के लिये ओपियम एक मात्र औषधि है।

फास्फरिक-एसिड औषधि की सहकारी औषधि फास्फोरस है। यदि रोग सांघातिक हो और दुर्बलता बढ़ गई हो तो यह दवा दी जाती है। मल बहुत निकलना मांस धोये हुये जल की तरह अथवा कोफी (कहवा) औटाये हुये जल की तरह, दस्त जाते समय दर्द न होना, पहली अथवा दूसरी अवस्था के शुरू में बार बार पानी सी पित्त मिली उलटी का होना इत्यादि इस के लक्षण हैं। रोग होने के पहिले सप्ताह में उदरामय और रोग आराम होने के बाद भी उदरामय रहने से फास्फोरस फायदा करता है। ब्रायओनियां द्वारा सर्दी और फेफड़े के सब उपसर्गों को फायदा होने पर तथा दूसरी अवस्था के शेष में फेफड़े में रक्त अधिक होना, अथवा प्रदाह होने को फास्फोरस बहुत फायदा करता है। फेफड़ों में बहुत श्लेष्मा इकट्ठा हो जाना गले में घड़घड़ाहट और फेफड़े का सूजना आदि लक्षणों में एन्टीमोनियम-टार्ट दिया जाता है।

द्वितीयावस्था में आंतों की पेयार गांठों में गहरे घाव होकर आंतों में छेद होने की आशङ्का हो तो मर्क्यूरियस

इलसिस देना चाहिये। रात में बार बार दस्त होना, मल की रंगत हरी या पीली, जीभ मोटी और मैली ताहो किन्तु गीली और न बकना इस के लक्षण हैं। आंतों में छेद अथवा आंतों के ढकने वाले का प्रसाद (पेरीटोनाईटिस) उपस्थित होतो मरकुरियमकारोसाईवस देना चाहिये। रोग की बढी हुई और बिगडी हुइ हालत में जब कि सब जीवनी शक्ति पूरे तरह से निस्तेज होजाय और यह निस्तेजता फास्फोरस, म्यूरियटीक-एसिड रस-टक्स अथवा आर्सेनिक आदि किसी औषधि से दूर नहो, हृत्पिण्ड की किया शिथिल और धीर होजाय उस-समय कार्बोवेजीटेबिलिस अन्तिम औषधि है ।

रोगी बकता हो तो बेलेडोना, हाओसायमस्, स्ट्रेमोनियम, ओपियम, वेलेरियन, लेकेसिस् और आर्निका आदि बहुत आवश्यकी औषधि हैं । रोग के प्रारम्भ में ही विकार और बकना हो, तरह २ के भयानक दृश्य दीखते हों, अपने इष्ट मित्रों को न पहिचानता हो तो बेलेडोना फायदा करता है । यदि बेलेडोना से बकने को फायदा नहो और रोगी बराबर बकतारहे, चाहे जिस अवस्था में हों, काम प्रवृत्ति के कारण उत्तेजना अथवा बिलकुल सुस्ती आदि लक्षणों में हायओसायमस फायदा करता है ।

अत्यन्त बकने की हालत, बराबर बकते रहना, उजाले में और आदमीयों में बहुत ज्यादा बैठने की इच्छा होतो स्ट्रामोनियम फायदा करता है।

बेलेडोना, हायोसायमस और स्ट्रामोनियम से कुछ फायदा न दीखे तो वेलेरियन देना चाहिये। अत्यन्त बेहोशी और सुस्ती किन्तु थोडा ज्वर, एक बार थोडा २ बकना और

फिर एक बार अज्ञानता, घर्राटे के साथ श्वास चलना, बेहोशी इतनी होना कि मस्तिष्क के पक्षाघात का समय होतो ओपियम देना चाहिये। यदि ओपियम से कुछ फल न दीखे तो लेकेसिस बहुत फायदा करता है, विशेष कर यदि नीचे का जावड़ा गिर पड़ने का लक्षण हो। बेहोशी के साथ व मालुम दस्त निकल जाने के लक्षण में आर्निका दिया जाता है।

अन्तर्वर्ती औषध।—जब जो उपसर्ग या लक्षण प्रबल हो उस समय उनको आराम करने के लिये और औषधि देने के बीच बीच में जो दवाइयां दीजाती हैं उनको अन्तर्वर्ती औषध कहते हैं। इस रोग में नीचे लिखी हुई अन्तर्वर्ती औषध प्रधान हैं।

पहिली हालत में नाक से खून गिरना—मरकुरियस-साल्युबा लीडस्।

अन्तकी अवस्था में नाक से खून गिरना—फास्फोरस्।

कनपटी की गांठ में जलन होना (पैरटाईटिस्) वेलडोना या मरकुरियस-बाईवस।

हाथ पैरों के बायटे—कारोसीरेमस्।

नाड़ी के दोष उपस्थित हों, अर्थात् क्षीण हो जायतो-आर्सेनिक, कार्बोवेजीटेबलिस।

शय्याक्षत।— कार्बोवेजीटेबिलस फ्लूरिक-एसिड, या सिकेली।

आरोग्य होने के समय भूख न लगना—कोकुलस, बहुत भूख लगना—चायना, अजीर्ण होना—नक्सवोमिका यदि आराम होने में देर होतो सोरिनम्, एलस्टोनिया, सलफर।

प्रधान औषधों के लक्षणः—

ब्रायोनियों ६, १२ शक्ति।—सामान्य कारण से उत्तेजित हो और रोगी सहज में ही चिड़जाय, अत्यन्त कष्टदायक शिर दर्द, शिर घूमना मानों मस्तक गोलाकार होकर घूमता है। आंख बन्द करने से तरह तरह के दृश्य दीखना, रात्रि के समय बकना विशेष कर पहिले दिन के काम काज के विषय में बकना, कान में भौं भौं शब्द होना और बहरापन, नाक से खून गिरना, विशेष कर प्रात काल के समय सोकर उठते समय मुंह में खुश्की, होंठ फटे हुये, मुह का तेज कड़वा स्वाद, अत्यन्त प्यास, एक साथ बहुत जल पीना, जी मिचलाना और चक्कर आना, इसी कारण उठकर बैठ न सकना, सुखी खांसी, छाती और जिगर में सुई चुभना, पूर्ण, कठिन और तेज नाड़ी, हिलने झुलने से पीड़ा और हाथ पैरों में दर्द होना, बेचैनी के साथ नींद, सोते समय गुनगुनाहट का शब्द मालूम पड़ना और चबाने की तरह मुह चलाना, बहुत कमजोरी और थकावट।

चायना ६ शक्ति।—चेहरा रक्तहीन, बराबर हाथ पैर फैलाना और जगह बदलने की इच्छा करना, जिगर और तिल्ली का बढ़ना, मुह का कड़वा अथवा खट्टा स्वाद, खाली डकार आना, दूध पीने से न पचना, पेट सूजना, बिना दर्द के अजीर्ण की तरह मल निकलना सोते समय बहुत पसीना आना, विशेष कर जिस करवट रोगी सोता हो, बहुत कमजोरी, आरोग्यावस्था - बहुत दिन तक ठहरनेवाली।

कोकूलस ६, शक्ति।—बात कहने से आसानीसे न समझता हो, बिछौने से उठते समय शिर घूमना और जी मिचलाना, इस लिये मजबूरी सोते रहना, आंखों के पलक भारी मालूम होना, पानी बहने की तरह कानों में शब्द सुनाई पडना, भूख न लगना, मूह का स्वाद तांबे का सा, पानी पीते में गले से उतरते समय गडगड शब्द होना, पेट बहुत फूलना और गडगड करना, कन्धों के पट्ठों की कमजोरी।

लेकेसिस ६,३० शक्ति—अत्यन्त मानसिक और शारीरिक थकावट, नींद आना परन्तु सो न सकना, सोते समय सब लक्षणों का बढना, बहुत बकना, एक विषय के ऊपर दूसरा विषय, मुंह बैठजाना, नीचे का जावडा गिर जाना, जीभ सूखी हुई, लाल रगत की या काली, फटी हुई और उससे रक्त गिरना, जीभ बाहर निकालते समय कांपना, अत्यन्त बदबूदार मल, आंतों से रक्त गिरना; श्वास कष्ट, कम गहरा घाव, घाव देखने से नीले वा काले रंग का मालुम होना।

लाईकोपोडियम १२ शक्ति—बेचैनी के साथ नींद, मुंह से सडी हुई बदबू आना, जीभ के ऊपर फुन्सियां, मीठी चीज खाने की इच्छा होना, थोडा खाने से ही पाकस्थली भरी हुई मालुम होना और उसी कारण से पेट भरजाना और सूजजाना, खांसी, थोडा और नमकीन कफ निकलना, एक पैर ठंडा और एक पैर गरम, स्नायविक दुर्बलता, दस्त जाने से पहिले सरलान्त्र मे (सूधी आंत) ठंड मालुम होना, पेशाब से कपडे में लाल और रेत की तरह दाग पडजाना।

मरकूरियस ६ शक्ति।—शिर भारी मालूम पडना, नींद बहुत आना, धीरे २ बातोंका उत्तर देना, कांपना, कमजोरी और थकावट, जीभ सूजी हुई, नरम, जीभ के ऊपर दांतों के दाग पडजाना, मुह से सडी हुई बदबू आना, जिगर की जगह दर्द होना, लसदार या पानी सा, पित्त मिला हुआ उदरामय, पेट सूजा हुआ, कडा और दर्द होना, राग की गाठों का सुजना और पकना, बार बार पेशाब करना, पेशाब को रखेरहनेसे नीचे सफेद सफेद जमजाना, रात के समय पसीना आना, पसीना पीले रग का, सोते समय नाक से खून गिरना॥

नाइट्रीक-एसिड ६, ३० शक्ति।—चिन्ता और मृत्यु भय, शरीर के सब स्थानों में बार बार दर्द होना, अचानक दर्द हो उठना और अचानक बन्द होजाना, खडिया, चूना और मिट्टी खाने की इच्छा करना, जीभ के ऊपर सफेद मैल, मुह और गले के भीतर घाव, गले के भीतर श्लेष्मा इकट्टा होजाना, पेट बहुत सूजाहुआ दाबने से दर्द मालुम होना, आंतों से खून गिरना, हरे रग का चिटचिटा दुर्गन्ध युक्त मल, खून मिला हुआ कफ, घावें, दुबलापन विशेषकर हाथ और छातीपर, शिर के बाल उठजाना, पारा खाने से जो कूफल होता है उसके बाद यह बहुत फायदा करती है।

नक्सवोमिका ६ ३०, शक्ति।—सोते समय बुरे २ दृश्य दीखना, थोडे से हिलने से सरदी लगना, मुह और जीभ का अग्रभाग सूजा हुआ, भोजन के उपरान्त पेट फुला हुआ, चरबी मिला हुआ भोजन खाने की इच्छा,

करना, भूख लगना किंतु खाने की इच्छा न होना पर्य्याय-क्रमसे कब्जियत और उदरामय, दुर्बलापन।

पल्सेटिला ६ शक्ति ।—ठिनकना अथवा रोनेकी इच्छा करना, ठण्डलगना, भयावने स्वप्न दीखना, मुंह से दुर्गन्ध निकलना, प्यास न लगना किंतु जीभ सूखना, हमेशा थूकते रहना, मुंह का कड़वा स्वाद, भोजन करने के एक घंटे के बाद पाकस्थली में दर्द मालुम होना, रात्रि के समय आवाज़ के साथ पेट गड़गड़ाना, रात्रि के समय उदरामय, अत्यन्त कमजोरी।

और औषधियों के लक्षण सान्निपातिक विकारज्वर में देखने चाहियें।

सहकारी उपाय ।—सान्निपातिक विकारज्वर की तरह आतिसारिक विकारज्वर में भी औषध से तकलीफ पाने का समय कम नहीं किया जासकता, इस लिये जल्दी ज्वर आराम करने की इच्छासे जल्दी २ और वार २ औषधि देना वृथा है। किंतु, बहुत औषधि देने से रोगी क्रमशः दुर्बल होजाता है और उपयुक्त औषधि तजवीज न होने से पीडा अत्यन्त बढसकती है। आतिसारिक विकारज्वर की चिकित्सा में इसलिये धीर और साहस के साथ प्रति दिन बहुत ध्यानपूर्वक रोगी की परीक्षा करनी, उसके पथ्य आदि सेवा शुश्रूषा की ओर ध्यान रखना और जिस समय जो उपसर्ग आपडे उनका उसी समय उचित इलाज करना यही एक मात्र चिकित्सा है। जरूरत पड़ने पर कभी २ कितने ही दिनतक रोगी को विना औषधि रक्खा जासकता है।

रोगी को अच्छी तरह से शारीरिक और मानसिक विश्राम देना चाहिये; रोगी का शरीर, घर, शय्या और पहनने के कपडे आदि साफ रखने चाहिये, रोगी के घर में कोई आदमी न रहे, आवाज न हो और बहुत आदमियों की आमद रफ्त न हो, रोगी का दस्त, पेशाब आदि साव-धानीसे दूर फेंकना चाहिये, शय्याक्षत न होने पावे इसलिये बारर रोगी को करवट बदलवाना चाहिये, प्रतिदिन नियम से थरमामेटर लगाकर शरीर की गरमी जांचनी चाहिये, और प्रति दिन की गरमी एक कागज पर लिखते रहना चाहिये। पीठ आदि जिन जगहों मे अधिक बोझ लगता है रुई की गद्दी बनाकर उसपर स्पिरिट के साथ आर्निका मिलाकर मलदेना चाहिये। बाय के स्थानसें खुरन्ड उचल जाने पर वहा कर्वोलिक-एसिड का लोशन अथवा कैले-ण्डुला लिनीमेन्ट लगाना चाहिये।

पथ्य।—रोगी का यदि कमजोर होने का भय हो तो हम अंग्रेजी पुस्तकों के मतानुसार अधिक पथ्य देनेके पक्षपाती नहीं हैं। रोगी के पहिले सप्ताह में दूध अथवा मासका शोरवा देना अच्छा नहीं।

अंग्रेज लोग स्वभाव ही से जिस प्रकार अनापसनाप मांस और अन्डे खाते है उनके हिसाब से दूध अथवा शोरवा हलका पथ्य होसकता है। किन्तु हमलोग अन्न जीवी हैं, हमारे लिये तो यह गुरुपाक ही है। देश काल और पात्र के अनुसार पथ्य निर्णय करना चाहिये, किसी पुस्तक विशेष अनुसार चलना कदाचित उचित नहीं है।

पहिले सप्ताह में साधारणत पानीमायरावा

बारली के सिवाय और कुछ देना अच्छा नहीं है। यदि अतिसार, खांसी होतो दूध बिलकुल न देना चाहिये। यदि जिगर में विशेष कोई दोष नहो और रोग बहुत समय तक ठहरकर नाड़ी सूक्ष्म होजाय और अतिसार रहेतो एक समय शोरवा दिया जासकता है। यदि ज्वर कम नहो दूध देना उचित नहीं। जो लोग साबुदाना अथवा बारली नहीं खासकते उनके लिये खीलमण्ड* अच्छा खाद्य है। यह अतिसार रहने पर भी दिया जासकता है। अंगूर और अनार रोगकी सब हालतों में अच्छे पथ्य हैं। अतिसार में किशमिश खिलाना उचित नहीं हैं। अतिसार रहने पर सिंघाडे की दलिया‡ सब से ज्यादा फायदेवन्द हैं। यह दलिया बारली की तरह पानी में सिजाना होता है। ज्वर ज्यों ज्यों छोड़ता जाय त्यों की मैदाकी रोटी दो तीन दिन देने के बाद कुछ दिन तक एक समय चावल और राति को रोटी देना उचित है। ज्वर आराम होनेके समय भोजन के नियम के सम्बन्ध में सावधान रहना आवश्यक है, क्यों कि अधिक वा अनियमित आहार से दुबारा ज्वर होजाता है।

सविराम ज्वर।

इंटरमीटेंट फीवर।

सविराम ज्वर के बहुत से नाम हैं। सविच्छेद ज्वर,

---

* गरम पानी में ताजी खील डाल कर मसले फिर उसको छान कर मिसरी अथवा नीबू का रस निमक मिला कर खाना चाहिये।

‡ बारली तैयार करनेकी तरह ही सिंघाडे के आटे का दलिया तैयार करना चाहिये।

कम्प ज्वर, पारीका ज्वर, मैलेरिया ज्वर, इत्यादि, यह बहुत से नामों से पुकारा जाता है। निदान में इसको विषमज्वर कहते हैं। सविराम ज्वर ही हमारे देश में अधिक प्रबल है। तथा बंगाल में ऐसा कोई ग्राम नहीं जहा मलेरिया के कारण यह ज्वर फैलता हुआ नहीं दीखपडता। वर्द्धमान, रंगपुर, जशोहर, नदिया आदि बंगाल के नगरों में इस ज्वर के कारण जो उपद्रव होते हैं सो किसी से छुपा नहीं है। हमारे प्रांत में तथा भारतवर्ष के और और स्थानों में यह ज्वर फैलता तो है परन्तु इसका जैसा भयानक रूप बङ्गाल में देखने में आता है वैसा और कहीं नहीं।

यह ज्वर मलेरिया विष द्वारा उत्पन्न होता है इस की दो अवस्थायें होती हैं। घटना और बढना तथा ज्वर आना और ज्वर उतर जाना—। बढ़ने के समय सरदी लगना, उत्ताप और पसीना यह तीन अवस्थायें लगातार होती हैं और घटने के समय थोडी अथवा अधिक देर तक ज्वर की रुकावट अथवा विज्वरता उपस्थित होती है। ज्वर की रुकावट अथवा विज्वरता के स्थायित्वके अनुसार सविरामज्वरको प्रतिदिन आनेवाला इकतरा यानी २४घन्टे के अन्तरसे आने वाला, तिजारी अर्थात् ४८ घण्टेसे आने वाला और चौथैया अर्थात ७२घन्टे पर आने वाला इतनी श्रेणियोंमें विभक्त करसकतेहैं। दैनिक ज्वर प्रति दिन, इकतरा एक दिन छोडकर तिजारी दोदिन छोडकर और चौथैया तीन दिन छोडकर आताहै। इसके सिवाय दिनमें दोबार आने वाला ज्वर अर्थात् द्वैकालिक आदि ज्वर के भेद दीख पडते हैं।

सविराम ज्वर मैलेरिया विषसे उत्पन्न होता है। मैलेरिया क्या चीज है यह आज तक निश्चय नहीं हुआ। आज कल

के निदान तत्व जानने वाले पण्डितलोगों की बहुत जाच और गहरी खोज से यह एक प्रकार स्थिरहुआ है कि पराङ्ग पुष्ट (पराये शरीर में पुष्ट होने वाला) बहुत छोटे छोटे जीवाणुद्वारा यह ज्वर उत्पन्न होता है। वह लोग कहते हैं कि इन जीवाणुओंका नाम "मैलेरिया बेसीलस्"।

लक्षण।—इस ज्वर के सविस्तर लक्षण इस प्रकार हैं (१) अप्रकाशावस्था (२ बढने का समय, अर्थात् ज्वर के आक्रमण समय की तीन जुदी जुदी अवस्था (३) ज्वर का विराम, विच्छेद, अथवा विज्वरावस्था, (४) ज्वर के प्रकार, (५) परवर्ती फल। नीचे एक एकका वर्णन किया जाता है।

पहिली अर्थात अप्रकाशावस्था।—मैलेरिया विषके देह में प्रवेश करने के छ आठ दिन बाद ज्वर प्रकाशित होता है। इसी समय को ज्वर की अप्रकाशावस्था कहते हैं। यह अवस्था कभी थोडी और कभी बहुत दिन तक रहती है यह अवस्था शुरू में कभी कभी उपस्थित नहीं होती। कोई पूर्व लक्षण दिखलाई न देकर ज्वर अचानक आजाता है। इस अप्रकाशावस्था में रोगी को थकावट, सिर दर्द, छाती और पैरों में दर्द मालुम होता है, और जभाई आना अगडाई लेना एक तरह की सुसती सी और शरीर टूटना, प्यास, भूख न लगना, मुंहका स्वाद बुरा रहना आदि लक्षण होते हैं। यह लक्षण थोडे अथवा बहुत एक दिन से लेकर दश दिन तक रहते हैं। उपरांत अचानक एक दिन ठण्ड लग कर बुखार आजाता है। यही सविराम ज्वर की वृद्धि अथवा आक्रमणावस्था होती

है। इसको प्रायः ज्वर आना कहते हैं।

दूसरी, ज्वरकी आक्रमणावस्था।—ज्वर आने पर स्पष्ट तीन जुदी जुदी अवस्थायें देखी जाती है। यथा ठण्डलगना, शरीर की गरमी वढना और पसीने आना। [क] पीठ में, छाती अथवा हाथ पैरों में और अन्त में सब शरीर में सरदी लगती है और कुल शरीर कांपने लगता है। चमड़ा रक्त शून्य और सुकडने लगता है तथा शरीरमें रोमाञ्च खडे हो जातेहैं। चेहरा रक्तशून्य, होंट और अंगुलियें नीले रंगके होजाते हैं, सरदी क्रमशः वढने लगती है, दांत कडकडाने लगते हैं, हाथ पैर आदि सब शरीर कांपने लगता है और मानो सब शरीर में भयानक गड बड फैल जाती है। मूंह से आवाज नहीं निकलती मानो गले का शब्द रुक जाता है, श्वास जल्दी २ चलने लगता है, श्वास लेते में छाती पर बोझ मालुम होता है, नाडी क्षुद्र, तेज और कठिन, मानसिक विकार न रहने पर भी कभी कभी वकना, गाना, अथवा चिल्लाना इत्यादि लक्षण रहते हैं। शरीर पर हाथ रखने से शरीर की स्वाभाविक गरमी की अपेक्षा भी कम मालुम होती है किन्तु मूंह अथवा वगल में तापमान यन्त्र लगाने से १०४ या १०५ डिगरी तक होजाता है। मूंह सूखा हुआ, वहुत प्यास, जी मिचलाना वा उलटी आदि लक्षण वर्तमान रहते हैं। यह आध घन्टे से लेकर तीन घन्टे तक रहतीहै। फिर धीरे धीरे अथवा एकसाथ ठण्ड लगना वन्दहोजाता है, और गरमी मालुम होतीहै(ख) उत्तापावस्था अर्थात् बुखारकी पूरी हालत ॥ चेहरा रक्त शून्य और सुकडा हुआ नहीं रहता किन्तु पहिले के विपरीत अर्थात् रक्त पूर्ण और फैला हुआ, शरीर की गरमी स्पष्ट वढी हुई और १०५ डिगरी की, कभी कभी

इस से भी ज्यादा, नाडी पूर्ण, कठिन और तेज श्वास जल्दी आना जाना किन्तु इस समय श्वास में किसी तरह का कष्ट न रहना, शिर दर्द अधिक, और रोगी का अत्यन्त बेचैन रहना, मुख गरम और सूखा हुआ, अत्यन्त प्यास और पेशाव कम और लाल रंगत का। यह अवस्था प्रायः तीन चार घन्टे तक रहती है। (ग) दूसरी अर्थात् उत्तापावस्था के चले जाने पर घर्मावस्था अर्थात पसीने आने लगना शुरू होजाता है। पसीने पहिले चेहरे पर और पीछे हाथ पैरो में आते हैं। सब शरीर ठंडा होने लगता है और पसीनों से तर होजाता है। नाडी इस समय धीरे धीरे चलने लगती है, श्वास क्रिया स्वाभाविक होजाती है। शिरका दर्द और प्यास भी कम होकर ज्वर का तेज बहुत कुछ घट जाता है। इस समय रोगी को कुछ नींद आती है और क्रमशः ज्वर उतर कर विज्वर अथवा विराम अवस्था उपस्थित होती है। प्राय: यह अवस्था तीन चार घण्टे तक रहती है।

सविराम ज्वर का स्वाभाविक विवरण इसी प्रकार है। कभी कभी इस विवरण में गडवड भी मालुम होती है, कोई अवस्था कभी रहती है और कभी नहीं रहती अथवा कम ज्यादा देर तक रहती है।

सविराम ज्वर को नई अवस्था में ऊपर अवस्थाओं के सब लक्षण अच्छीतरह प्रकाशित होते हैं, किन्तु जिस समय रोग पुराना पड़जाता है, ऊपर लिखे हुये लक्षण ठीक इसी प्रकार हों अथवा नहीं इसका कुछ नियम नहीं है। पुराने ज्वर में फिर सरदी लग कर बुखार नहीं आता, ठण्ड भी नहीं लगती, यहां तक कि किसीर समय रोगी

को बुखार का आना भी मालुम नहीं होता। ऐसे मोके पर केवल शरीर का गरमी और पसीनों से ज्वर मालुम होता है।

तीसरी, ज्वर की विरामावस्था।—रोगकी पहिली अवस्था में इस विराम काल में रोगी को बहुत चैन मालुम होता है, किन्तु वार२ ज्वर का आक्रमण होने से रोगी दुबला होता जाता है शरीर में रक्त नहीं रहता और धीरे२ मैलेरिया विष के सम्पूर्ण लक्षण दिखलाई पडते हैं।

चतुर्थ, ज्वर के प्रकार।—रोज आने वाले इकतरा, तिजारी, चौथैया आदि ज्वरों की बात पहिले लिख चुके हैं। यह तीन प्रकार के ज्वर हमारे देश में अधिक होते हैं। इनको पारीका बुखार कहते हैं। पारी का बुखार बहुत कष्ट दायक होता है, और आसानी से आराम नहीं होता। इन साधारण पारी के ज्वरों के सिवाय और भी कैई तरह के मिले हुये पारी के ज्वर हैं। द्वैकालिक ज्वर दिन में दोबार आता है। प्रात काल बडे वेग से आता है और सन्ध्या समय कुछ हलका। इस प्रकार का ज्वर आना बहुत अशुभ लक्षण है। मैलेरिया विष से धातु सम्पूर्ण विपाक और कुईनाइन से देह जर्जरित नहीं होता तबतक यह भयानक ज्वर नहीं आता।

पंचम, ज्वर के परवर्ती फल ओर उपसर्ग।—पुराने और अधिक समय तक रहने वाले रोग में रक्त की कमी अर्थात् रोगी का चेहरा फीका दीखना, पेट बढना, सुजन, जिगर और तिल्ली का भयानक रूप से बढना, कम-

जोरी, दुबलापन, भूख न लगना, अजीर्ण अथवा कोष्ठबद्ध इत्यादि दिखलाई देते हैं। मैलेरिया विष के साथ कुईनाइन विष मिल कर और भी नुकसान करता है। कुईनाइन और मैलेरिया विष से रोगी का देह जीर्ण होजाताहै। मसूडेकी शिथिलता, दातों के मसूडे और नाक से खून गिरना, मुह में दुर्गन्ध आना, मुह के भीतर घाव होजाना और उनमें दुर्गन्धआना, उदरामय और रक्तामाशय इत्यादि मैलेरिया रोगीके अन्तिम सांघातिक लक्षण हैं।

चिकित्सा।—इस ज्वर की चिकित्सा अत्यन्त कठिन है। जो लोग यह कहते हैं कि होमियोपैथिक में ज्वर की कोई अच्छा इलाज नहीं, उनकी बडी भूल है। होमियोपैथिक मतमें ज्वर की बहुत अच्छी चिकित्सा है। ऐसे ज्वर की चिकित्सा बहुत होशयारी से और समझ से की जाती है। औषधि तजवीज करते समय हमको दो प्रकार के लक्षण दीख पडते हैं,—पहिले साधारण, दूसरे मनुष्य के स्वभाव के अनुसार विशेष लक्षण। साधारण लक्षणों से हम रोग निश्चय कर सकते हैं और विशेष लक्षणों से हम रोगी की प्रकृति के विषय में हम बहुत कुछ जान सकते है। साधारण लक्षण प्राय सब समान होते है। ज्वर कहने से ही शरीर की गरमी बडी हुई, प्यास इत्यादि बहुत से साधारण लक्षण समझे जाते हैं। उदरामय कहने से जाना जाता है कि पतला दस्त होता है, रक्तामाशय कहने से आम लोहू के दस्त होते हैं यह समझा जाता है। इन साधारण लक्षणों के सिवाय प्रत्येक रोगी के कुछ विशेष लक्षण भी होते हैं। केवल ज्वर कहने

के हीं होमियोपैथिक मत के अनुसार चिकित्सा नहीं होती।
जिस प्रकार जुदे जुदे लोगों की धातु प्रकृति, आकृति इत्यादि जुदी जुदी होती है, इसी प्रकार सविराम ज्वर के लक्षण भी प्रत्येक मनुष्य को जुदे जुदे होते हैं। किसी को सरदी नहीं लगती, पसीने नहीं आते केवल गरमी चढजाती है। किसी को केवल सरदी लगती है और पसीने आते हैं; किसी को पसीने बिलकुल नहीं आते अथवा केवल किसी को पसीने ही पसीने आते हैं। और दूसरी कोई अवस्था प्रकाशित नहीं होती। इस के सिवाय जी मिचलाना, मुंह के स्वाद का बिगडना, उलटी होना, सिर दर्द, उदरामय वा कोष्ठबद्ध, शरीर में दर्द होना इत्यादि लक्षण ज्वर के समय एक एक मनुष्य को जुदे जुदे तरह से होते हैं और इन के सम्बन्ध में प्रत्येक मनुष्य की अवस्था में अन्तर दीख पडता है। प्रत्येक मनुष्य को इस प्रकार जुदे जुदे लक्षणों को इस प्रकार ध्यान में रख कर जुदी जुदी दवाइयां तजवीज की जाती हैं। जो लोग यह बात कहते हैं कि कुईनाइन के सिवाय ज्वर की और कोई दवाई नहीं है वे आदमी बहुत भूलते हैं। किन्तु हम, रोज देखते हैं कि यदि ठीक दवा तजवीज हो जाय तो होमिओपैथिक औषधि की २ या ४ मात्राओं से रोगी को पूरा आराम होजाता है। इस बात को जान रखना चाहिये कि यदि रोगी को आराम न हो तो चिकित्सक का दोष है, चिकित्सा का दोष नहीं।

चायना १,३० शक्ति।—ठंड लगने से पहिले जी मिचलाना, सिर दर्द, भूख लगना, चिंता, दिल धडकना, और अत्यन्त प्यास लगना, अत्यन्त बार पानी पीने के बाद

ही से सर्दी सी लगना।

पसीना—बहुत प्यास, शरीर ढकने से बहुत पसीना, रात्रि के समय बहुत पसीना।

विज्वर—प्यास न रहना, झट पसीने आजाना, जिगर का स्थान सूजा हुआ और दर्द होना, पीली रंगत।

ज्वर की सब अवस्थाऐं ठीक एक के बाद एक उपस्थित होती हैं।

यदि शीत और गर्मी की हालत में अधिक प्यास होतो चायना नहीं देना चाहिये। सर्वदा बहुत पसीने आवें तो चायनादे, यदि न आवें तो न दें।

सूजा हुआ, बकना पीठ के मेरु दण्ड को दबाने से दर्द मालुम होना।

पसीना—बहुत प्यास, चुप चाप पड़े रहने से बहुत पसीने आना, सुबह के वक्त बहुत पसीने आना, कमर में दर्द।

विज्वर—बहुत प्यास, बुखार बहुत थोड़ी देर के लिये उतरना, जब तक दुबारा सर्दी न लगे, प्रायः तब तक पसीने आना, सब मेरुदंड, दबने से दर्द होना, तिल्ली बढ जाती और दबने से दर्द मालुम पड़ना।

नये ज्वरमें ठण्ड अधिक समय तक रहती है, ऐसा भी होता है कि सर्दी का लगना अनियमित तरह से हो या बिलकुल न हो।

यदि शीत और गर्मी की हालत में प्यास न हो तो कुइनाइन देना न चाहिये। गर्मी की हालत के बाद पसीने आवें तो कुनाइन देना चाहिये यदि न आवें तो न देना चाहिये।

हमारे देश में कुनेन के अपथ्यव्यहार से जितना नुकसान हुआ है शायद स्वयं सविराम ज्वर से उतना नहीं हुआ। यदि कोई वास्तविक रोगी का शुभ चिंतक हो तो उसको चाहिये कि थोडे समय के लिये बुखार की दावा दूवी अथवा अपनी प्रशसा करानेके लिये कुइनाइन कदापि न देवे।

मात्रा।— बुखार उतर जाने की हालत में दो दो घंटे के अंतर से एक एक ग्रेन देना।

आर्सेनिक १२, २००शक्ति।— तिजारी और चोथैया के ज्वर में, कुइनाइन के अपथ्यव्यहार के उपरांत, तिल्ली और जिगर बहुत बढ जाने पर, चहरा पीले रंग का, सूजन, दस्त, मुंह में छाले रक्तहीनता, भूख कम लगना, सरदी लगने से पहिले उबासी आना, तथा शरीर पैंठना, सरदी अच्छी तरह न लगना, भीतर सरदी किन्तु बाहर गरमी लगना; सरदी के समय प्यास न लगना, पानी पीने से सरदी का बढना, और उलटी होना, शीतावस्था का अकसर न रहना, उत्तापावस्था का अधिक समय तक प्रबल रहना, अथवा सरदी और उत्ताप दोनों का अधिक रहना, किंतु पसीनों का बहुत कम आना अथवा बिलकुल न आना, गरमी की हालत में बहुत बेचैनी रहना, थोडा २ किंतु बार २ पानी पीने की इच्छा करना, ज्वर के उपरान्त अत्यन्त दुर्बलता।

पुराने मलेरिया ज्वरमें जब धातु मलेरिया विषसे जहरीली हो जाती है और उसके साथ साथ तिल्ली और जिगर बढजाताहै तो आर्सेनिक फायदा करता है। उत्ताप जितना अधिक हो, और जितनी देर अधिक ठहरे, प्यास जितनी प्रबल और शरीर

की ज्वाला जितनी अधिक उतना ही आर्सेनिक ठीक पड़ता है। यातो पसीना बिल्कुलही नहीं आते या बहुत ही ज्यादा आते हैं।

बहुत से चिकित्सक आर्सेनिक और चायना दोनों को एक साथ अर्थात क्रम से व्यवहार करते हैं। यह बिलकुल भ्रम है। जहां पर एक दवा मौजू पड़ती है वहां दूसरी मौजू नहीं पड़ती।

आर्सेनिक को अधिक मात्रा में देना बेफायदा है, बल्कि नुकसान करनेवाला है। यदि आरम्भ में ही आर्सेनिक ठीक समझ में आवे तो उसकी २-१ मात्रा देकर देखे। यह २-१ मात्रा ही बहुत होती है। आर्सेनिक बहुत कुइनाइन व्यवहार करने की प्रतिषेधक औषधि है।

मात्रा—दिन में दो बार के हिसाब, २०० शक्ति, दिन में एक बार—

आर्सेनिक।	चायना।
समय—दुपहर पीछे १बजे से २बजे तक, और रात १२ बजे से २ बजे तक। आर्सेनिक का समय एक विशेष लक्षण है।	समय—सुबह ५ बजे, श्याम ५ बजे। चायना का समय कोई विशेष लक्षण नहीं है।
पूर्वभाव—प्यास नहीं।	पूर्वभाव—अत्यन्त प्यास।
शीत—सर्दी और गर्मी मिली हुई, बहुत प्यास, बार बारथोडा २ पानी पीना, बाहरी गरमी पहुचानेसे सरदी की कमी।	शीत—प्यास नहीं, सब शरीर में शीत, बाहरी गरमी के साथ शीत का बढना।

उत्ताप—जलन पैदा करने वाला सूखा और तेज उत्ताप अत्यन्त बेचैनी, शरीर उघाडने से चैन सा पडना। न बुझने वाली प्यास, बारबार थोडा२ पानी पीना।	उत्ताप—शरीर खोलने की इच्छा करना किंतु खोलने से सर्दी सी लगना, प्यास का प्राय न रहना, यदि रहे भी तो उत्ताप के शेष में।
पसीना—प्राय नहीं रहता, पसीना ठडा, ऐसी प्यास जिसमें बहुत सा ठण्डा पानी पिया जावे, पानी पीने के बाद उलटी होना।	पसीना—कमजोर करने वाला, बहुत, शरीर ढकने से सब शरीर में बहुत पसीना, सोते समय पसीना, पसीने की हालत में प्यास।
विज्वर— [बुखार न रहने की हालत]— बहुत कमजोरी, उद-रामय, पडे रहने की बहुत इच्छा।	विज्वर—सहज में ही पसीना आना, कमजोर करने वाला रात्रि के समय का पसीना, भूख न लगना।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।—ज्वर का रात्रि में अथवा सन्ध्या समय आना, पेट की अवस्था दूषित होकर ज्वर आना, पित्त लक्षणों की प्रधानता, जीभ सफेद अथवा पीले मैल से ढकी हुई, मुह का स्वाद बिलकुल कडवा, इस लिये बार बार कुल्ला करने की इच्छा करना, कब्ज, प्रबले और बहुत देर तक ठहरने वाला शीत, बहुत देर तक ठहरने वाली और ज्वाला युक्त गरमी किंतु तथापि शीत के कारण शरीर के वस्त्रादि खोलने तथा हिलने न सकना। नक्सवोमिका का ज्वर पहिले से ही सरदी लगकर आता है। कुरनादन खाने के बाद यह औषध फायदा

दिखलाती है। तिल्ली और जिगर बढ़ा हुआ हो तो इसे देना चाहिये।

इपीकाकुआना ६,३० शक्ति।—आहार के अनियमित होने के कारण बार बार ज्वर आना, ज्वर आने के पहिले उबासी आना, अगड़ाई लेना और बार बार थूकना, बहुत जी मिचलाना और उलटी करना, उत्ताप की अवस्था में जी मिचलाना, उलटी करना और सूखी खांसी, सर्दी थोड़ी देर तक रहने वाली, ज्वर बहुत देर तक रहना, हाथ पैर ठंडे रहना, यदि पहिले कुइनाइन दिया गया हो तो यह बहुत ठीक है। आहार के अनियमित होने के कारण यदि बार बार ज्वर आवे तो इपीका एक ही दवा है। यह इस का विशेष लक्षण है।

नेट्रम-म्यूरियेटीकम १२, ३०, शक्ति।—यदि ज्वर की कुछ पुरानी अवस्था न होतो यह औषधि प्राय व्यवहार नहीं की जाती। प्रात'काल तथा १०।११ बजे ज्वर कम्प देकर आवे, बहुत देर तक और बहुत जोरकी सरदी लगे, उसी समय होट और नाखून सब नीली रंगत के होजावें, प्यास बहुत लगना, सिर दर्द, सिर में मानो हथौड़े से कोई ठोकता है। बहुत पसीना आना, पसीना आने से, सिवाय सिर दर्द के और सब शिकायतों का कम होजाना। होठों पर पापड़ी जमना, पुरानी हालत में जब रोगी रक्तहीन होजाता है, मुह पीले रंगका दीख पड़ता है, तिल्ली और जिगर बहुत बढ़ जाने हैं उस समय यह औषध फायदा करती है।

पल्सेटिला ६ शक्ति।—तीसरे पहर और शाम को ज्वर आता हो, आहार के अनियमित होने के कारण फिर बुखार का आजाना, ज्वर की प्राय किसी अवस्था में प्यास न रहना, उत्ताप के समय सामान्य प्यास, ज्वर के सब लक्षण बराबर बदलते रहें, दो दिन का बुखार कभी एकसा नहो, चौथैया ज्वर, हाथ पैरों में जलन, मुह का स्वाद खराब, बाहरी गरमी असह्य होना, शरीर उघाडने की इच्छा करना।

यूपेटोरियम-पर्फोलियेटम ६ शक्ति।—पीठ और हाथ पैरों की हड्डियों में दर्द होना, सर्दी लगने की हालत में अत्यन्त प्यास, उत्ताप की अवस्था में अत्यन्त प्यास और कडवी उलटी होना, सुबह सात बजे ज्वर होना, सर्दी लगने से पहले न बुझने वाली प्यास, किन्तु पानी पीने से जी मिचलाना और उलटी होना तथा सर्दी लगना, सर्दी की अपेक्षा कंप कपी अधिक लगना, पसीने अकसरही न आना अथवा बहुत ही थोडे आना। बुखार अच्छी तरह नहीं उतरना, आंख और चमडे का पीलिया की तरह पीला रंग होना। सविराम और स्वल्प-विराम दोनों प्रकार के ज्वरों में यह एक उत्तम औषधि है। इस का उतरने का समय बहुत ही कम है। लक्षण सब पित्त श्लेष्मा के ज्वर की तरह होते हैं।

सीड्रन १ शक्ति।—यह दवा औरतों को बहुत फायदा करती है। दैनिक ज्वर और इकतरे की यह अच्छी दवा है। एक दिन जिस समय ज्वर आवे दूसरे

दिन भी घड़ी रखकर देखने से मालूम हो कि ठीक उसी समय आता है। शाम को ६ अथवा ६॥ बजे ज्वर आना, रात को ३ बजे अथवा दिन को ३ बजे सर्दी लगकर ज्वर आना, शीत की प्रधानता, शीत के समय प्यास न लगना, उत्ताप के समय गरम जल पीने की इच्छा करना, ज्वर उतर जाने पर कमजोरी और तबियत खराब मालूम होना।

सीड्रन की दुर्बलता प्रायः चायना की दुर्बलता के समान होती है। सीड्रन की स्नायविक दुर्बलता होती है, चायना की तरह बहुत पसीने आने के कारण नहीं। कम्प अथवा शीत प्रबल रहना इसका प्रधान लक्षण है। शीत के साथ उत्ताप, उत्ताप के साथ कम्प और शीत तथा पसीने के साथ शीत और उत्ताप मिला हुआ रहता है।

अनेक समय मलेरिया ज्वर विकार की अवस्था को प्राप्त होजाता है। उस समय उस की चिकित्सा विकार ज्वर के समान करनी पड़ती है। उस समय रसटक्स, ब्रायोनियां, आर्सेनिक, बेलेडोना, आदि औषधें लक्षणों के अनुसार देनी चाहियें। इनही रूप अवस्था और चिकित्सा के सम्बन्ध में सान्निपातिक और आतिसारिक विकार ज्वर की चिकित्सा देखो।

सविराम ज्वर के अन्त में तरह तरह के उपसर्ग आकर उपस्थित होते हैं। यह उपसर्ग कभी कभी बड़े भयानक आकार धारण करते हैं, यहां तक कि रोगी के प्राणों का संशय होजाता है। चौथैया ज्वर सब की अपेक्षा कष्टसाध्य है। द्वैकालिक ज्वर भी अच्छा नहीं होता, अशुभ

ही लक्षण हैं। अग्रगामी [पेन्टीसिपेटिं] ज्वर रोग की वृद्धि और पश्चात्‌गामी [पोष्टपोनिं] ज्वर रोग की कमी प्रकटितकरता है। मलेरिया के कारण धातु विषैली होजानी और उसी कारण से पेट बढना, सूजन, खून की कमी और कमजोरी, उदरामय, मुह में घाव, तिल्ली और जिगर का अत्यन्त बढजाना आदि अशुभ लक्षण होते हैं।

१। तिल्ली बढना।—मरकूरियस-विनआयोडेटस आर्सेनिक, चायना, फेरम, आयोडियम।

२। तिल्ली के स्थान में दर्द—एपिस, आर्सेनिक, नेट्रूम-म्यूरेटिकम, नक्सवोमिका।

३। जिगर में दर्द—आर्सेनिक, ब्रायोनिया, चायना, केली-कार्ब, मर्कूरियस, नेट्रम म्यूरेटिकम, नक्सवोमिका।

४। रक्ताल्पता।—आर्सेनिक, कार्वो वेजीटेविलिस, चायना, फेरम।

५। सूजन (शोथ)—आर्सेनिक, एपिस, चायना फेरम।

६। मुखक्षत (मुह के घाव)—मर्कूरियस, आर्सेनिक, वैकेसिस, नाईट्रिक-एसिड।

७। कमजोरी—आर्सेनिक, कार्ब वेज, सीड्रन, चायना, फेरम, नेट्रम म्यूरेटीकम, नक्सवोमिका।

८। पीलिया—आर्सेनिक, चायना, नक्सवोमिका, मर्कू-रियस, सलफर।

९। उदरामय—एँटिमक्रूड, आर्सेनिक, चायना, आयो-डियम, मर्कूरियस, नक्सवोमिका, सल्फर।

औषधि प्रयोग करने का समय।— बुखार उतरने पर दवा देना उचित है। पूरा बुखार उतरने न पावे और पसीने आते हों ऐसे समयमें ही दवा का ठीक समय होता है। ठीक समय पर एक मात्राही ठीक निर्दिष्ट औषधि बिलकुल आराम करसकती है अथवा दुबारा ज्वर के आक्रमण को बहुत कुछ कम करसक्ती है। ज्वर के पूरे भराव के समय में कोई दवा कुछ फायदा नहीं करती। दवा देने के बाद स्पष्ट अथवा क्रम से यदि उतरती दीखपड़े तो और कोई दूसरी दवा देना अथवा उसी दवा की दूसरी मात्रा देना बुराई की बात है। पर्य्याय क्रमसे औषधों का व्यवहार जितना कम होगा उतना ही अच्छा है।

सदृश औषधी।—रोग के लक्षणों से मिलती हुई यदि ठीक दवा रोगी को मिलजावेगी तो निश्चय और जल्दी आराम होगा। यदि औषध रोग के सदृश नहीं हो तो उस का क्रम चाहे जितना ऊंचा हो अथवा नीचा या उसकी मात्रा चाहे जितनी अधिक हो परिमाण में औषधि चाहे जितनी अधिक हो, या चाहे जितनी जल्दी जल्दी दीजावे उससे कुछ फायदा नहीं होगा। यह सर्वदा याद रखना चाहिये कि दवा के गुण से रोग अच्छा होता है, उसके परिमाण से नहीं। सविराम ज्वर की चिकित्सा में निम्न लिखित औषधि और अवस्था देखने योग्य हैं। (१) ज्वर के विराम (उतरने) के लक्षण, (२) शीत, उत्ताप, और घर्मावस्था के सब लक्षण, (३) यह अवस्था तीनों में से कौनसी नहीं रहती अथवा कौनसी अधिक रहती है, (४) रोगी के अस्वाभाविक, अनियमित और विशेष विशेष लक्षण।

औषधों का क्रम।—सविराम ज्वर में जितना ऊंचा क्रम व्यवहार कियाजावेगा उतना ही अच्छा है। ३०,२०० आदि क्रम जितने फलदायक होते हैं नीचे के क्रम उतने नहीं होते। कौनसा क्रम किस मौके पर कितना फायदा करता है यह अपने तजुरबे से निश्चय करलेना चाहिये।

पथ्य।—पथ्यका नियम रखना अत्यन्त आवश्यक है। प्राय' आहार के अनियम होने के कारण को बार बार ज्वर लौट लौट कर आजाता है। सब प्रकार के कठिनाई से पचनेवाले आहार न खाने चाहिये। ज्वर आने से पहिले अथवा ज्वर के समय कुछ भी न खाना चाहिये।

नये बुखार में साबूदाना, बार्ली आदि हलका पथ्य अच्छा है। पुराने ज्वर में अवस्था देखकर दूध, दाल का पानी, दलिया या पुराने चावल दिये जासके हैं। पुराने रोगी के लिये विशेष कर यदि उदरामय आदि कोई उपसर्ग न हो तो रात के समय चावल न देकर रोटी ही देना चाहिये। अमावस्या और पूर्णिमा के दिन प्राय ज्वर लौट कर आजाता है। इस लिये आवश्यकतानुसार इन दिनों में उपवास कराना अथवा सिर्फ १ समय रोटी खाना और यदि बिलकुल न होसके तो दिन में चावल और रात में रोटी खाना उचित है।

स्वल्प-विराम ज्वर।
(रेमिटेन्ट फीवर)

जो ज्वर पूरी तरह से नहीं उतरता केवल किसी किसी

समय थोडासा उतर जाता है और कुछ कम होजाता है उस को स्वल्प-विराम ज्वर कहते हैं। यह एक ज्वर तो रहता ही है फिर उस के ऊपर एक और दूसरा ज्वर चढता है। आयुर्वेद शास्त्र में इस को सन्तत ज्वर कहते हैं।

कारण।— आजकल के विलायती चिकित्सकों ने सविराम ज्वर की तरह स्वल्प-विराम ज्वर का भी मेलेरिया विष द्वारा उत्पन्न होना अनुमान किया है। आयुर्वेद में लिखा है कि यह ज्वर वात, पित्त, कफ इन तीनों के गड़बड़ होने से उत्पन्न होता है।

स्वल्प-विराम ज्वर ऐसे देशों का ही ज्वर है जहां प्रधानतः मौसम गरम रहता है और मेलेरिया अधिक रहता है। कभी कभी मेलेरिया ज्वर(सविरामज्वर) ऐसे स्वल्प--विराम ज्वर में तबदील होजाता है। भारतवर्ष के और देशों की अपेक्षा यह ज्वर बंगाल में अधिक होता है। कहा गया है कि महावीर एलेकजेंडर, इंगलैंड के बादशाह प्रथम जेम्स, और ओलीवर क्रमवेलका इसी ज्वर से प्राणान्त हुआ है।

लक्षण।—सविराम ज्वर की तरह स्वल्प-विराम ज्वर होने से पहिले शरीर में दर्द, आलस्य, उबासी आना, जी मिचलाना, भूख न लगना, सिर दर्द, नींद न आना आदि लक्षण देखे जाते हैं। यह लक्षण रहते रहते अचानक एक दिन सरदी लगकर बुखार आजाता है। यह सर्दी सविराम ज्वर की तरह उतनी ज्यादा अथवा देर तक रहने वाली नहीं होती। सर्दी एक घंटा अथवा आध घंटा तक रहने के उपरान्त असली ज्वर आता है। यह ज्वर ६,१२, अथवा २४ घन्टे तक जोर के साथ ठहरता है। इस

समय शरीर की गरमी १०५ या १०६ डिग्री तक हो जाती है। मुह सूजा हुआ, आंखें लाल रंगकी, देहकी खाल सूखी हुई और बहुत गरम, अत्यन्त सिर दर्द, पीठ और हाथ पैरों में दर्द, गहरा श्वास, तेज नाडी (प्रति मिनट ११५ से १२० बार अथवा इस से भी अधिक) अत्यन्त प्यास, जीभ पीले रङ्ग के लेप से ढकी हुई, उलटी में पित्त निकलना, बेचैनी और घबराहट। किसी किसी को उलटीयां अत्यन्त कष्टकर होती हैं।

कितने ही घंटों के बाद यह सब कष्टदायक प्रबल लक्षण धीरे धीरे कम होने लगते हैं। ताप २-३ अथवा इस से भी अधिक डिग्री कम होजाता है। कभी २ थोडा २ पसीना आता है। जी मिचलाना, उलटी, पेट फूलना आदि लक्षण प्राय सबजाते रहते हैं, और सिरका दर्द भी बहुत कुछ कम होजाता है। यही ज्वर के उतरने का समय होता है और इसी समय दवा देनी चाहिये। यदि रोग कठिन हो तो यह विराम की अवस्था होने नहीं पाती या इतनी कम होती है कि मालुम नहीं पडती तथा होतेर फिर ज्वर बढने लगता है। साधारणत. विराम काल २ घंटे से लेकर १२ घंटे तक रहता है। अधिकांश यह विरामावस्था सुबह के समय होती है,—रातके शेष भाग से शुरू होती है और १० या ११ घंटे तक रहती है, तथा दुपहरे से फिर बुखार बढने लगता है। स्वल्पविराम-ज्वर में प्राय रोगी को कब्ज रहता है किन्तु यदि रोग के बुरे लक्षण हों तो उदरामय उपस्थित होता है तथा पतला बहुत बदबूदार और कभी कभी खून मिला हुआ दस्त होता है। यही सान्निपातिक विकार ज्वर के लक्षण।

स्वल्प-विराम ज्वर १ से १४ दिन तक रहता है। एक तो रोगी को रात दिन ज्वर चढ़ा रहता है और उस के कारण कष्ट भोग करता है, तिसपर फिर प्रति दिन दूसरे ज्वर का आना, रोगी क्रमशः दुर्बल होने लगता है, यहां तक कि विकार ग्रस्त हो जाता है। इस समय रोगी को देखने से सान्निपातिक विकार ज्वर के रोगी का भ्रम होता है, किन्तु यथार्थ में वह सान्निपातिक विकारज्वर नहीं होता। इस समय सान्निपातिक और आतिसारिक विकारज्वर के अनुसार चिकित्सा करनी पड़ती है। इस समय उदरामय, प्रलाप, बकना, खासी, जीभ सूखीहुई, नाड़ी बहुत क्षुद्र और कमजोर तथा रोगी पूरेतरह विकार को प्राप्त होजाता है।

कहा जासका है कि यह ज्वर सविराम और सान्निपातिक ज्वर के बीच का है, क्योंकि ज्वर का प्रकाश प्रबल होने पर यह सान्निपातिक की तरह, तथा कम होने पर सविराम-ज्वर की तरह रहता है। सविराम ज्वर की अपेक्षा इस ज्वर का आक्रमण सांघातिक होता है। डाक्टर मैकलीन ने कहा है कि सविराम ज्वर के अपेक्षा इस ज्वर के द्वारा मृत्यु सरया १० गुनी अधिक होती है।

चिकित्सा ।—१। पाकाशय के लक्षणों के प्रबल होने पर—इपीका, नक्सवोमिका, पल्सटिला, एन्टीमोनियम, यूपेटोरियम।

२। पित्त के लक्षण प्रबल होने पर—एकोनाइट, ब्रायोनिया, चायना, आईरिस, नक्सवोमिका, पाडोफाईलम, पलसाटिला, यूपेटोरियम।

३। श्लेष्मा के लक्षण प्रवल होने पर—मार्कुरियस, पलसाटिला, रसटक्स, इपीका, नक्सवोमिका।

४। बिकार के लक्षण प्रवल होने पर—बेलेडोना, ब्रायोनिया, रसटक्स, आर्सेनिक, बैप्टेशिया, हायोसायमस, इपीका।

५। कृमि (कीड़े) के लक्षण—एकोनाईट, बेलेडोना, मर्कूरियस, सीना, सलफर, नक्सवोमिका।

६। ज्वर सान्निपातिक आकार का होने पर—बेलेडोना, ब्रायोनिया, रसटक्स, आर्सेनिक, कार्ब वेज, चायना, बैप्टाशिया, हायोसायेमस।

७। अजीर्ण के कारण—इपीका, नक्सवोमिका, पलसेटिला, ऐन्टिमनी-टार्ट, ऐन्टिमनी क्रूड।

८। सर्दी लगने से—ऐकोनाईट, नक्सवोमिका, ब्रायोनिया, इपीका, पलसेटिला, मर्कूरियस।

जेलसीमियम१×शक्ति।—यह प्रथम सप्ताह में विशेष फायदा करता है। इस को देने से ज्वर पाचवें दिन के भीतर ही उखड़ जाता है। बच्चों को स्वल्प-विराम ज्वर होने से यह एक बहुत उमदा दवा है। २ पहर रात से ज्वर का बढ़ना, सुबह के समय ज्वर का उतरना, ज्वर के साथ पसीने आना, ज्वर आरम्भ होने के साथ पट्टों की शक्ति कम होने के कारण रोगी में उठने की शक्ति न रहना।

ब्रायोनिया ६,१२।—यह भी जेलसीमियम की तरह ज्वर के पहिले सप्ताह में बहुत फायदा करता है। शाम को ज्वर बढ़ना, ज्वर का उतार उतना स्पष्ट मालूम न होना, सिर में अत्यन्त दबाव या ऐसा मालूम होना कि फटा

जाता है। सोने से कम होना। यदि प्रलाप हो तो काम काज और रोजगार के विषय में बकना, पित्त की उलटी होना, कब्ज, छाती के दोनों ओर सुई चुभोने का सा दर्द।

यूपेटोरियम–पर्फोलियेटम ६ शक्ति।—यह पित्त के लक्षण मिले हुये स्वल्प-विराम ज्वर में फायदा करती है। हड्डियों में बहुत भडकन, सब शरीर में दर्द, प्यास और जी मिचलाकर पीछे विलक्षण ज्वर होना, रंग पीलिया की तरह पीला, जीभ मोटी पीली रंग की मैल से ढकी हुई, जिगर स्थान में पूर्णता और दर्द, बहुत और पित्त मिला हुआ पतला दस्त।

इपीका ६,३० शक्ति।—भोजन करने की इच्छा नहोना, विशेषकर घी अथवा तेल की चीज, जी मिचलाना और उलटी आना, मुह में दुर्गन्ध, मुह का तथा खाने की चीजों का कडवा स्वाद, पाकस्थली भरी और उसमें दबाव मालुम होना।

मरक्यूरियस ६ शक्ति।—सन्ध्या के समय प्रबल ज्वर, आधीरात को उस ज्वर का बहुत बढ़ना, आंखें और चमडा पीले रंग का, मुह का स्वाद और डकार और उलटी सब कडवी, मिट्टी चीज खाने की बहुत इच्छा होना, मल पित्त और श्लेष्मा से भराहुआ, पाकस्थली और जिगर को दाबने से दर्द मालूम होना।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।—जीभ सूखी हुई और सफेद अथवा पीले रंग के लेप से ढकी हुई, बहुत

प्यास, और गले में जलन, जी मिचलाना या उलटी होना, पाकस्थली में फटन मालुम पडना, पाकस्थली, जिगर और तिल्ली के स्थानों में बोझ मालुम पडना तथा ऐंठन की तरह दर्द, नाभी के स्थान में ऐंठा, कब्ज और बार बार दस्त जाने की हाजत होना, परन्तु दस्त नहोना, अथवा थोडा थोडा पतला आम मिला हुआ दस्त होना, चिनकना, सरदी और गरमी मिली हुई मालुम होना। अधिक वा गुरुपाक भोजन करने से, शराब पीने से, रात्रि जागने से, स्त्री सङ्ग तथा मानसिक श्रम के कारण ज्वर होने से यह दवा बहुत फायदा करती है।

पलसाटिला ६ शक्ति।—जीभ सफेद रंग की श्लेष्मायुक्त लेप से ढकी हुई, मुह का स्वाद कडुवा वा खराब मालूम होना, भूख न लगना, मुह में पानी आना, पाकस्थली में बोझ मालूम होना, और सांस कष्ट, कब्ज अथवा रात्रिमें उदरामय, शाम को बुखार का चढना।

बेलेडोना।—अत्यन्त शिर दर्द ऐसा मालुम हो कि कपाल निकला पडता है, मुह सूखा हुआ। निगलने में कष्ट, दिन में आलस्य और रात में नींद न आना, चमडा सूखा हुआ गरम, प्यास, बीच बीच में सरदी लगना, शिर बहुत गरम और खून की अधिकाई।

एन्टीमोनियम-क्रूडम १२,३० शक्ति।—अजीर्ण के कारण ज्वर, इपीका या पलसेटिला से फायदा न होने पर, जीभ दूध की तरह सफेद और मोटे लेप से ढकी हुई, हमेशा डकार आना और उस में खाये हुये

पदार्थ का स्वाद भूख न लगना, जी मिचलाना, गलेमें कफ जमा रहना मालुम पडना, इसी लिये वार वार खकारना, भूख लगना किन्तु खाने की इच्छा न होना, भोजन करने से पेट सूज जाना, वहुत कमजोरी और अवसन्नता।

रसटक्स ६,३० शक्ति।—वहुत दुर्वलता, थकना वदवूदार पतला दस्त होना, जीभ सूखी हुई, प्यास। सान्निपातिक के लक्षण।

सामान्य ज्वर।

(सिम्पिल फीवर)

वातश्लैष्मिक, पित्तश्लैष्मिक आदि ज्वर इसी के अन्तर्गत हैं। अनापशनाप और अयोग्य भोजन करने से तथा सरदी लगने से यह ज्वर अकसर आता है, यही इस के प्रधान कारण हैं,। अधिक धूप मेह में भीगना, वहुत परिश्रम करना, रात में जगना, भय, चिन्ता, उद्वेग आदि कारणों से यह ज्वर हमेशा आता है। भय आदि मानसिक कारणों से लडका लडकियों को अकसरही ज्वर आता है।

लक्षण।—उत्ताप और प्यास यही दो इस ज्वर के प्रधान लक्षण हैं। सामान्य एक-ज्वर (लगातारज्वर) के पहिले विशेष कोई लक्षण मालुम नहीं पडते, अचानक ज्वर आरम्भ हो जाता है। शरीर गरम, नाडी तेज, प्यास वहुत। ज्वर के प्रारम्भ से ही कुछ नकुछ शिर दर्द, शरीर में भडकन। कोष्ठवद्ध, पेशाव कम, जीभ की रंगत सफेद अथवा पीले रंग के मैल से ढकी हुई, भूख कम लगना अथवा विलकुल

न लगना। ज्वर बराबर तीन दिन, पांच दिन अथवा सात दिन तक रहकर पीछे पसीने आकर उतर जाता है। उलटी प्रायः नहीं होती, लेकिन ज्वर पहिले भोजन आदि की गडबड से उलटी प्राय होजाती है। अक्सर कोष्टबद्ध रहता है, अतिसार शायद, मुंह का प्राय बुरास्वाद अथवा कडवां स्वाद रहता है।

बालक बालिकाओं के पेट में कीडे हो तो यह ज्वर हमेशा ही रहता है। उनको ज्वर होने से कुछ दिन पहिले ही भूख कम लगना, पेट में दर्द, रात में नींद छूट जाना, बिना बात रोना, नाक खुरचना वा खुजलाना, दांत पीसना, मलद्वार खुजलाना आदि लक्षण देखेजाते हैं। ज्वर प्रकाशित होने पर और लक्षणों के साथ अत्यन्त बेचैनी, क्रोधभाव, पेट में दर्द, बकना आदि लक्षण वर्तमान रहते हैं।

चिकित्सा।—एकोनाईट ३ शक्ति।—गरमी के बाद सरदी और सरदी के बाद गरमी लगना, गरम और सूखा हुआ चमडा, छींक इत्यादि। नाडी जबतक स्वाभाविक नहीं होती और शरीर पर पसीने नहीं आते तबतक प्रति दो घन्टे के अन्तर एक मात्रा एकोनाइट देना चाहिये। कभी कभी दो चार मात्रा एकोनाईट देने से पसीना आकर ज्वर उतर जाता है।

बेलेडोना ६ शक्ति।—अत्यन्त शिर दर्द, चेहरा और दोनो आंखें लाल रंग की, कान पट्टी की धमनियों का लपकना, जगते रहना, नींद न आना, बकना इत्यादि मस्तिष्क के लक्षण। जरूरत पडने पर एकोनाईट और बेलेडोना एक के बाद एक दीये जासकते हैं।

ब्रायोनियां ६ शक्ति।—सिर दर्द, हिलने से असह्य होना, शिर फटाजाना, खांसी, सांस लेने में कष्ट, पाकस्थली में कष्ट, पीले रंग की लेपदार जीभ, जी मिचलाना, कब्ज, स्वभाव का चिडचिड़ापन।

केमोमिला १२ शक्ति।—खाने के पदार्थों में और मुंह में कडवा स्वाद, मुंह में दुर्गन्ध, भूख न लगना, जी मिचलाना, शरीर में दर्द, कोष्टबद्ध अथवा हरे रंग का उदरामय, अत्यन्त बेचैनी, स्नायविक लक्षण प्रबल।

और और औषधियों के लक्षण स्वल्प-विराम ज्वर में देखो।

पथ्य।—ज्वर में लंघन और ज्वर उतर जाने पर हलका पथ्य देना चाहिये। साबूदाना बारली, अथवा अरारोट अच्छे पथ्य हैं। प्रबल ज्वर में यदि प्यास लगे तो पानी जितना चाहे पीने को दो। शारीरिक और मानसिक सब प्रकार की उत्तेजना छोड देनी चाहिये।

हैजा।
(कालेरा)

हैजा अत्यन्त भयानक और सांघातिक रोग है। मनुष्य जाति में जितने रोग देखे जाते हैं उन में सब से सांघातिक हैजा ही दीख पडता है। भारतवर्ष ही इस रोग का प्रधान लीलास्थल है। प्रति वर्ष कितने मनुष्य इस भीषण रोग के हाथ में पडकर बेमौत मरते हैं इस का कुछ हिसाब नहीं। इस रोग से प्राण बचाने का अबतक कोई उपाय नहीं हुआ। इस रोग में सब से अधिक फायदा

करने वाली होमिओपैथिक चिकित्सा है, इसे सब कोई स्वीकार करते हैं। पृथिवी के जिस स्थान में भी होमियोपैथिक चिकित्सा प्रचलित हुई है वहां हैजे की चिकित्सा के विषयमें इसने अक्षय कीर्ति पाई है।

कारण।—हैजे का कारण प्रधानतः दो हिस्सों में बांटा जाता है, पहिला पूर्ववर्ती कारण, दूसरा उत्तेजक कारण। और और रोगों के जो पूर्ववर्ती कारण हैं इस रोग के भी प्राय. वही हैं। अधिकाश हैजा ही उदरामय से जन्म ग्रहणकरता है, उदरामय कठिन होने पर प्रायः सांघातिक हैजा हो जाता है। अधिकाश हैजे का प्रधान कारण मुश्किल से पचने वाले पदार्थ भोजन करना है। इस के सिवाय स्वास्थ्यको विगाड़ने वाले और मैले स्थान में रहना, वेहिसाव खानापीना, रात जगना, बहुत शारीरिक और मानसिक परिश्रम, अनियमित स्त्री सहवास आदि हैजा के पूर्ववर्ती कारणों में गिने जाते हैं।

हैजा के उत्तेजक कारण क्या है यह आज तक निश्चय नहीं हुआ। हैजा का कारण कोई कहते हैं विष है, कोई कहते हैं जीवाणु (छोटे छोटे जीव) है, कोई कहते हैं उद्भिदाणु हैं, और कोई कहते है कि भाप इत्यादि। हैजे का कारण किसी प्रकार का विष होसकता है, किन्तु वह विष क्या है उसकी प्रकृति क्या है, तथा कहां से उत्पन्न होता है यह आज तक मालुम नहीं हुआ। बहुतों, की यह राय है कि हैजे का विष रोगी के दस्त और उलटी में रहता है।

रोग फैलने के नियम।—हैजा कभी कभी नइ

व्यापकरूप से प्रकाशित होता है, अर्थात बड़े जोर से फैल जाता है। यह रोग किस प्रकार एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य पर आक्रमण करता है अथवा किस तरह यह फैलकर एक गाव से दूसरे गांव अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान में चलाजाता है यह नीचे लिखते हैं —

(१) स्पर्श द्वारा। मेला, हाट, व्यवसाय, तीर्थ आदि कारणों से बहुत से लोगों की आमदरफ्त से इस रोग का बीज एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुंच जाता और चारों तरफ फैलजाता है।

(२) वायु द्वारा, (३) पानीय द्वारा। पानी और दूध हैजा के बीज को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लेजाने में प्रधान उपाय हैं। [४] रोगी के व्यवहार की हुई वस्तुओं द्वारा।

लक्षण।—वर्णन करने के सुभीते के लिये आदि से अन्त तक इस रोग को पांच अवस्थाओं में बाटा जाता है। यथा—

(१) आक्रमण वा अकुरितावस्था (इस के आक्रमण करने की अवस्था)।

(२) पूर्ण विकाश वा रोग के पूर्ण प्रादुर्भाव की अवस्था।

(३) अवसाद वा पतनावस्था (गिरने की हालत)।

(४) प्रतिक्रिया अथवा पुनर्जीवनावस्था।

(५) भावीफल वा परिणाम की अवस्था।

यह पांचों अवस्था देर तक अलग-अलग रहती है, यह बात नहीं है। अधिकांश पहिली अवस्था

चिकित्सक को देखने के लिये नहीं मिलती और रोगी भी स्वयं उस को मालुम नहीं करसकता। किसी किसी समय विशेष कर जब रोग हलका होता है। जब पांचवीं अवस्था नहीं होती, चौथी अवस्था के साथ ही साथ रोगी बिलकुल अच्छा होजाता है। रोग की इन अवस्थाओं में तीसरी और पांचवीं अवस्था अत्यन्त भयकर होती है, क्योंकि मृत्यु प्राय. इन दो अवस्थाओं में से एक में होती है।

प्रथम—— आक्रमणावस्था।—— आक्रमणावस्था, उदरामयकी अवस्था है, रोगी दिनरात में पाच छ्वार पतला कभी बिना पचा हुआ पदार्थ दस्त जाता है। कोई कोई कहते हैं उदरामय के रोगी को एक प्रकार थकावट, दुर्बलता, मानसिक अवसन्नभाव, शिर घूमना, जी मिचलाना, पेट में बोझ और दर्द मालुम होताहै। चन्द घन्टों में ही उदरामय शेष होकर पानीसे सफेद रग के दस्त होते ही रोगकी प्रथमावस्था खतम हो जाती है। प्रथमावस्था में ही अच्छी चिकित्सा होनेसे रोग बढने नहीं पाता और अकुर में ही नष्ट होजाता है। चारो ओर हैज़ा फैला रहने से उस समय प्राय उदरामय होता है, इस उदरामय के विषयमें कभी लापरवाई नकरनी चाहिये।

द्वितीय, पूर्ण प्रादुर्भावावस्था।—— सफेद रगका पानी सा चावल धोएहुये जलके समान दस्त और उल्टी होने के साथही दूसरी अवस्था का आरम्भ होजाता है। रोग की तेजी के अनुसार चावल धोये हुये पानी की तरह बहुत उल्टी और दस्त, बहुत प्यास, चुप-

करना ठण्डे पसीने के साथ देह ठंडा, स्वरभङ्ग, नाडी क्षीण और पेशाव बन्द होजाता है, हाथ पैरों की अंगुलियों में बायठे आते हैं, चेहरा और जीभ आदि स्थान बहुत ठंडे और नीली रंग के होजाते हैं आखें बैठ जाती है, शरीर में असह्य ज्वाला और बेचैनी मालुम होने लगती है, हाथ पैर और शरीर शिथिल होजाते हैं। इनहीं सब लक्षणों में किसी को दस्त अधिक होते हैं, किसी को उलटी बहुत होती हैं, किसी को बायठे ज्यादा आते हैं। रोगकी अवस्था शुभ होने से आठ से१२ घन्टे के भीतर धीरे धीरे मल पित्तयुक्त अर्थात् पीले रंग का हो जाता है। मल के बदलने के साथही ऊपर लिखे हुये बहुत से कष्टकर लक्षण भी कम हो जाते हैं। यदि रोग को आराम न हो तो यही से तीसरी अवस्था आरम्भ हो जाती है।

तृतीय,-पतनावस्था।—दूसरी अवस्था के अन्तमें पूरी अवसन्नता होती है, नाडी लोप होने लगती है और रोगीके बचने की आशा कम होती जाती है। इसको शीत आने की हालत कहते हैं। यह पूरी अवसाद (शरीर गिर जाने की हालत) की हालत होती है। कलाई में नाडी की धडकन मालुम नहीं पडती, सांस बहुत धीरे धीरे चलता है, कभी कभी या बहुत जल्दी किन्तु बडे कष्ट के साथ हांपते हांपते स्वांस आता है, रोगी चुपचाप शिथिल पडा रहता है, ठंडा पसीने में डूबा हुआ, लावण्य विहीन, देह नीले रङ्ग का और चेहरा मुर्दे कासा हो जाता है। इस अवस्था में दस्त और उलटी प्राय बन्द होजाते हैं, कभी कभी बेमालुम थोडा थोडा मल निकलता रहता है, या दस्त बन्द होकर पेट फूल जाता है, इस अवस्था में

मौत अधिक होती है।

चतुर्थ, प्रतिक्रियावस्था ।— प्रतिक्रियावस्था ही पुनर्जीवनकी अवस्था है। पतनावस्था के बाद कलाई में नाडी लौट आने के साथ साथ प्रतिक्रिया आरम्भ होती है। प्रतिक्रिया के समय दस्त और उलटी फिर थोडे थोडे होते है और धीरे धीरे जीवनी शक्ति बढकर रोगी अच्छा होने लगता है, दस्त कुछ हरे और पीले रंग के होकर जल्दी पित्त मिलीहुई शकल के होजाते है, मल धीरे धीरे गाढाहोने लगता है, पेशाव उतरता है, यदि न उतरे तो पेशाव बनकर मुत्राशय में इकट्ठा होनेके कारण पेडू फूल जाताहै और आखों की ज्योति लौटने लगती है तथा स्वयं ही रोगी को बहुत कुछ आराम मालुम होने लगता है। यह स्वाभाविक प्रतिक्रिया हमेशा सब को होनेका नियम नही है। किसी किसी समय थोडी प्रतिक्रिया दिखलाई देकर फिर पतनावस्था उपस्थित होती है।

पंचम ।— परिणामावस्था ।—प्रतिक्रिया यदि पूरे तरह से न होसके तो तरह तरह के उपसर्ग आ मौजूद होते हैं। यह उपसर्ग अत्यन्त कष्ट दायक होते हैं, यहां तक कि इन से मृत्यु भी हो जाती है, अवसाद के उपरान्त प्रतिक्रिया देख कर रोगी, रोगी के घर वाले तथा चिकित्सक प्रसन्न होते हैं, किन्तु उस के उपरान्त उपसर्ग प्रबल होकर रोगी की मृत्यु होजाय तो दुख का पारावार नहीं रहता। परिणामावस्था में उबकाई, हुचकी, विकार, पेशाब बन्द होने के कारण विकार ज्वर, अफरा, आख, मुह आदि में घाव इत्यादि प्रधान उपसर्ग हैं।

चिकित्सा।—प्रथमावस्था की चिकित्सा—

केम्फर।—केम्फर हैजे की अच्छी दवा है। हैजे में डाक्टर रूबीनीका स्प्रिट केम्फर दिया जाता है। उदरामय, सरदी लगना, पेट में दर्द आदि हैजे के पहिले लक्षण दीखते ही केम्फर सफेद चीनी में [पानी में नहीं] मिलाकर दश १५ मिनट के अन्तर से देना चाहिये। मात्रा जवान और पूरी उमर के आदमियों के लिये प्रति बार पांच बूंद है, बच्चों के लिये एक दो बूंद। यदि इस औषधि को पांच सात बार देने पर भी यदि दस्त बन्द नहीं और चावल धोये हुये पानी के समान होने लगें तो उसी समय दवाई बन्द कर और दूसरी दवा देनी चाहये। प्रथमावस्थामें क्लोरोडाइन आदि अफीम मिली हुई दस्त बन्द करने वाली दवाई के अपेक्षा केम्फर हजार गुनी अच्छी है।

एकोनाइट मूल वा १ शक्ति।—अत्यन्त पेट के दर्द के साथ दस्त होना, नाडी तेज और पूर्ण, उत्ताप के साथ मिली हुई सरदी, अत्यन्त गरमी में घूमने के बाद अथवा अचानक सर्दी लगने के कारण, प्यास, बेचैनी, मृत्यु भय, पेट दाबने से दर्द मालुम होना। इस दवा की एक एक बूंद प्रत्येक दस्त के उपरान्त देनी चाहिये।

पलसेटिला ६ शक्ति।—यदि तेल या घी मिले हुये पदार्थ के खाने से रोग की उत्पत्ति हुई हो, मलका पहिला हिस्सा हरा और पिछला केवल आमाशय की

तरह। यह दवा स्त्रियों के लिये तथा स्वभावतः दुर्बल प्रकृति के मनुष्यों के लिये बहुत फायदा करती है।

नक्सवोमिका ६,१२,३० शक्ति।—मुश्किल से पचने वाले पदार्थ भोजन करना, रात जगना, शराब पीना, अत्यन्त मैथुन, दस्तावर दवाई खाना अथवा मानसिक परिश्रम के कारण उदरामय, बार बार थोड़ा थोड़ा दस्त होना अथवा दस्त की हाजत होना, जितनी हाजत हो उतना दस्त न होना, दस्त जाते समय किंचना। जिनको अम्ल रोग है उनको यह दवा बहुत फायदा करती है।

चायना।—फलमूल आहार करने से रोग उत्पन्न होना, दस्तके साथ साथ बहुत कमजोरी, पीले रंगका पतला पानीसा दस्त, दस्त के साथ खाया हुआ बिना पचा पदार्थ निकलना, गरमी के समय उदरामय, पेट फूलना, वायु सरना। मात्रा नक्सवोमिका की तरह।

कालोसिन्थ ३,६ शक्ति।— उदरामय के साथ पेट के भीतर असह्य मरोड़ा, यह दर्द दाबने से [यथा उलटे होकर पेट के नीचे तकिया रखने से] कम होता है, दर्द ठहर ठहर कर होता है।

केमोमिला १२, ३० शक्ति।—बच्चों के उदरामय में बहुत फायदा करता है। बच्चा बहुत चिड़चिड़े स्वभाव का होजाय, कोई चीज देने से उठा कर फेंकदे, गोदी में लेने से चलने के लिये कहे, पित्त मिले हुये और हरे रंग

के दस्त। १२ क्रम अधिक फलदायक है। दांत निकल[illegible] समय बच्चों को हरे रंगके उदरामय में इस से बहुत फाय[illegible] होता है।

इपिका ६ शक्ति।—जी मिचलाना, उबकाई अथव[illegible] उलटी होना, दस्त की अपेक्षा उलटी अधिक होना, मरो[illegible] और दर्द के साथ उदरामय, घास के समान हरा दस्[illegible] मल में अत्यन्त दुर्गन्ध, मल में रक्त और आम मि[illegible] हुआ।

मरकूरियस करोसाईभस ३, ६ शक्ति।— आम मिले हुये खून के दस्त होना, केवल खून के दस्त[illegible] केवल खून के दस्त होतो इपीका और मच्छी धोये हु[illegible] पानी के समान दस्त होतो मरकूरियस और रसटक[illegible] दिया जाता है। रक्त यदि उजले लाल रग का नहीं औ[illegible] कालापन लिये हुये लाल रंग का हो तथा एक सा[illegible] अधिक होता हो तो हेमामेलिस ३ × क्रम दिया जाता है

द्वितीयावस्था की चिकित्सा :—

इस अवस्था की प्रधान औषधि विराट्रम-एलबम[illegible] आर्सेनिक, क्यूप्रम, सिकेली, एकोनाईट, क्यूमम-आर्सेनिक[illegible] एन्टीमोनियम-टार्ट और टेबेकम इत्यादि हैं।

विरेट्रम-एलबम ६,१२,३० शक्ति।—यह हैजा क[illegible] एक बहुत अच्छी दवा है। अचानक चावल धोये हुए पान[illegible] के समान दस्त और उलटी, बेचैनी, बहुत कमजोरी, अचा[illegible] नक शक्ति लोप होजाना, चेहरा नीले और ठंडा, बहु[illegible] दस्त और उलटी अत्यन्त प्यास, पाकाशय में जलन [illegible]

आर्सेनिक ३,६,१२,३० शक्ति।— विरेट्रम की तरह आर्सेनिक भी हैजे की एक अच्छी दवा है, किन्तु इन दोनों औषधियों के लक्षण एक दूसरे से इतने मिलते हैं कि प्राय. अन्तर स्थिर नहीं किया जासका, इस लिये अनाडी लोग भूल से प्राय' विरेट्रम की जगह आर्सेनिक और आर्सेनिक की जगह विरेट्रम दे बैठते हैं। दोनों में अन्तर यह है—विरेट्रम में जितने दस्त होते हैं, उसी हिसाब से शिथिलता भी होती है; आर्सेनिक की शिथिलता दस्तों के साथ तुलना करने से अधिक मालुम होती है। विरेट्रम के उलटी और दस्त परिमाण में अधिक होते हैं और आसानी से निकल जाते हैं, आर्सेनिक के लक्षण इस के ठीक विपरीत हैं, अर्थात दस्त और उलटी परिमाण में कम होते हैं, दाहयुक्त तेज और न बुझने वाली प्यास दोनों ही में रहती है, किन्तु भेद इस में इतनाही है कि विरेट्रम का रोगी एक साथ अधिक और आर्सेनिक का रोगी थोडा थोडा किन्तु बार बार पानी पीता है, उस थोडे थोडे पानी पीने से ही दस्त और उलटी होना बढ जाता है। पहिले विरेट्रम देने से कुछ फायदा नहो और रोगी की शिथिलता बढती जाय नाडी का बैठ सा जाना, सब शरीर शीतल, बेचैनी और तडफना, जलन, दस्त और उलटी कम आदि लक्षणों में आर्सेनिक दिया जाता है।

कूप्रम–मेटालीकम ६,१२,३०, शक्ति।— सब शरीर ठण्डा, हाथ पैरों में अधिक बांयटे, बेहोशी नाडी डूबी हुई, घबराहट। कूप्रम प्राय विरेट्रम के साथ

पर्य्याय क्रमसे दिया जाता है।

कूप्रम आर्सेनीकोसम ६ विचूर्ण,३० शक्ति।—कूप्रम और आर्सेनिक दोनों ही के लक्षण रहने पर इस औषधि का चूर्ण पानी में मिला कर देनेसे बच्चों को और सूखा जीभ के ऊपर डाल कर खिला देने से, बड़े आदमियों को बहुत फायदा करता है। यह बात नहीं है कि कूप्रम केवल बांयठों को ही आराम करता हो, किन्तु इस के द्वारा हृत्पिन्ड भी बलवान होता है। जिस मौके पर हृत्पिन्ड की क्रिया शिथिल होजाय और आर्सेनिक के लक्षण दिखलाई पड़े उस समय देना चाहिये।

सिकेली ३,६,३० शक्ति।—कूप्रम देने पर भी यदि बांयठों को आराम नहो और जिन पट्ठों से हाथ पैर फैलाये जाते हैं उन में बांयठे आवें तथा अंगुलियां खुल कर टेढी होजाय, चेहरा टेढा मालुम पड़े, विना कष्ट के उलटी हो और उलटी के बाद आराम मालुम होतो यह दवा दी जाती है।

टैबेकम् ६ शक्ति।—दस्त बन्द होने के उपरान्त भी यदि उलटी और उबकाई आती रहें तो यह दवा फायदा करती है। कुछ हिल ने से उबकाई और उलटियों का बढना, शरीर में ठंडा पसीना, पेट में दर्द, घबराहट, बेचैनी, सब शरीर में बायठे और दर्द आदि इस के लक्षण हैं।

रिसीनास,३,६शक्ति।—यह अन्डी के बीये का अर्क है। जिसे हेजे में दस्त अधिक होते हों उसी में यह

ायदा करता है। ऐसे हैजे की सबही अवस्थाओं में यह
वा दी जासक्ती है। दस्त, उल्टी अधिक और दूसरा
ोई उपसर्ग उपस्थित नहो तो विरेट्रम के पहले दिसी
ास दिया जाता है।

तीसरी अवस्था की चिकित्सा:—

तीसरी अवस्था में दूसरी अवस्थाकी सब दवाईयां और इन के सिवाय कार्वो-वेजीटेवलिस, हाईड्रोसियानिक एसिड, अर्जेन्टम-नाइट्रीकम, पुटास-सायनाईड, ओपियम आदि दवाइया दीजाती है।

एकोनाईट १ शक्ति।—पतनावस्था में यह हृत्पिन्ड की एक प्रधान बलकारक औषधि है। नाडी डूबी हुई श्वास कष्ट, सब शरीर ठण्डा, अत्यन्त प्यास आदि लक्षणों में मूल अर्क अथवा प्रथम दशमिक शक्ति देते हैं।

विरेट्रम, कूप्रम, सिकेली, आर्सेनिक।—यह सब दवाइया पतनावस्था में भी व्यवहार होती हैं। बहुत दस्त और उल्टी होकर पतनावस्था में विराट्रम, दस्त और उलटी के साथ हिसाब से पतनावस्था अधिक, शरीर में जलन, और शय्या कटक उपस्थित होने पर आर्सेनिक और बायठे प्रधान उपसर्ग होने पर कूप्रम या सिकेली देते हैं।

कार्वो-वेजीटेवलिस ३० शक्ति।—पतनावस्था में देह मुर्दे के समान मालूम होना, नाड़ी डूबी हुई, शरीर ठंडा आदि लक्षणों में यह दवा देने में पुनः होश

होजाता है, नाडी आजाती है, जीभ और शरीर गरम होजाती है, मुह से आवाज निकलती है और आखों में ज्योति मालूम होने लगती है। मात्रा १२क्रम।

हाईड्रोसीयनिक एसिड १, ३, शक्ति।—

अत्यन्त श्वांस कष्ट, वायठों के साथ श्वास चलना अर्थात ठहर ठहर कर हापने की तरह कष्ट के साथ श्वांस, रोगी का चेहरा बिलकुल मुर्दे के समान आदि लक्षणों में यह दवा दीजाती है।

चौथी अवस्था की चिकित्सा।—

स्वाभाविक प्रतिक्रिया में पथ्य के नियम पालन करना ही प्रधान चिकित्सा है, औषधि की प्रायः आवश्यकता नहीं होती। इस समय थोडे थोडे दस्त उलटी होने से फायदे के सिवाय कुछ नुकसान नहीं होता, इस लिये उन को बन्द करना उचित नहीं। अचानक दस्त और उलटी एकसाथ बन्द होजानेसे रोगी का पेट फूलजाता है। दस्त और उलटी अधिक होनेसे लक्षणो के साथ दूसरी अवस्था की दवाइयां देनी चाहिये।

पांचवीं अवस्थाकी चिकित्सा :—

अन्तिम अवस्था में तरह तरह के उपसर्ग प्रबल होते हैं। उनके नाम और चिकित्सा नीचे लिखते हैं।

१। उलटीयों का उपद्रव और हिचिकियां—इपीका एन्टीमोनी-टार्ट, टैबेकम, नक्सवोमिका, बेलेडोना, पलसेटीला, कार्बो-वेजीटेबलिस।

२। विकार— ओपियम, रसटक्स, आर्सेनिक, स्ट्रामोनियम, एपिस।

३। पेशाब बन्द होने के कारण विकार—आर्सेनिक,

बेलेडोना, ह्रायओसायमस, केन्थेरिस, टेरीबिन्थ, स्ट्रामोनियम, ओपियम।

४। पेट फूलना—ओपियम, नक्सवोमिका, कार्बो-वेजी टेबलिस, लाईकोपोडियम।

५। कीड़ों का उपद्रव—सीना, सलफर।

६। गले हुये घाव—लैकेसिस, आर्सेनिक, कार्बो-वेजी टेबलिस।

७। फोड़े आदि—हीपर, साईलेशिया।

८। ज्वर—एकोनाईट, बेलेडोना, ब्राइयोनिया, फासफोरस, नक्सवोमिका।

सहकारी उपाय।—इस विषय पर अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि किसी प्रकार रोगी के मन में भय उत्पन्न नहो, किन्तु शान्ति और भरोसा रहा आवे। रोगी के पास बैठ कर उस के विषय में रोग की बात अथवा भावी फलाफल का कुछ वार्तालाप न करना चाहिये। रोगी का कमरा, बिछौने और कपडे आदि सर्वदा स्वच्छ रखे जावें। दस्त और उलटी आदि बहुत दूर फेंकने चाहिये। प्यास बुझाने के लिये बरफ का पानी देना उचित है। यदि उलटियां अधिक होतीं हों तो पानी जितना कम होसके दिया जाय। इस रोग में बायठे अत्यन्त कष्ट कर उपद्रव हैं। बांयठे आने के स्थानों को धीरे धीरे हाथ से दाबने से कुछ आराम मालूम पड़ता है।

पथ्य।—हैजे की पहिली, दूसरी और तीसरी अवस्था में साधारणत कोई पथ्य न देना चाहिये, जब तक प्रतिक्रिया आरम्भ नहो तबतक कोई भी पथ्य

देना उचित नहीं। किन्तु यदि पतनावस्था देर तक रहे तो आवश्यकता के अनुसार वारली वा अरारोट का पानी दिया जाता है। प्रतिक्रिया आरम्भ होने पर साबूदाना अथवा अरारोट का पानी अवस्थानुसार नींबू का रस मिला कर दिया जाता है। जब तक मल हरे वा पीले रंग का और गढा ना हो तबतक कोई पथ्य देने का साहस नहीं किया जाता। मल क्रमश स्वाभाविक होने पर मसूर की दाल का पानी, कच्चा केला अथवा आलू का झोल दिया जाता है।

डिपथीरिया।

डिपथीरिया एक प्रकार का सक्रामक और साघातिक रोग है। इस में गले में घाव होजाते हैं। पहिले रक्त दूषित होता है और पीछे गले में इस के स्थानीय लक्षण प्रबल होजाते हैं। इस लिये धातुगत दोष पर ध्यान न देकर केवल स्थानीय लक्षणों के अनुसार चिकित्सा करना भूल है।

लक्षण।—डिपथिरिया दो प्रकार की होती है, एक सामान्य और दूसरी साघातिक। सामान्य रोग में (जो कि प्राय होता है) निगलने में अत्यन्त कष्ट, गले में दर्द, शरीर में जलन, हाथ पैरों में दर्द आदि लक्षण उपस्थित होते हैं। सामान्य रोग सामान्य चिकित्सा से ही अच्छा होजाता है। साघातिक रोग में निम्न लिखित लक्षण प्रकाशित होते हैं। भयानक ज्वर, कम्प, दस्त, उल्टी, अचानक अत्यन्त कमजोरी, बेचैनी, शरीर गरम, चहरे की लाल रंगत, गले में दर्द, गले की श्लैष्मिक झिल्ली का लाल रंग, टान्सिल नाम की

दोनों गांठों का फूल जाना, और उन पर एक प्रकार का सफेद परदा पड जाना, यह सफेद परदा क्रमश वढ कर सर्व को ढक लेता है, इस लिये निगलने और श्वास लेने में कष्ट मालूम होता है। यह परदा देखने में एक चमडे की तरह दिखलाई पडता है। गले की सब गांठें फूल जाती हैं और कभी कभी कानों तक दर्द मालुम होने लगता है तथा गर्दन सख्त होजाती है, यदि रोग अधिक होतो रोगी बेहोश होजाता है, और जब तक परदा जोर के साथ वाहर न निकल पडे तब तक निगलने और श्वास लेने में कष्ट होता है अथवा रोगी का श्वास वद होकर या विकार को प्राप्त होकर उसका प्राणांत होजाता है।

चिकित्सा।—१। सहज रोग की पहिली हालत में कोनाईट, वेलेडोना, या वैप्टेशिया।

२। सांघातिक रोग में—केली-परमेंगनम, एसिड-म्यूरियाटिक केली-वाईक्रमिक, आर्सेनिक, एमोनियम-कार्व।

३। परवर्ती (पीछे उपस्थित होने वाले) उपसर्गों में-परमाद्ध में फासफोरस, फाईटोलेक्का, कमजोरी में चायना।

वेलेडोना १ शक्ति।—साधारण और सांघातिक दोनों प्रकार के रोगों की प्रथमावस्था में यह डाइल्यूशन अत्यन्त फायदा करता है। यदि ४८ घंटे के भीतर इस से कुछ फयदा नहीं अथवा एक वार फायदा होकर फिर वह स्थायी नहीं अर्थात् फिर रोग वढने लगे तो फिर इस दवा को वन्द कर देना चाहिये।

पथ्य।—रोग का सूत्रपात होते ही हल्का और पुष्टि कर पथ्य देना उचित है । गले में दर्द रहने पर भी थोडा थोडा कुछ खिलाना चाहिये। दूध या वार्ली, दूध के साथ अरारोट या साबूदाना मिलाकर देना चाहिये । रोग आराम होने पर भी रोगी को कुछ समय तक सावधानी से रखना पडता है । जल वायु परिवर्तन अधिक फायदा करता है।

सप्तम अध्याय ।

साधारण रोग समूह—[ग]धातुगत रोग समूह।

तरुण वात—ऐक्यिउट ह्यूमेटिज्म ।

वात रोग अत्यन्त कष्टदायक होता है। यह प्राय देखने में आता है । यह हाथ पैरों के बडे जोडों पर ही प्रधानत आक्रमण करता है । कभी कभी हाथ पैरों के बडे जोडों के सिवाय शरीर के और और स्थानों पर आक्रमण करते हुये भी देखा जाता है । यद्यपि यह रोग साधातिक नहीं होता परन्तु अत्यन्त कष्टदायक होता है । वात के परवर्ती फल और उपसर्ग जितने पुराने होते जायँगे उतनी ही कठिनता से आराम होंगे ।

लक्षण।—पहिले सर्दी से बुखार आता है और सब शरीर में बेचैनी मालूम पडती है । इसी प्रकार रोग आरम्भ होता है। पीछे किसी खास जगहके बडे जोडोंमें दर्द शुरू होने लगताहै। कधा, कुहनी, हाथ, घुटने और पैरोंके सब जोड

फूल जाते हैं और उनमें दर्द होने लगता है। दर्द इतना होजाता है कि सहन नहीं होसका। रोगी को हिलने झुलने की शक्ति नहीं रहती यहा तक कि दर्द के स्थानों में हाथ तक नहीं लगाया जाता। प्राय' जोर का बुखार होता है, और नाड़ी बहुत तेज चलने लगती है। रोगी का शरीर गरम रहता है और अधिक तथा खट्टी बदबूदार पसीना निकलने लगता है। पेशाव लाल रंग का और कम तथा अत्यन्त प्यास इस रोग के प्रधान लक्षण है। कभी कभी ऐसा रोग १०।१५ दिन में आराम हो जाता है, किंतु कभी कभी ५।६ सप्ताह तक रहता है। कभी कभी ऐसा भी देखने में आता है कि रोग पुराना पडजाता है और बहुत दिन तक आराम नहीं होता। वात रोग साघातिक नहीं होता किंतु जब हृत्पिंड पर आक्रमण करता है तो प्राय साघातिक हो जाता है।

चिकित्सा—एकोनाइट १, ३ शक्ति।—प्रबल ज्वर और हृत्पिंड का अधिक धडकना, दर्द के स्थानों पर वरम और लाल रंगत। हिलाने झुलाने और हाथ लगाने से कष्ट मालूम होना, अत्यंत भय और मानसिक चिंता, अत्यन्त प्यास, बेचैनी और तकलीफ।

बेलेडोना ३, ६ शक्ति।—जोडों पर वरम, रंगत लाल और चमक। बहुत दर्द, जोडों मे दर्द शुरू होकर सब शरीर में फैल जाना, दर्द जितनी जल्द शुरू हो उतनी ही जल्द जाता रहे, ज्वर, शरीर सूखा और गरम, प्यास, और सिर दर्द, सोजाने की इच्छा हो परंतु अच्छी

तरह नींद न आती हो, तीसरे पहर तीन बजे अथवा सामान्य हिलने झुलने से दर्द बढना।

ब्राइयोनिया ६,१२ शक्ति।—दर्द के स्थान कडे रहना और न मुडना, सुई चुभोने अथवा काटने के समान दर्द होना जोकि सामान्य हिलने झुलने से बढना, रोगी बिलकुल स्थिर रहने की इच्छा करता हो, मुह का कडवा स्वाद, मुह सूखा हुआ और अत्यंत प्यास, कडा और सूखा हुआ मल, रोग यदि और स्थानोंको छोड कर हृत्पिंड के ऊपर आक्रमण करे तो यह दिया जाता है। इस अवस्था में एकोनाईट और कालचिकम भी दिये जाते है।

कैमोमिला ६, १२ शक्ति।—दर्द के कारण रोगी का पागल की तरह हो जाना और चिल्लाना, गरम पसीना विशेष कर मस्तक पर।

कालचीकम ३, ६ शक्ति।—दर्द बार बार जगह छोड देता हो। (ऐसी हालत में बेलेडोना और पलसे टिला भी दिये जाते हैं), अग के सामने बैठने पर भी सरदी सी लगना, और बीच बीच में गरमी मालूम होना, शरीर क अन्य स्थानोंसे रोग हृत्पिंड पर आक्रमण करे और छाती तथा हृत्पिंड में सुई चुभोने तथा काट डालने का सा दर्द हो, अत्यंत खट्टी बदबूदार पसीना, पेशाब कम उतरना।

लाइकोपोडियम १२, ३० शक्ति।—रात्रि के समय और विश्राम करने समय दर्द का बढना, पट्ठे औ

जोडों का कडा पडजाना, रोग प्रधानतः दाहिनी ओर हो, सूजन हो चाहे न हो, कोष्ट बद्धता, हरवक्त पेट भरा मालूम होना, खाने की बिलकुल इच्छा न होना।

नक्सवोमिका ६, ३० शक्ति।—पीठ, कमर छाती और सब जोडों में अधिक कष्ट, खुली हवा अच्छी न लगना, पसीना आने से आराम मालूम पडना, (मर्कू-रियस के विपरीत), अजीर्ण के लक्षण और कोष्टबद्ध।

पलसेटिला ३, ६ शक्ति।—दर्द एक जगह से दूसरी जगह हटता फिरे, (ठीक बेलेडोना की तरह), गरम मकान में भी सर्दी सी लगना, ठंडी और स्वच्छ वायु की इच्छा होना, गरम हवा से कष्ट होना, मुलायम और शांत प्रकृति का मनुष्य, प्रातःकाल मुंह का बुरा स्वाद रहना।

रसटक्स ३, ६ शक्ति।—आक्रांत स्थान में सूजन और लाल रंग, आक्रांत स्थानों का जकड सा जाना, उन में कटन सी होना, कटन के माफिक अथवा जलन के साथ दर्द और उसके कारण बेबसी सी मालूम पडना। दर्द के स्थानों को स्थिर रखने से अथवा पहिले हिलाने से दर्द मालूम होना किंतु कुछ देर तक हिलानेसे अथवा सेकने से आराम होना।

सलफर १२, ३० शक्ति।—पुराने वात, रोग और वात रोग के पीछे होने वाले कष्टों के लिये यह औषध अत्यंत उपकारी है। मस्तक के ऊपरीभाग में असाधारण गरमी और जलन मालूम होना, हाथ पैरों में जलन होना।

ओंठों में वात अथवा सूजन—वेलेडोना, ब्राइयोनिया, कालचिकम लाइकोपोडियम ।

रोग के स्थान टेढे अथवा कडे होजावें—कास्टिकम, लैकेसिस, सलफर, रस्टक्स, सीपिया ।

वात के सहित पक्षाघात—चायना, रस्टक्स, कास्टिकम काकूलस ॥

सेकने से आराम मालूम होता हो तो—रस्टक्स, कास्टिकम, लाइकोपोडियम, मर्क्यूरियस, सलफर ।

ठंडी चीज लगाने से आराम हो तो—पलसेटिला ।

छाती, पीठ आदि स्थानों में रोग आक्रमण करे तो—आर्निका, मर्क्यूरियस, नक्सवोमिका, रस्टक्स ।

कलाई और अंगुलियों में दर्द—कालोफिलम ।

बडी हड्डियों के सब आवरणों मे (ढकने वाले)—मैजेरियम ।

सन्ध्या समय बढना—पलसेटिला, रस्टक्स ।

आधीरात से पहिले बढना—ब्राइयोनिया ।

आधी रात के पीछे बढना—आर्सेनिक, मर्क्यूरियस, सलफर, थूजा ।

पिछली रात प्रात काल से पहिले बढना—काली-कार्ब, नक्सवोमिका, रस्टक्स, थूजा ।

गरमी लगने से बढना—ब्राइयोनिया, पलसाटिला, थूजा ।

औषध प्रयोग ।—रोग के शुरू की हालत में जब दर्द अत्यंत प्रबल हो २ । ३ घंटे के अंतर से एक एक मात्रा औषध देनी चाहिये, आराम मालुम होने पर ४ या ६ घंटे के अंतर से औषधि देनी चाहिये ।

सहकारी उपाय।—अत्यत गरमी, सूजन और दर्द हो तो बालूरेत की पपोटली से सेकने से दर्द कम हो जाता है। जिन जिन जगहों में दर्द हो उनको फलालेन और रुई से ढके रखना चाहिये, विशेष कर सर्दी के मौसम और बादल बरसात के दिनों में अधिक होशियारी की आवश्यकता है।

पथ्य।—मछली, श्वास आदि बिलकुल वर्जित है। अधीक घी और मसाले की बनी हुई तरकारी नहीं खानी चाहिये पथ्य हलका होना बहुत जरूरी है। पहिले ज्वर के समय साबूदाना बार्ली आदि पथ्य देना चाहिये, पीछे रोटी, पके हुये फल आदि खाने को दिये जासक्ते हैं। प्यास बुझाने के लिये थोड़ा थोड़ा ठंडा पानी पिलाया जाता है। शराब इत्यादि बिलकुल वर्जित हैं।

पुराना वात रोग।

(क्रानिक रिउमेटिज्म)

पुराने वात रोग का अनुभवही किया जासका है, वर्णन नहीं हो सक्ता। यह रोग प्रायः देखने में आता है, इस लिये इस का विशेष वर्णन करना व्यर्थ है। नये वात रोग में और इस में अन्तर यही है कि इस में ज्वर नहीं होता। थोड़ी सरदी अथवा ठंडी हवा लगते ही दर्द बढ़ने लगता है। आक्रांत स्थान सब इतने कड़े हो जाते हैं कि मुड़ नहीं सके। थोड़ी देर स्थिर रखने के बाद जब उनको पहिले पहिल हिलाया जाता है, उस ही समय यह अवस्था अच्छी तरह मालूम होने

लगती है । कोई कोई रोगी इस पुराने वात रोग की कारण अगभग भी हो जाते हैं । पुराना वात रोग प्रधानत घुटना, रग, कंधे, कमर और पीठ आदि स्थानों में होते हुए देखा जाता है।

चिकित्सा । जिन को वात रोग हो अथवा होने की अशंका हो उनको अपना शरीर सर्दी और बरसात से आवश्यकतानुसार बचाये रखना चाहिये। बहुत अग चालना अर्थात् कसरत आदि करना या और कोई काम जिस से शरीर के प्रत्येक अग को हिलना झुलना पड़े अच्छा नहीं होता । शराब पीना और मांस भक्षण करना बिलकुल वर्जित है। जिनको वात रोग है उनको खुली हुई हवा में घूमने तथा ठडे जल से स्नान करने का अभ्यास कराना उचित है, जिस से उनकी सहन शक्ति बढने लगे।

कैलकेरिया-कार्ब १२,३० शक्ति ।—सब जोडों का फूल जाना और वायु के परिवर्तन से दर्द बढना, रोगी के दोनों पैर ठडे और पसीजे हुए, गंडमाला दोषग्रस्त रोगी, अमावस्या पूर्णिमा को रोग का बढना।

कास्टिकम ११,३० शक्ति ।—जोड कडे पड जाना और न मुडना, उन में काटने का सा दर्द होना, नीचे के अग का अत्यत कमज़ोर और बेदम सा मालूम होना, सध्या से कुछ पहिले और ठड लगने से रोग का बढना।

रस्टक्स-६,३० शक्ति ।—जकड जाने-अथवा का

टने के समान जोड़ों में दर्द होना, स्थिर रहने से और थोड़ी देर बाद हिलने झुलने से रोग बढ़ना। विश्राम करने से रोग को आराम मालूम हो तो ब्राइयोनिया दिया जाता है)।

सल्फर ३० शक्ति।—तरुण वात के पीछे पैदा होने वाले सब लक्षणों में यह औषध अत्यत फायदा करने वाली है। अज्ञात स्थानों में काटने का सा दर्द होना सुई सी चुभना, अथवा थोड़ा थोड़ा दर्द होना, सिर के ऊपर के भाग में लगातार गरमी मालूम होना, रोगी का वारम्वार दुर्बल और अवसन्न होना।

लैकेसिस ३० शक्ति।—प्रधानत: प्राय बाँई ओर रोग होना, दर्द आदि का सोने के बादही बढ़ना, अत्यंत पसीना आने पर भी दर्द कम न होना। (मर्क्युरियस की तरह)। हाथ की तर्जनी नामक अंगुली और कलाई का सूज जाना, घुटने में काटने के समान दर्द और हाथ में हूल मारनी।

मर्क्युरियस ६, ३० शक्ति।—हूल मारना, काटने के समान दर्द, रात्रि के समय बिछौने की गरमी से अथवा सीली या ठंडी हवा लगने से बढ़ना, अत्यत पसीना आना, किंतु उस से कुछ आराम मालुम न होना।

औषध प्रयोग। प्रतिदिन प्रात काल के समय और सध्या के समय दो बार एक सप्ताह तक दवा खाना चाहिये। पीछे २।३ दिन बंद करके देखना चाहिये कि कुछ फायदा दिखाई पड़ता है या नहीं। यदि

से यह रोग हो तो ऐकोनाईट फायदा करता है।

बेलेडोना ३,६ शक्ति ।—गरदन अत्यन्त कडी और छूने से दर्द होता हो। गले के भीतर दर्द और गरदन के सब गाठों में सूजन।

ब्रायोनिया ६,१२ शक्ति ।—गरदन कडी और दर्द होना, थोडासाभी हिलाने से दर्द बढना।

रसटक्स ६, ३० शक्ति ।—जल में भीगने के कारण यह रोग हो और दर्द के स्थान को लगातार हिलाने से दर्द को आराम मालुम पडे तो यह दवा देनी चाहिये।

गंडमाला ।

(स्क्राफयूला)

लक्षण ।—गडमाला धातुगत रोग है। इस रोग में जावडे के नीचे, गले में, वगल में और रान मे कडी कडी गाठें सी दिखलाई पडती हैं। इन गाठोंमें से कभी कोई पकजाती है और बहुत धीरे धीरे पकती है। पकने के उपरात कोई वहुत कष्ट के साथ सूखती है और कोई सूखती ही नहीं। पकने पर गाठ से घाव उत्पन्न हो जाता है जिस के सूखने पर एक बहुत ही बुरा दाग रह जाता है।

गंडमाला धातु के चिन्हः—लडकपन में बुद्धि तीव्र होना, होट और नाक का सूजना, आखों में नीली झलक और आंख के तारों का फैल जाना, मस्तक बडा

मस्तकमें फियास और तरह तरहके उद्भेद[फुन्सी], बाल सीधी से और कडे, अंगुलिया का अग्रभाग भारी और नाखून टेढे टेढे, पेट बडा, पट्ठे सब कोमल और थलथले।

गडमाला का दोष अधिकांश पुश्तैनी होता है, परन्तु इस का नियम नहीं है। अक्सर ऐसा देखने में आया है, कि बचपन में गडमाला अथवा गरमी के रोग वाली स्त्री का दूध पीने से बच्चों को यह रोग हो जाता है, उसके साथ ही यदि नीचे लिखे हुए उत्तेजक कारण उपस्थित हों तो रोग और भी पकजाता है—सीले हुए मकान में रहना, स्वास्थ्यकर और अच्छे पदार्थ भोजन करने को न मिलना, अंधेरे और बद मकान में बहुत दिन तक मुंदे रहना, नशा करना और केवल बैठे बैठे काम करना इत्यादि।

चिकित्सा।—बेलेडोना ३,६ शक्ति।— रक्त-पूर्णधातु और लडकपन में बुद्धि तेज होना, आखों की रंगत नीली, गाठ अथवा गिल्टियों में प्रदाह, आखों के पलक सूजे हुए और आखों में क्षत, होंट, नाक, जीभ, और टोन्सिल गाठों का फूलना, गले में दर्द और इसी सबब निगलने में कष्ट।

कैलकेरिया कार्ब १२, ३० शक्ति। गडमाला दोष ग्रस्त बच्चों के लिये यह औषधि बहुत उपकारी है, विशेष कर उन बच्चों के जिनका सिर बडा होता है और जिनकी ब्रह्मरन्ध्र आदि स्थानों की हड्डिया देर से निकलती है। पीठ की हड्डी टेढी और हड्डियों का न पकना (अर्थात् अच्छी तरह से पुष्टि न होना) सब गाठों का पकजाना और उन में पीब पडना,

नाक पर सुर्ख सूजन, अत्यन्त भूख (राक्षसीभूक)चमड़
सूखा हुआ और कोमल, चहरा सफेद सा इत्यादि।

हीपर सलफर १२,३० शक्ति। गडमालाकेदोष
के कारण आंखों का सूज जाना, आखों के पलकों से बहुत
जल वा मवाद निकलना।

मर्कूरियस ६,१२,३० शक्ति। हड्डी, सब जोड़
और आख इत्यादि के दर्द में तथा रोगी के शरीर में यदि
उद्भेद (फुन्सी) और घाव हों तो यह औषध दी
जाती है।

साईलेशिया १२,३० शक्ति। माथा बड़ा, माथे
के सब छेद खुले हुए अर्थात् हड्डी उत्पन्न होकर जुड़ने
में विलम्ब होना, (इस अवस्था में मर्कूरियस, कैलकेरिया
और सलफर दीजाती है)। सब गाठे बडी होकर पक जावें,
हड्डियों में घाव होना तथा उन का सड़ जाना, कब्ज,
मल कड़ा और कष्ट के साथ निकलना, मल कुछ बाहर
निकलने के बाद फिर भीतर घुस जाना।

सलफर १२,३०,२०० शक्ति। यह दवा सब
प्रकार के गडमाला दोष ग्रस्त रोगी के लिये ही फायदे
मन्द है, विशेष; कर जहा शरीर में उद्भेद (फुन्सी) हो,
गाठेंबडी और कडी होजावें, तथा पक जावें सहजहीमें सर्दी लग
जावे [इस अवस्था में मर्कूरियस और कैलकेरिया भी
दिये जाते है], बच्चे का रोगी होना, देह पुष्ट नहोना,
शारीरिक और मानसिक दुर्बलता, जल्दी चलना न
सीखना और दात में सरद पड जाना।

औषध प्रयोग। तजवीज की हुई औषध प्रति दिन सन्ध्या समय अथवा प्रातःकाल एक वारही एक सप्ताह तक दे, फिर पाच छै दिन दवा बन्द रखे। यदि इससे कुछ फायदा न हो तो और कोई दूसरी दवा तजवीज करे और ऊपर लिखे हुए तरीके से ही उस का सेवन करे।

पथ्य और सहकारी उपाय। गंडमाला दोष-ग्रस्त रोगी को मांस मच्छी खाना उचित नहीं है। इस लिये यह सब नहीं खिलाना चाहिये। दूध, रोटी, चावल आदि प्रधान खाना हैं, इन के साथ सब तरह की तरकारी भाजी और पके हुए फल भी दिये जासक्ते हैं। खूब दूध पीना और स्वच्छ हवा में टहलना यही रोगी के प्राण रक्षा करने वाले हैं। सहज व्यायाम [कसरत] जैसे कि भ्रमण इत्यादि बहुत जरूरीहै। नशीली सब प्रकारकी चीजें, बिलकुल वर्जित हैं। यदि ज्वर नहो और शरीर प्रतिदिन दुबला होता जावे, तो काडलीवर अयेल प्रतिदिन २ बार देना चाहिये। ठंडे पानी में कुछ नमक मिलाकर स्नान करना अच्छा है।

औषधों के द्वारा चिकित्सा करने की अपेक्षा स्वास्थ्य सम्बन्धीय नियम पालन करना ही इस रोग की प्रधान चिकित्सा है। धूप और स्वच्छ वायु सेवन करना, उचित व्यायाम (कसरत) करना, निर्दोष आमोद (ऐसे खेल जिन से तबियत बहले और कुछ नुकसान पैदा न हो) और सुपथ्य यही गंडमाला के दोष को रोके रख सके हैं, बिलकुल आराम भले ही नहो।

क्षय अथवा क्षक्ष्मा।

(थाईसिस पालोसनालिस)

इस को ग्रामीण भाषा में खई खांसी भी कहते हैं प्रतिदिन देह दुर्बल और क्षय होता जाता है इसी लिये इस को क्षय रोग कहते हैं। यह प्राणनाशक रोग सब श्रेणी के लोगों में ही देखने में आता है। गंडमाला की तरह यह भी एक प्रकार का धातु गत रोग होता है यह रोग जवानी आरम्भ होने के उपरान्त ही देखने में आता है अर्थात् १५।१६ वरस से पहिले होते नहीं देखा जाता। यह रोग जैसे रोगी के शरीर के भीतर धीरे धीरे बढकर रोगी का प्राणान्त करता है उस तरह दूसरा कोई रोग नहीं करता।

लक्षण। यह रोग प्रारम्भ में ऐसा छुपा हुआ रहता है कि पहले कोई इस का निर्णय नहीं कर सका। जब पूरी तरह से बढ जाता है तब ही इस का अचानक (सहजमेंही) निर्णय होता है। इस रोगके प्रधान लक्षण यह है :- अजीर्ण, और भोजन न पचना, भूख कम लगना, थोडी बहुत खांसी, अवाज बैठ जाना, छाती में दर्द, थोडे परिश्रममें ही श्वासकष्ट, कमजोरी और आलस्य, भीतर भीतर ज्वर, मुह से खून निकलना, रात में पसीने आना, और शरीर कमजोर और कृश होना इत्यादि।

खांसी ही इस रोग का प्रधान और स्पष्ट लक्षण है। रोग के प्रारम्भ में सूखी खांसी रहती है और परिश्रम करने के बाद तथा प्रात काल अधिक होती है। कफ बहुत कम निकलता है। रोग पक जाने पर डेले के डेले कफ

निकलते हैं और पानी में डालने से तैरते नहीं रहते बल्कि डूब जाते हैं। खांसी के साथ खून निकलना भी इस का एक प्रधान लक्षण है। मुह से खून निकलता देख करही (प्रधानतः खांसी के साथ निकलता देख कर) रोग निश्चय किया जाता है। पहिले सामान्य खून के छींटे से निकलते हैं, पीछे धीरे धीरे खून बढने लगता है। नाडी में हमेशा ज्वर रहता है। नाडी की धडकन प्रति मिनट ९० से १२० तक रहती है। तीसरे पहर ज्वर कुछ अधिक मालूम पडता है। थोडा परिश्रम करने से अथवा पैदल चलने से श्वास जल्दी जल्दी चलने लगता है और कष्ट मालूम पडता है।

यक्ष्मा की खांसी का वर्णन करने में भी दुःख होता है, और प्रत्यक्ष देखने से आंखों के आंसू नहीं रोके जाते। रोगी का कष्ट देख कर कलेजा फटने लगता है। रोग जब इतना बढ जाता है कि आराम होने की आशा जाती रहती है इस अवस्था में निरंतर मृत्यु की राह देखने के बराबर और कोई कष्ट संसार में नहीं होसक्ता। इस रोग की परिणामावस्था में खांसी अधिक और कष्टकर होने लगती है। कफ के मवाद की तरह डेले के डेले बहुत निकलने लगते हैं। श्वास जल्दी जल्दी और कष्ट के साथ चलता है, शरीर दुबला होजाता है, केवल हाड मांस बाकी रह जाते हैं। रात में बहुत पसीने आते हैं, उदरामय दिखलाई पडता है, शरीर आगे की तरफ झुक जाता है, क्रमशः उठने की शक्ति जाती रहती है, हाथ पैरों का खून सूख जाता है और सूजन आजाती है, मुह में घाव होजाते हैं और खांसते खांसते दम अटक सा

जाता है। अन्त में मौत आकर सब कष्ट दूर कर देती है।

मा बाप को यदि यह रोग हो तो सन्तान को भी हो सक्ती है। गण्डमाला, कर्कट रोग और उपदंश आदि रोग राज-यक्ष्मा में परिवर्तित हो सक्ते हैं। अत्यत कम उमर में पढना, अत्यत मानसिक परिश्रम, बुरे मकान में रहना जिस में हवा न आती जाती हो, शारीरिक परिश्रम न करना, देहका अच्छी तरह न बढना और पुष्ट नहोना, इत्यादि इस रोग के पैदा होने में सहायता देने वाले कारण हैं। इस के सिवाय, हस्तमैथुन, अत्यत स्त्री सहवास, कुटुम्ब और बहुत पास के नाते रिश्ते में विवाह करना आदि इस के सहायता देने वाले कारणों मेंसेही हैं।

चिकित्सा।—राज-यक्ष्मा जब पूरी तरह हो जाता है तब उसका आराम होना असम्भव है। किन्तु रोग के शुरू होते ही आहार आदिको नियम पालन करने और उपयुक्त होमियोपैथिक औषधि सेवन करने से आराम हो भी सक्ता है। रोग के अच्छी तरह दिखलाई देने परभी यदि उपयुक्त औषधि दी जावे तो चाहे आराम नहो परन्तु कष्ट बहुत कुछ कम हो जावेगा और रोगी बहुत दिन तक जीता रहेगा। अतएव लक्षणानुसार नीचे लिखी हुई दवाईयां देनी चाहियें।

एकोनाईट ३,६ शक्ति। अधिक और सूखी हुई खांसी, फेफडे मे रक्त निकलना, ज्वर अधिक होना, छाती

को यह औषध बहुत फायदा करती है।

कैलकेरिया-कार्ब १८,३० शक्ति।—सुबह को खांसी बढना, और गले से अधिक डेले के समान मवाद मिला हुआ पीले रंगत का अथवा चमक दार कफ निकलना, बहुत आसानी से पसीने निकलना और सामान्य परिश्रम सेही थक जाना, सीढी चढने के समय श्वास कष्ट, दुबला होने पर भी भोजन में खूब रुचि रहना, सामान्य कारणों में ही सर्दी लगना, ठडी हवा न सह सकना, इत्यादि लक्षणों में यह दवा दी जाती है और जिन को गंडमाली की धातु होती है उन के यह बहुत फायदा करती है।

कार्बो-वेजीटेबिलिस १२, ३० शक्ति। आक्षेपिक [वायठे दार] खांसी, दिन में कई वार उठती हो, गले से पीले रंग का सा मवाद निकलता हो और खासते खासते गले से खून निकलने लगे तो यह दवा देनी चाहिये।

फेरममेटालिक ६, १२, ३० शक्ति। खांसी का सन्ध्या से आधी रात तक बढना, प्रात काल के समय अधिक परिमाण में पीप मिला हुआ कफ निकलना, सध्या के समय सूखी खासी होना, खून निकलना, दोनों कधों के बीच के स्थान में दर्द होना, खांसी, श्वास कष्ट, जो कुछ खाया जावे उसका उलटी होजाना, सामान्य मान सिक आवेग अथवा परिश्रम से चेहरा लाल होजाना, और विना दर्द के उदरामय आदि लक्षणों में यह औषधि दीजाती है।

हीपर सलफर १२ ३० शक्ति । रोग की पहिली अवस्था में बच्चों के लिये अथवा गडमाला की प्रकृति वाले रोगियों के लिये यह दवा बहुत फायदा करती है। गले में घड घडाहट के साथ खासी, आधीरात के उपरात चढना, साधारण सर्दी लगने से ही खासी उठने लगना, हथेली गरम और सूखी हुई।

लाईकोपोटियम १२ ३० शक्ति । रात दिन खांसी उठना, गले से अधिक मवाद निकलना, भीतर भीतर ज्वर रहना, रात्रि में पसीना आना, और हर वक्त पेट में गडगडाहट होना।

फास्फोरस ३० २०० शक्ति । छाती के भीतर सरसराहट के साथ सूखी खांसी, पढने से, बोलने से, हसने से अथवा बाहर हवा में घूमने से इस खांसी का चढना, स्वरभग, छाती जकड सी जाना, कब्ज, मल कष्ट के साथ निकलना।

पल्सेटिला ६ शक्ति । रात में सूखी खांसी, सीधे बैठने से खांसी कम होना, खांसते में कष्ट न होना और पतला कफ निकलना, कफ की रंगत पीली या स्वाद में कडवापन, ऋतु बद होना।

सलफर ३०,२०० शक्ति । सूखी खांसी साथ ही अवाज बैठ जाना और गले में खुरकी, कफ पतला होने पर भी यह दवा दीजाती है। कफ हरे रंग का और मीठा छाती के भीतर कफ घडघडाना, खासी का प्रात काल के समय

बढना, शरीर सुश्क रहना, चर्म देखने से रोगीपना मालुम पडना, मस्तक में सर्वदा गरमी मालुम पडना, हाथ पैरों में जलन।

१। अजीर्ण में—पलसेटिला, नक्सवोमिका, कैलकेरिया, लाइकोपेडियम, मर्क्यूरियस, ऐन्टिम-क्रूड, कार्बो-वेजिटेबिलिस, आर्सेनिक।

२। खासी—फासफोरस, बेलेडोना, हायोसायेमस, (रातमें सूखी खांसी), ब्रायोनिया [छाती में सुईसी चुभना], स्टानम [बहुत कफ निकलना और रात में पसीने आना]।

३। खून गिरना—हेमामेलिस, इपीका, ड्रोसेरा, आर्निका, फेरम, कैलकेरिया, आर्सेनिक।

४। श्वास कष्ट—आर्सेनिक, ऐन्टिम-टार्ट।

५। भीतर भीतर ज्वर, रात में पसीना, उदरामय इत्यादि-ऐसिड-फासफोरिक, चायना, हीपर-सल्फर, सैम्बूकस, स्टानम।

औषध प्रयोग। जब खासी अथवा और कोई लक्षण प्रबल हो तब दिन में ३। ४ बार औषध देनी चाहिये, नही तो प्रतिदिन १ या २ मात्रा से अधिक देना उचित नहीं। फासफोरस, सलफर फेरम, आर्सेनिक इत्यादि औषधों में से ध्यान लगाकर तजवीज करना चाहिये, तब पीछे उनको सेवन करावें क्योंकि इन के अयथा सेवन से रोग बढ भी सक्ता है।

सहकारी उपाय। जिस को राज यक्ष्मा होने का सन्देह किया जावे उसके विषय में खाने पीने आदि की अधिक सावधानी की आवश्यकता है। नियमित समय पर

नहाना, भोजन करना, स्वच्छ हवा में खूब टहलना, स्वास्थ्यकर और पुष्टिदायक पदार्थ खाना, ऐसे घर में रहना जिस में सील बिलकुल न हो और हवा अच्छी तरह आती जाती हो, प्रतिदिन नियमित रूपसे ज़ोर से सांस लेने का अभ्यास करना, सर्वदा धर्म पथ पर चलना और मन पवित्र और प्रफुल्लित रखना अत्यन्त आवश्यक है । आबहवा बदलने से भी बहुत फायदा दिखलाई पडता है इस लिये जिस को जो स्थान सह्य हो समुद्र तीर, पहाड अथवा और कोई खुश्क जगह अपनी प्रकृति के अनुसार छांट लेना चाहिये।

पथ्य । रोगी का अहार पुष्टकर और बलकारक होना चाहिये। दूध विशेष उपकारी होताहै किन्तु यदि उदरामय होतो दूध के बदले और कोई पथ्य देना चाहिये, मांस का शोरवा अच्छाहै। यदि उदरामय नहो तो काडलीवर आयेल बहुत फायदे मन्द है । प्रात काल के समय भोजन करने के बाद ५ बूंद [यदि दोनो समय सह्य न होतो एकही समय] दूध के साथ मिलाकर देना चाहिये । जैसे जैसे सहन होता जावे वैसेही वैसे मात्रा बढाई जासक्ती है ।

बहुमूत्र ।

डायेबिटिस ।

बहुमूत्र एक धातुगत रोग है । इस का कारण आज तक कोई निश्चय नहीं कर सका है । इस रोग का प्रधान लक्षण यही हे कि पेशाव अधिक होता है और उस में शर्करा [चीनी] रहतीहै। पेशाव सब को बराबर नहीं होता । कोई कोई रोगी २४ घटे में ३० से लेकर ५०

पाइन्ट तक पेशाव करता है। और एक एक पाइन्ट पेशाव में २ से लेकर ३ औंन्स तक चीनी वर्तमान रहती है, कोई कोई रोगी ऐसा भी होता है कि दिन रात में केवल ७ पाइन्ट से १० पाइन्ट तक ही पेशाव करताहै।

लक्षण। पेशाव की रंगत फीकी, दुर्गन्ध रहना, और स्वाद मीठा रहना। रोगी को प्यास अधिक लगती है। राक्षसी क्षुधा, कब्ज, दस्त कडा और थोडा, चमडे पर खुश्की और शरीर दुबला पडना, मानसिक अवसन्नता [कमजोरी] स्मरण शक्ति का कम होना, देह दुर्बल होना, हाथ पैर और शरीर में जलन, मुह का मीठा स्वाद रहना, इत्यादि बहुमूत्र के प्रधान लक्षणों में से है। इस रोग में हिसाव से पेशाव का भारीपन बहुत बढ जाता है। और १०३५ से १०५० तक होजाता है। यह रोग प्राय बहुत दिन तक रहता है, लेकिन कभी कभी यह इतने जोर से होते देखा गया है कि थोडे ही समय में प्राणात कर देता है।—

इस रोग की अपेक्षा इस के साथ रहने वाले उपसर्ग अधिक कष्टकर और प्राणनाशक होने हैं। इन उपसर्गों में फोडा, घाव, अडीढ अथवा साघातिक फोडे प्रधान है। पृष्ठाघात [पीठ में घाव] इत्यादि होने से फिर वे सूखते नहि, यह सडकर ऐसे होजाते हैं कि दुर्गंध आने लगती है और अन्त में प्राणात हो जाता है। बहुमूत्र से कभी कभी राजयक्ष्मा होते हुए भी देखा जाता है।

एक बहुमूत्र और तरह का होता है। उस में केवल

पेशाव ही अधिक होना है और उस में शर्करा या चीनी मिली हुई नहीं रहती। इस प्रकार का बहुमूत्र इतना सांघातिक नहीं होता है। इसके लक्षण भी प्राय शर्करा वाले बहुमूत्र के समान ही है, किन्तु इस रोग में पेशाव का भारापन हिसाब से १००३ से १००७ तक होता है।

चिकित्सा।—औषध द्वारा बहुमूत्र के आराम होने में सन्देह है, किन्तु होमियोपैथिक औषध सेवन करने से यह बात है कि उपसर्ग कम होजाते है और इतना कठिन नहीं रहता। इस रोग के रहते भी यदि कोई मनुष्य खाने पीने और स्वास्थ्य सबधीय नियमों का पालन करे तो बहुत दिन तक जिंदा रह सक्ता है। लक्षणों के अनुसार नीचे लिखी हुई औषधों को व्यवहार में लाने से बहुत फायदा हो सक्ता है।

आर्सेनिक ६·१२ ३० शक्ति। वे मालूम पेशाव होना और जलन होना, शरीर का दुबलापन, और शीघ्र ही कमजोर हो जाना, बहुत प्यास, बारबार थोडा थोडा पानी पीना, बहुत बेचैनी, शरीर में जलन और मृत्यु भय।

एसिड–फास्फोरिक १× ३× शक्ति।— यह बहुमूत्र की एक औषधि है। बारम्बार पेशाव होना, कमर में दर्द, शरीर दुबला और कमजोरी। जो बहुमूत्र वायु प्रधान होता है, उसको यह बहुत फायदा करती है। यह औषधि पेशाब में कमी करती है और शरीर का बल बढाती है।

यूरेनियम नाईट्रिकम ३ शक्ति।—यह भी इस रोग की एक उपकारी औषध है।

प्लम्बम् १२ शक्ति।—यह भी एक उत्तम दवा है। इसकी प्रधान क्रिया वृक्क अथवा मूत्रकेन्द्र पर होती है।

हेलोनिन ६ शक्ति।—डाक्टर "हेल" इस औषधकी प्रशंसा करते हैं।

वात रोग ग्रस्त मनुष्योंके लिये नेट्रम-सलफ्यूरिक अच्छा है। यदि और किसी औषध से फायदा न हो तो सिजीजियम मूल अरक अथवा साईलेसिया अधिक फायदा करता है। इस के सिवाय और और विशेप लक्षणोंके अनुसार डिजीटेलिस, नक्सवोमिका, कैंन्थेरिस, मरक्यूरियस इत्यादि औषधें प्रयोग की जा सकती हैं।

औषध प्रयोग।—प्रत्येक औषध दिन में तीन चार बार सेवन कर एक सप्ताह तक परीक्षा करनी चाहिये। एक औषध से फायदा न दीखे तो इसी प्रकार दूसरी औषध देखनी चाहिये।

सहकारी उपाय।— चिंता, मानसिक श्रम, दुःख आदि जहांतक होसके दूर रखने चाहिये। प्रतिदिन नियम पूर्वक व्यायाम [कसरत] करना अत्यंत आवश्यकीय है। यदि और किसी प्रकार का व्यायाम नहोसके तो प्रतिदिन खूब टहलना बहुत जरूरी है। जो लोग केवल बैठे बैठे काम करते हैं अथवा बहुत मानसिक परिश्रम या चिंता का काम करते हैं यह रोग उनहीं को होजाता है। वाय

हवा बदलना, देश भ्रमण, स्वास्थ्यकर स्थान में निवास, और स्वास्थ्य सम्बंधीय नियमों का पालन करना बहुत आवश्यकीय है ।

पथ्य । पथ्य का ठीक प्रबंध होना ही इस रोग की प्रधान चिकित्सा है । श्वेतसार [Starch] जातीय पदार्थ यथा आलू, भात इत्यादि जितना कम खाया जावेगा उतना ही अच्छा है । रोटी खाना अच्छा है । मांस इस रोग में अच्छा पथ्य है । मिठाई की जितनी चीजें हैं बिलकुल न खानी चाहिये । दूध चाहे जितना दिया जावे जितना अधिक होगा उतनाही अच्छा है । माखन निकाला हुआ दूध अच्छा होता है । आटे को धोकर उसमें से श्वेतसार (Starch-लोच) निकाल डालाजय और उस धुले हुये आटे की रोटी खिलाई जावे तो बहुत अच्छा है । खाने की सब चीजें परिपाक शक्ति पर निर्भर है । जिसको जितना पचाने की शक्ति हो उसको उतनाही और उसी प्रकार खाने को देना चाहिये । नशीली चीजें बिलकुल न दीजानी चाहिये । प्याज, लहसन, गरम मसाले आदि जितनी मुशकिल से पचने वाली चीजें हैं बिलकुल न देनी चाहिये ।

शोथ ।

(ड्रापसी—सूजन)

शरीर के भीतर किसी यन्त्र में अथवा, चमडे के नीचे कहीं जल सञ्चय होजावे तो उस को शोथ कहते हैं । शोथ दो प्रकार का होता है, स्थानिक और सार्वांगिक ।

सार्वांगिक शोथ पैर के तलवे से शुरू होकर धीरे धीरे ऊपरकी ओर बढता है और शरीर में सब जगह फैल जाता है। स्थानिक शोथ शरीर के किसी विशेष गह्वर (गहराई) में ही होता है, और आक्रांत स्थान के ही नाम के अनुसार इसका भी नाम होता है यथा मस्तिष्क में जल सचय होने से मस्तिष्क शोथ, वक्ष (छाती) में जल सचय होने से छाती का शोथ, हृत्पिंड में जल सचय होने से हृत्पिंड का शोथ और आंतों में जल सचय होने से उदरी आदि कहलाया जाता है।

लक्षण।—शोथ का विशेष कर सार्वांगिक शोथ का प्रधान और सुस्पष्ट लक्षण फूल जाना है। फूला हुआ स्थान कोमल और पिल पिला होता है। चमडा सफेदसा चमकीला और ठडा रहता है। फूले हुए स्थान को उंगली से दबाने से गढ्ढा पड जाता है और उंगली उठा लेने के बाद भी थोडी देर तक यह गढ्ढा रहा आता है। भूख कम होजाती है, रुचि भी घटने लगती है अथवा बिलकुलही नहीं रहती, प्यास बढ जाती है, और पेशाब लाल रंगत का और परिमाण में कम होताहै। श्वास कष्ट और दिल का धडकना, कमजोरी और कोष्ठबद्धता उपस्थित हो जाती है।

कारण।—अनेक कारणों से शोथ होते हुए देखा जाता है। इन के कारणों में से नीचे लिखे हुए प्रधान हैं। शरीर के किसी भीतरी यन्त्र का प्रदाह, शरीर के उद्भेद [फुंसी आदि] का बैठ जाना, ज्वर आदि रोगों में आर्सेनिक मिली हुई

दवाओं का अधिक खाना, अधिक रक्त निकलना । पुराना ज्वर और चेचक के ज्वर के बाद बहुधा शोथ होते हुए देखा जाता है ।

स्थानिक शोथों में उदरी ही प्रधान है । इस रोग में पेट सूजजाता है और बढजाता है । सूजन पेटके नीचे के भाग से आरम्भ होकर क्रमश: ऊपर की ओर बढने लगती है । उदरी रोग में विशेष कर बढी हुई अवस्था में श्वास कष्ट उपस्थित होता है, रोगी आसानी से चलफिर नहीं सक्ता और शरीर कमजोर हो जाता है ।

चिकित्सा ।—

१ । सार्वांगिक शोथ—डिजीटेलिस, एपिस आर्सेनिक, ब्राईयोनिया, सेनेगा, एपोसाईनम ।

२ । उदरी ।—एपोसाईनम, आर्सेनिक, चायना क्रोटन-टिग ।

३ । मस्तिष्क में जल संचय होना—हेलीबोरस, मर्क्युरियस, बेलेडोना, एपिस ।

४ । छाती में जल सचय—ब्राईयोनिया, डिजीटेलिस, आर्सेनिक हेलीबोरस ।

५ । हृत्पिंड में जल संचय—डिजीटेलिस, स्पाईजीलिया, आर्सेनिक ।

एपिस,३,६ शक्ति।—शरीर के किसी स्थान में अथवा सब शरीर में शोथ, शरीर के जुदेजुदे स्थानों में डूक मारने का-सा तथा जलन करने वाला दर्द, पेशाब कम और जलन ।

आर्सेनिक, ६, ३० शक्ति।—समस्त शरीर विशेष कर चहरे की खालकी रगत नीली या सफेदी लिये हुए, पेट और हाथ पैरों पर सूजन, अत्यत कमजोरी और दुबलापन, ऐसा मालूम होना मानो रोगी का दम अटक जावेगा, विशेष कर रात्रि में, अत्यत प्यास, घबराहट, बेचैनी और मृत्यु भय।

आपोसिया ६, ३० शक्ति—आखों के नीचे के पलकों पर सूजन, होठों की नीली रगत, सूखे और फटे हुए, हृत्पिंड की जगह सुई चुभोने का सा दर्द, अत्यन्त प्यास और पेशाव कम होना।

चायना ६, ३० शक्ति।—चहरा देखने से रक्त शून्य और रोगीला मालूम हो, जिगर और तिल्ली का दोष, अत्यन्त प्यास, वार वार थोडा थोडा पानी पीना, वृद्ध मनुष्यों का रोग तथा जो रोग रक्त स्राव के उपरात हो।

कालचिकम ३, ६ शक्ति।—चहरा पीला और सूजा हुआ, चमडा सूखा हुआ और ठडा अथवा रात्रि में कभी ठडा और कभी गरम, दिल धडकना, थोडा और मैला पेशाव होना।

डिजिटेलिस ६शक्ति।—नरम और थल थली सूजन, उगली से दवाने पर दबजाना, चहरा रक्तशून्य, होटों की नीली रगत और पलक सूजे हुये, हृदय रोग के कारण छाती की सूजन, देखने में हृत्पिन्ड का अत्यन्त

धडकना और नाडी की गति अनियमित, घुटने और अंडकोशों की सूजन।

लेकेसिस १२, ३० शक्ति।—तिल्ली, जिगर और हृत्पिंड की पीडा के उपरांत शोथ, बांये अंडकोष की सूजन, उसपर दवाव और सुई चुभोने का सा दर्द, जरायु [बच्चे] की जगह में किसी प्रकार का दवाव सहन न हो सकना, पेशाव काला और थोडी, नींद के वाद ही वढना।

लाईकोपोडियम १२, ३० शक्ति।— शरीर के ऊपर का हिस्सा दुवला परंतु नीचे का भाग खूव सूजा हुआ, एक पैर गर्म दूसरा पैर ठंडा, पैर के घाव से रस निकलना, पेशाव कम होना और उस में वालूरेत की तरह लाल रंग की नीचे जमजाना, मद्यपानादिके उपरांत यह रोग होने से उपकारी है।

सलफर ३०, २०० शक्ति।—शोत की सूजन और जलन, शरीर में नीलेसे दाग, चमडा सूखा हुआ, वाहरी कोई कारण न रहने परभी वहुत थकावट मालूम होना, (खाज्स्) इत्यादि चर्म रोग वैठजानेसे पीडा होतो यह दवा फायदा करती है।

एपसाईनम ३× शक्ति। और और औषधी से यदि कुछ फायदा नहो तो यह शोथ के लिये एक उत्तम औषधि है।

फेरम ६, ३० शक्ति। रोगी के शरीर में खून कम, चमडा देखने से ऐसा मालूम होना मानो खून है

ही नहीं, शरीर दुर्बल, भोजन के उपरांत जी मिचलाना और कब्ज।

टेरीबिंथ ३ शक्ति। पेशाव में यदि रक्त रहे तो यह दवा देनी चाहिये।

औषध प्रयोग। साधारणत दिन में तीन चार चार औषधि खिलाई जावे तो ठीक है, रोग की बढ़ी हुई हालत में यदि कष्ट और दुर्बलता अधिक हो तो तीन तीन घंटे के अंतर से दवा देनी चाहिये।

सहकारी उपाय। सीले हुए घर में रहना अथवा सीली हुई हवा लगना नितांत वर्जित है। घर सूखा होना चाहिये। नीचे धरती में सोना उचित नहीं है। यदि ज्वर नहो तो गुन गुने पानी से स्नान कराने में कुछ हर्ज नहीं है।

पथ्य। हलका पथ्य देना चाहिये। दूध अच्छा पथ्य है, प्यास बुझाने के लिये ठंडा पानी पिलाया जा सकता है।

रक्ताल्पता।
(ऐनीमियां)

शरीर में रक्त का कम हो जाना और उस के पैदा होने की क्रिया में गड़बड़ होने को रक्ताल्पता कहते हैं। रक्त की स्वाभाविकता और पैदा होना कम होकर यह रोग पैदा होता है। स्वच्छ हवा और सूर्य की रोशनी की कमी, कम आहार, बहुत खून निकलना, [यथा अर्श आदि रोगों

के कारण] बहुत रज स्राव [मासिक धर्म के समय मैला गिरना] बहुत दिन तक अधिक पीव निकलना, पुराना उदरामय, श्वेत प्रदर, ज्वर, तिल्ली और जिगर का बढना इत्यादि इस के प्रधान कारण हैं।

लक्षण।—शरीर, होट आख इत्यादि स्थान रक्त शून्य, चहरा सफेद, जीभ बडी, रक्त शून्य और कोमल, नाडी सूत के समान कमजोर, रोगी कमजोर और आलस में रहे, जरासे में थक जावे और हांपने लगे, अजीर्ण भूख न लगना, दिल धडकना और हाथ पैर ठण्डे रहना।

चिकित्सा।

१। बहुत रक्तादि निकलने से रोग की उत्पत्ति होतो चायना, एसिड फास्फोरिक, फेरम, आर्सेनिक।

२। मासिक धर्म कम होने अथवा न होने के कारणः— पलसाटिला, फेरम।

३। स्वच्छ वायु और सूर्य्य प्रकाश न मिलने के कारण· फेरम और पलसाटिला वा नक्सवोमिका। इस अवस्था में नेट्रम-सलफ्यूरिक अत्युत्तम औषधि है।

४। पुराने ज्वर के कारण —नेट्रमम्युरेटिक, फेरम, आर्सेनिक।

औषध प्रयोग। जिस कारण से रक्तालपता उपस्थित हुई हो उसी कारण पर दृष्टि रख कर दवा देना चाहिये। प्रति दिन दो वार दवा खिलाना ठीक है।

सहकारी उपाय। स्वच्छ खुली हुई हवा में प्रतिदिन जितना हो सके टहलना परम आवश्यकीय है।

जिस कारण से खून की कमि उपस्थित हुई हो सब से पहिले उसको दूर करना चाहिये।

पथ्य। भोजन ऐसा होना चाहिये जो आसानी से पच जाये और पुष्टिकर हो। इस के लिये दूध से बढ कर कोई चीज नहीं है। जो चीज आसानी से पचकर खून पैदा करे वही सुपथ्य कहलाता है।



अष्टम अध्याय।

मानसिक रोग समूह।

इस बात को सब जानते हैं कि मनके आवेग के साथ स्वास्थ्य का विशेष संबंध है। मन स्वस्थ्य रहने से देह भी स्वस्थ्य रहेगा। ऐसे बहुत से दृष्टांत दिये जासकते हैं, जिन में भय, दुःख, शोक, नैराश्य आदि मानसिक आवेगों के कारण मनुष्य अचानक बेहोश होगये है और सदा के लिये उन का स्वास्थ्य अथवा मन बिगड गया है। दृढ विश्वस से मानसिक और स्नायविक रोग आराम होगये हैं, ऐसा शायद सबोंने ही देखा वा सुना होगा।

भय।

अचानक भय पाकर जो सब रोग उत्पन्न होते हैं, उन में निम्नलिखित औषधें दी जाती हैं।

एकोनाईट ३, ६ शक्ति। यदि रोगी कांपता रहे और छाती धडकती रहे, मन में मृत्यु की आशंका हो, डर लगने के उपरांत भी मनमें भय बना रहे और किसी

तरह दिल से वह डर न निकलसके।

वेलडोना ३, ६ शक्ति। डर लगने से पांयठे आना विशेष कर बच्चों को, रोगी चिल्लावे और कांपे, और हाथ पैर पटके, मस्तक में खून भरजावे और चहरा लाल होजावे।

काफिया ३ शक्ति। अतिशय स्नायविक उत्तेजना, कम्पन और मूर्च्छा, नींद बिलकुल न आना।

जेलसीमीनम ६ शक्ति। अचानक भय पाकर उदरामय, रोगी ठीक पागल के समान होजावे।

ओपियम ६ शक्ति। भय पाकर पांयठे, अस्वाभाविक निद्रा, सरांटे भरना और सास आने जाने में कष्ट होना। वेहोश होजाना और बकना, वेमालूम मल मूत्र निकल जाना। यदि औषधि देने से आध घंटे में कुछ फायदा न दिखलाई पडे तो इग्नेशिया ६ शक्ति देना चाहिये।

औषधि प्रयोग। आवश्यकता के अनुसार १।२।३ ३ घंटे के अंतर से।

सहकारी उपाय। रोगी को स्थिर भाव से रखना चाहिये। रोगी के लिये शारीरिक और मानसिक विश्राम अत्यंत आवश्यकीय है। रोगी के पास जितने कम आदमी रहें उतनाही अच्छा है। उस के पास बहुत बोलना चालना अथवा गडबड करना उचित नहीं।

शोक दुःख।

शोक दुःख जिस प्रकार बेमालूम दिन दिन शरीर को सुखाता है शायद और कोई इस प्रकार नहीं सुखा सक्ता। मन के कष्ट के बराबर प्रबल रोग और कोई नहीं है।

शोक और दुःख से अधीर रोगी की चिकित्सा करते समय ध्यान रखना चाहिये कि उस से मीठी मीठी बातें करे और उस को दिलासा दे। इस के सिवाय तीर्थ यात्रा देश विदेश भ्रमण, दर्शन, बन्धु बान्धवों के साथ निवास, सतोष जनक कार्य में प्रवृत्ति इत्यादि बातों से रोगी को सर्वदा भुलाये रहे और उस की तबियत को बहलाये रखने की चेष्टा करे।

चिकित्सा।—

इग्नेशिया ६ शक्ति। मन में भीतर ही भीतर दुःख को दबा रखना, पाकाशय खालीसा मालूम पडना, सबही बातों में लापरवाही, शोक दुःख के कारण हाथ पैरों में बायठ।

एसिड फास्फोरिक ६,३० शक्ति।—अतिशय दुर्बल और जगत में सबही बातों से उदासीनता और लापरवाही, बात चीत करने की इच्छा न होना।

काकूलास ६ शक्ति। उदासी, चमक उठना, विशेष कर रात्रि के समय शोक के उपरात सिर में दर्द, किसी रोगी इष्ट मित्र की शुश्रुषा करने के कारण नींद न आना।

लैकेसिस १२, ३० शक्ति। सो कर उठने के बादही तबियत खराब और तकलीफ मालूम पडना, गरदन के चारों ओर कोई चीज कस कर बांधने से बुरा मालूम पडना।

पलसेटिला ६, ३० शक्ति। रोना, उदासीनता, हर एक बात से तबियत घबरा उठना, हमेशा सुस्त रहना और जरासी बात से रोपडना।

औषधि प्रयोग। आवश्यकता के अनुसार दिन में एक या दो बार।

सहकारी उपाय।—जिस मनुष्य के हृदय में शोक संताप घुस गया हो उस पर सिवाय धर्म्म चर्चा के और किसी तरह असर नहीं होसक्ता। यदि हो तो धर्म चर्चा से ही उस के दिल को कुछ ढाढस बंध सका है, इस लिये शोक, दुःख और आपद विपद में ईश्वर पर भरोसा करने के लिये ही उपदेश देना चाहिये। सुख की तरह शोक दुःख भी संसार का नियम है। लगातार सुख संसार में किसी के भाग्य में नहीं लिखा है। यह सोचकर और ईश्वर विश्वास कर छाती बांधनी उचित है।

क्रोध।

क्रोध के समान पराक्रमी शत्रु और कोई नहीं है। क्रोध के कारण जो रोग उत्पन्न हों उनमें निम्न लिखित औषधें फायदा करती हैं।

चिकित्सा।

आर्निका ३,६ शक्ति। बहुत गुस्सा करे, रोवे और बारबार खांसी उठे और किसी का उत्तर देने की इच्छा न करे।

ब्रायोनिया ३,६ शक्ति। बहुत कोप करने का स्वभाव, चिड़चिड़ा पन, प्रत्येक बात से चिढ़ उठना, सिर दर्द, जरा हिलने झुलने से ही सिर दर्द होना, कब्ज रहना, मल कठिन और सुखा हुआ।

कैमोमिला ६, १२ शक्ति। जब छोटे छोटे बच्चे क्रोध के मारे पागल के समान हो जावें, दम बन्द होजावे और बायठे आने लगे, क्रोध के कारण अन्न न पचना और जिगर (यकृत) में दोष मालूम पड़ना।

कालोसिंथ ६ शक्ति।—विरक्ति अथवा शोक के कारण उदरामय, [भय पाकर उदरामय होतो जेलसीमीनम अथवा ओपियम,] बात कहने अथवा प्रश्न का उत्तर देने की इच्छा नहोना।

नक्सवोमिका ६, १२ वा ३० शक्ति।— गुस्सा होने वाला स्वभाव, गुस्सा होने के उपरांत तबियत खराब मालूम पड़ना, अत्यन्त चिड़चिड़ापन और अकेले रहने की इच्छा।

औषधि प्रयोग।—जब तक फायदा दिखलाई न पड़े २। ३ घंटे के अंतर में देते रहना चाहिये।

सहकारी उपाय।—विवेक अंकुश के सिवाय क्रोध हस्ती को कोई नहीं रोक सक्ता,—अर्थात् सिवाय समझने के और किसी तरह क्रोध शांत नहीं होता। अभ्यास के द्वारा क्रोध रोका जाता है। क्रोध के कारण आंख, मुंह लाल होजाते हैं। मस्तक में रक्त आजावे या और ऐसेही लक्षण दिखलाई पड़ें तो सिर पर ठंडा पानी और पैरों में गरम पानी लगाना फायदा करता है।

उन्मत्तता
(इन्सैनिटी)

ज्ञान शक्ति खोकर जीवित रहने के बराबर शायद और दुःख की कोई बात नहीं है। जिसकी विवेक शक्ति जाती रहे ऐसे का मर जानाही अच्छा है। यदि कोई मनुष्य पागल होजावे तो उस के प्रति विरक्ति और घृणा तो सबही करते हैं, परंतु नहीं वास्तव में वह दया का पात्र है उस के प्रति करुणा करनी चाहिये।

पागल के लक्षणों को सविस्तर लिखना व्यर्थ है। पागल के लक्षण जुदे जुदे तरह से इतने हैं कि बहुत से उन को भिन्न भिन्न रोग समझकर भ्रम करने लगते हैं। किसी का केवल उदासी और सुस्ती ही रहती है, स्वभाव क्रोधी होजाता है और निद्रा बिलकुल नहीं आती। किसी की ऐसी अवस्था होती है कि सब का अविश्वास करता है, यहां तक कि अपने इष्ट मित्र और घरवालों तक का विश्वास नहीं करता, किसी के पास नहीं बैठता, सब का

संग छोडकर इकला बैठा रहना पसंद करता है। ऐसी हालत प्रायः जब मनुष्य की धन सम्पत्ति जाती रहती है, हृदय में कोई शोक बैठजाता है, कोई आफत आपडती है अथवा कोई रोग पुराना पडजाता है तब होती है। इसके सिवाय जो उन्मत्तता प्रकृति बिगडने से होती है वह बडी भयंकर होती है। रोगी एक साथ विवेक शून्य हो जाता है। अपने पराये का ज्ञान नहीं रहता और भला बुरा कुछ नहीं पहचानता। काटता है, मारता है, आदमियों पर थूकता है, नंगा होजाता है, कपडे फाडता है इत्यादि तरह तरह के उत्पात करने लगता है।

कारण।—उन्मत्तता कुलगत रोग है, अर्थात् यदि बाप को यह रोग है तो उसके पुत्र को भी हो सकता है। शराब, गांजा आदि नशीली चीजें ही उन्मत्तता का एक प्रधान कारण है, इसके सिवाय मस्तिष्क यकृत (जिगर) जरायु (गर्भदानी) परिपाक यंत्र आदि के रोग के कारण भी उन्मत्तता हो सकती है। मानसिक कारण यथा बहुत पढना, अचानक मानसिक आवेग, निराश प्रेम, दीर्घस्थायी शोक, विश्वासघातकता आदि भी उन्मत्तता के कारण हो सकते हैं।

चिकित्सा।—पागल की चिकित्सा करना अत्यन्त कठिन है। इस लिये इस का भार किसी चतुर चिकित्सक के हाथ में देना चाहिये। हमने पहिले ही कहा है कि पागल मनुष्य दया का पात्र होता है, क्रोध और घृणा का पात्र नहीं होता इसलिये पागल को मारना या पीटना महा अन्याय है। पागल को भरोसा देना, उससे

नवम अध्याय।

स्नायु विधान के रोग।

मस्तिष्क प्रदाह।

मस्तिष्क प्रदाह दो प्रकार का होता है। जब मस्तिष्क को ढकने वाली झिल्ली प्रदाहित होती है, तब उस को "मेनिआईटिस" कहते हैं। इस प्रकार के मस्तिष्क प्रदाह में बड़ा तेज सिर दर्द रहता है। जब मस्तिष्क प्रदाहित होता है तब उस को "एनोकेफालाईटिस" कहते हैं। इस में तेज सिर दर्द नहीं रहता, माथे में भारापन और भीतर दर्द मालुम पड़ता है।

इस रोग के प्रधान लक्षण।—प्रबल ज्वर अत्यन्त शिर दर्द, चहरा और आंखें लाल, रग और गर्दन की धमनी का बहुत फड़कना, उजाला, और शब्द सह्य न होना, नींद न आना, बहुत बकना इत्यादि रोग से पहिले या और किसी समय उल्टी होना, रोग की पहिली अवस्था में आंख की पुतली का सुकड़ जाना, किन्तु जैसे जैसे रोग बढ़ता जावे आंख की पुतली का भी बढ़ना, नाड़ी की गति सर्वदा एकसी न रहे, कभी तेज और कमज़ोर और कभी मन्दी और पूर्ण।

पूरी उमर के आदमियों की अपेक्षा बच्चों को ही यह रोग होना अधिक सम्भव है। दांत निकलते समय या और कोई भारी रोग के समय बहुत होशयार रहना चाहिये। यदि बालक खिटखिटा होजावे, खेलने की इच्छा न करे, पड़ा रहना चाहे, माथा सीधा न रखसके, बारबार सिर

पर हाथ रक्खे, देखने में कोई स्पष्ट कारण मालूम न होने परभी जोर से चिल्लावे, तकिये पर सिर उलटे पलटे और रगडे, उजाला और शब्द अच्छा न लगे, आखें लाल हो जावें, नींद मे अचानक उछल पडे, आखें झुकी हुई रहें अथवा नींद न आवे, यदि यह सब लक्षण दिखलाई पडें तो मस्तिष्क प्रदाह समझ कर चिकित्सा करनी चाहिये।

चिकित्सा।—

ऐकोनाईट ३,६ **शक्ति**।—रोगकी प्रथमावस्था में जब प्रबल ज्वर के सब लक्षण दिखलाई दें, जैसे गरम सूखा हुआ शरीर, कठिन और तेज नाडी इत्यादि और मस्तक में रक्त आजावे, चहरा लाल हो, अत्यन्त मानसिक घबराहट और मृत्यु भय, नींद न आना, बेचैनी, करवटें बदलना इत्यादि दिखलाई पडे तो ऐकोनाईट फायदा करती है।

बेलेडोना ३,६ **शक्ति**।—मस्तक में अत्यन्त लपकन, सिर दर्द, लाल और उजली आखें, चहरा भयङ्कर तथा लाल, चमकीला, मस्तक में अत्यत गरमी, गले का धमनी का बहुत फडकना, बकना, बिछौने से भागने की इच्छा करना, पास के आदमी को खोंसना, काटे, और मारे, रोशनी और आवाज बिलकुल न सुहावे, और सोते समय चमक उठे।

ब्रायोनिया ३,६ **शक्ति**।—सिर में दर्द मानो फटा जाता है, रात में बकना, भागने की इच्छा करना, होट सूखे हुए और अत्यत प्यास, बिलकुल स्थिर रहने की

इच्छा करे क्योंकि जरा हिलने से वृद्धि, बिछोने पर बैठने से वमन करने की इच्छा होना और वमन करना, हो, सूखा हुआ और कठिन मल, बहुत ठिनकना।

हायोसायेमस ६ शक्ति। तन्द्रा और बेहोशी सी में रहना, अस्पष्ट बात कहना, बकना, एक ही ओर टकटकी लगा कर देखना, अचानक हाथ पैर हिलाना, जीभ पर सफेद मैल ढका रहना, मुहमें झाग निकलना, बड बड करके बकना, बिछोने रचना और बेमालुम मल मूत्र निकल जाना।

ओपियम ३, ६ शक्ति।—सुन्य पडजाना, घडघडाहट के साथ खुर्राटे लेकर सांस लेना, आँखें अध खुली, बकना और टकटकी बांध कर देखना, चहरा नीली रगत का और सुजासा, सुनाई ज्यादा पडना, शोक, भय अथवा किसी प्रबल मानसिक आवेग के कारण रोग, मल कठिन, काला और गुठले दार।

स्ट्रामोनियम ६ शक्ति।—सब इन्द्रियां सुप्त हो जाना, बकना और भागने की इच्छा करना, ऐसा मालूम होना मानो डर से जाग पडता है। दांत किडकिडाना, होटों में घाव और फटे हुए, दांतों पर मैल जम जाना, टकटकी लगा कर एक ओर देखना, आँखें उजली और पतला मल।

शरीर में यदि उपदंश का दोष हो [पहिले आतशक हो चुका हो और उस के सबब खून में खराबी पड गई हो]—मर्क्युरियस। गरदन और मस्तक के पीछे अधिक

दर्द—हेलीबोरस। सोते समय चिल्ला उठना,—एपिस। मस्तक गरम, दोनों पैर ठंडे, और यदि रोगी को चर्म रोग हो—सलफर। ज्वर के उपरांत और जब बेलेडोना वा हेलीबोरस दिया जा चुका हो—जिङ्कम।

औषध प्रयोग।—आवश्यकतानुसार २।३ घंटे के अन्तर से या ३।४ घंटे के अन्तर से देनी चाहिये।

सहकारी उपाय।— यदि हाथ पैर ठंडे मालूम पड़ें तो गरम पानी बोतल में भरकर सेंक दे और फ्लानेल से लपेट दे। सिर मुड़वा कर जल की पट्टी या बरफ लगावे। जल पट्टी का कपड़ा गरम न होने दे उस को बार बार तर करता रहे। एक बड़े चादरे से शरीर को ढका रक्खे। रोगी के लिये सम्पूर्ण विश्वास परम आवश्यकीय है। इस लिये जिस कमरे में रोगी हो उस में जोर जोर से बात करना, बहुत आदमियों का ठहरना वा आना जाना, अथवा और किसी प्रकार रोगी को चिड़ाना या ऐसा काम जिस से उस के मनको कष्ट हो न करना चाहिये।

पथ्य।—साबूदाना, बार्ली आदि पहले हलका पथ्य देना चाहिये, पीछे दूध दिया जासक्ता है। प्यास बुझाने के लिये ठंडा पानी पीने को देना चाहिये।

संन्यास।

(ऐपोप्लेक्सी)

मस्तक में रक्त स्राव होकर अचानक रोगी बेहोश, शिथिल और अशक्त होजाता है, केवल रक्त सञ्चालन

और श्वास का आना जाना यही जीवन का चिन्ह दिखलाई पडता है। चहरा रक्त शून्य होजाता है, मुख मण्डल और मस्तक की धमनी सब रक्त पूर्ण होजाती हैं। उसास घडघड शब्द के साथ बहुत धीरे धीरे और कष्ट के साथ चलता रहता है, हाथ पैर मुर्दे के समान पडे रहते हैं, नाडी पूर्ण, धीरे और ठहर ठहर कर चलती है। प्राय इस अवस्था से रोगी को आराम नहीं होता, वरन क्रमश दुर्वल होता चला जाता है और ४८ घंटे में मरजाता है।

सन्यास साधारणत अचानक आरम्भ होजाता है किन्तु कभी कभी कुछ लक्षण पहले से भी दिखलाई पडते हैं, जैसे सिर घूमना, ऐसा मालूम होना मानो बडे जोर से नींद आती है, मस्तक में एक प्रकार सामान्य दर्द और बोझ मालूम होना विशेषकर सिर झुकाने में, जीभ का जडता होना इत्यादि। पचाश वर्ष के उपरान्त प्राय यह रोग देखने में आता है, अनाप सनाप पान वा भोजन, अतिरिक्त नेशिली चीजें व्यवहार करना, मानसिक उद्वेग, ववाशीर वा मासिक खून का अचानक बन्द होजाना इत्यादि भी रोग का कारण है।

चिकित्सा।— १। पहिले लक्षणों में नक्सवोमिका ऐकोनाईट, वेलेडोना।

२। रोग प्रकाशित होने पर—ऐकोनाईट, वेलेडोना, ओपियम।

३। परवर्त्ती लक्षण यथा पक्षाघात इत्यादि में—ऐकोनाईट, वेलेडोना, रसटक्स, काकुलस।

मस्तिस्क प्रदाह में जो जो औषधें लिखी हैं, इस रोग में भी वेही सब दी जाती हैं। उस जगह जिन जिन औषधों के लक्षण

लिख चुके हैं उनका फिर लिखना व्यर्थ है। जिन के विषय में नहीं लिखा उनको यहा लिखते हैं।

एकोनाईट ३ शक्ति।—जीभ का पक्षाघात, बात मुहसे साफ न निकलना, किंतु तुतलाकर बात कहना। निगलने में अत्यन्त कष्ट, नाडी पूर्ण और कठिन किंतु सविराम गति नहीं (ठहर ठहर कर नहीं)।

बेलेडोना ३ शक्ति। तद्रा रहना, बेहोशी और बोल बद, हाथ पैरों का पक्षाघात [लकवा] विशेष कर दाहिनी ओर का [यदि बायी ओर का होतो लैकेसिस], मुह एक ओर को टेडा होजाना, निगलने में कष्ट होना अथवा निगल न सकना, देखने, सुघने और बोलने की शक्ति का लोप हो जाना, बेमालूम पेशाब निकल जाना।

आर्निका ६ शक्ति। मस्तक गरम लेकिन शरीर के और और हिस्से ठण्डे, हाथ पैरों का पक्षाघात, विशेष कर बायी ओर को, बेहोशी और घर्राटे के साथ सांस आना जाना (ओपियम की तरह], आखों की पुतली सुकडी हुई और निगाह एक टक, लंबा सास, बडबडाहट के साथ बकना, और बेमालूम मल मूत्र निकल आना।

काकूलस ६ शक्ति। रोग से पहिले सर दर्द और बेसमझी सी मालूम होना, पक्षाघात विशेष कर नीचे की ओर, मस्तक और मुख मण्डल गरम, दोनो पैर ठण्डे।

हायोसायेमस ६ शक्ति। अचानक चिल्ला कर बेहोश होजाना, मुहसे झाग निकलना, गले में ऐसी

सिकुडन होकि निगला नहीं जावे, मूत्राधार और मल द्वार का पक्षाघात, शरीर के सब पट्टों का फडकना।

लैकेसिस १२,३० शक्ति। सन्यास साथही बांये ओर का पक्षाघात और हात पैर मुर्दे के समान ठंडे, मुह एक ओर टेढा [बेलेडोना की तरह], गला छूने से सख्त दर्द होना।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।—रोगसे पहिले सिर घूमना, सिरमें दर्द होना, कान में भन्नाटा होना, अथवा जी मिचलाना, नीचे के जावडे का पक्षाघात और प्राय. ही नीचे के अङ्गों का, नीचे के अग ठण्डे और निर्जीव, जो मनुष्य केवल बैठे बैठे काम करते हैं और किसी प्रकार का शारीरिक परिश्रम नहीं करते हैं, हमेशा घी और मसाले आदि मिले हुए गरम पदार्थ खाते हैं और नशा करते हैं यह औषध उनही के लिये फायदा करती है।

ओपियम ३ शक्ति।—रोगी ऐसी तन्द्रा में बेहोश सा पडा रहे जिस से यह मालूम हो मानो सोरहा है, आंखें अधखुली, आख की पुतली फैली हुई, हाथ पैरों में बांयटे अथवा सब शरीर तख्ते के समान कडा पडजावे, नाडी की गति धीरी।

औषध प्रयोग।—यदि रोग बहुत कठिन हो तो प्रति २०।३० मिनिट के अन्तर से दवा देनी चाहिये। यदि रोगी दवा न निगल सके तो दवा की ८।१० गोली जीम पर रख दे, ऐसा करने से आप से आप गोली पेट में चली जावेंगी। फायदा मालूम पडने पर थोडी थोडी देर में दवा दीजावे।

सहकारी उपाय।—इस रोग से पीडित होते ही रोगी को धीरे धीरे लेजाकर गरम बिस्तर पर लिटावे और माथा कुछ ऊंचा करदे। रोगी को ऐसे मकान में रक्खे जहां खूब ठंडी हवा आती जाती हो। शरीर और गले के सब कपडे खोल डाले जावें। हाथ पैरों को सेकना चाहिये और सिर पर बरफ रखनी चाहिये या बरफ के पानी रक्खी पट्टी बांधनी चाहिये। दवाइयों में ऐकोनाईट, बेलेडोना या ओपियम देनी चाहिये। जिन लोगों की गर्दन छोटी हो, रक्त पूर्णधातु हो, सहज ही में मुह और आंखें लाल होजाती हों विशेषकर यदि वो बैठे रहते हों उनहीं को यह रोग अधिक होता है। ऐसे मनुष्यों को चाहिये कि नशा और गरम मसाले आदि मिले हुए पदार्थ खाना बिलकुल बन्द करदें। उनको चाहिये कि यदि वे मांस मच्छी आदि खाते हों तो वह भी छोड दें, और केवल अन्न ही भोजन करें। प्रतिदिन ठंडे पानी से स्नान करना और खुली हुई हवा में टहलना उनके लिये परम आवश्यक है। उनको प्रात काल स्नान करने में आलस्य कदापि न करना चाहिये।

तापाघात।

(सनस्ट्रोक)

प्राय लोग इस को सर्दी गर्मी कहते हैं। मस्तक में सूर्य की प्रबल गरमी लगने से यह रोग उत्पन्न होता है। इस रोग के बहुत से लक्षण मस्तिष्क प्रदाह के समान हैं। कभी कभी पहिले सर्दी वा कपकपी लगती है। इस के पीछे नाडी पूर्ण और भरी हुई, ज्वर, लपकन, सर दर्द,

चहरा लाल, सिर घूमना और सिर में झनझनाहट, बेहोशी और साधारण कमजोरी आदि लक्षण उपस्थित होते हैं। यह रोग प्रायः गरमी के दिनों मेंही होता हुआ देखा जाता है।

चिकित्सा।

एकोनाईट ३ शक्ति। यदि मस्तक में तेज धूप लगे, तेज प्यास, लाल चहरा, लपकन, सिर दर्द, और अत्यंत स्नायविक उत्तेजना।

बेलेडोना ३,६ शक्ति। तेज सिर दर्द और भारीपन मालूम होना, मानो मस्तक फटा जाता है, सिर झुकाने में वढना, खोपडी में ऐसा मालूम हो मानो मस्तक उस से फट कर निकल पडेगा, झुकने से अथवा बैठे बैठे उठ कर जाने से सिर घूमना, आखों में दर्द, जलन और उजाले से चौंधा लगना।

ब्रायोनिया ६ शक्ति।—मस्तक मानो फट कर दो टुकडे हो जायगा। सामान्य हिलाने से भी वढना, सुबह बहुत खिनखिनाहट, जी मिचलाने के कारण उठ कर बैठा नहीं जाये, सूखा और कडा मल-मानो जला हुआ हो।

ग्लोनाइन ६ शक्ति।—सिर मे बहुत भारी बोझ मालूम होने के साथ दर्द, और मस्तक में लपकन, विशेष कर मस्तक के पीछे की ओर, अचानक ज्ञान शून्य होकर बेहोश होजाना।

हेलीबोरस ६ शक्ति।—देह का उत्ताप कम होने

पर भी तन्द्रादोष और सर दर्द रहता।

विराट्रम विरिड ३ शक्ति।—शरीर की गरमी के साथ लगातार अतिसार।

औषध प्रयोग।—अचानक यह रोग उत्पन्न होने पर जब तक आराम न हो लगातार १५।२० मिनट के अन्तर से दवाई देनी चाहिये। कुछ फायदा दीखन पर थोडी देर बाद दवा देनी चाहिये।

सहकारी उपाय।—जो उपाय मस्तक प्रदाह और सन्यास रोग में लिखे हैं यथा सिर पर बरफ की पट्टी बाधना आदि वही इस रोग में भी करना चाहिये। थोडा थोडा ठंडा पानी पीने के लिये दिया जावे।

पक्षाघात।

(पैरेलैसिस)

शरीर के किसी अंग की अनुभव शक्ति अथवा सचालन शक्ति (मालूम करने की और हिलाने की) जाती रहे तो उसको उस अग का पक्षाघात कहते हैं। पक्षाघात प्राय अचानक ही आरभ होजाता है, किंतु कभी कभी पहिले से भी उसके कुछ लक्षण दिखलाई पडने लगते हैं। जैसे सर दर्द अग का अचानक फडकना इत्यादि। यह रोग कभी शरीर के एक ओर, कभी सिर्फ नीचे के भाग में ही होता है। मस्तिष्क या पृष्ठमज्जा के बिगडने ही से पक्षाघात होता है। जिस अग में पक्षाघात होता है क्रमश. वही अग कोमल और पतला पडजाता है।

कभी २ ऐसा भी होता है कि सपूर्ण पक्षाघात न होकर सिर्फ हाथ पैर कापने ही लगते हैं।

चिकित्सा।

१। शरीर के एक ओर का पक्षाघात—वैराईटा-कार्ब, नक्सवोमिका, काकुलस, आर्निका, [विशेष कर बायीं ओर का] ऐकोनाईट।

२। शरीर के नीचे के अंग का पक्षाघात—काकुलस, कालीब्रोमेटम, अर्जेन्टो-नाईट्रिक, फासफोरस, प्लम्बम, रस्टक्स, कालोफिलम्।

३। बच्चों को पक्षाघात—जेलसीमिनम, वेलेडोना डलकामारा, प्लम्बम्।

४। मुहका पक्षाघात।—ऐकोनाईट अथवा एकोनाईट और जेलसीमीनम पर्य्यायक्रम से [नये रोग में], वैराईटा-कार्ब, कास्टिकम [मुह को सर्दी लगने से], बेलेडोना, ग्राफाईटिस।

५। आख के पलकों का पक्षाघात—जेलसीमिनम, स्पाईजीलिया, वेलेडोना, स्ट्रामोनियम।

६। उगलियों का पक्षाघात—रस्टक्स, आर्निका।

७। साधारण पक्षाघात—फासफोरस, वैराईटा-कार्ब, काकुलस, कोनियम, वेलेडोना, प्लम्बम्, अर्जेन्टनाईट्रिक जेलसीमिनम।

८। हिष्टिरिया के कारण पक्षाघात—इग्नेशिया [भयके कारण] हायोसायेमस, वेलेडोना, काकुलस।

९। बात के कारण पक्षाघात—रस्टक्स, ऐकोनाईट, [तरुणावस्था में] आर्निका, सल्फर [पुराना रोग में]

वेलेडोना ६ शक्ति।—मस्तक में रक्ताधिक्य,

मुह का पक्षाघात, मुह के एक ओर का पक्षाघात, दूसरी ओर बांयठे, मूत्राधार का पक्षाघात, अपने आप पेशाव निकल जाना।

कास्टिकम ६, १२ शक्ति।—मुखमंडल, जीभ, अथवा शरीर के एक ओर का पक्षाघात। खाज अथवा और किसी प्रकार के उद्भेद(फुन्सि)बैठजाने से यदि पक्षाघात होतो यह दवा देनी चाहिये।

डल्कामारा ६ शक्ति।—सर्दी लगने से और फुन्सि बैठ जानेसे यदि रोग होकर हाथ पैर और जीभ आदिका पक्षाघात, जिस हाथ में पक्षाघात हो वह वरफ के समान ठण्डा।

जेलसीमीनम ६,१२ शक्ति। हिलने की शक्ति न रहना तथापि अनुभव शक्ति का वर्त्तमान, आंख के पलकों का पक्षाघात।

इग्नेशिया ६,३० शक्ति। अत्यन्त मानसिक आवेग और रोगी के पास बैठकर रात्रि जागरण के उपरांत। रोगी के मन मन में अत्यन्त दुःख।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति। सिर घूमना, चहरा और हाथ पैर आदि का आंशिक [थोडे अंशका] पक्षाघात। स्मरण शक्ति की दुर्बलता, आंखों के सामने अंधकार और कानों में घंटे से बजना, स्वाभाविक कोष्ठबद्धता की प्रकृति, शराब पीने वाला और जो सर्वदा गरम मसाले आदि खाता हो।

औषध प्रयोग। नयी हालत में २।३ घंटेके अतर से औषधि सेवन करनी चाहिये। रोग पुराना पडजाने पर एक मात्रा रोज के हिसाव से एक सप्ताह तक दवा खानी चाहिये। इसके उपरात कुछ दिन वद रक्खे, यदि इस से कुछ फायदा दिखलाई न पडे तो और कोई औषध देनी चाहिये।

मूर्च्छा।

[फेन्टिग]

अनेक कारणों से मूर्च्छा हो जाती है। गिरने से, चोट लगने से, असह्य कष्ट और शोक से, अत्यन्त रक्त स्राव, बहुत लोगों से भरे हुए स्थान में जहां कि हवा बिगड गई हो। बहुत से जिनको स्नायविक दुर्बलता होती है कष्ट कर दृश्य यथा बकरा मारना या फोडे में चीरा लगाना आदि देख कर मूर्च्छित होजाते हैं। आंखोंकी पुतली, बगल में हाथ रखकर देखने से गरमाई मालूम पडना, छाती पर कान लगा कर सुनने से दिलकी धडकन सुनाई पडना. मुहके पास साफ काच रखने से उस पर भाप जमना और नाकके पास रुई लगाने से उसका धीरे धीरे हिलना आदि सामान्य लक्षणों से मूर्च्छा का होना न होना निश्चय किया जासक्ता है।

मूर्च्छित मनुष्य को खुले हुए स्थान में लेजावे जहां कोई नहीं, इसके उपरांत छाती, शरीर गला और कमर आदि सब स्थानों के कपडे ढील कर दे या खोलडाले, और सिर नीचा करके सुलावे। आख, छाती और मस्तक

म ठंडे पानी के छींटे लगाने चाहिये और कपूर का अर्क सुंघाना चाहिये।

जब रोग का कारण मालूम होजावे तब नीचे लिखी हुई औषधों में जो उचित समझ में आवें दी जानी चाहिये।

यदि डर लगकर मूर्च्छा आई होतो लक्षणों के अनुसार एकोनाईट वा ओपियम ६, ३० शक्ति।

गिरजाने से अथवा किसी, तरह चोट लगने से मूर्च्छा आई होतो आर्निका ६ शक्ति।

यदि रक्त स्राव अथवा और किसी प्रकार के पदार्थ के शरीर से निकल जाने के कारण मूर्च्छा आगई होतो चायना ६ शक्ति।

क्रोध अथवा शोक दुःख इत्यादि के कारण से यदि मूर्च्छा आगई हो तो कैमोमिला वा इग्नेशिया १२,३० शक्ति।

यदि किसी स्थान में असह्य दर्द होनेके कारण मूर्च्छा हो तो एकोनाईट ६ शक्ति, काकुलस वा कैमोमिला १२ शक्ति।

यदि सामान्य दर्द के कारण ही मूर्च्छा हो तो हीपर-सलफर ३० शक्ति।

मूर्च्छा होने के पहिले यदि सिर घूमता हो तो कैमोमिला १२ वा हीपर ३० शक्ति।

औषध प्रयोग ॥——रोग की अवस्था के अनुसार जब तक आराम न मालूम हो १५। २०। ३० मिनट के अंतर से उचित विचार कर एक एक मात्रा औषध देनी चाहिये।

जलातंक।
(हाईड्रोफोबिया)

निर्व्वाचन।— पागल जानवर के काटने यह साघातिक रोग उत्पन्न होता है। इस में पट्ठों का आक्षेप [वांयठे], वकना, अत्यत जल से डरना आदि लक्षण उपस्थित होते हैं।

काटने के वाद ही रोग के किसी प्रकार के लक्षण नहीं दिखलाई पडते। साधारण ३० ४० दिन से लेकर कई वरस तक इस का असर छुपा हुआ शरीर के भीतर रहता है। हमारे देश में ऐसी कहावत है कि १८ दिन १८ महीने यहा तक कि १८ वरस के उपरान्त भी रोग प्रकाशित होता है।

कारण।—इस रोग के विष और असेली स्वभाव का अभीतक पता नहीं लगा है। किन्तु पागल जानवर के काटने से अर्थात् जलातक रोगग्रसित जानवर की लार में इस का विष रहना और रक्त के साथ मिलकर यह रोग उत्पन्न करता है।

लक्षण। जिन को थोडे ही दिन में रोग प्रकाशित होता है उनको ५। ६ सप्ताह के भीतर शरीर अस्वस्थ मालूम होने लगता है। काटने के स्थान में झनझनाहट, ओर सुई चुभोने के समान दर्द मालूम होने लगता है। घाव सूखता नहीं है वल्कि सूज आता है और उस में प्रदाह होने लगती है।

अकसर देखा जाता है कि घाव अच्छा होजाने के उपरांत रोग उपस्थित होता है । रोगी की जीभ के नीचे छाले दिखलाई पडते हैं।

सब शरीर में बेचैनी और मनमें उदासी यही रोग का पहिला लक्षण है। रोगी उदास और चितायुक्त हो जाता है। अच्छी तरह निद्रा नहीं आती, क्लेश और भय देने वाले बुरे स्वप्न दिखलाई पडते हैं। इस के उपरांत गल नली में खरावी मालुम होती है, जल अथवा और कोई पतली चीजें पीने में ऐसा मालम होता है मानों दम अटकता है । कोई पतली चीजें पीने में वायठे आने लगते हैं । स्वर नली और गल नली के वायठे से ही इस रोग की उत्पत्ति है।

रोगी का गला प्यास के मारे सुखा जाता है, तथापि कुछ पेया नहीं जाता, यहातक कि किसी पतली चीज का ध्यान भी आने से वायठे आने लगते है।

रोग बढने के साथ वकना, वौरान वा कुछ कुछ मति भ्रम भी दिखलाई पडने लगता है । सब शरीर में वायठे आने लगते हैं । रोगी यहा तक स्नायविक [झिझकीला] हो जाता है कि शरीर में हवा लगने, शब्द होने, रोशनी आदि से भी वायठे आने लगते हैं । वहुत सी लार निकलती है और मुह से वहती रहती है । नाडी की गति क्षीण और तेज, शरीर का उत्ताप १०२।१०३ तक हो जाता है । प्रवल आक्षेप के कारण श्वास रुकने से वा कमजोरी से क्रमश: रोगी की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा :—

लक्षणों के अनुसार वेलेडोना, कैन्थेरिस, हाइड्रोफोविनम्,

हायोसायेमस, लैकेलिस, स्ट्रामोनियम, आदि व्यवहृत होते हैं ।

वेलेडोना ३,६ शक्ति ।—लपकन के साथ सिर दर्द, चहरा लाल, मुह टेढा, तकियेसे सिर रगडना, पानी निगलतेमें कष्ट होना, हाथ पैरो के वायठे, कुत्ते आदि जानवरों की घात वकना, काटने की इच्छा करना और थूक देना इत्यादि ।

केन्थेरिस ६ शक्ति ।—क्रोध, और वायटे, जल देखने से रोग बढना । रमण (मैथुन) करने की बहुत इच्छा, और इन्द्रिय के उठने में कष्ट होता है ।

हाइड्रोफोबिन ३० शक्ति ।—सिर दर्द, हाथ पैर सुकडना, चैतन्यताकी अधिकाई, मुह में लार भरी हुई, और पानी पीने की अनिच्छा इत्यादि ।

हायोसायेमस ६,३० शक्ति ।— गलनली के पीछे के भाग में कष्ट, खखार के साथ कफ निकलना, प्यास, उत्कंठा, चमकना, वायठे, काटने का भय ।

स्ट्रामोनियम ३,३० शक्ति । अकेले बैठने की इच्छा, दांतोंसे अपना वा दूसरे का शरीर काटने की इच्छा करना, क्रोध और चिल्लाहट के साथ दूसरे को काटने के लिये तयार होना, डर लगना, टकटकी लगाकर देखना, आंखों का पुतली फैलजाना, पतली चीज पीने की इच्छा न करना, सब शरीर जकड सी जाना, उज्ज्वल पदार्थ देखनसे वकना, और वायटें आदि बढना ।

सहकारी उपाय।—जिस जगह काट गया हो उस स्थान में फौरन ही चीरा लगा देना, अच्छी तरह धोना, या किसी जला देनेवाली चीजें से जलादेनी चाहिये। प्राय सर्प के काटने में जो उपाय किया जाता है इस में भी वेही है।

धनुष्टंकार।

(टेटेनस)

धनुष्टंकार दो प्रकार का होता है। एक प्रकार का धनुष्टंकार खून बिगडने से अथवा धातु की अवस्था खराब होने से होता है। इस प्रकार का रोग अधिक सांघातिक नहीं होता। स्नायु विधान की दुर्बलता, ऋतु स्राव अथवा शरीर के और किसी स्वाभाविक स्राव के बंद होने से, अधिक शारीरिक या मानसिक परिश्रम करने से और मस्तिष्क रोग होने के कारण यह रोग उत्पन्न होता है।

दूसरी प्रकार का धनुष्टंकार चोट लगने से अथवा कहीं थोडा सा कट जाने से उत्पन्न होता है। इस को आभिघातिक धनुष्टंकार कहते हैं। इस प्रकार का धनुष्टंकार ही अधिक सांघातिक होता है। शरीर के किसी अंग में चोट लगने से उस अंग की स्नायु कट जाने के कारण जो उत्तेजना होती है वही इस रोग का कारण है। सामान्य काम से हाथ पैर कट जाने से, कांटा चुभ जाने से, दांत उखाड़ने से, और कान छिदाने आदि सामान्य सामान्य कारणों से भी धनुष्टंकार रोग होजाता है। चोट लगने के बाद साधारणतः चार दिन से लेकर ९ दिन के भीतर ही रोग होजाता है। यह धनुष्टंकार सांघातिक होता है। चोट लगने के बाद ९ दिन निकल जाने

पर और रोग उपस्थित होने के १४ दिन बाद फिर इतना भय नहीं रहता। बच्चा पैदा होने के समय जो धनुष्टंकार होता है वही सब से असाध्य है।

लक्षण।—जब रोग आरम्भ होता है तो गरदन और जावडे कडे पडजाता है और उन में दर्द होने लगता है। जीभ बाहर निकलने और बात कहने में कष्ट मालूम पडता है। क्रमश: जावडे अटक जाते हैं, और निगलने में कष्ट होने लगता है। जैसे जैसे रोग बढने लगता है बांयठे भी शुरू होजाते हैं। रोगी ठहर ठहर कर ज़ोर ज़ोर से हाथ पैर खींचने लगता है और बडा कष्ट पाता है। यदि रोग साघातिक हो तो बायठे जल्दी जल्दी और अधिक आने लगते हैं, दाती बिलकुल बद होजाती है, श्वास रुक जाता है और अन्तमें या तो कमजोरी से या श्वास बद होकर मृत्यु उपस्थित होजाती है।

चिकित्सा:—

एकोनाईट १,३ शक्ति।—नाडी कठिन, भरी हुई और तेज, भय और जी घबराना, चहरा एक बार लाल और एक बार फीका होना, ठडे पसीने से शरीर भर जाना।

आर्निका ६ शक्ति।—यदि चोट लगने से रोग होने की आशङ्का हो और सब शरीर में दर्द होतो यह दवा देनी चाहिये।

बेलडोना १,३ शक्ति। गले में सिकुडन मालूम होना, दाती बद होना, मुह टेढा पडजाना और झाग

निकलना, पानी पीते ही वायठे आने लगना, पीठ कडी पडजाना।

हायोसायेमस ६ शक्ति।—शरीर पीछे की ओर धनुष की तरह टढा हो, रोगी का चहरा भयकर विगडा हुआ, मुंहसे फाग निकलना, गले में सिकुडन मालूम होना, इसी से बिलकुल कुछ भी विशेष कर पानी न निगल-सकना, भयानक हाथ पैर पटकना, सध्या समय और खाने पीने के बाद बढना।

इग्नेशिया ६ शक्ति।—गरदन और पीठ कडी और उस में दर्द, सर्वदा उवासी लेने की इच्छा किंतु मुह न खुलना, गले के भीतर मानो एक गाठसी अटकी रह। रोगी के मन मन में दुःख रहना, शरीर छूते ही अथवा हिलने झुलने से ही रोग बढना।

नक्सवोमिका १,३ शक्ति।—जब वायठे बढने लगे और देह पीछे की ओर टढा हो जावे, निगलने में कष्ट हो, गले की नली बद सी मालूम हो, पाकाशय में वायठे आने वाला दर्द, अत्यत कोष्ठबद्धता, रोगी बहुत चिड-चिडा, जो लोग अमिताचारी अर्थात खाने पीने सोने बैठने आदि सब कामों मे नियम पालन नहीं करते उनके लिये ही यह अधिक उपयोगी है।

इस के सिवाय कुप्रम, सिक्यूटा, कैमोमिला, सिना, ओपियम, वेकोसिस, लारोसिरेसास, स्ट्रामोनियम आदि औषधों की भी लक्षणों के अनुसार आवश्यकता हो सकी हैं॥

औषधप्रयोग।—रोग आरम्भ होते ही तजवीज

की हुई औषध आधे अथवा एक घंटे अंतर से, या अवस्था के अनुसार १५,२० मिनट के अंतर से भी दीजासक्ती है। आराम मालूम पडने से दवा की मात्रा कम करनी चाहिये।

सहकारी उपाय।—यह रोग कठिन होता है इस लिये बहुत होशयार चिकित्सक से इलाज कराना चाहिये। कील चुभकर, कांच या और किसी चीज से कट जाने पर विशेष कर पैर के तलवे में घाव को जल्दी सूखने न देना चाहिये। यदि इस प्रकार का घाव होतो कलेंडुला लोशन [एक आउन्स पानी में २० बूंद मिलाकर] से उसी समय धोकर इसी लोशन की पट्टी बांध दी जावे। यदि ऐसा भ्रम हो कि कांटा, कांच का टुकडा, लकडी या हाड की फास यदि कुछ भीतर घावमें रह गई हो तो उसको उसी समय निकाल डालना चाहिये। रोग के समय मेरुदंड [पीठ की हड्डी] के ऊपर खूब बरफ रखने से शीघ्र फल दिखलाई पडताहै।

मृगी रोग।

[एपीलेप्सी]

इस रोग के प्रधान लक्षण यह है कि मनुष्य अचानक बेहोश होकर गिरजाता है और वायठे आने लगते हैं। कभी कभी रोग से पहिले सिरदर्द, और सिर घूमना, कानों में आवाज होना, मस्तक के भीतर भारापन मालूम पडना, चहरा रक्त शून्य, हाथ की बडी उंगली हथेली की ओर खिचना इत्यादि लक्षण प्रगट होते हैं। किन्तु बहुधा रोग के कोई

पूर्व लक्षण दिखलाई नहीं देकर रोगी अचानक मूर्च्छित हो जाता है, रोगी को तब होश नहीं रहता। चहरा और आंखें बिगड़जाती हैं, दांत किडकिडाने लगते हैं, मुंहसे झाग निकलते हैं, हाथ पैर खिंचने लगते हैं, श्वास कष्ट होता है और कभी कभी मलमूत्र भी अपने आप निकल जाता है।

प्रायः रोग का आक्रमण ५ मिनट से लेकर २० मिनट तक रहता है अथवा कभी इस से अधिक समय भी लग-जाता है। रोग का आक्रमण दूर होने पर रोगी को नींद आती है और जब जगती है तो ठीक सुस्थ मनुष्य की तरह उठबैठता है। किसी किसी को कई दिन तक कमजोरी रहती है, शरीर गिरा पडता है और सिर में दर्द रहता है। इस रोग से प्रायः मृत्यु होते नहीं देखी जाती किन्तु रोग के वारंवार आक्रमण करने से रोगी की मानसिक वृत्ति अत्यंत दुर्बल अथवा विनष्ट होजाती है।

मृगी एक धातुगत रोग है। ऐसा देखने में आता है कि यदि यह रोग पिता को हो तो पुत्र को भी होजाता है। इस रोग के उद्दीपक कारणों में निम्न लिखित प्रधान हैं,— यथा प्रबल मानसिक आवेग, भय, दुःख क्रोध आदि, अत्यंत मानसिक परिश्रम, अत्यंत स्त्री सहवास वा हस्त मैथुन, शरीर को फुन्सी बैठ जाना और नशीली चीजों का सेवन करना।

चिकित्सा।— जिस समय रोग आक्रमण करे ऊपर नीचे के दांतों के बीच में एक टुकडा नरम लकडी या एक कार्क लगादेना चाहिये जिस से दांतों के बीच में आकर जीभ न कट जावे।

यदि रोगी का चहरा और आंखें लाल हों, मस्तक गरम हो, मस्तक पीछे की ओर झुक पडे, और वांयटे के साथ कांपने लगे तो बेलेडोना ३, ६ शक्ति देना चाहिये। यदि रोगी दवा न पीसके तो एक कपडा दवा में भिजोकर थोडी थोडी देर में नाक के पास रखना चाहिये। यदि रोगी तंद्रा में हो, आंखें खुली रहें, घड घड करके श्वास आवे जाय, इत्यादि लक्षण हों तो ओपियम ३ शक्ति।

पुराने रोग में—कैलकेरिया-कार्ब, सल्फर, साईलेशिया।
कीडों के कारण रोग हो—सिना, सान्टोनाइन, टियुक्रियम।
हस्त मैथुन वा अत्यंत स्त्री सहवास के कारण रोग हो—फासफोरस, ऐसिड फास्फोरिक, चायना, फैरम।

औषध प्रयोग।— आक्रमण के समय जल्दी जल्दी प्रयोग करना आवश्यक है किन्तु वैसे धातुगत दोष दूर करने के लिये सप्ताह में २।४ दिन २।१ मात्रा औषध देना यथेष्ट है। इस रोग की धातुगत चिकित्सा ही प्रधान चिकित्सा है। जिन औषधों की शक्ति नहीं लिखी गई, उन की ३० शक्ति ही साधारणत विशेष फायदा करती है।

सहकारी उपाय।—इस रोग की चिकित्सा कठिन है। इस की चिकित्सा आरम्भ करनेसे पहिले जहा तक होसके रोग का कारण जानना आवश्यकीय है, पीछे इलाज करने की चेष्टा करनी चाहिये। इसी लिये इस रोग की चिकित्सा में होशियार चिकित्सक की आवश्यकता है।

शारीरिक नियमों का पालन करना, उचित व्यायाम, (कसरत) जल वायु बदलना, नदी के ठंडे पानी में स्नान

करना, मानसिक चिन्ता और परिश्रम छोड़ देना अत्यन्त आवश्यकीय है ।

मूर्च्छागत वायु ।

(हिस्टीरिया)

लक्षण ।—यह रोग प्रायः स्त्रियों को ही होते हुए देखा जाता है । रोगी चिल्लाता हुआ अथवा बकता हुआ बेहोश होजाता है—बाल नोंचता है, हाथ पैर खैंचता है और पटकता है । मुंह से झाग निकलते हैं और बोल बंद होजाता है । कभी कभी मूर्च्छा होते होते बेहोश होजाता है ।

चिकित्सा ।—

कैम्फर ।— मूर्च्छा के समय यह औषध अच्छी है, विशेषकर यदि शरीर में सर्दी मालूम हो । दो तीन बूंद चीनी के साथ अथवा २ बड़ी गोली १५ । २० मिनट के अंतर से मूर्च्छा के समय देनी चाहिये ।

मस्कस ।—मूर्च्छा के समय कैम्फर के बदले में यह भी दीजाती है । इस को खिलाते भी हैं और रोगी की नाक के पास रखकर सुंघाते भी हैं ।

इग्नेशिया ६,३० शक्ति ।—ऐसा मालुम हो मानों गले में कुछ निकला पड़ता है, श्वास बंद और गला रुका हुआ मालूम होना, निगलने में कष्ट, घबराहट, दुःखी और उदास होना ।

नक्सवोमिका ६, ३० शक्ति।—रात मे तीन बजे के उपरांत नीद न आना, किंतु ५ बजे के उपरांत झुपकी लगना, कोष्ठबद्धता, कडवी डकार, पेट फूला हुआ, हिचकी, सिर में दर्द, पाकस्थली में दर्द, ऋतु की गड वड। इस औषध को कुछ दिन सेवन करा कर फिर इसके बदले सल्फर देना चाहिये।

पल्साटिला ६,३० शक्ति—यदि जरायु सम्बन्धी कुछ गडवड हो और ऋतु बंद होकर पीडा होतो यह औषध फायदा करती है। उदरामय, प्यास न होना, श्लेष्मा की उल्टी, जरायु में दर्द। इस के उपरांत सेवाइना अथवा साईलेशिया दिया जाता है। जो स्त्रियां मुलायम तबियत और जल्द रोनेवाली होती है तथा मोटी होती हैं यह उनको अधिक फायदा करती है।

हमेशा चिंतित रहना—इग्नेशिया, नक्सवोमिका। उदास—पलसाटिला। श्वास कष्ट—कैलकैरिया, इग्नेशिया। अनिद्रा—जेलसीमीनम, नक्स, इग्नेशिया। वायठे के लिये—सिक्यूटा इग्नेशिया। सिरदर्द—इग्नेशिया प्लाटिना। ऋतु और जरायु के कारण—काकूलस, इग्नेशिया, पलसाटिला, प्लाटिना, सीपिया।

सहकारी उपाय।—ऐसे किसी काम में रोगी की तबियत लगाये रखना चाहिये। जिस से उस की तबियत बदलती रहे। आलस्य इस रोग के लिये बिलकुल वर्जित है। कभी कभी देशाटन करना और इसी प्रकार तबियत का बदलाना बहुत जरूरी है। सब तरह की [पश अशारन] विलासिता, उत्तेजक भोजन,

ऐसी पुस्तक पढ़ना जिससे मनमें विकार उत्पन्न हो, दिल्लगी और गपशप उड़ाना बिलकुल निषिद्ध है। साधारण स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये। ठंडे पानी से स्नान, नियमित परिश्रम, स्वच्छ वायु सेवन इत्यादि जितने स्वास्थ्य सम्बन्धीय नियम हैं सबका पालन करना बहुत ही जरूरी है।

मूर्च्छा के समय डरने का कोई कारण नहीं है। आंख, मुंह और छाती पर ठंडे पानी के छींटे लगाने चाहिये, और ऊपर लिखी हुई दवाइयां प्रयोग करनी चाहियें। रोगी के कहने पर कुछ ध्यान न देकर यथोचित सेवा शुश्रुषा करना उचित है।

हमारे देश में हिस्टिरिया को भ्रम से भूत चुडेल आसेब आदि समझकर चिकित्सा करने लगते हैं। यह सब केवल मात्र भ्रम है।

शिरःपीडा।

(हेडेक)

यह रोग इतना साधारण है कि इसका विस्तार पूर्वक वर्णन करना व्यर्थ है। यह प्राय किसी धातुगत रोग का उपसर्ग अथवा लक्षण मात्र होता है। सर्दी अधिक होने से सर्दी के कारण सिर दर्द, पाकाशय के दोष के कारण पाकाशयिक शिर पीडा, स्त्रियों के रज स्राव में गड़बड़ होने से जो रोग होतो रजो दोष जनित शिर-पीडा, वायु रोग अथवा प्रबलता होने के कारण जो दर्द होतो स्नायविक शिर पीडा, वात रोग होने के कारण होतो वातज शिर पीडा, उलटियों के साथ होने से न्यमन शिर पीडा इत्यादि जुदी जुदी अवस्था और लक्षणो

निकलना, संध्या और रात्रि को सूखा हुआ, मुह सूखा हुआ और अत्यंत प्यास।

२४, रक्ताधिक्य के कारण शिरःपीडा।

लक्षण। माथा रक्तपूर्ण और भारी मालूम पडना, सिर घूमना, विशेष कर माथा हिलाने से। माथेके भीतर लपकन, माथे में उत्ताप, गले की धमनी का जोर से चलना, सिर हिलाने से और झुकाने से दर्द बढना।

चिकित्सा।—

एकोनाईट ३, ६ शक्ति।—मुह लाल और सूजा हुआ, बेहोश कर देनेवाला दर्द।

बेलेडोना ३, ६ शक्ति।—रोग कठिन मालूम पडने पर एकोनाईट के साथ पर्यायक्रम से दिया जाता है। लपकन, माथा रक्तपूर्ण, सामान्य शब्द, हिलने झुलने वा उजाले से कष्ट मालूम पडना।

ब्रायोनिया ६ शक्ति।— माथा झुकाने से फट जाने के समान दर्द, अधिक लपकन, पैदल चलने से विशेष कर आंख खोलने से और हिलने से दर्द बढना।

जेलसीमिनम ६, १२ शक्ति।—माथे में भारापन मालूम होना, विशेष कर गरदन और माथे के पीछे के ओर, दर्द कन्धों तक फैलना। ऊंचे तकिये का सहारा लेकर बैठे रहने से दर्द कम होना। आंखों के आगे आंधेरा आना, सिर घूमना, आधी अज्ञानता, और सब शरीर दुबला और असुख मालुम होना।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।—सिर दर्द, मांथे पर दबाव मालूम पड़ना मानों फट जावेगा, अथवा आंखों के ऊपर ही भयानक दर्द, माथा झुकाने से तथा खांसने से दर्द बढ़ना, पित्त और अम्ल उलटी होना, अधिक नशा करना, घर में बैठ कर काम करना और मानसिक परिश्रम के कारण दर्द, सुबह और खुली हुई जगह में बढ़ना।

ओपियम ३ शक्ति।—अचैतन्य लक्षण उपस्थित होने से।

सहकारी उपाय। सब तरह की उत्तेजनाओं को छोड़ देना चाहिये। आहारादि के विषय में बहुत होशियारी की आवश्यकता है। मांस खाना और शराब पीना अनुचित है।

३ य, कोष्ठबद्ध अथवा अजीर्णके कारण सिरदर्द।

लक्षण।—जीभ मैली, मुहका बुरा स्वाद अथवा वेस्वाद के समान। भूख न लगना, जी मिचलाना या उलटी होना, दर्द के ही साथ उलटियों का बढ़ना।

चिकित्सा।—

ब्रायोनिया ६ शक्ति।—यदि मल बहुत कड़ा हो और निकलने में, कष्ट मालूम पड़े।

इपीका ६ शक्ति।—अधिक जी मिचलाना और उलटी होने के साथ सिर दर्द में यह अच्छी औषध है।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति ।—अत्यन्त कोष्ठबद्ध, दस्त जाने पर भी दस्त न उतरना, अथवा अधिक सिर दर्द करना, काफी तम्बाकू अथवा कोई नशीली चीज खाने से सिर दर्द हो।

ओपियम ३ शक्ति ।—यदि बहुत दिन से दस्त बद हो और दस्त की बिलकुल हाजत न हो, माथे में भारापन।

पल्साटिला ३ शक्ति । अजीर्ण के साथ सिर दर्द का कोई सबब हो, तेल मिली हुई अथवा घीमें पकी हुई कोई चीच खाने से दर्द हो, दर्द तीसरे पहर और सध्या समय बढना, प्रात काल मुहका स्वाद बुरा रहना।

सहकारी उपाय । अजीर्ण के कारण यदि सिर में दर्द हो तो सबसे पहिले भोजन का नियम करना चाहिये। बहुत तेल मिली हुई और देर से पचने वाली कोई चीज न खानी चाहिये। हलका भोजन करना चाहिये। खुली हवा में अधिक व्यायाम करना अच्छा है।

४र्थ, बाहरी कारणों से सिर दर्द।

चिकित्सा ।—

आर्निका ६,३० शक्ति ।— गिरना, चोट लगना घाव अथवा थकावट होने से।

ब्रायोनिया ६ शक्ति ।—सर्दी वा गरमी लगने से हवा बदलने से अथवा अत्यत गरम होने के कारण।

नक्सवोमिका ६ शक्ति ।—मानसिक परिश्रम,

और घर में बद रहकर बैठे बैठे काम करने से, अधिक दिन रोगी के पास रहकर सेवा शुश्रूषा करने से।

५ म, मानसिक कारण से सिर दर्द ।

चिकित्सा ।—

कैमोमिला १२ शक्ति ।—क्रोध अथवा उत्तेजना के कारण से।

ओपियम ३ शक्ति ।—यदि रोग भय से उत्पन्न हो।

इग्नेशिया ६ शक्ति ।—मानसिक दुःख शोक वा दिल टूट जाने से।

६ष्ठ, स्नायविक सिर दर्द ।

लक्षण ।—इस का प्रधान लक्षण यही है कि यह कभी कभी होता है। दर्द प्राय एक ओर अथवा किसी खास जगह पर ही रहता है। दर्द के स्थान को दाबने से कष्ट होना; उजाला, शब्द और मानसिक उद्वेग असह्य होना, सिर दर्द के साथ साथ प्राय पित्त वा श्लेष्मा की उल्टी होना।

चिकित्सा ।—

बेलेडोना ।—रक्ताधिक्य के कारण सिर दर्द के बयान में देखो।

ब्रायोनिया ६,३० शक्ति ।—चपका मारने के समान दर्द, विशेष का दर्द एक ही ओर हो, चलने से और गरम हवा से बढ़ना, आँखों में इतना दर्द कि छुई न आसकें।

चायना १२,३० शक्ति।—स्त्रियों को ऋतु के समय अत्यत रजःस्राव होने से, अथवा ऋतु अधिक दिन तक ठहरने से अथवा और किसी प्रकार के रक्त स्राव होने से, पुराना उदरामय रहने पर फायदा करता है। पीडा मानसिक परिश्रम से बढना। अत्यत इन्द्रिय सेवन करने के कारण या और कोई इसी प्रकार के दोष से मस्तक के पीछे के ओर दर्द होना।

काफिया ६ शक्ति।— असह्य दर्द, माथे के एक ओर बंधा हुआ सा और ऐसा मालुम होना कि उस में कील छेदी जारही है। आधे कपाल में दर्द, उस के साथ सामान्य उत्तेजना का हल्कप, रात्रि को निद्रा न आना।

जेलसीमीनम १२,३० शक्ति।— आंखों के ऊपर और कपाल में दर्द रहने पर। सिर दर्द के पहिले कुछ भी दिखलाई न पडे, दर्द माथे के पीछे ही अधिक, सब चीजें दो दो दिखलाई पडें, दर्द से कानों में शब्द सुनाई पडना।

इग्नेशिया ३० शक्ति।—सिर में कीलसी चुभना, नाक के बासे में बहुत दर्द, स्थान अथवा अवस्था परिवर्तन करने से कुछ आराम, शयन करने से दर्द कम, साप्ताहिक, पाक्षिक वा मासिक होता हो।

नक्सवोमिका।—रक्ताधिक्य के कारण सिर दर्द देखो।

पलसाटिला ३० शक्ति।—खुली हुई हवा में जाने

से दर्द को आराम मालूम पडना, किंतु घर में रहने से, सोने से अथवा सन्ध्या के समय बढना, ऐसा मालूम होकि सिर फटा जाता है।

सीपिया ३०,२०० शक्ति।— स्त्रियों के विशेष कर जिन को ऋतु सम्बन्धी कोई खराबी हो अधिक फायदा करता है। हूल मारने के समान दर्द, प्रति दिन एक समय दर्द होना, उल्टी वा उबकाई होना।

सैंगुनेरिया १२,३० शक्ति।—दर्द इतना अधिक हो कि सहन न होसके और मस्तक जोर से मिट्टी में दाब रखना पडे। प्रातःकाल दर्द शुरू होना, दिन में बढना, और सन्ध्या समय तक रहना, दर्द दाहिनी ओर अधिक, सोने से दर्द कम होना।

स्पाईजीलिया ६ शक्ति।—असह्य दर्द आंखों तक फैला हुआ, सिर नीचा करने से दर्द बढना, सूर्य के साथ दर्द बढना और कम होना, चिंता, शब्द आदि से बढना और दाबने से कम होना।

साईलेशिया १२,३० शक्ति।—स्नायविक परिश्रम के कारण सिर दर्द, गरदन से शुरू हो सिर के ऊपर पहुंचे, पीछे आंख के ऊपर आवे, सेकने से आराम किंतु दाबने से नहीं, बाल उडे जाना।

औषध प्रयोग।—नये सिर दर्द में तजवीज की हुई दवा की एक मात्रा २,३,४ घंटे के अंतर से और रोग पुराना पडजाने पर प्रति २,१ मात्रा देनी चाहिये।

सहकारी उपाय। स्नायविक सिर दर्द में खाने पीने की नियम, ठंडे पानी से स्नान करना, अवस्थानुसार घोडे पर बैठना चाहिये। यह सिर दर्द कभी कभी उपस्थित होता है। यहही सबसे दुःसाध्य है।

सिरघूमना।

(वर्टीगो)

इस रोग में ऐसा मालुम पडता है कि चारों ओर की सब चीजें घूमती हैं अथवा रोगी स्वय घूमता है। पाकस्थली के रोग अथवा दोष के कारण ही प्रायः यह रोग होता है किन्तु मस्तकके रक्ताधिक्य के कारण से भी यह रोग उत्पन्न होसक्ता है।

सिर घूमने के कारणों में पाकाशयका दोष, अत्यंत इन्द्रिय सेवा, नशा करना, रात्रि जागरण, मस्तक में चोट लगना अथवा गिरना प्रधान है। मस्तिष्क में अधिक रक्त सचय होने से जिस प्रकार सिर घूमना शुरू होसक्ता है ठीक उसी प्रकार माथे में रक्त कम होनेसे भी सिरघूमने का रोग उत्पन्न हो सक्ता है। इस लिये सिर घूमने के रोग का कारण निश्चयकर, पीछे उसके अनुसार चिकित्सा आरम्भ की जावे तो शीघ्रही फायदा दिखलाई पडता है।

१ म, मस्तिष्कमें रक्त अधिक होने के कारण।

लक्षण। मस्तिष्क में रक्ताधिक्य देखो।

चिकित्सा।

एकोनाईट ३,६ शक्ति।— बेलेडोना के साथ पर्याय

म से व्यवहार करना चाहिये, विशेषकर यदि शय्या से उठते समय अथवा सिर नीचे से ऊपर को उठाते समय में तथा चहरा लाल रंग का रहता हो।

बेलेडोना३,६ शक्ति।—ऐकोनाईट देखो। यदि बेहोशी, रावी की तरह गिरे पडना, मस्तक में रक्त पूर्णता, और यानक दवा मालूम हो।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।—यदि खाने के समय, ाने के बाद खुली हुई हवा में टहलते समय मूर्च्छा के समान ालुम होना, सिर में भन् भन् होना और चक्कर आकर गिर पडने के मान मालुम होतो यह दवा फायदा करती है।

चक्कर आकर गिर पडना—बेलेडोना, पलसाटिला स्टफस।

सहकारी उपाय। मस्तक में रक्ताधिक्य देखो। तेदिन प्रातःकाल ठंडे पानी से स्नान करना और स्वच्छ ा में व्यायाम करना आवश्यक है।

२ य, अपाक (अजीर्ण) के कारण।

लक्षण।—सिर घूमना, निद्रालुता, विशेष करके भोजन के रांत होने सिर में भारापन, सिर दर्द, जीभ मैली, पेट फूला ा, भूख न लगना, उल्टी होना।

चिकित्सा।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।—ऊपर देखो, बहुत ा अथवा नशा करने से उत्पन्न।

पलसाटिला ६ शक्ति ।—अधिक घीमें पके पकवान के खाने से रोग पैदा हो । खुली हवा में आराम मालूम पड़ना, इस के साथ ही मिचलाना अथवा नशे की सी अवस्था में रहना ।

सहकारी उपाय ।—पेट में यदि गड़बड़ हो तो वास कराना चाहिये और पीछे हलका पथ्य देना चाहि पीने के लिये ठण्डा पानी दिया जावे ।

३य, दुर्बलता के कारण ।

चिकित्सा ।—चायना अच्छी औषध है।

प्रातःकाल के समय सिर में दर्द होना—कैलकेरि नक्सवोमिका, रस्टक्स, फासफोरस ।

सन्ध्या के समय—बेलडोना, पलसाटिला, सीपि लैकेसिस ।

सोते समय—पलसाटिला, आर्सेनिक ।

उठने के समय—नक्सवोमिका, रस्टक्स, लैकेसिस ।

चलने फिरने के समय—पलसाटिला, लाइकोपोडिय फासफोरस, केलकेरिया ।

सिर हिलाने के समय—केलकेरिया, ब्राइयोनिया, सीपिय

खाली पेट में—फासफोरस, केलकेरिया, चायना ।

भोजन के उपरान्त—केलकेरिया, नक्स, फासफोरस ।

स्नान के बाद—फासफारस, सीपिया, नक्स ।

हिलाने से आराम मालूम हो—रस्टक्स, पेलसाटिला ।

विश्राम करने से आराम मालूम हो—नक्स, बेलेडोना ।

उलटी के साथ ही सिर घुमना—नक्स, इपीका, आर्सेनि पलसाटिला ।

सामने चक्कर खाकर गिरपड़ना—ग्राफाइटिस, सिकुटा, स्पाईजीलिया।

पीछे की ओर—रस्टक्स, नक्स, थाईयोनिया।

बगल में—साईलेशिया, सल्फर, इपीका।

औषध प्रयोग।—नयी और पुरानी अवस्था के अनुसार जल्दी जल्दी अथवा ठहर ठहर कर औषध देना चाहिये। नये रोग में २। ३ घण्टे के अन्तर से और पुराने रोगों को दिन में २। ३ बार औषध देना चाहिये।

सहकारी उपाय।—यदि और कोई रोग न हो तो पुष्टिकारक भोजन कराना चाहिये।

अनिद्रा।

(स्लीप्लेस्नेस्)

अनिद्रा किसी धातुगत रोग का लक्षण मात्र है। यदि रोग अधिक तक स्थायी रहे तो शीघ्र ही अथवा विलम्ब से सब शरीर और मस्तक विकृत होजाता है। भूख कम लगना, पाकाशय में दोष उत्पन्न होना और मन अप्रसन्न रहना आदि लक्षण उपस्थित होजाते हैं। सिर दर्द और वायु की अधिक प्रबलता उपस्थित होजाती है रोगी जागते जागते ही स्वप्न देखा करता है।

चिकित्सा।—

बेलडोना ३, ६ शक्ति।—सोने की अत्यन्त इच्छा होने पर भी नींद न आना। सन्ध्या के समय निद्रालुता [नींद सी आना] किन्तु वास्तव में नींद न आना। मानसिक

उद्वेग, बेचैनी और उत्कण्ठा, एवं डरावने दृश्यों के कारण नींद न आना।

काफिया ३ शक्ति।—यदि मानसिक चिन्ता वा उत्तेजना हो अथवा बहुत दिन किसी रोगी की सेवा शुश्रुषा में रात्रि जागरण करने से रोग उत्पन्न हो। बिना किसी कारण के बच्चों को अनिद्रा रोग।

जेलसीमिनम ६ शक्ति।—साधारण अनिद्रा में दिया जाता है।

इग्नेशिया ६ शक्ति।—काफिया के उपरान्त कभी दिया जाता है, विशेषकर उत्तेजना के उपरान्त अवसाद होने पर अथवा नींद की हालत में बहुत बेचैनी रहने पर। शोक, चिन्ता, उदासी के कारण नींद न आना।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।—अत्यन्त मनोनिवेश, मानसिक चिन्ता, रात्रि जागरण के कारण परिपाक शक्ति का कम होना, अथवा रात में जागकर पढ़ने के कारण रोग होने पर, सुबह के समय नींद आना, रात में ३ बजे तक अच्छी नींद आना, ३ बजे के समय आंख खुलजाना और ५ बजे तक जागते रहना, फिर नींद आना एवं बहुत देर तक सोते रहने पर भी तृप्ति नहीं मालूम पड़ना।

पल्सटिला ६,३० शक्ति।—परिपाक शक्ति में गड़बड़ होने से अथवा रात्रि में बहुत भोजन करने से। किसी तरह नींद न आना और सोने की भी इच्छा न होना।

औषध प्रयोग।—अनिद्रा रोग होने पर अधिक

मात्रा में औषध सेवन करना अच्छा नहीं है। सोने से पहले एक मात्रा औषध और यदि उस से नींद न आवे तो २।३ घण्टे बाद एक मात्रा औषध देना यथेष्ट है।

सहकारी उपाय।—सन्ध्या के समय स्नान अथवा ठण्डे पानी से शरीर पोंछना, सोने के मकान में हवा आने जाने देना, अधिक रात्रि में अधिक आहार न करना, सोने के कुछ घण्टे पहले से ही मन स्थिर और शान्त रखना, प्रात काल उठ बैठना, कठिन शय्या पर शयन करना, यथोचित परिश्रम और कसरत करना परम आवश्यक है। जिनको रात्रिके समय नींद न आती हो उनको ऊंचा तकिया लगाकर नहीं सोना चाहिये। यदि निद्रा न आती हो तो किसी एक विषय पर ध्यान देने से सहज ही निद्रा आजातीहै।

बाल उडजाना।

अनेक कारणों से बाल उड सकते हैं। प्रबल ज्वर और मस्तक में प्रदाह होने के कारण रोग होने पर प्राय बाल गिर जाते है। बहुत दिन तक रहने वाले, शोक, प्रबल सिर दर्द, अत्यन्त मानसिक श्रम और पढने लिखने के कारण प्राय बाल उड जाते हैं।

चिकित्सा।

<u>चायना या फेरम ६ शक्ति</u>।— जब अधिक परिमाण में रक्तस्राव हो अथवा और किसी प्रकार से रक्त निकलने से बाल उडे।

हीपर, फासफोरस, सीपिया या साईलेशिया ६,१२ शक्ति — सिर दर्द होने के कारण बाल उडजाना।

हिपर केलकेरिया, कार्ब, साईलेशिया ६,१२ शक्ति ।—किसी प्रकार के प्रदाह वाले रोग के कारण वाल उड जाना।

ऐसिड फासफोरिक, इग्नेशिया ६ शक्ति ।—मानसिक शोक, दुःख अथवा वुरे विचार के कारण।

हिपर-सलफर, नाइट्रिक ऐसिड ६,१२,३० शक्ति ।—पारे वेजा व्यवहार करने के कारण वाल उडना।

वेलेडोना, पलसाटिला ६ शक्ति ।—कुइनाइन के वेजा व्यवहार के कारण।

फलोरिक-एसिड-कार्व, सलफर ६ शक्ति ।— प्रसव के उपरान्त वाल उड जाने पर।

कलकेरिया कार्ब, ग्राफाइटेस ६ शक्ति ।—मस्तिष्क में अधिक परिश्रम के कारण।

औषध प्रयोग ।—एक सप्ताह तक प्रतिदिन अथवा एक दिन के अन्तर से औषध प्रयोग करना चाहिये। उपरान्त कई दिन तक कोई औषधि न खानी चाहिये। इस पर भी यदि कुछ फायदा दिखलाई न पडे तो दूसरी औषधि खानी चाहिये।

सहकारी उपाय ।—आज कल देखते हैं स्त्रियों के वाल उडकर चांद गंजी हो जाती है, पहले समयों में यह दशा नहीं होतीथी, हमको इसका यही कारण मालूम होताहै कि आज कल विलासिता, अम्ल की पीडा आदि अनेक कारणों के सिवाय खूब वाल काढना और जोर से वाध देना येही दो कारण प्रवल मालूम देते हैं। खूब कसकर चोटी वाधनेसे वाल खिच खिच कर उनकी जडें कमजोर पड जाती हैं और फिर शीघ्रही वाल गिर जाते हैं। इस

लिये बारबार काढना और पडी चोटी बांधना उचित नहीं। यदि चांद गञ्जी हो जावे तो २ आउन्स रम (एक प्रकार की शराब) में ५ बूंद कैन्थेरिस का मूल अरक मिला कर उस स्थान पर दिन में ३ बार लगानेसे फायदा मालूम होता है।

दशम अध्याय।

चक्षुरोग समूह (आंखोंकी बीमारी)

चक्षु प्रदाह (आपथेलमियां)।

नये चक्षु प्रदाह (आंखें दुखना) बडा कष्टदायक रोग होता है। इस का प्रधान लक्षण आख के गोले में जलन होना और सुर्खी आजाता है, उजाले ओर नहीं देखा जाता और आंखें से पानी गिरा करता है। मवाद जम जाता है, आंख में ऐसा मालूम होता है मानो रेत या और कोई चीज गिर पडी है और करकराती है। यदि प्रदाह अधिक हो तो उस के साथ सिर दर्द और ज्वर आदि लक्षण भी उपस्थित होसकते हैं।

इस प्रकार के चक्षु प्रदाह में एकोनाइट, एपिस, आर्सेनिक बेलेडोना, और मार्क्युरियस फायदा करते हैं।

वातके कारण चक्षु प्रदाह।—वात रोग अथवा धातु के कारण प्राय आंखें दुखने लगती है। आख मानो दर्द के मारे फटी पडती है, सब आख लालरङ्ग की हो जाती है और बहुत पानी गिरने लगता है। अनेक समय आखके गोले और रगों में दर्द होने लगता है। वायु परि-

वर्तनसे भी यह दर्द बढ जाता है।

इस प्रकार के चक्षु प्रदाह में एकोनाईट, ब्राइयोनियां, पलसाटिला, रस्टक्स फायदा करते हैं।

गण्डमाला दोषके कारण आंख दुखना।—जिसकी धातु गण्डमाला दूषित होती है उसी को इस प्रकार का चक्षुप्रदाह होते हुए देखा जाता है। इस रोग की चिकित्सा में धातुगत दोष दूर करने की चेष्टा करना ही प्रधान उद्देश्य है, एव यही करना चाहिये।

इस प्रकार के चक्षुप्रदाह की प्रधान औषधि आर्सेनिक, कैलकेरिया-कार्ब, ग्राफाईटिस, हीपरसल्फर, लाईकोपोडियम, मार्क्युरियस, सल्फर।

एकोनाईट ३,६ शक्ति।—बहुत कीचड (मवाद) के साथ आंख दुखना, सूखा हुआ गरम शरीर और बहुत तेज नाडी, अति तीव्र दर्द के साथ आंखों में गहरी सुर्खी और सूजन, उजाला बिलकुल असह्य मालुम पडना, बेचैनी।

एपिस ६,३० शक्ति। आखों के पलक सूजे हुए, पलकोंका उलट कर बाहर निकल पडना, आंखों में जलन और कट कट करना।

आर्सेनिक ६,३० शक्ति।—आखों के भीतर मानों काला लिये हुये लाल रङ्ग, असह्य जलन, रात्रि के समय पलकों का जुड जाना, अत्यन्त दर्द और बेचैनी, अत्यन्त पियास।

बेलेडोना ६,३ शक्ति।—नये चक्षुप्रदाह, उजाला और शब्द असह्य मालुम पडना, सुर्खी, गरम आंसू गिरना

अथवा आंख बिलकुल सूखी हुई, अचानक दर्द हो उठना और अचानक बन्द होजाना, एक चीज की दो चीज दीखना, लपकन और सिर दर्द।

केलकेरिया १२,३० शक्ति।—गण्डमाला दूषित धातु के लिये यह औषध बहुत फायदे मन्द है। आंख के काले भाग में सफेद दाग, गले की गांठ का फूलना और मस्तक में फुन्सी।

ग्राफाईटिस ६,३० शक्ति।—गण्डमाला' दूषित धातु के लिये अथवा पुराने चक्षुप्रदाह में यह औषधि बहुत उपकारी है। मवाद गिरना, काली पुतली में घाव (सफेद भाग में घाव होने पर मार्कूरियस), पलकों के बाल उड़ जाना।

लाईकोपोडियम ६,३० शक्ति।—पुरानी हालत में और गण्डमाला दोष रहने पर, कोष्ठबद्ध, थोड़ा खाने पर ही पेट भरा सा मालूम होना।

मार्कूरियस ६,१२ शक्ति।—प्रमेह अथवा गण्डमाला दोष के कारण आंख दुखना, आंखों में काटने अथवा जलन के समान दर्द, अग्नि अथवा उजाले की ओर न देख सकना, सफेद भाग में फुन्सि अथवा घाव, आंखों में कीचड़ आना और चुपक जाना।

ऐसिड नाईट्रिक और हीपर ६ शक्ति।—गर्मी आदि रोग में अधिक पारे के अपव्यवहार करने के कारण रोग होने पर ये दोनों दवा फायदा करती है।

पल्सेटिला ६ शक्ति।—सर्दी अथवा वात रोग

के कारण आंख दुखना, प्रमेह स्राव बन्द होने से आंख दुखना (इस अवस्था में मर्कुरियस भी फायदा करता है); आंखों में खुजली चलना और जलन होना, सन्ध्या के समय बढ़ना।

युफ्रेशिया ३ शक्ति।—आंखों से अधिक आंसू गिरना और आंखों की लाल रङ्गत रहना।

सल्फर ३,३० शक्ति।—गण्डमाला दोष, आंख और आंखों के पलकों में खुजली चलना और जलन होना, ऐसा मालुम हो मानों आंखों में रेत गिर गया है, काले स्थानमें दाग अथवा घाव, मस्तक के ऊपर और हाथ पैरों में जलन, चर्म रोग।

औषधि प्रयोग।—नयी हालत में ३ घण्टे के अन्तर से दवा देना चाहिये किन्तु यदि रोग सामान्य होतो और पुराना होने लगे तो दिन में २ बार देना यथेष्ट है।

सहकारी उपाय।—आंखों को जोर पहुचाने वाली सब चीजों से परहेज करना चाहिये। रोगी को कुछ अन्धेरे घर में बन्द रहना चाहिये। कभी कभी आंखों को गुन गुने अथवा दूध मिले हुए जल से धोना अच्छा है। आंख दुखने के साथही यदि ज्वर आने लगे तो पथ्य की ओर विशेष ध्यान देना आवश्यकीय है। जब आंखों को बिलकुल आराम न हो जावे, तबतक धूप, उजाला और गर्द धूल, मिट्टी से रक्षा करनी चाहिये। इस प्रकार आंखों की रक्षा के लिये नीले अथवा हरे रङ्ग का चश्मा व्यवहार किया जाय।

पथ्य ।—आख दुखने पर मास, मच्छी और मीठी चीज बिलकुल छोड देनी चाहिये।

अञ्जनी (गुहेरी।
(स्टाई)

लक्षण ।—आखों के पलकों के किनारों में फुसी की भात होकर उन में बहुत दर्द होता है। मवाद निकलतेही आराम मालुम होता है।

चिकित्सा ।—

पलसाटिला ६,३० शक्ति ।—प्रधान औषधि, विशेषकर ऊपरके पलक में गुहेरी होने पर (नीचे के पलक में गुहेरी होतो रस्टक्स)। गुहेरी होते ही यदि यह औषधि प्रयोग की जावे तो फिर उस में न मवाद पडता है और न पकता है। यदि अत्यन्त प्रदाह होतो पलसाटिला के पहिले दो एक मात्रा ऐकोनाईट दी जासकती है।

स्टाफिसेग्रिया ६ शक्ति ।—दोनो ही पलकों में गुहेरी विशेष कर उपर के पलक में। यदि प्राय ही गुहेरिया होती हो और वे पके बिना ही कडी पडजावें। सलफर देनेसे भी बार बार गुहेरी होना बन्द हो जाता है।

ग्राफाईटिस ६,१२ शक्ति ।—बार बार गुहेरी होना और पलक के किनारे में घाव होना।

औषध प्रयोग ।—तरुण अवस्था में एक बूद औषध

पाव छटाक पानी में मिला कर तीन घण्टे के अन्तर से देनी चाहिये। यदि पुराना हो जावे तो सन्ध्यासमय और प्रातःकाल इस प्रकार दिन में दोवार औषध देनी चाहिये।

सहकारी उपाय।—पहिले गरम पानी से सेकना चाहिये, जब थोडी वडी होजावे तो पुलटिस लगनी चाहिये। पकने पर भी यदि न फूटे तो सुई से जरा कुरेद देनी चाहिये। आंख पर पट्टी बांध कर उसको विश्राम दे और चकाचौंध से उसकी रक्षा करे।

दृष्टिहीनता।

(एमब्लियोपिया)

यह रोग प्रायः होते हुए देखा जाता है। इसका स्पष्टतः कोई असली कारण निर्द्धारित नहीं हो सकता। सब चीजों का अस्पष्ट दिखलाई पडना मानों पानी का भीतर से दीखता है। कभी कभी आंखों के सामने काले काले तिल मिले से दिखलाई पडना। इस रोग के कारणों में बहुत दिन तक रोगी की सेवा करना, रात जागना, बहुत समय तक तेज रोशनी में रहना, बहुत पढना विशेष कर दीये के उजाले में, मानसिक चिन्ता और उत्कण्ठा, हस्तमैथुन, अपरिमित स्त्री सहवास, दर्शन स्नायुओंकी पीडा (जिन स्नायु से दिखलाई पडता है उन में रोग) आदि ही प्रधान कारण है।

चिकित्सा।—एकोनाइट ३,६ शक्ति।—सिर घुमना,

और अचानक नजर बन्द हो जाना, सब चीजें अस्पष्ट दिखलाई पड़ना।

बेलेडोना ६,३० शक्ति।—पढ़ते समय अक्षर कांपते हुए दिखलाई पड़ना, अस्पष्ट दृष्टि, आंख की पुतली फैली हुई, दीपक के उजाले के चारों ओर लाल रङ्ग का मण्डलाकार दीखना।

हायोसायेमस ६, ३० शक्ति।—दृष्टि दुर्बल, दृष्टि बन्द होना और विलुप्त होजाना, भ्रम दृष्टि, द्वित्व दृष्टि अर्थात् प्रत्येक वस्तु दुहेरी दिखलाई पड़ना (स्ट्रामोनियम)।

मार्क्यूरियस ६,३० शक्ति।—आंखों के सामने कुहार के समान दिखलाई पड़ना, आंखों की ज्योति न रहना, आंखों के पलक फड़कना, उजाला और अग्नि की ओर देखने की अनिच्छा।

पलसाटिला ६ शक्ति।—ऐसा मालुम हो मानो धूप और कुहार के भीतर से देख रहे हैं अथवा आंख के ऊपर कुछ पड़ा है और उस को झाड़ देने की इच्छा करना, सन्ध्या समय बढ़ना।

ष्ट्रामोनियम ६ शक्ति।—प्यास और कपाल पर पसीना साथ ही, अस्पष्ट दृष्टि, एक चीज की कई चीजें और लाल रङ्ग की दीख पड़ना, प्राय सम्पूर्ण अन्धता।

सल्फर ३० शक्ति।—आंखों में जलन, आंखों के

सामने जाल सा तन रहा हो, धूप और सूर्य का प्रकाश असह्य मालूम हो, आंखों के सामने काले काले तिलमिले उडना, मस्तक के ऊपर और हाथ पैरों के तलवों में गरमी और जलन मालुम पडना।

कमजोरी अथवा बुढापे के कारण कम दीखना—फासफोरस।

हस्त मैथुन आदि के कारण—एसिड फासफोरिक।

रक्ताधिक्य के कारण—बेलेडोना।

रक्तस्राव आदि के कारण—चायना।

रक्काल्पता के कारण—चायना, फेरम, केलकेरिया।

आंखों के अधिक व्यवहार से जैसे बहुत बारीक काम करना, छोटे छोटे अक्षर पढना इत्यादि—रूटा, आर्निका।

अधिक आंसू गिरने से—यूफ्रेशिया।

निकट दृष्टि—केलकेरिया, लाईकोपोडियम, फासफोरस, पलसाटिला, सलफर।

दूरदृष्टि—केलकेरिया, हायोसायेमस, नेट्रम-म्यूरेट, नक्स-वोमिका, सीपिया, सलफर।

रतौंध (रात को न दीखना)—बेलेडोना, हायोसायेमस, मार्कुरियस पलसाटिला।

दिनको न दीखना—फासफोरस, साईलेशिया, नक्सवोमिका, सलफर।

औषध प्रयोग।—प्रभात और सायङ्काल के समय एक एक मात्रा औषध सेवन करनी चाहिये।

सहकारी उपाय।—जिनकी दर्शन शक्ति क्षीण होगयी है उनको सूक्ष्म काम जैसे सिलाई इत्यादि, छोटे अक्षरों की पुस्तक पढना आदि उचित नहीं है। उनको

आँखें को तेज उजाले और गर्द आदि से रक्षित रखना चाहिये। कभी कभी चश्मा लगाना आवश्यक मालूम होता है। उपयुक्त और होशियार चिकित्सक की व्यवस्था से चसमा दीया जावे।

एकादश अध्याय।

कर्ण रोग समुह।

कानमें दर्द। (ओटाल्जिया)

लक्षण।—इस रोग के सामान्य होने पर भी दर्द असह्य होजाता है। अचानक असह्य दर्द इतना प्रबल होता है कि रोगी बकने लगता है। कान पर हाथ नहीं लगाया जासकता, कान के भीतर अनेक प्रकार के अस्वाभाविक शब्द होना, बहरापन, श्रवण पथ [जहासे होकर सुनाई पडता है] के लाल रङ्गत और सूजन इत्यादि। किसी प्रकार का प्रदाह न होने परभी कान के भीतर भयानक दर्द होना और प्राय सर्दी लगने से या दांतों के मसूढे सूजने से कान में दर्द होना। कभी कभी कान में पानी चलेजाने से, कान के भीतर जोर से ठण्डी हवा लगने के कारण, कान कुरेदने से और कान के भीतर फुंसी होनेसे कान में दर्द होने लगता है।

चिकित्सा।— एकोनाईट ६ शक्ति। सर्दी लगनेसे नया दर्द।

बेलेडोना ३,६ शक्ति।—चमक मारना अथवा फटे

पडने के समान दर्द, दर्द के दुःख से बकना, चिल्लाना, मस्तिष्क में रक्त की अधिकता।

मार्क्यूरियस-सल ६ शक्ति।—झनझनाहट करना, सेकने से और बिस्तर पर लेटने से दर्द बढना, कान के फूलने से पास वाली गिल्टी तक सूज जाना, दर्द का गले और दांतों तक फैल जाना, कान से मवाद निकलना।

जलसीमीनम ६ शक्ति।—दर्द यदि ठहर ठहर कर हो।

पल्साटिला ६ शक्ति।—यदि दर्द असह्य होजावे और किसी प्रकार आराम नहीं तो यह औषध अनेक समय आश्चर्यजनक फायदा करती है। सर्दी लगने के कारण अथवा अचानक पसीना बन्द होने के कारण यदि कान में दर्द हो, कान के भीतर हूल मारने अथवा फटे पडने के समान दर्द होना, अत्यन्त बेचैनी और छूने भी न देना।

कैमोमिला ६ शक्ति।—उत्तम दवा है। कान के भीतर सूजन, अत्यन्त दर्द, प्रदाह और कान से अधिक मवाद गिरना। कान में यदि गुम्म हो गया हो तो यह औषध फायदा करती है। बच्चों के कान के दर्द में यह विशेष फायदा करती है। ऊपर लिखी हुई औषधों के द्वारा प्रदाह निवारित होने के उपरान्त पलसाटिला का प्रयोग बहुत उपकार करता है।

सहकारी उपाय।—फ्लानेल अथवा भुसी की पोटली [illegible] करके सेकना चाहिये। पुल्टिस लगाने से बहुत

चैन मालुम पडता है। कान के भीतर थोडी सी, रुई लगा देनी चाहिये ताकि ठण्डी हवा भीतर प्रवेश न कर सके। दर्द की बेचैनी में कान के भीतर जो जी मे आया वही डाल दिया यह बडे अन्याय की बात है। इस से दर्द आराम होना दूर रहा और बढजाता है। यदि आवश्यकता मालुम होतो थोडा सा गुनगुना तेल कान के भीतर डाल दिया जासकता है।

कानसे मवाद गिरना।

(आटोरिया)

यह रोग प्राय बाल्यावस्था में ही होते हुए देखा जाता है। पहले किसी कारण से कान पक कर उस मे मवाद पड जाता है। पीछे यदि उसकी सुचिकित्सा न की जावे और नियम पूर्वक न रहा जावे तो वह पुराना आकार धारण कर लेता है। कभी कभी इस मवाद में इतनी दुर्गन्धि होती है कि स्वयम रोगी को एवम उस के पास वाले को उस से कष्ट मालुम होता है। चेचक खसरा आदि रोगों के उपरान्त प्राय कान पक कर मवाद पडना हुआ देखा गया है। जिनका गण्डमाला दूषित धातु होता है उन्ही को यह रोग अधिक होता है।

चिकित्सा।— एकोनाईट ३ शक्ति।— अत्यन्त जलन और घाव करने वाला मवाद निकलना। कान में आवाज मालुम होना अथवा कान से कम सुनाई पडना।

बेलडोना ६ शक्ति।— गर्दन की गांठें फूलना,

कान के भीतर अनेक प्रकार के शब्द सुनाई पडना।

कैलकेरिया। १२,३० शक्ति।—गडमाला दूषित धातु, दुर्गन्ध युक्त मवाद, विशेष कर दाहिने कान से, शरीर का दुबलापन, पेट बडा, दोनो पैर ठण्डे और पसीजे, पट्ठे कोमल और थलथले।

हीपर-सल्फर १२,३०शक्ति।—दुर्गन्ध युक्त मवाद निकलना, कान से कम सुनाई पडना। पारा अपव्यवहार होने के उपरान्त यह अधिक फायदा करती है।

लाइकोपोडियम १२,३० शक्ति।—मवाद घाव करने वाला, कान से कम सुनाई पडना। गडमाला दूषित धातु।

माक्यूरियस६,३० शक्ति।—दुर्गन्ध युक्त स्राव और कान के बाहर की ओर घाव, कान में रुकावट हो जावे, इसलिये कम सुनाई पडना। उपदंश के विषके कारण रोग।

सलसाटिला ६, ३० शक्ति।—कान से रस अथवा घना मवाद गिरना, कम सुनाई पडना, कान में रुकावट हो जाना, खसरा के उपरान्त यदि रोग हो तो यह अधिक फायदा करता है।

सायेलेसिया १२,३० शक्ति।—कान में मवाद होजावे किन्तु कोई जोर का शब्द होने से यह रुकावट खुल भी जावे, कान बहना, कान के पीछे मरोहरी होजाना, गण्डमाला दोष।

सल्फर ६,३० शक्ति।——गन्ध युक्त मवाद निकलना, विशेष कर बाये कान से [दाहिने कान से-कैलकेरिया-कार्ब] कान के पीछे फुन्सी, खुजाने से खून गिरना।

औषध प्रयोग।—यदि नया रोग होतो दिन में तीन बार औषध प्रयोग करनाही यथेष्ट है किन्तु रोग पुराना पड़ जाने पर दिन में एक बार अथवा एक दिन अन्तर एक ही बार औषध प्रयोग करना चाहिये, इस से अधिक नहीं।

सहकारी उपाय।——कान को सर्वदा साफ रखना चाहिये। कान से मवाद निकलकर कान के बाहर न लिहस जावे इसकी ओर ध्यान रखना चाहिये, क्योंकि इस प्रकार मवाद लगने से बहुत दूर तक घाव फैलते हुए देखा जाता है। कान में सावधानी के साथ पिचकारी देनी चाहिये, क्योंकि प्राय ठीक तरह से पिचकारी न लगने के कारण रोग के आराम होने में बाधा पड़ जाती है। ५ आउन्स स्वच्छ जल में एक ड्राम कार-बोलिक एसिड और एक ड्राम ग्लिसरिन मिलाकर पिचकारी देनी चाहिये। रोग पुराना पड़ जाने पर शारीरिक स्वस्थ्य की ओर विशेष दृष्टि रखना चाहिये। रोगीली धातु होने से काडलीवर आयल खाना अच्छा है।

बहरापन।

[डेफनेस]

आंख कान आदि इन्द्रिया इतनी कोमल है कि थोड़े

ही कारण से उन में रोग उत्पन्न होजाता है । आंख कान के रोग में प्रारम्भ ही से यदि चिकित्सा न कीजाय तो वे पुराने होजाते हैं और फिर बडी कठिनाई से उन की चिकित्सा होती है ।

बहरापन अनेक कारणों से उत्पन्न होसकता है, यथा सर्दी लगने से, चोट लगने से, अनेक प्रकार की पीडा के कारण इत्यादि । वृद्धावस्था में इन कारणों में से एक के भी न होने पर बहरापन होजाता है । प्रायः देखा गया है कि बहरापन कुलगत रोग होता है, अर्थात् यदि हो तो एक कुल के बहुत से आदमियों को होता देखा गया है ।

चिकित्सा ।—दुर्बलता अथवा किसी स्नायविक रोगके कारण होतो फास्फोरस विशेष कर वृद्धमनुष्यों के लिये उपकारी है ।

सर्दी लगने के कारण होतो—एकोनाईट, बेलेडोना, मार्कूरियस, कैलकेरिया वा पलसेटिला ।

ज्वर के उपरान्त होतो—पलसाटिला [खसरा के बाद], फासफोरस [विकारके उपरान्त], साईलेशिया [मस्तिष्क पीडा के उपरान्त], मस्तक में चोट लगने के कारण होतो आर्निका ।

बेलेडोना ६ शक्ति ।—कान के भीतर शब्द, श्रवण स्नायुओं [जिन नसों से सुनाई पडता] का पक्षाघात ।

केलकेरिया-कार्ब १२,३०शक्ति ।—ज्वर कुनेन द्वारा बन्द किये जाने पर बहरापन, गण्डमाला धात ।

कैमोमिला १२ शक्ति ।—जिन, बालकों का, प्राय: ही कान दर्द करता हो उनको बहरापन होने में, कान से पतला पतला मवाद गिरने पर।

कोनियम ६ शक्ति ।—कान के भीतर मैल पैदा हो; बहरापन, मैल निकलते ही सुनाई पड़ने लगे और मैल पैदा होजाने पर फिर सुनाई पड़ना बन्द हो जावे।

जैलसीमीनम १२ शक्ति ।—थोड़ी ही देर के लिये अचानक श्रवण शक्ति का लोप होजाना।

ग्राफ़ाईटिस १२,३० शक्ति—ऐसा मालूम हो मानों कान में पानी भरा हुआ है, जावड़े हिलाने से कानमें भीतर खट खट करना, कान के पीछे घाव हो जाना।

हीपर-सल्फर ६,३० शक्ति ।—नाक द्वारा जोर से श्वास निकलते समय कान के भीतर बहुत आवाज होना, कान के भीतर लपकन।

मार्क्यूरियस ६,३० शक्ति ।—कान के भीतर टाटानी और घाव, कान के भीतर अनेक प्रकार के शब्द होना।

साइलेशिया ६,३० शक्ति ।—कान रुक जाना, कभी कभी बड़ी आवाज के साथ खुल जाना, कम सुनाई पड़ना, विशेष कर मनुष्य की आवाज, मस्तक में अधिक पसीने आना।

सल्फर ६,३० शक्ति ।—कान के भीतर गुन गुन शब्द होना, कम सुनाई पड़ना, पुराना चर्म रोग।

औषध प्रयोग।—नयी अवस्था में दिन में ... बार अथवा दो बार औषध प्रयोग करना चाहिये। पु... रोग में दो एक दिन के अन्तर से एक एक मात्रा औ... खिलानी चाहिये। इस से अधिक नहीं।

सहकारी उपाय।—स्नान करने के उपरान्त ... के भीतर पानी रह जाना अच्छा नहीं है। सूखे कपडे ... पोंछ डालना चाहिये। कान को सर्वदा रुई कप... अथवा तुनका से कुरेदना अच्छा नहीं है। यह अभ्या... बहुत ही बुरा है। बालकोंके कान पर कभी थप्प... अथवा घूंसा नहीं मारना चाहिये। बाल्यावस्था में के... भयङ्कर शब्द सुनने से बहुत से बालक बहरे ... जाते हैं।

कर्णनाद।

अधिकांश कर्ण रोगो के साथही कान के भीतर अने... प्रकार के शब्द सुनाई दिया करते हैं। यह कर्णनाद ... सब रोगों का एक लक्षण मात्र है। किन्तु प्राय. देख... जाता है कि किसी प्रकार का कर्ण रोग न होने पर भी ... कान के भीतर अनेक प्रकार शब्द सुनाई देते हैं। ऐसे ... अवसर पर वह स्वय, एक रोग गिना जाता है। ऐसी ... अवस्था में निम्नलिखित औषधों में से जिसे उचित समझें ... व्यवहार करें।

एकोनाईट ३,६ शक्ति।—कान के भीतर गों गों ... शब्द और मस्तक के भार लक्षण।

बेलेडोना ३;६ शक्ति।—गुन गुन अथवा गों गों शब्द।

चायना ६, ३० शक्ति।—कभी शब्द बहुत कुछ दीस दीस के समान, कभी घंटे बजने के समान और कभी संगीत के समान।

कार्बो-वेजीटेबिलिस १२,३० शक्ति।—जब ज्वर में कुनेन के अपव्यवहार के कारण हो [इस अवस्था में कैलकेरिया-कार्ब्ब और पलसाटिला फायदा करती हैं]।

मार्क्यूरियस ६,३० शक्ति।—जब चेचक (वसन्त) के बाद हो और शरीर में अधिक पसीना हो।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।—जब सर्दी लगकर हो और प्रात कालके समय बढता हो।

पलसाटिला ६,३० शक्ति।—जब, खसरा के बाद हो, सन्ध्या के समय बढना।

रसटक्स ६,३० शक्ति।—जब जल में भीगने से, शीतल जल से स्नान करने से, अथवा कोई भारी चीज उठाने इत्यादि के कारण हो, विश्राम लेने की अवस्था में बढना।

सल्फर ६,३० शक्ति।—जब पुराना घाव सूख जावे अथवा कोई चर्म रोग दब जावे और उस कारण हो।

औषध प्रयोग।—दिन में २।३ बार औषध देना चाहिये।

कर्णमूल प्रदाह।
(माम्पस्)

नीचे वाले जावडे के कोने और कान के नीचे के भाग में जो लालानिःसारक एक बडी गांठ है उस में प्रदाह होने से उसको कर्णमूल प्रदाह कहते हैं। पहले आलस्य मालूम होना, शरीर गिरा पडना, हाथ पैरों में दर्द, भूक कम होना, सर्दी सी लगना, ज्वर और सिर दर्द मालूम होकर २।१ दिन के भीतर एक ओर अथवा दोनों ओर की गांठें फूल जाती हैं, उन में दर्द होता है और कडी पडजाती है। कभी कभी यहांतक होता है कि सब गला तक फूल जाता है और दर्द होने लगता है। गर्दन हिलाने की अथवा कोई वस्तु निगलने की अथवा चबाने की शक्ति नहीं रहती।

इस रोग का एक विशेष लक्षण यह है कि प्रायः स्थान परिवर्तन करने से स्त्रियों के स्तन और पुरुषों के अण्डकोष पर आक्रमण होता है। यह सब स्थान भी सूज जाते हैं, इन में प्रदाह होने लगता है और दर्द होता है। कर्णमूल प्रदाह प्राय शीत और वर्षा काल में बहुव्यापक रूप से दिखलायी पडता है। इस को संक्रामक रोगों में गिनती है। यह प्रायः बच्चों को होता है।

चिकित्सा।—बेलेडोना ३ शक्ति।—सब गांठें उजले लाल रङ्गकी विशेष कर दाहिने ओर की [काला लिये हुये

लाल रङ्गकी और बांये ओर की गाठ होने पर रस्टक्स], अचानक फुलना कम होने पर लपकन, सिर दर्द और प्रलाप बकना आरम्भ होता है, निद्रालुता किन्तु नींद न आना।

हायोसायेमस ६ शक्ति।—यदि स्थान परिवर्त्तन करने से रोग मस्तिष्क में जाय। प्रलाप, एक दृष्टि, हाथ पैरों फड़कना और पटकना आदि स्नायविक लक्षण।

मार्क्युरियस।—यही इस रोग की प्रधान औषधि है। बहुधा यही इसकी एक मात्र औषधि होती है। विशेषकर रोग सामान्य प्रकार का होने से अच्छा होजावे। इस औषधि के लक्षण—सर्दी लगने से रोग, गाठ अत्यन्त सख्त और फूली हुई, जावड़ा हिलाने में और निगलने में अधिक कष्ट, पसीना आना किन्तु उस से कुछ आराम न होना, मुह से बहुत सी लार गिरना और श्वास लेने में तथा निकलने में दुर्गंध आना। सब लक्षणों का रात्रि में और सीत वर्षा के दिन में बढ़ना।

पलसाटिला।—जब स्थान परिवर्तन करने से रोग स्तनको आक्रमण करे [अण्डकोष आक्रमित होने पर आर्सेनिक अथवा कार्बो-वेजीटेबिलिस] अण्डकोष प्रदाह और फूलना उस में चपक मारने कासा दर्द, जीभ मल से ढकी हुई। प्रातःकाल मुह का खराब स्वाद और सिर घूमना।

रस्टक्स ६ शक्ति।—जब विकार के लक्षण दिखलाई पड़ें।

औषध प्रयोग।—सामान्य रोग में दिन में ३।४

वार। यदि रोग मस्तिष्क, स्तन अथवा अण्डकोष आक्रमण करे तो औषधि तीन तीन घन्टे के अन्तर से देनी चाहिये।

सहकारी उपाय ।—रोगी को इस प्रकार सुला रखे कि हिलने डुलने न पावे। और इस बात पर ध्यान रखना चाहिये कि उसको किसी प्रकार सर्दी न लगने पावे। दर्द के स्थान पर किसी प्रकारकी औषध न लगानी चाहिये किन्तु रोगकी प्रथमावस्थामें गरम पानी से सेक सकते हैं, दर्द के स्थान को सर्वदा ढका रखना चाहिये।

पथ्य ।—साबूदाना, बार्ली आदि हलका पथ्य देना चाहिये। पतला पतला पथ्य ही देने में सुभीता रहता है, क्योंकि उसके खाने में कुछ ऐसा कष्ट नहीं होता। मच्छी मास और अधिक दूध देना अच्छा नहीं है।

बारवां अध्याय।

नासारोग समूह।

नाक बहना (नेजैल कैटर) जुकाम या सरेखमा।

लक्षण । यह एक अत्यन्त साधारण रोग है। नाक और उस के पास वाले स्थानों की झिल्ली का प्रदाह ही यह रोग है। पहले नाक और तालु आदि स्थान सुड सुड करते हैं और खुजलाते हैं, पीछे पानी के समान पदार्थ नाक से बहने लगता है। बारम्बार छींक आना, कपाल आदि स्थानों में बोझ मालूम पड़ना, आंखें दर्दभराई हुई और पानी गिरना, कभी कभी ज्वर भी

आजाना। यदि इस अवस्था में आराम न होजावे तो सर्दी गले और छाती तक फैल जाती है और उस से स्वरभङ्ग, गले का दर्द, खांसी, श्वास कष्ट और ज्वर आदि लक्षण प्रकाशित होते हैं।

कारण। शरीर में जिस किसी कारण से भी उत्ताप का क्षय होता है उसी से सर्दी लग जाती है, यथा — [१] गीला कपडा पहिने रहना। यह स्मरण रखना चाहिये कि जितनी देर तक गीलाकपडा पहिनकर परिश्रम कियाजायगा उतनी देर तक परिश्रम के कारण लगातार उत्ताप उत्पन्न होने के कारण सर्दी नहीं लग सकती, किन्तु परिश्रम के उपरान्त भी गीला कपड़ा पहिने रहने से निश्चय ही सर्दी लगने की सम्भावना है। [२] शीतल वायु लगना, [३] बहुत देर तक जल में रहना, [४] अचानक गरमी से सर्दी में आजाना, [५] ओढने पहिनने के कपडों की कमी इत्यादि। बच्चे और वृद्ध लोगों को एवम रोगी और दुर्बल मनुष्यों को इन सब कारणों से सावधान रहना चाहिये।

चिकित्सा।— कैम्फर अथवा अर्क कपुर।— सर्दी की शुरूआत होतेही दोदो बूंद अर्क कपूर चीनी के साथ मिलाकर आधे आधे घण्टे के अन्तर से यदि ५,७ बार खाया जायगा तो तुरन्त ही सर्दी बन्द होजावेगी। यदि आरम्भ में ही न दिया जायगा तो कुछ विशेष उपकार न दीखेगा।

एकोनाईट ३ शक्ति।—सर्दी एवम् ओस और ठण्ड लगने से और और पीडाओंकी प्रथमावस्था में, विशेषत उसके सङ्ग ज्वर अथवा ज्वर सा रहे तो यह बहुत उत्तम

औषध है। २।३ घन्टे के अन्तर से एक एक बूद खानी चाहिये।

नक्सवोमिका ६ शक्ति।—कफ सूखजाने पर, श्लेष्मा गिरना बन्द होजाने पर, नाक रुक जाने और माथा भारी मालूम होने पर यह औषध बहुत फायदा दिखलाती है।

आर्सेनिक ६,३० शक्ति।—लगातार नाकसे गरम और ज्वालाजनक पानीसा बहना, आखों से जल पडना, नाक का दर्द और गरमी में कष्ट कम।

मार्क्यूरियस-साल ६ शक्ति।—लगातार छींक आना, गाढा कफ निकलना, बहुत पसीने आना, गले में दर्द, आप प्रवाहित और लाल रङ्ग की, सन्ध्या समय तकलीफ बढना। यह प्राय: नक्सवोमिका के साथ पर्यायक्रम से व्यवहृत होता है।

पलसाटिला ६ शक्ति।—बदबूदार और गाढा श्लेष्मा निकलना, जीभ से कुछ स्वाद और नाक से गन्ध न मालुम पडना, सिर में बोझ और गडबड मालूम पडना, कान में और माथे की बगल में दर्द।

बेलेडोना ६ शक्ति।—गले का दर्द और स्वरभङ्ग। लपकन के साथ सिर दर्द, हिलने से बढना बच्चा खांसते समय रोवे, सूखी खांसी, नींद आना किन्तु सो न सकना।

ब्रायोनिया ६ शक्ति।—सूखी सर्दी, होठ सूखे और फटे हुए, सूखी खासी, पीने से बढना, कब्ज, मल

रूखा और कठिन। रोगी का स्वभाव चिडचिड़ा।

कार्बो-वेजीटेबिलिस १२ शक्ति।—नाक बन्द हुना विशेषकर सन्ध्या समय सर्दी का लौट आना।

कैमोमिला १२ शक्ति।—नाक से पतला और घाव करने वाला रस निकलना, स्वरभङ्ग और छाती में कफ घडघडाने के कारण खांसी, सूखी खांसी, रातमें बढना यहां तक कि सोते में भी, रोगी का बहुत चिडचिडा हो जाना।

जेलसीमीनम ६ शक्ति।—हवा के सामान्य बदलने पर भी सर्दी लगजाना [डल्कामारा], गले का दर्द, साथ ही निगलने में दर्द—इस दर्द से कान में चपक मारना।

हीपरसलफर १२ शक्ति।—बहुत ही सहज में सर्दी लगना विशेष कर पारे के अपव्यवहार के बाद, गलेके भीतर सुई चुभोने के समान दर्द, घूंवरी खांसी के समान खांसी और स्वरभङ्ग, श्लेष्मा पतला और श्वास रोकने वाला।

इपीका ६ शक्ति।—छाती के भीतर श्लेष्मा घड-घड करता हो किन्तु खांसने में न निकले, जी मिचलाना और उलटी होना। दमे के समान श्वास कष्ट।

सल्फर १२,३० शक्ति।—स्वाद और सूंघने की शक्ति बिलकुल ही जाती रहे [पलसाटिला], बारम्बार भ्रमि के समान, दुर्बलता का बढना, सहज ही में सर्दी लगना, प्रातःकाल के समय उदरामय।

रहती है, नाक से ऐसी दुर्गन्ध बाहिर होती है कि रोगी एवं उस के पास वालें को भी बुरा मालूम पडता है।

चिकित्सा ।—कैलकेरिया१२,३०शक्ति ।— नाक के छिद्र में घाव, नाकसे सुगन्ध न आना, नाक से बदबूदार पीव निकलना, गण्डमाला दूषित धातु।

काली-बाइक्रामिक ३,६ शक्ति ।— नाक की जड में दबाव मालुम होना, दोनो नथनों के बीच के परदे का घाव, गाढा सफेद कफ निकलना यदि कफ निकलना, बन्द होजावे तो भयानक सिर दर्द उपस्थित होना, कडा और हरा पदार्थ निकलना, नाक से दुर्गन्ध।

लैकेसिस १२,३०शक्ति ।— रक्त और मवाद निकलना, नाकके भीतर घाव और पापडी पडजाना, नाक से अत्यन्त दुर्गन्ध और घाव करने वाला पतला श्लेष्मा निकलना।

मार्क्यूरियस-बाईवस ६,१२ शक्ति ।— हरा हरा दुर्गन्ध युक्त मवाद निकलना, नाक की हड्डी सूजी हुई, नाक में पापडी जम जाना और उनको निकालते में खून गिरना । यदि देह में उपदंश दोष हो तो यह औषध बहुत उपकार करती है।

साईलेशिया १२,३० शक्ति ।— नाकसे क्षय करने वाला और जलन करने वाला मवाद निकलना, नाकके भीतर श्लेष्मा सूख कर रहजाने से और सूंघने की शक्ति विलुप्त होने से [कैलकेरिया-कार्ब और काली-ब्रोमाइड] नाक के अग्रभाग में खुजली।

औषध प्रयोग।—दिन में २ बार के हिसाब एक सप्ताहतक औषध देनी चाहिये। उपरान्त ६। ८ दिनतक औषध न दीजावे। पीछे यदि कोई फायदा न दीखे तो और कोई दवा तजवीज कर पहिले की भांति देनी चाहिये।

सहकारी उपाय।—प्रति दिन ठंडे पानी से स्नान करना चाहिये। मांस, मच्छी आदि बिलकुल न खाने चाहिये। स्वास्थ्य के नियमों का विधिपूर्वक पालन करना परम आवश्यक है।

नासाक्षत।
(ओजिना)

नाक के भीतर घाव होकर दुर्गन्ध युक्त अथवा रक्त युक्त मवाद निकलता रहता है, नाक की हड्डी और पास वाली हड्डी [अस्थि और उपास्थि] गल कर कभी कभी गिरती हुई देखी जाती है। नाक में ऐसी दुर्गन्ध होजाती है कि रोगी उस से पागल सा हो जाता है। कभी कभी तालू की हड्डी तक आक्रान्त होती हुई देखी जाती है। नाकके भीतर पापडी पडकर ऐसी सूज जाती है और अटक जाती है कि वे बाहर नहीं निकाली जा सकती। यदि शीघ्रही रोग निवारित न होतो नाक की हड्डी विनष्ट होकर नाक बैठ जाती है और सूरत बहुत ही बुरी होजाती है। ऐसा होने पर रोगी अच्छी तरह नहीं बोल सकता वरन गुन गुना कर बोलता है।

कारण।—उपदश दोषही इस रोग का प्रधान

रहती है, नाक से ऐसी दुर्गन्ध बाहर होती है कि रोगी एवं उस के पास वाले को भी बुरा मालूम पड़ता है।

चिकित्सा ।—कैलकेरिया१२,३०शक्ति ।— नाक के छिद्र में घाव, नाकसे सुगन्ध न आना, नाक से बदबूदार पीव निकलना, गण्डमाला दूषित धातु।

काली-बाईक्रामिक ३,६ शक्ति ।—नाक की जड़ में दबाव मालुम होना, दोनों नथनों के बीच के परदे का घाव, गाढ़ा सफेद कफ निकलना यदि कफ निकलना, बन्द होजावे तो भयानक सिर दर्द उपस्थित होना, कड़ा और हरा पदार्थ निकलना, नाक से दुर्गन्ध।

लैकेसिस १२,३०शक्ति ।—रक्त और मवाद निकलना, नाकके भीतर घाव और पापड़ी पड़जाना, नाक से अत्यन्त दुर्गन्ध और घाव करने वाला पतला श्लेष्मा निकलना।

मार्क्यूरियस-बाईवस ६,१२ शक्ति ।— हरा हरा दुर्गन्ध युक्त मवाद निकलना, नाक की हड्डी सूजी हुई, नाक में पापड़ी जम जाना और उनको निकालते में खून गिरना। यदि देह में उपदंश-दोष हो तो यह औषध बहुत उपकार करती है।

साईलेशिया १२,३० शक्ति ।—नाकसे क्षय करने वाला और जलन करने वाला मवाद निकलना, नाकके भीतर श्लेष्मा सूख कर रहजाने से और सूंघने की शक्ति विलुप्त होने से [कैलकेरिया-कार्ब और काली-ब्राईक्रम] नाक के अग्रभाग में खुजली।

औषध प्रयोग।—दिन में २ बार के हिसाब एक सप्ताहतक औषध देनी चाहिये। उपरान्त ६। ८ दिनतक औषध न दीजावे। पीछे यदि कोई फायदा न दीखे तो और कोई दवा तजवीज कर पहिले की भांति देनी चाहिये।

सहकारी उपाय।—प्रति दिन ठंडे पानी से स्नान करना चाहिये। मास, मच्छी आदि बिलकुल न खाने चाहिये। स्वास्थ्य के नियमों का विधिपूर्वक पालन करना परम आवश्यक है।

नासाक्षत।
(ओजिना)

नाक के भीतर घाव होकर दुर्गन्ध युक्त अथवा रक्त युक्त मवाद निकलता रहता है, नाक की हड्डी और पास वाली हड्डी [आस्थि और उपास्थि] गल कर कभी कभी गिरती हुई देखी जाती है। नाक में ऐसी दुर्गन्ध होजाती है कि रोगी उस से पागल सा हो जाता है। कभी कभी तालू की हड्डी तक आक्रान्त होती हुई देखी जाती है। नाकके भीतर पापडी, पडकर ऐसी सूख जाती हैं और अटक जाती हैं कि वे बाहर नहीं निकाली जा सकती। यदि शीघ्रही रोग निवारिन न होतो नाक की हड्डी विनष्ट होकर नाक बैठ जाती है और सूरत बहुत ही बुरी होजाती है। ऐसा होने पर रोगी अच्छी तरह नहीं बोल सकता वरन गुन गुना कर बोलता है।

कारण।—उपदश दोषही इस रोग का प्रधान

अधिक देर तक होता रहे और देह दुर्बल हो तो औषध द्वारा चिकित्सा करने का प्रयोजन होता है।

कोई पूर्व लक्षण दिखलाई न पड़ने परभी कभी कभी यह रक्त स्राव अचानक होजाता है। कभी कभी निम्न लिखित पूर्व लक्षण भी दिखलाई पड़ते हैं, यथा:— सिर दर्द, सिर घूमना, चहरे पर सुर्खी, गले की धमनियों का फड़कना और हाथ पैरों की शीतलता। कभी उज्वल लाल रंग का और कभी कालासा रंग का रक्त स्राव होते हुए देखा जाता है।

चिकित्सा।—एकोनाईट ३,६ शक्ति।—रक्त पूर्ण धातु, चहरा लाल और सब धमनियों का फड़कना, रक्त उज्ज्वल लाल रङ्गका।

आर्निका ३,६ शक्ति।—बाहरी आघात के उपरान्त और जब रक्त स्राव के पहले नाक में खुजली हो, अधिक भारी वस्तु उठाने से, अधिक परिश्रम करने से, अधिक वेग से रक्त स्राव होने पर—रस्टक्स]।

बेलेडोना ३,६ शक्ति।—मस्तक में रक्ताधिक्य, आंख और चहरा लाल, शरीर अत्यन्त गरम, आंख के सामने चिनगारीसी चलना, शब्द और प्रकाश से बढ़ना।

ब्रायोनिया ३,६ शक्ति।—प्रातःकाल, बिछौने से उठने के उपरान्त [रात्रि को रक्त स्राव होतो—रस्टक्स, ऋतु के बदलने पर नाक से रक्तस्राव [पलसेटिला, सीपिया], ग्रीष्मकालमें और देह अत्यन्त गरम होने पर]

चायना ६,१२ शक्ति ।—वार वार देर तक रहने वाला रक्तस्राव, कान के भीतर भों भों शब्द, चेहरा रक्तशून्य और हाथ पैर आदि ठण्डे।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति ।—अर्श[ववासीर]का रक्तस्राव वन्द होने से, कपाल में दर्द, जो लोग पुराने मद्य पीने वाले हैं।

फासफोरस ६,३० शक्ति ।— वहुत रक्तस्राव, वारम्बार रक्त स्राव होना, विशेष कर मल त्याग करने के समय।

जिन को वार वार नाक से रक्त स्राव होता है उन की धातुगत दोष दूर करने के लिये कैलकेरिया कार्ब्व १२ वा ३० शक्ति, सप्ताह में २ । १ वार एव वीच वीच में एक एक मात्रा सलफर ३० देना चाहिये।

औषध प्रयोग ।—जव अधिक रक्तस्राव होने लगे तव १५। २० मिनट के अन्तर से औषध खिलाई जासकती है। अथवा दिन में २,३ वार औषध देना ही यथेष्ट है।

सहकारी उपाय।—यदि किसी प्रकारसे रक्त वन्द नहो तो मुह वन्द कर नाक से श्वास लेना चाहिये। चेहरा, नाक, मस्तक, गरदन आदि स्थानों में ठण्डा अथवा वर्फ का पानी प्रयोग करने से वहुत फायदा दिखलाई पड़ता है। दोनों हाथोंको सिर के ऊपर रखने से भी वहुत फायदा होता है। हैमामेलिस और पानी समान भाग में मिलाकर नाक के भीतर प्रयोग करने से भी रक्त स्राव दूर होता है।

पथ्य ।—जिन के हमेशा नाक से रक्त गिरा करता है उनको मिताहारी [बहुत खाना और गुरु पदार्थ आदि हानिकारक भोजन से परहेज रखना] और परिश्रमी होना चाहिये। सब प्रकार के उत्तेजक पदार्थ छोड़ देने चाहियें और प्रति दिन शीतल जल से स्नान करना चाहिये। मद्य आदि सब प्रकार के उत्तेजक खाद्य अथवा पानीय व्यवहार न करने चाहिये एवं अत्यन्त परिश्रम से बचना चाहिये।

नासा रोग।

यह रोग प्रायः देखने में आता है। नाक के भीतर प्याज की कली के समान सूजन होजाती है। बीच बीच में ज्वर होता है। नासा ज्वर के लक्षण और किसी प्रकार के ज्वर से नहीं मिलते, इस लिये उनके देखने ही से नासा ज्वर समझा जासकता है। गरदन के स्थान में दर्द, मस्तक, शरीर, हाथ पैरों में दर्द, सिर दर्द, प्रबल ज्वर, पिपासा, शरीर में जलन आदि इस ज्वर के लक्षण हैं। इन सब कष्टोंको शीघ्र निवारण करनेके लिये बहुतसे लोग नासा तोडनेके लिये अभ्यास करतेहैं। सुई से नाक के भीतर की प्याज की सी कली को छेद देने से उस का रक्त बूद बूद कर निकलजाता है और मस्तक और गरदन का कष्ट एव ज्वर दूर होजाता है। जिनको नासा तोड़ने का अभ्यास होता है उनको नासा ज्वर होने पर नासा न तोडने से बडा कष्ट होता है। इस लिये पहले ही से इस का अभ्यास करना उचित नहीं।

नासा ज्वर जैसे अचानक आता है वैसे ही अचानक चला भी जाता है; किन्तु इस को साधारण समझ कर

परहेजी और लापरवाही करने से कभी कभी यह इतना प्रबल और कठिन होजाता है कि सहज ही इस का आराम करना कठिन होजाता है।

चिकित्सा।—बेलेडोना ३,६ शक्ति।— प्रबल लपकन, सिर दर्द, मस्तक में रक्ताधिक्य, प्रलाप बकना, प्यास और हडकन, हिलने चलने से, शब्द और प्रबल प्रकाश से रोग बढना, प्रबल ज्वर, इस औषध के विशेष लक्षण है।

एकोनाईट ३,६ शक्ति।—प्रबल ज्वर, अत्यन्त बेचैनी और तडफडाना, हडकन, सिर दर्द, प्रबल पिपासा मृत्युभय, नाडी पूर्ण और तेज।

फासफोरस ६,३० शक्ति।—नाक से सहजही रक्त निकले, नाक के छिद्र रुके हुए मालुम हों और सर्दी होने के पहिले जिस प्रकार माथे का बोझ मालुम होता है इसी प्रकार बोझ मालुम होना। देह कृश और लम्बा होतो यह दवा बहुत फायदा करती है।

सीपिया ६, ३०।—मूत्रमें दुर्गन्ध, मूत्रमें नीचे कीचडके समान अथवा लाल लाल पदार्थ जम जाना, नाक रुकी हुई और वारवार छींक आना। स्त्रियोंके लिये ही विशेष उपयोगी है।

साईलेशिया १२,३० शक्ति।—नाकके ऊपरके भाग में दर्द और माथा हिलाने से बोझ मालुम होना, नाक के छिद्रों के पास खुजली और छोटी छोटी फुन्सिया, प्रत्येक अमावस्या के दिन अथवा पूर्णिमा के दिन तकलीफ

चढ़ना अथवा ज्वर होना। यदि गण्डमाला दोष हो तो भी यह औषध देनी चाहिये।

केल्केरिया १२,३० शक्ति।—इस औषध के द्वारा नासा रोगी के धातुगत दोष दूर होते हैं। रोगी स्थूलकाय और शरीर थलथला हो, सर्दी और तर हवा से तकलीफ होना, पैर के तलवे हमेशा ठण्डे और गीले रहना।

सप्ताह के भीतर २। ३ दिन कैलकेरिया ३० और बीच बीच में सलफर सेवन करने से रोगी के धातुगत दोष दूर होकर नासा रोग बिलकुल अच्छा होसकता है। चिकित्सा इस प्रकार करनी चाहिये और यही ध्यान रखना चाहिये कि रोगी बिल्कुल आरोग्य होजावे।

औषध प्रयोग।—नासा रोग में ३। ४ घण्टे के अन्तर से औषध प्रयोग करनी चाहिये। धातुगत दोष दूर करने के लिये सप्ताह में दो तीन दिन प्रात काल और सन्ध्या समय दोही बार औषध खाना यथेष्ट है।

त्रयोदश अध्याय।

हृद्रोग समूह।

हृत्कम्प (पैलपीटेशन)

हृत्कम्प दो प्रकारका होताहै। एक हृद्रोग अर्थात् हृत्पिण्डके यन्त्रगत वा गठनगत विगडने के कारण, और दूसरा हृत्पिण्ड की क्रियाके विगडनेके कारण। हृद्रोगसे जो हृत्कम्प होताहै उसकी चिकित्सा बडी कठिनतासे होती

है, क्योंकि हृत्पिण्डकी गठन की वजह से जो विकार उत्पन्न होता है जब तक वह दूर न हो तबतक हृत्कम्प दूर नहीं होता। क्रिया के बिगड़नेसे जो हृत्कम्प होता है उसकी सहज में चिकित्सा कीजासकती है। अपरिपाक (भोजन न पचना) आदि कारणों से जो हृत्कम्प होता है वह क्रियागत रोग का एक दृष्टान्त है।

सुस्थ और स्वाभाविक अवस्थामें छाती के भीतर हृत्पिण्डकी क्रिया का कुछ अनुभव नहीं किया जासकता इसका-शब्द नहीं सुना जा सकता एवं इसका आघात भी अनुभव नहीं होता अर्थात उसकी धडकन मालूम नहीं पडती, किन्तु पीडा के कारण हृत्पिण्ड की धडकन इतनी बढ जाती है कि छाती के भीतर धडफड होती रहती है, कभी कभी उसकी तेज और जोरसे धडकन क्रमागत स्पष्ट सुनाई पडने लगती है और रोगी को कम्पा देती है। स्नायविक दुर्बलता, अत्यन्त मानसिक चिन्ता या आवेग, कोष्टबद्ध, अजीर्ण, बहुत रक्तस्राव के कारण दुर्बलता, अत्यन्त शारीरिक परिश्रम, हृत्पिण्डकी पीडा आदि अनेक कारणों से यह पीडा उत्पन्न होजाती है। अधिक चाय अथवा तम्बाकू पीनेसेभी हृत्कम्प होते हुए देखा जाता है। स्त्रियोंको ऋतु सम्बन्धीय गडबडी रहनेसे हृत्कम्प उपस्थित होता है।

चिकित्सा।

१। मानसिक आवेगके कारण हृत्कम्प—एकोनाईट (उत्तेजना के कारण), काफिया (अत्यन्त आनन्द के कारण हृत्कम्प के साथ अनिद्रा), कैमोमिला (क्रोध के कारण), ओपियम या विरेट्रम (भय के कारण)।

२। अत्यन्त परिश्रम के कारण—आर्निका।

३। रक्ताधिक्य के कारण—एकोनाईट, बेलेडोना।

४। अपाकके कारण—नक्सवोमिका, पलसाटिला, लाईकोपोडियम।

५। स्नायविक कारण अथवा वायु वृद्धि के कारण—मस्कस, स्पाईजिलिया, वलेडोना, एकोनाईट, कैक्टस, आर्सेनिक।

६। वृद्ध लोगोंको दुर्बलता के कारण हृत्कम्प—आरम।

एकोनाईट ३, ६ शक्ति।—युवा वयस्क, रक्तपूर्ण धातु वाले मनुष्यों को हृत्कम्प, बहुतही अधिक दिल भड़कना, साथही ऐसा मालुम होना मानो समस्त शरीर कांप उठता है। भय लगने के उपरान्त अधिक उपकार करता है (इस अवस्था में काफिया आर ओपियमभी फायदा करते हैं), मन में अत्यन्त भय और चिन्ता, रोगी को ऐसी चिन्ता होकि मानो मृत्यु होगी, सीधा होकर बैठा जाय, सांस लेते में कष्ट मालुम हो।

आर्सेनिक १२,३०।—अत्यन्त प्रबल हृत्कम्प, विशेष कर रात्रि को और सोने पर (इस लक्षण में डिजीटेलिस भी फायदा करता है), अत्यन्त यन्त्रणा (कष्ट) अत्यन्त बेचैनी और मृत्यु भय, दुर्बलता, अत्यन्त पिपासा बार बार थोडा थोडा जल पीना।

वेलेडोना ३,६ शक्ति।—हृत्कम्प, साथ ही नाडी की सविराम गति अर्थात् ठहर ठहर कर चलना, हृत्पिण्ड में अत्यन्त तकलीफ मालूम होना, विश्राम के समय हृत्कम्प, चलने हिलनमें बढना, लपकन, सिर दर्द

रक्त प्रधान धातु वाला।

डिजिटेलिस ३,६ शक्ति।—बात करनेसे, हिलने चलने से वा शयन करने से हृत्कम्प उपस्थित हो। ऐसा मालूम होकि हिलने चलनेसेही हृत्स्पन्दन बन्द हो जावेगा, हृत्पिण्ड में तेज सुई चुभोने के समान अथवा सिकुडनेके समान दर्द (इस लक्षण में रस्टक्स भी दिया जाता है), हृत्पिण्ड के यन्त्र का रोग, इस के साथ ही साथ पैरों का फूलना।

रस्टक्स ६,३० शक्ति।—स्थिर भाव से बैठ रहने पर हृत्कम्प मालूम होना, इसलिये उसको उपशम करने के लिये बराबर हिलना चलना, हृत्पिण्ड में सुई चुभोने के समान दर्द, इसके साथही बाये हाथ में तकलीफ के साथ ही सन्नाटा अथवा बेबसी मालूम पडना।

फासफोरस ६,३० शक्ति।—ऐसा मालूम हो मानो छाती के चारों ओर जकडा हुआ है, अतएव स्वास लेते में कष्ट होना और दुबलता मालूम होना। हृत्कम्प का भोजन के उपरांत अथवा मानसिक आवेग के उपरान्त बढना।

विराट्रम अलवम ६,१२ शक्ति।—प्रबल हृत्कम्प, उद्वेग के साथ हृत्कम्प [इस लक्षण में डिजिटेलिस भी दिया जाता है], कपाल में ठण्डा पसीना, अत्यन्त दुर्बल करने वाला उदरामय, प्रत्यक वार मलत्याग के उपरान्त दुर्बलता का बढना, यन्त्रणा और मृत्युभय [आर्सेनिक]।

जेलेसिमिस ३० शक्ति।—बार बार लम्बी साल

लेना, बीच बीच में श्वास रोध होना मानों चक्कर आते हैं, नाडी दुर्बल, बांई ओर सुई चुभोने के समान दर्द, रोगी को अचानक निद्राके उपरान्त श्वासकष्ट, ऐसा मालूम हो मानों दम अटकगया है और जाग पड़ना।

औषध प्रयोग। जब हृत्कम्प प्रबल वेगके साथ आरम्भ हो तब २०।३० मिनट के अन्तर से एक एक मात्रा औषध देनी चाहिये, और और समय में दिन में दो एक मात्राही यथेष्ट हैं।

सहकारी उपाय।—सर्व प्रकारका मानसिक उत्तेजना, सर्व प्रकार उत्तेजक खाद्य, चाय वा काफी पीना, न पचने वाले पदार्थ खाना इत्यादि वर्जनीय हैं। स्वच्छ हवाका सेवन, शीतल जलसे स्नान, खुली हुई हवा में यथोचित व्यायाम, सहज में पचने वाला तथा पुष्टिकारक पदार्थ भोजन करना, हृदय को अशान्ति और चिंताशून्य रहना इत्यादि येही इस रोग के प्रधान सहकारी उपाय हैं।

हृत्पिण्डकी वात।

लक्षण।—वात की पीडा का समय हो अथवा और कोई समय हो, रोगी को बायीं ओर एक प्रकारका बोझ सा दीख पडता है। कभी कभी उस स्थान में अत्यंत तेज दर्द भी मालूम होता है। बायीं ओर रोगी करवट लेकर सोभी नहीं सकता, उसास निकालते में कष्ट होता है। चहरा देखने से कष्ट और बेचैनी मालूम होती है। हृत्पिण्ड की अनियमित क्रिया, अति [illegible], और कभी

कभी बहुतही ज्यादा पसीने आना, नाडी कम चलना क्षीण और सुकडी हुई मालूम पडना, नाडीकी अवस्था। हृत्पिण्ड के फडकने की क्रिया के साथ समकालिक अर्थात् [एकही समय में दोनों का साथ धडकना] और समभावापन्न [अर्थात् एकही तरह धडकना] नहो। यह रोग अत्यन्त ही कठिन है। प्राय इस से रोगी के जीवन का संशय होजाता है। यदि इस से अचानक मृत्यु भी न हो तथापि यह ऐसा पुराना आकार धारण करता है कि जिस से रोगी जीवन्मृत सा होजाता है । यह पुराना हृद्रोग कष्टसाध्य होता है।

चिकित्सा।—एकोनाईट ३, ६ शक्ति।— प्रबल ज्वर, उस के साथही प्रबल दिल धडकना, हृत्पिण्ड और नाडी की धडकन के साथ किसी प्रकार का मेल न रहना। छाती में सुई चुभोने के समान दर्द होना, उसके कारण उसास लेने में बाधा पडना, अत्यन्त उद्वेग और मृत्युभय, पेशाब बन्द।

आर्सेनिक १२, ३० शक्ति।— हृत्पिण्ड का अत्यत धडकना, विशेष कर रात्रि को और त्रिस्त होकर सोने पर, अत्यत बलक्षय और दुर्बलता, अत्यत बेचैनी और मृत्युभय, बार बार थोडा थोडा पानी पीना।

बेलेडोना ३, ६ शक्ति।— छाती पर भारापन मालूम पडना, उस के कारण श्वास बन्द होना, बहुत छाती धडकना, साथही हृत्पिण्डका अनियमित रूप से सकोचन, दर्द जितनी जल्द आरभ हो उतनी ही जल्दी चला जावे, लप-

फन, सिर दर्द के साथ चहरे की लाल रगत, उलटी होना, चक्कर आना, सब शरीर में ठंडे पसीने आना।

सिमिसीफुगा ३, ६ शक्ति।—छाती में दर्द और उद्वेग मालूम होना, बांये कन्धे में दर्द, इस दर्द का बायें हाथ तक फैलना, उस के साथही ऐसा मालूम होना मानो यह हाथ इस ओर बधा रहा है।

लैकेसिस १२,३० शक्ति।—हृत्पिण्ड में वायठेके सा दर्द, उससे छाती धडकना, हरवार हिलाने से विशेष कर दोनो हाथ हिलाने से श्वासकष्ट मालुम होना, श्वास रुकनेके भयसे सो न सकना, गलेमें किसी वस्तुका स्पर्श सह्य न होना, निद्राके बाद ही रोगी की यन्त्रणा की वृद्धि।

रस्टक्स ३,६ शक्ति।—हृत्पिण्ड की दूर्वलता और उसका फडकना, स्थिर होकर बैठनेसे अत्यन्त छाती धडकना, हृत्पिण्ड में सुई चुभोने के समान दर्द, बायें हाथके दर्द के साथ हाथ सोजना और सुन्न पडजाना, विश्रामके समय दर्द का बढना, चैन पडने के लिये बार बार जगह बदलना।

औषध प्रयोग।—रोग की तीव्रताके अनुसार प्रत्येक घन्टे वा दो घण्टे के अन्तर से दवा देनी चाहिये, आराम होने पर ३।४ घण्टे के अन्तर से दवा देनी चाहिये।

पथ्य।—पहले वार्ली, साबूदाना आदि हलका पथ्य देना चाहिये, उपरांत दूध आदि पुष्टिकर पदार्थ दिये जा सकते हैं। प्यास बुझाने के लिये ठण्डा पानी पीने को देना चाहिये।

चतुर्दश अध्याय।

श्वासयन्त्र सम्बन्धीय पीड़ा।

वक्ष परीक्षा (छाती की परीक्षा)।

सन्दर्शन [देखना], स्पर्शन [टटोलना] मापन [नापना], आकर्षन [सुनना] प्रतिघात [ठोकना], आदि रीतियों से छाती के भीतर के यन्त्र आदि की स्वाभाविक अवस्थाकी परीक्षा कीजासक्ती है।

सन्दर्शन [इन्स्पेक्शन]—इस के द्वारा छाती का आकार, अवयव, श्वास प्रश्वास और छाती फूलने की अवस्था समझी जाती है। सुस्थ मनुष्य की छाती देखने से यह अच्छी तरह जाना जाता है कि छाती के बांये और दाहिने ओर का आकार प्रकार और श्वास प्रश्वास की गति, प्राय समानभाव से चलती है, अर्थात् श्वास लेते समय दोनो ओर समान भाव से उठती है और श्वास निकालते समय समान से बैठती है। सुस्थ और जवान मनुष्य अथवा स्त्री का श्वास प्रति मिनट १६ से २० बार तक होता है। फेफड़े के प्रदाह आदि रोग में इस श्वास प्रश्वास की गति तेज होती है यहांतक कि ५० अथवा ६० बार तक हो जाती है। देखने से श्वासकृच्छ रोग, कपोत वक्ष (कबूतर के समान छाती), और दबी हुई छाती आदि मालुम होजाती है। यह दोनो आकारकी हालतें यक्ष्मा रोग की सूचना करने वाली हैं।

स्पर्शन (पैलपेशन)—हाथ से छूकर, रोगी की छाती परीक्षा करने का नाम स्पर्शन है। छाती के सामने और पीछे की ओर हाथ रखकर श्वास प्रश्वास की गति देखनी पड़ती है। जो कुछ परीक्षा देखनेसे की गयी है

कन, सिर दर्द के साथ चहरे की लाल रंगत, उलटी होना, चक्कर आना, सब शरीर में ठंडे पसीने आना।

सिमिसीफुगा ३, ६ शक्ति ।—छाती में दर्द और उद्वेग मालूम होना, बाये कन्धे में दर्द, इस दर्द का बाये हाथ तक फैलना, उस के साथही ऐसा मालूम होना मानो यह हाथ इस ओर बंधा रहा है।

लैकेसिस १२,३० शक्ति ।—हृत्पिण्ड में वायटेके साथ दर्द, उससे छाती धडकना, हरवार हिलाने से विशेष कर दोनों हाथ हिलाने से श्वासकष्ट मालुम होना, श्वास रुकनेके भयसे सो न सकना, गलेमें किसी वस्तुका स्पर्श सह्य न होना, निद्राके बाद ही रोगी की यन्त्रणा की वृद्धि।

रस्टक्स ३,६ शक्ति ।—हृत्पिण्ड की दूर्बलता और उसका फडकना, स्थिर होकर वैठनेसे अत्यन्त छाती धडकना, हृत्पिण्ड में सुई चुभोने के समान दर्द, बांये हाथके दर्द के साथ हाथ सोजना और सुन्न पडजाना, विश्रामके समय दर्द का बढना, चैन पडने के लिये बार बार जगह बदलना।

औषध प्रयोग ।—रोग की तीव्रताके अनुसार प्रत्येक घन्टे वा दो घण्टे के अन्तर से दवा देनी चाहिये। आराम होने पर ३।४ घण्टे के अन्तर से दवा देनी चाहिये।

पथ्य ।—पहले वार्ली, साबूदाना आदि हलका पथ्य देना चाहिये, उपरांत दूध आदि पुष्टिकर पदार्थ दिये जा सकते हैं। प्यास बुझाने के लिये ठण्डा पानी पीने को देना चाहिये।

चतुर्दश अध्याय।

श्वासयन्त्र सम्बन्धीय पीडा।

वक्ष परीक्षा (छाती की परीक्षा)।

सन्दर्शन [देखना], स्पर्शन [टटोलना] मापन [नापना], आकर्णन [सुनना] प्रतिघात [ठोकना], आदि रीतियों से छाती के भीतर के यन्त्र आदि की स्वाभाविक अवस्थाकी परीक्षा कीजासकी है।

सन्दर्शन [इन्सपेक्शन]—इस के द्वारा छाती का आकार, अवयव, श्वास प्रश्वास और छाती फूलने की अवस्था समझी जाती है। सुस्थ मनुष्य की छाती देखने से यह अच्छी तरह जाना जाता है कि छाती के बांये और दाहिने ओर का आकार प्रकार और श्वास प्रश्वास की गति प्राय समानभाव से चलतीहै, अर्थात् श्वास लेते समय दोनो ओर समान भाव से उठती है और श्वास निकालने समय समान से बैठती है। सुस्थ और जवान मनुष्य अथवा स्त्री का श्वास प्रति मिनट १६ से २० बार तक होता है। फेफड़े के प्रदाह आदि रोग में इस श्वास प्रश्वास की गति तेज होती है यहांतक कि ५० अथवा ६० बार तक हो जाती है। देखने से श्वासकृच्छ रोग, कपोत वक्ष (कबूतर के समान छाती), और दबी हुई छाती आदि मालुम होजाती है। यह दोनों आकारकी हालतें यक्ष्मा रोग की सूचना करने वाली है।

स्पर्शन (पैलपेशन)—हाथ से छूकर, रोगी की छाती परीक्षा करने का नाम स्पर्शन है। छाती के सामने और पीछे की ओर हाथ रखकर श्वास प्रश्वास की गति देखनी पड़ती है। जो कुछ परीक्षा देखनेसे की गयी है

स्पर्शन से उस देखे हुए की पुष्टि होजाती है। मुह से वाक्य उच्चारण करते समय छाती की धडकन स्वाभाविक श्वास प्रश्वास लेते समय की धडकन की अपेक्षा कम और वृद्धि होता है। यक्ष्मा रोग में स्वरत्कम्पन की वृद्धि होती है।

मापन [मेन्सूरेशन]—इस उपाय के द्वारा छाती की सीमा और लम्बाई चौडाई जानी जाती है। एक जवान पुरुष की छाती का व्यास अर्थात् सन्मुख और पश्चात् व्यास का ऊपर की ओर ६ इंच और नीचे की ओर ७ इंच होता है। स्वस्थ पुरुष की छाती की परिधि श्वास निकालने के बाद ३२ इंच और लम्बा श्वास लेने के समय ३६ इंच होजाती है। फेफडे में जल सञ्चय होने आदि रोगों में छाती की यह माप बढ जाती है।

प्रतिघात [पार्कशन]—रोग निर्णय के लिये शरीर के किसी स्थान को ठोक कर उस के शब्द की परीक्षा करने का नाम प्रतिघात है। इस परीक्षा के लिये बाये हाथकी तर्जनी अथवा मध्यमाङ्गुलि के बीच के भाग को छाती पर समान और दृढ भाव से रख कर उन उगलिया पर दाहिने हाथ की तर्जनी अथवा मध्यमाङ्गुलि अथवा दोनों उंगिलियों से ठोकने से परीक्षा होती है। समान भाव से शीघ्र शीघ्र आघात करने के उपरान्त उगली उठा लेनी पडती है। इस परीक्षा द्वारा छाती के अनेक प्रकार के स्वाभाविक और अस्वाभाविक शब्द सुनाई पडते हैं। इस परीक्षा द्वारा निम्नलिखित शब्द सुनाई पडते हैं।

(१) फ्लाटनेस अथवा स्वर की निम्नता।—हड्डी और पट्ठों के ऊपर ठोकने से जैसा शब्द होता है उस को फ्लाटनेस कहते हैं। प्लूरा गह्वर में तरल पदार्थ पैदा होजाने

अथवा फैफड़ा घनीभूत [कड़ा] होने से यह शब्द पाया जाता है।

[२) डलनेस अथवा पूर्णगर्भता।—कठिन यन्त्र के उपर ठोकने से यह शब्द उत्पन्न होता है। फैफड़े में प्रदाह होने वाले रोग में यह शब्द पाया जाता है।

(३] टिम्पोनिक अथवा आध्मानिक।—सुख अवस्था फैफड़े के उपर ठोकने से यह शब्द पाया जाता है। फैफड़े में वायु विद्यमान रहने पर यह शब्द उत्पन्न होता है।

[४] क्रैक पाट [*Crack pot sound*] किसी धातु के बने हुए टूटे बरतन को ठोकने से जो शब्द होता है वह भी ठीक उसी प्रकार है। फैफड़े में कैविटी या गव्हर उत्पन्न होनेसे यह शब्द सुनाई पड़ता है।

आकर्णन वा श्रवण (आस्कल्टेशन]—रोगी की छाती में कान लगाकर सुनने से उस परीक्षा को आकर्णन कहते हैं। कभी कभी इस परीक्षा में असुभीता होता है इस लिये स्टेथसकोप(*Stothoscopo*)नामक यन्त्र द्वारा परीक्षा की जाती है। इस यन्त्र की अच्छीतरह परीक्षा कर किसी अच्छे दुकानदार के यहासे खरीदना चाहिये। स्टेथसकोप अनेक प्रकार के होते हैं, किन्तु उन सबकी अपेक्षा लकड़ी अथवा धातु के बने हुए सबसे अच्छे होते हैं। रबड़की नली वाले स्टेथसकोप औरतों की परीक्षा के लिये एवम् यक्ष्मा रोगी के लिये विशेष उपयोगी होते हैं। इस परीक्षाके अनुभव की बड़ी आवश्यकता है। छाती की परीक्षा करते समय बड़े ध्यानसे जुदे जुदे प्रकार के

शब्दों पर दृष्टि देना आवश्यक है।—स्टेथस्कोपका जो अंश छाती के ऊपर बैठाया जाता है उसको दोनों ओर की हड्डीयों के बीच में इस प्रकार से रखना चाहिये कि किसी ओर उचानीचा न रहे। छाती पर स्टेथस्कोप को दाबकर रखना उचित नहीं है। श्वास लेते समय सब छाती की बारम्बार परीक्षा करना चाहिये। साधारणतः निम्नलिखित स्थानमें यन्त्रको रखकर भीतरके शब्द सुनना पडता है। कण्ठ की हड्डी के नीचे की ओर, गले की हड्डीयों के बीच में, हृत्पिण्ड के ऊपर, नीचे और बायीं ओर, गले की हड्डीके बीच के स्थान में, पार्शुका हड्डी के सामने और पीछे की ओर इत्यादि।

स्टेथस्कोप द्वारा छाती की परीक्षा करते समय निम्न लिखित शब्द सुनाई पडते हैं—

सनोरस् रङ्कास वा घनू घनू शब्द।—ब्रोङ्काईटिस रोग में श्वास प्रश्वास के समय यह सुनाई पडता है। प्राय बडी श्वास नलीसे यह उत्पन्न होता है।

सिबिलेण्ट रङ्कास् वा सनसनाहट [सर्प श्वास वत] के समान अथवा सीठी देने के समान शब्द।—ब्रोंकाईटिस, एम्फिशिमा आदि रोगों में श्वास लेने के समय यह शब्द सुनाई पडता है। सङ्कुचित छोटी श्वास नली वा घने श्लेष्मा के भीतर होकर वायु प्रवेश करने से यह उत्पन्न होता है।

म्यूकास रालस, श्लैष्मिक वा बडे विस्वस्फोटन के शब्द।—ब्रोङ्काईटिस और हिम्प्टीसिस् रोग में बडी श्वास नली में रक्त रहने से यह शब्द सुनाई पडता है। यक्ष्मा और फॅफडे के प्रदाह की आरोग्यावस्था में यह शब्द

कुछ कुछ सुनाई पड़ता है।

हालो बाब्लिङ्ग् र्‌ह्वास वा विम्बस्फोटनके समान शब्द।—यक्ष्मा रोग में फेफड़े में गव्हर होने पर वा श्वास नली का फैलाव होने पर श्वास लेने और निकालने के समय यह शब्द सुना जाता है।

क्रीपिटेशन वा केश मर्दनवत् शब्द।—फुफड़े के प्रदाह आदि रोगों में श्वास लेने के समय यह सुनाई पड़ता है। प्रदाह विशिष्ट वायु कोष के जोर से फैलने के कारण इस प्रकार का शब्द उत्पन्न होता है। फेफड़े के प्रदाह आदि रोग जिस समय आराम होनेको हों उस समय श्वास प्रश्वास लेने से जो थोड़ा थोड़ा मुलायम सा शब्द होता है उस को सेकेण्डरी क्रिपीटाटिङ्ग र्‌ह्वास शब्द कहते हैं।

स्वरभङ्गता।

(होर्सनेस्)

स्वरभङ्गता प्राय सर्दी खासी के साथ उपस्थित होती हुई देखी जाती है। इस के सिवाय और और अनेक रोग यथा चेचक, कुकर खांसी (घूघरी खासी) ब्रोङ्काईटिस, आदि का एक लक्षणस्वरूप यह देखा जाता है। स्वरभङ्गता के कारण, बात अस्पष्ट निकलती है और समझ नहीं पड़ती। गले के भीतर खुश्की, खुजली वा खुर खुराहट मालूम पड़ता है। कभी कभी गले में दर्द भी होता है, और खासी भी कभी कम और कभी ज्यादा मालूम होती है।

चिकित्सा।—

१। सामान्य स्वरभङ्गता—फाईटोलेका, हीपर-सलफर, फासफारस, कार्बो-वेज।

२ । सर्दी खांसी के साथ स्वरभङ्गता—ऐकोनाइट, कास्टिकम, मार्कुरियस, ब्रायोनिया, स्पञ्जिया, फासफोरस, डलकामारा ।

३ । अधिक चिल्लाना से यदि रोग हो—गायक और धर्म प्रचारक आदि की स्वरभङ्गता—फाइटलैका, कास्टिकम, वैराइटा कार्ब ।

कार्बे-वेज १२,३० शक्ति ।—दीर्घस्थायी स्वरभङ्गता, प्रात काल और सन्ध्या समय, बात कहनेसे बढ़ना, चेचकके उपरान्त खांसी और स्वरभङ्गता (कैमोमिला, पलसाटिला)।

कास्टिकम १२,३० शक्ति ।—स्वरभङ्गता, गलेके भीतर कर्कश मालुम पडना, विशेष कर प्रात.काल के समय, कठिन से आरोग्य होने की हालत में, जब गले और छाती के भीतर दर्द हो।

कैमोमिला १२ शक्ति ।—सर्दी के कारण स्वर-भङ्गता, गलेके भीतर श्लेष्मा, विशेष कर बच्चों के, रोगी अत्यन्त चिड़चिड़ा ।

मार्कूरियस ६,३० शक्ति ।—स्वरभङ्ग एवम् कर्कश और गले के भीतर जलन और सुडसुडाहट मालुम होना, पसीने आना किन्तु कुछ आराम न पड़ना ।

नक्सवोमिका ६ शक्ति ।—सर्दी के कारण स्वर-भङ्गता, कोष्ठबद्ध ।

पलसाटिला ६,३० शक्ति ।—स्वरभङ्गता, इसी

कारण से चिल्लाकर बात न कह सकना [फासफोरस]; सर्दी, साथही गीली खासी, कफ पीले रङ्ग का, हरा, दुर्गन्ध, प्रकृति मृदु (मुलायम), नम्र और सहज ही में आखो में जल भर जाने की प्रकृति।

फासफोरस ६,६० शक्ति।—स्वरभङ्गता व स्वर विलुप्त, पुराना स्वरभङ्गता [कास्टिकम], छाती के चारों ओर जकड जाने के समान मालुम होना और सूखी खासी।

सलफर ३० शक्ति।—सास घुटने के साथ ही आवाज बन्द होना, दर्वाजे और खिडकी खोल देने की इच्छा, गलेके भीतर सुरसुराहट मालुम पडना, मस्तक के ऊपर गरमी मालुम पडना, क्षीण देह के लोग जो मस्तक नीचा कर चलते हैं।

औषध प्रयोग।—तरुण अवस्था में प्रति ३।४ घण्टे के अन्तर से औषध देनी चाहिये। रोग पुराना होने पर प्रातःकाल और सन्ध्या समय एक एक मात्रा औषध देनी चाहिये।

हूपिङ्ग खांसी।

—हूपिङ्ग कफ।

कूकरी खांसी के समान यह भी प्रायः बाल्यावस्था का ही रोग है। खासते समय "हूप" शब्द के समान एक प्रकार का शब्द होता है, इसी से इस का यह नाम पडा है। ठहर ठहर कर खासी का आक्रमण शुरू होता है। जब खासी उठती है तब ऊपरही ऊपर आक्षेपिक खासी आती है। अन्त में या तो चेप के समान कफ निकलता है और

था एक प्रकार के गाढे चुपकने पदार्थ की उलटी होती है।

खसेर के समान यह कभी कभी बहुव्यापक रूप से फैलती हुई देखी जाती है। तीन वरस के अन्दरही होता है। दस वरस की उमर के उपरान्त प्राय नही होती। यह रोग बडा ही कष्टकर होता है क्योंकि खासते खासते दम अटक जाने के समान होजाता है और मुह लाल रगका हो उठता है। यह रोग २।३ सप्ताह से लेकर बच्चे की प्रकृति के अनुसार कई महीने तक रह सकता है। एक वार होजाने के उपरान्त फिर यह रोग प्राय नहीं होता।

लक्षण।—पहले साधारण सर्दी के लक्षण यथा खांसी, बुखार सा रहना आदि के साथ उपस्थित होता है। एक सप्ताह के उपरान्त इस के विशेष आक्षेपिक खांसी के लक्षण मालुम पडने लगते है। गले के भीतर सुड सुडाहट के साथ खासी उठती है, खासी आने के पहले ही बच्चों को मालुम होजाता है, और वह कुछ सम्हल जाता है, पास की कोई चीज को दाब लेता है, खांसते समय आख और मुह लाल अथवा नीले रग के होजाते है, आखें ऐसी मालुम पडती है मानों वाहर निकल पडेंगी और आखों में पानी निकलता है। इस समय बच्चे की सूरत देखने से वास्तव में भय होता है, ऐसी मालूम होता है मानो दम अटक कर प्राण निकल जावेंगे। खासी वन्द होने पर ऐसा मालूम होता है मानों बच्चे को किसी प्रकार का रोग ही नहीं है। कभी कभी, उलटी होती है। वार वार उलटी होने से और खासी के कष्ट से वालक बहुत ही दुर्बल और कम जोर होजाता है। घूगरी खासी

जैसी सांघातिक होती है यह वैसी नहीं होती, किन्तु बिलकुल कम उमर और कम जोर बच्चों को सर्दी के दिनों में यह खासी होने से वास्तव में आशङ्का का विषय है।

चिकित्सा।—

१। प्रथमत ज्वर आदि में—एकोनाईट, बेलेडोना, काली-आइयोड, इत्यादि सर्दी की सब औषधें दीजाती है।

२। रोगी की बढी हुई हालत में—ड्रोसेरा, ब्रायोनिया, कैमोमिला, इपीका, नक्सवोमिका, ऐंटिमटार्ट।

३। पेट में यदि दोष रहे तो—इपीका, पलसाटिला, ऐन्टिमटार्ट।

४। यदि बांयठे आते हों तो—क्युप्रम, बेलेडोना, सिना, ओपियम।

एकोनाईट ३, ६ शक्ति।—रोग के प्रारम्भ में जब ज्वर, सूखी खासी, गले का दर्द आदि हो, बालक प्रत्येक खासी के समय ही गले को हाथ से दबाता हो, मानों वहां दर्द होता है, अत्यन्त घबराहट, बेचैनी और तकलीफ।

आर्सेनिक ६, ३० शक्ति।—अत्यन्त दुर्बलता, शरीर ठंडा और रक्तसून्य, अत्यन्त प्यास, बार बार थोडा थोडा पानी पीता हो, गरम मकान में अच्छा रहता हो, रात्रि को विशेष कर आधीरात के बाद बढना।

बेलेडोना ३, ६ शक्ति।—बार बार खांसी उठना,

रात को बढना, प्रत्येक बार खांसी के समय बालक का चहरा लाल रंग का हो उठता हो [नीले रंग का होना इपीका के लक्षण हैं], दोनों आखें सूजी हुई और लाल, नाक से खून निकलना ।

ब्रायोनियां ३, ६ शक्ति ।—खांसी का आक्रमण प्रधानतः सन्ध्या के समय या रात्रि में अथवा खाने पीने के उपरान्त उलटी होने के साथ ही आरम्भ हो, कफ उठता हो, खांसने से छाती में दर्द मालूम हो, मल कडा अथवा कब्ज, अत्यन्त चिडचिडापन, होंट सूखे और फटे हुए ।

कैमोमिला १२ शक्ति ।—सूखी खांसी, बच्चे को बहुत ही रुलाई आती हो, सर्वदा गोदी में लेकर फिरना पडता हो, हरा और पतला मल, सडी हुई बदबू, कपाल में गरम पसीना ।

सिना ६, ३० शक्ति ।—खांसते खांसते अचानक बालक कडा होजावे, खांसने के उपरान्त ही गले से लेकर पेट तक गडगडाहट का शब्द, दौडाने से, बात कहने से, और हँसने से खांसी का बढना, चहरे की रंगत बदली हुई और आखों के चारों ओर काली रंगत, कृमि के लक्षण यथा नाक खुरचना दांत किडकिडाना इत्यादि ।

इपीका ३, ६ शक्ति ।—ऐसी खांसी जिससे दम अटक जाता हो, बालक कडा और चहरा नीले रंगका

हो उठे; ऐसा मालुम हो मानो छाती में कफ जम रहा है किन्तु खासने से नहीं निकलता, (एंटिम टार्ट]। खासनेसे, सूखी उलटी हो, उबकाई आवे और श्लेष्मा की उलटी हो।

मार्कूरियस ६ शक्ति।—खासी केवल रात्रि में अथवा दिन में हो, दोवार आक्रमण हो, एक वार आक्रमण होने के उपरान्त शीघ्रही फिर आक्रमण हो, किन्तु दोनों के बीच में कुछ समय अवशर रहता हो, उलटी होने के समय नाक और मुहसे रक्त बाहर हो, रात को बहुत पसीने आना।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।—सूखी खांसी, प्रातःकाल के समय में बढना, खाँसते समय चहरा नीली रंगतका होना, नाक और मुहसे खून निकलना, सूखी उलटी, उलटी होना और कब्ज, खांसी उठते समय नाभिके स्थान में दर्द होना मानो फटकर टुकडे टुकडे होजावेंगे। ऐलोपैथिक औषध सेवन करने के बादही यह औषध विशेष उपकार दिखलाती है।

पलसाटिला ६ शक्ति।—प्रारम्भ से ही खासी के साथ अधिक कफ निकलना, बार बार श्लेष्मा अथवा खाये हुए पदार्थ की उलटी होना, उदरामय, विशेष कर रात्रि में, गरम मकान के भीतर सर्दी सी लगना, प्रकृति मृदु और शान्ति।

ऐन्टिम टार्ट ३,६ शक्ति।—खासी से पहिले ही बालक रो उठे, अथवा खाने पीने के बाद ही खासी उपस्थित

हो, गले में और छाती में कफ घडघडाता, ऐसा मालुम हो मानो सब में श्लेष्मा भरा है किन्तु खांसने से नहीं निकलता (इपीका), जी मिचलाना और उलटी, उस के साथही कपाल में ठण्डा पसीना, निद्रालुता।

औषध प्रयोग।—प्रारम्भ में दिन में ३।४ बार औषध देनाही यथेष्ट है। यदि आक्षेपिक खांसी दिखलाई पडे और बढने लगे तो २।१ घण्टे अन्तर से भी औषध दी जासक्ती है। आरोग्य होने के समय दिन में २।३ बार औषध दी जासक्ती है।

सहकारी उपाय।—बालक को क्रोधित न करना अथवा धमकाना नहीं चाहिये। क्योंकि अनेक समय प्रबल आवेग यथा दुःख क्रोध आदि के कारण खांसी बार बार उठती है। बालक का सदा सावधानी के साथ यत्न रखना चाहिये क्योंकि खांसी उठते के साथ ही गोदी में लेकर सावधानी के साथ बैठाना चाहिये। यदि ज्वर नहो तो मकानके अन्दर दरवाजे खिडकी सब बन्दकर बालकों की छाती और पीठमें गरम सरसों के तेलकी मालिश करनी चाहिये। सर्दी लगाना निषिद्ध है। यदि बालक बहुत कमजोर न हो गया हो और खांसी पुरानी पडगयी होतो थोडे गरम पानी से स्नान कराना बुरा नहीं है। गरम पानी में फलानेल भिगोकर छाती और पीठका सेक करना अच्छा है।

पथ्य।—बार बार थोडा खिलाना अच्छा है किन्तु एक साथ अधिक खिला देना अन्याय है। सहज में पचने

वाले पदार्थ के सिवाय और कुछ भी नहीं देना चाहिये। यदि बालक दूध पीता हो तो माता को भी बडी सावधानी से रहना चाहिये।

सर्दी खांसी।

(पालमोनारी कैटर)

सर्दी ज्वर और सर्दी खांसी ये इतने साधारण रोग हैं कि इनका विवरण लिखना निष्प्रयोजन मालूम पडता है। छींक आना, नाकसे पानीके समान निकलना, आंखसे जल गिरना, थोडा थोडा सिरदर्द, सर्दी सी लगना और ज्वर इत्यादि इसके प्राथमिक लक्षण हैं। जैसे जैसे रोग बढता जाता है वैसे ही गलेके भीतर जलन और सुरसुराहट मालूम होता है। पहले खांसी सूखी रहती है फिर कफ निकलने लगता है। पहले कफ सफेद रहता है पीछे गाढा और पीले रंगका हो जाता है। सब शरीर में दर्द और आलस्य मालूम होता है। जो खांसी साधारण रहती है वह क्रमशः बढती जाती है, छाती में दर्द मालूम होता है, खांसते समय दर्द जादा मालुम होताहै, सांस लेते समय कष्ट मालुम होता है, कफ और भी अधिक निकलने लगताहै और रङ्ग कुछ हरा अथवा कुछ पीला होता है। कभी कभी यह दुर्गन्ध युक्त भी होता है, जीभ मैली, मुहका बुरा स्वाद, भूख की कमी आदि सब लक्षण दिखलाई देते हैं।

कभी कभी सर्दी खांसी भी बहुव्यापक अथवा एपीडेमिक रूप में होते हुए दिखलाई पडती है। उस समय

उपरोक्त सब लक्षण और भी प्रबल होजाते हैं। इसी ऐपीडेमिक सर्दी ज्वर को इन्फ्लूएँज़ा कहते हैं।

चिकित्सा।—ऐकोनाइट ३–६ शक्ति।—सर्दी की प्रथमावस्था में फायदा करता है। विशेष कर यदि शुष्क और ठंडी हवा लगने के कारण सर्दी हो। सूखा और गरम शरीर, अथवा कम्प और उत्ताप, इस के साथ ही अत्यन्त प्यास, गले के भीतर सुड सुड और खकू खकू शब्द के समान खांसी, छाती में सुई चुभोने के समान दर्द, उस से सांस लेने में कष्ट होना [ब्राइयोनिया], भय, घबराहट और अत्यन्त बेचैनी।

बेलेडोना ३, ६ शक्ति।—लपकन के साथ सिर दर्द, लाल चहरा, गले में दर्द, गले के भीतर सुर्खी और सूजन, सूखी और बायठे वाली खांसी, साथ ही गले और छाती के भीतर सुड सुड मालूम होना [ब्राइयोनिया], खासते में दर्द मालूम होना इसी से रोगी खांसी को दाबने की कोशिश करे, खांसने के उपरान्त बालक रोता हो, सन्ध्या समय बढना।

ब्रायोनिया ३, ६ शक्ति।—सूखी अथवा तर खांसी और छातीमें सुई चुभोनेके समान दर्द, सास लेने और खांसते समय छाती में सुई चुभोने के समान दर्द [ऐकोनाइट, बेलेडोना), माथे में इतने जोर से दर्द होता हो कि मानो-मस्तक फटा जाता है, हिलने से बढना (बेलेडोना), क्रोधप्रवणता, रोगी बहुत ही चिडचिडा होजावे (कैमोमिला, नक्सवोमिका), प्रातःकाल के समय बढना।

डलकामारा ३ शक्ति ।—भीगने से अथवा गीले स्थान में रहने से यदि रोग हो, स्वरभङ्गता और गीली खासी, ठंडी हवा लगनेही से अथवा बरसाती हवा से बढना, सर्दी लगने से उदरामय।

हीपर सलफर ६,१२ शक्ति ।—ऐसा मालूम हो कि गले में कांटा छिद गया है, स्वरभङ्ग के साथ खांसी, कफ पतला और बहुत, मानो श्वास रोध करता है, देहका कोई अंश ठंड होने से ही खासी होना (रसटक्स)।

इपीका ३, ६ शक्ति ।—नाक बन्द होना, सूंघने की शक्ति विलुप्त (पलसेटिला), सांस रोकने वाली खांसी, सास लेने और निकालने से गले के भीतर घड घड करना, बालकों को खांसने के समय मानों दम अटक जाता है और मुंह की लाल रंगत होजाती है। छाती पर ऐसा मालुम हो मानो कफ जम रहा है किन्तु खांसने से नहीं निकलता (ऐंटिम टार्ट), जी मिचलाना और श्लेष्मा की उलटी होना।

मार्कूरियस वाईवस ६ शक्ति ।—ऐपीडेमिक सर्दी ज्वर, नाक से जलन पैदा करने वाली पानी के समान निकलना, गले में दर्द, निगलने में कष्ट, सूखी खांसी, ऐसा मालुम हो मानो छाती के भीतर खुरकी होरही है, साथ ही छाती और कमर में दर्द, खांसी का रात्रि में और बांई करवट से सोने में बढना, सर्दी और गर्मी मिली हुई मालुम होना, अधिक पसीना आना, किन्तु उस

से कुछ आराम मालुम न होना, सहज ही सर्दी लग जाना [हीपरसलफर]।

नक्सवोमिका ६, ३० शक्ति।—ज्वर आना और सर्दी सी लगना, कपाल में दर्द, दिन मे नाक बहना किन्तु रात्रि को बन्द होजाना, सूखी खासी और सिर दर्द, ऐसा मालुम होना मानो माथा फट जावेगा, गिरने से, बात कहने से अथवा चिन्ता करने से खांसी बढना, कब्ज, मल कठिन और कष्ट से निकलना, अत्यन्त चिडचिपन और अकेले रहने की इच्छा, प्रातःकाल के समय सबही लक्षणों का बढना।

पलसाटिला ६, ३० शक्ति।—माथे की सर्दी, किसी चीज का स्वाद न आना, और किसी की गन्ध न आना, साथ ही इस के सर्दी, ऐसी खुश्की मालुम हो मानो गले के भीतर से खाल उचल गई, साथ ही इस के स्वरभङ्गता (नक्सवोमिका), पतली खासी, कफ निकलना, सोने के उपरान्त रात्रि में सूखी खासी, उठकर बैठ जाने से आराम मालूम पडना, छाती जकडी सी मालूम होना, गरम मकान में भी सर्दी सी लगना, सन्ध्या समय इन सब लक्षणों का बढना। शान्त प्रकृति के मनुष्य जो सामान्य कारण से ही रोवें अथवा दुःख प्रकाशित करें उनके लिये यह औषध विशेष उपकारी है।

सलफर ६,३० शक्ति—सर्दी और नाकसे साफ पानी निकलता हो, स्वाद और सूंघनेकी शक्ति बिलकुल ही न हो (पलसाटिला), छातीकेभीतर कफ अत्यन्तही धडधडाताहो, खासी

प्रातःकाल के समय अधिक हो, सहज ही में सर्दी लग जावे। दुबले पतले शरीर के मनुष्य जो माथा नीचा कर चलते हैं उनके लिये यह औषध अत्यन्त उपकारी है।

औषध प्रयोग।—जब तक आराम न हो ३।४ घण्टे के अन्तर से औषध देना चाहिये।

सहकारी उपाय।—यदि छाती में कफ जम जाने के कारण कष्ट हो तो छाती में सरसों का तेल गरम कर उससे मालिश करनेसे और उपरान्त गरम पानी से सेकने से कफ कुछ मुलायम हो जाता है और उससे कष्ट की कमी एवम् आराम मालुम पड़ता है। यदि ज्वर और छातीका कोई रोग न होतो स्नान करने से आराम ही होताहै कुछ नुकसान नहीं होता।

पथ्य।—यदि ज्वरसा मालुम हो तो साबूदाना और चार्ली उपरान्त सूजी की रोटी। सर्दी खासी में दूध और मीठा जितना कम खाया जावेगा उतना ही अच्छा है।

खांसी वा उत्काश।

(कफ)

फेंफड़े से आवाज के साथ और जोर से वायु निकलने का नामही खासीहै। खासीको एक ही रोग नहीं कह सकते, यह किसी रोगका एक लक्षण मात्रहै। खासी दो प्रकार होतीहै।
(१) तरल अथवा सरस खासी जिस में कफ निकलता हो।
[२] सूखी खासी अर्थात् जिसमें कफ न निकलता हो।

किसी पीड़ा के कारण फेंफड़े और श्वास नली में श्लेष्मा

पैदा होने से उसको बाहर निकाल देनाही खांसी का उद्देश्य है। यह अनेक समय किसी कठिन छाती के रोग का पूर्वलक्षण होता है। अतएव खांसीकी ओर दृष्टि रख कर यत्न के साथ उसकी चिकित्सा करना कर्तव्य है।

चिकित्सा।—

१। नयी खांसी—एकोनाइट, इपीका, बलडोना, जेलसीमीनम।

२। पुरानी खांसी—कैलकेरिया-कार्ब, सल्फर, मर्क्युरियस, स्टानम, एन्टिम-टार्ठ, कार्ब-वेज, नक्सवोमिका।

३। रात्रिमें खांसी—वेलेडोना, मर्क्युरियस, ड्रूसेरा, हायोसायेमस।

४। प्रातःकाल के समय बढ़ना—ब्रायोनिया, कैलकेरिया, ड्रूसेरा, नेट्रम-म्यूरियेटिक, नक्सवोमिका, पलसाटिला।

५। रात्रिमें वृद्धि—आर्सेनिक, वेलेडोना, कैलकेरिया, कोनियम, हायोसायेमस कालि कार्ब, नक्सवोमिका, रुमेक्स।

६। शयन करनेसे वृद्धि—कोनियम, हायोसायेमस, पलसाटिला, सल्फर।

७। शयन करनेसे आराम—सिपिया।

८। आक्षेपिक खांसी—वेलेडोना, ब्रायोनिया, हायोसायेमस, इपीका, ड्रोसेरा, काली-कार्ब।

९। सरल खांसी—एन्टिम टार्ट, इपीका, मर्क्युरियस, लाईकोपोडियम, हीपरसलफर, पलसाटिला।

१०। सूखी खांसी—वेलेडोना, ब्रायोनिया, कैलकेरिया, हायोसायेमस, इपीका, नक्सवोमिका, फासफोरस, रुमेक्स।

११। स्नायविक खांसी—इपीका, हायोसायेमस, कोनियम, ड्रोसेरा।

१२। अजीर्ण के साथ खासी—नक्सवोमिका, हीपर-सलफर।

१३। उलटीके साथ खासी—इपीका, टेटिम टार्ट, ड्रोसेरा, पलसाटिला।

१४। खून आनेके साथ खासी—इपीका, आर्निका, फेरम, सलफर।

१५। स्वरभङ्ग के साथ खांसी—जेलसीमीनम, स्पञ्जिया, फासफोरस, कार्ब-वेज, कास्टिकम, हीपर-सलफर।

एकोनाईट ३,६ शक्ति।—बड़ी तेज सूखी खासी कण्ठ की नली में सुड़सुड़ाहट होनेके कारण उठती हो, और वह खासी जो पानीपीने से, तमाखू पीनेसे और रात्रि में बढ़ती हो, ऐसे मनुष्य को खासी जिसकी धातु रक्त प्रधान हो, पश्चिम की ठण्डी हवा लगनेसे खासी।

आर्सेनिक ६,३० शक्ति।—सूखी खासी, गन्धक के धूपके कारण उत्पन्न हुई हो, उससे दमसा घुटता हो, खासी हो किन्तु कफ बहुत कम और कष्टके साथ निकलता हो, कभी कभी उसमें खूनका छींटा रहताहो, स्वास कष्ट मालुम होताहो, विशेषकर सीढ़ी चढ़नेमें, घबराहट, बेचैनी।

बेलेडोना ३, ६ शक्ति।—सूखी आक्षेपिक खासी, रात्रि में और हिलने झुलने से बढ़ना, छाती में तकलीफ, बालक खासते में रोता हो, ऐसा मालूम होकि गले में धूल अथवा रुई भर रही है, गले में बराबर सुड़सुड़ी मालूम हो और हरवक्त खासने की इच्छा हो, चहरा लाल, लपकन और सिर दर्द।

आयोनिया ३, ६ शक्ति ।—सूखी खांसी और उलटी, रात्रि के समय विछोने में लेटने से खांसी, खांसी के कारण रोगी को उठ कर बैठना पडे, खांसते में अथवा गहरा श्वास लेने में अथवा निकालने में छाती में सुई चुभोने कासा दर्द, खासने से ऐसा मालूम हो मानो मस्तक और छाती फट जावेगी, सूखा कठिन मल, अत्यन्त चिड चिडापन और थोडी सी बात में क्रोधित हो उठना।

कैलकेरिया १२, ३० शक्ति ।—सूखी खांसी विशेष कर सन्ध्या के समय और आधीरात के बाद, प्रात काल में खांसी, उस समय पीले रंग का कफ निकलना, सीढी से ऊपर चढने में हाप उठना, इसी कारण से बैठ जाना पडे, पैर ठंडे और गीले।

कार्ब-वेज १२, ३० शक्ति ।—सूखी खांसी, वार वार उलटी अथवा उवकाई, प्रवल खांसी, उस से पीले रंग का मवाद निकलना, प्रात काल के समयकी पुरानी सूखी खांसी।

कास्टिकम १२, ३० शक्ति ।—सर्वदा गले में सुरसुराहट होकर सूखी खांसी, सन्ध्या के समय आधी रात तक बढना, ठंडा जल पीने से कम होना, खासते खासते वेमालूम मल मूत्र निकल जाना, स्वरभङ्गना विशेष कर प्रात काल के समय।

कैमोमिला ६, १२ शक्ति ।—सूखी और सुरसुरी के साथ खासी, रात्रि में बढना, यहां तक कि नींद की

हालत में भी, विशेष कर बच्चों को, एक कनपटी लाल, दूसरी कनपटी रक्तशून्य, रोगी अत्यन्त चिडचिडा हो, शिष्टाचार के साथ लोगों की बात का जवाब न देसकता हो, बालकों को बहुत ही रुलाई, सर्वदा गोदी में चढ कर घूमना चाहै।

सीना ६,३० शक्ति।—जिन बच्चोंके पेटमें कीडे हों उनको सूखी आक्षेपिक खासी, बालक चम उठताहो, ऐसा हो मानों दम अटक जाताहै, खासता हो और उबकाई लेता हो मानों गलेके भीतर कुछ अटक रहाहै, नाक खुरचना और खुजाना, पेशाब को थोडी देर रख देनेसे दुधके समान सफेद होजावे।

हीपर-सलफर १२,३० शक्ति।—घुर घुराहट के समान खांसी और वायु नलके भीतर घडघड शब्द होना, घडघड शब्द के साथ श्वास बन्द करने वाली खासी, रात्रि को आधीरात के उपरान्त बढना, सूखी, स्वरभङ्ग के साथ खासी प्रात काल के समय बढना, शरीर उघाडनेकी इच्छा न करना, शरीर में सामान्य सर्दी लगने हीसे खासी बढ़जाना।

हायोसायेमस ३,६ शक्ति।—सूखी आक्षेपिक खांसी विशेष कर रात्रिमें और सोकर उठ बैठने से आराम मालूम होना, चहरेकी रङ्गत नीली नीली, सब पट्ठों का फडकना और अकडना, हिस्टीरिया रोगग्रस्त स्त्री और बालकोंके लिये यह अत्यन्त उपकारी है।

इग्नेशिया ३,६ शक्ति।—गन्धकका धूआ अथवा धूल गले में जानेके कारण सूखी आक्षेपिक खासी, ऐसी खासी जिसमें सर्वदा खौंखौं शब्द युक्त सूखी खासी होना, सन्ध्या के समय शयन करनेसे बढना, रोगी शोकसे आतुर हो, खांसते समय बवासीर के मस्सों में सुई चुभोने कासा दर्द मालूम होना।

इपीका ३,६ शक्ति।—वायु नल के ऊपरके भाग घुडघुडाहटके कारण सूखी खांसी [छातीमें घुडघुडाहट—फासफोरस], श्वास रोकने वाली खांसी, श्वास लेते और निकालते में कफ छाती के भीतर घडघडाता हो, बालकों को खासते समय दम अटकजानेकासा लक्षण मालूम होते हों और चहरा नीला होजावे, बहुत उबकाई आना और श्लेष्मा की उलटी होना, ऐसा मालुम होकि छातीमें कफ भर रहाहै किन्तु खासनेसे नहीं निकलता।

मर्क्यूरियस ६, १२ शक्ति।—सूखी खांसी, उस में ऐसा शब्द होकि मानों छाती के भीतर सब सूखा पडा है। पीले कफ के साथ खांसी, कभी कभी सामान्य रक्त भी निकलता हो, पसीने आते हों किन्तु किसी प्रकार का आराम न होता हो, रात्रि के समय और वर्षा के गीले दिनों में रोगकी वृद्धि [डल्कामारा और रस्टक्स के समान]।

नक्सवोमिका ६, ३० शक्ति।—गले के भीतर छिल जाने अथवा खर खरा मालूम होने के कारण सूखी खांसी [फासफोरस और पलसेटिला भी इस अवस्था की औषध है], खासी के साथ सिर दर्द—खांसते समय मालूम

हो माथा फट जावेगा किम्वा पाकाशय में दर्द, कोष्ठबद्ध, मल वृहद, कठिन और कष्ट के साथ निकले ।

फासफोरस ६, ३० शक्ति ।—उच्चस्वर से पढ़ने से, बोलने से हसने से, अथवा जल आदि पीने से गले और छाती के भीतर सुडसुडाहट के साथ सूखी खासी का उद्रेक होना, छाती जकडी हुई और सन्ध्या के समय सूखी, सुडसुडाहट के साथ खांसी (पलसाटिला और सलफर), मल लम्बा, पतला, कठिन और कष्ट के साथ निकलता हो। यह औषध लम्बे पतले और यक्ष्मा दूषित मनुष्यों के लिये अधिक उपयोगी है।

पलसाटिला ६ शक्ति ।—रात्रि के समय सूखी खासी, बिछोने पर उठ कर बैठ जाने से आराम मालूम हो (हायोसायेमस), सरल खासी, पीला हरा अथवा कडवा कफ सहजही में निकलता हो, प्रात काल के समय खासी, उस समय पीला, नमकीन, कडवा और विरक्ति उत्पन्न करने वाला कफ निकलता हो, कभी कभी उलटी भी होजाती हो, सन्ध्या अथवा तीसरे पहरसेभी सब लक्षण बढ़ते हों।

सलफर ६, ३० शक्ति ।—सूखी खासी और गले के भीतर खुदकी और स्वरभग, सरल खामी, हरा हरा और मीठे मीठ स्वाद का डेला डेला कफ निकलताहो, छाती के भीतर अतिशय श्लेष्मा घड घड करताहो, प्रात - काल के समय खामी का बढ़ना, शरीर पर से छिलके के समान मरी हुई खाल उचटती हो और अनेक प्रकार के चर्म रोग। दुबले पतले आदमियों के लिये जो मस्तक

नीचा कर के चलते हैं।

ऐंटिम टार्ट ३,६ शक्ति ।—सरल खांसी किन्तु खांसनेसे कफ न निकलताहो, घड घड शब्द के साथ अथवा गहरी खासी, रात्रिको बढना और इसके साथ दम अटकने के समान मालूम होना, ऐसा मालुम होकि गलेके भीतर कफ भररहा है किन्तु निकलता नहो [इपीका के समान), उवकाई आना और अधिक परिाणममें श्लेष्मा की उलटी होना, रात दिन प्यास।

ऐसिड नाईट्रिक ६ शक्ति ।—पुरानी खांसी, आलस्य और दुर्वलता, उत्साह और उद्यमहीन, कोष्टबद्ध रोगी दुवला होजावे, भूख न रहे, आहार के उपरान्त पूर्णता मालूम हो, पाकाशयमें दर्द, दिन में खासी अधिक।

एलुमिना १२ शक्ति ।—काग लटक जाने से खांसी, गलेमें दर्द और देह का कृश होजाना।

कोनियम ६ शक्ति ।—कभी कभी सूखी खांसी, खांसी के पहिले गलेके भीतर खुजली, सोनेसे, बोलनेसे और हासने से खासी बढना, स्नायविक खासी।

कूप्रम ६,१२ शक्ति ।—खासने के उपरान्त रोगी कापता रहे, ठण्डा जल पीने से खांसी कम उठतीहो, आक्षेपिक खाम्सी, यथा दमके साथ खासी इत्यादि।

ड्रोसेरा ३,१२ शक्ति ।—उवकाई अथवा उलटी के साथ स्नायविक आक्षेपिक खांसी, रात्रिको वृद्धि, कभी कभी खूनका दाग भी रहताहै, एक एक बार खांसी का

फिर [दौरा] अथवा आक्रमण आवे, सोनेसे और रात्रिमें अत्यन्त वृद्धि हो, चेचक के उपरान्त आक्षेपिक खासी में यह औषध उत्तम है। उलटीके साथ सूखी खासी में यह औषध अत्यन्त उपकारी है।

स्टानम १२,३०-शक्ति।—पुरानी सरल खांसी, अधिक और हरा, मीठे स्वादवाला मवाद के समान श्लेष्मा निकलता हो, रात्रि के समय पसीना आवे।

लाइकोपोडियम १२,३० शक्ति।—पुरानी खांसी, प्रात काल सूखी खांसी, दिन में कफ निकले, रात्रि में कष्ट हो, कफ नमकीन हो, गाढ़ा, पीला, और मवाद के समान मयला, ठंडी चीज खाने से खांसी हो, सामान्य आहार से ही पेट भरा मालूम हो, पेट में वायु, तीसरे पहर ४ बजे से ८ बजे तक खांसी अधिक।

कालीबाईक्रामिक ६ शक्ति।—साई साई शब्द, उबकाई, ऐसा लहसदार कफ निकले कि जिसको खींचने से रस्सी के समान पैर तक लम्बा होजावे। खासनेसे छाती से पीठ तक दरद मालुम हो।

औषध प्रयोग।—यदि खांसी प्रबल होतो २। ३ घंटे के अन्तर में एक एक मात्रा औषध देनी चाहिये। यदि रोग पहले की अपेक्षा कम प्रबल हो अथवा आराम हो आवे तो दिन के भीतर २। ३ मात्रा औषध यथेष्ट है। पुरानी खासी में दिन में दो बार औषध देनी चाहिये।

सहकारी उपाय।—अनेक समय रोगी यदि चाहे तो कोशिश कर के खांसी को रोक सकता है। जिन को सर्वदा सर्दी और खांसी होती है उनको प्रति दिन ठंडे पानी से स्नान करना और छाती पीठ गला आदि ठंडे पानी से अच्छी तरह रगड़ना उचित है। स्वच्छ मकान में रहना, उपयुक्त व्यायाम करना, स्वच्छ और स्वास्थ्य की उन्नति करने वाली वायु का सेवन करना, धूल और मनुष्यों से भरे हुए दुर्गन्धमय स्थान का परित्याग करना आदि खांसी के रोगी के लिये परम आवश्यक है। यदि सूखी खांसी होतो सर्वदा मुंह में मिसरी रखना अच्छा है। यदि गले में सुड़सुड़ाहट के साथ खासी आवे तो गरम पानी से गले को सेकना बुरा नहीं है। यदि सहजही में खांसी को आराम न हो तो किसी अच्छे चिकित्सक द्वारा छाती की परीक्षा करा कर ठीक तरह से इलाज कराना चाहिये।

फेंफड़े से खून निकलना।

(हिमाप्टिशिस)

फेंफड़े से रक्तस्राव होने से पहले छाती के भीतर गरमी और पूर्णता मालुम होती है इस के उपरान्त गले से खून निकलेगा इस प्रकार का एक स्राव मालुम होने लगता है। गले के भीतर सुड़ सुड़ कर के खासी उठती है और खासने के साथ ही बेमालुम अथवा कष्ट के साथ गड़ गड़ शब्द के साथ खून निकलता है। कभी कभी छाती के भीतर जलन भी मालुम होती है। रक्त सबको और सर्वदा एक बराबर नहीं गिरता। जब छोटी धमनी

से रक्त गिरता है तब खासी के साथ खून का छींटा दिखलाई पडता है। यह खून कभी उज्ज्वल लाल रंग का होता है और कभी काला सा कभी पतला और कभी जमा हुआ होता है। इस प्रकार सामान्य खून गिरने को रक्त निष्ठीवन कहते हैं, यह सहजही औषध देने से आराम होजाता है। किन्तु जब बडी धमनी टूट जाती है तब नाक और मुह से खून निकलने लगता है और बहुत ही थोडे समय में बकरा काटने के समान बहुत सा रक्त निकलता है जिसको देख कर भयभीत और चमकित होना पडता है। इसीको फेंफडा से रक्तस्राव कहते है। इस प्रकार रक्तस्राव अति सांघातिक होता है।

यक्ष्माकाश बहुतही सांघातिक रोग होता है, निष्ठीवन और फेंफडे का रक्तस्राव अधिकतर इसी प्राणनाशक रोग के साथ हुआ करताहै। फेंफडेसे खून निकलता देख कर पहलेही यक्ष्मा खासी की बात मनमें उदय होती है।

कारण।—यक्ष्मा खासी के सिवाय औरभी अनेक कारणोंसे फेंफडेसे रक्त स्राव हो सकता है यथा अत्यन्त शारीरिक परिश्रम, बहुत भारी चीजका उठाना, बवासीर या स्त्रीयोंके ऋतु आदिके बन्द होनेसे, जोर के साथ फूंक देकर बासरी बजाने से और खूब जोरके साथ बात करने से इत्यादि।

चिकित्सा।—एकोनाईट ३,६ शक्ति।—रोगाक्रमण के पहले छाती में पूर्ण और जलन के साथ दर्द

मालूम होना, दिल धड़कना, घबराहट और बेचैनी, अत्यन्त भय और मानसिक यन्त्रणा।

आर्निका ६,३० शक्ति।—गिर पड़नेसे अथवा और किसी कारणसे छाती और पीठ में चोट लगनेके कारण, कालेसे रङ्गका और जमा हुआ गट्टे दार खून गिरना, छाती के भीतर बीच में सुड़सुड़ाहट और दर्द, कुचल जाने से जैसा होताहै खांसते समय ठीक इसी प्रकारका कष्ट होना, रोगी जिस विस्तरपर सोताहै इसका बहुत ही कड़ा मालूम पड़ना।

बेलेडोना ३,६ शक्ति।—छाती और माथेमें खून आना, छाती में सुई चुभोने के समान दर्द मालुम होना, हिलानेसे बढ़ना, माथा हिलानेस अथवा हिलानेके उपरान्त उठनेसे सिर घूमना, गलेके भीतर अत्यन्त सुड़सुड़ाहटके साथ खांसी और खून मिलाहुआ श्लेष्मा निकलना।

चायना ६,३० शक्ति।—अत्यन्त रक्तस्राव होने से कान के भीतर भों भों शब्द होना और चक्कर से आना, ठीक एकही समय पर रक्तस्राव हो, हर तीसरे दिन बढ़ना, कमजोर करने वाला रातका पसीना। अधिक रक्त स्राव होनेके उपरान्त नाड़ी दुर्बल, आखों के आगे अन्धकार पड़ना, शरीर ठण्डा रहना आदि लक्षण यदि उपस्थित हों तो यह औषध फायदा करती है।

फेरम ६,३० शक्ति।—रक्त स्राव और छाती के अनेक स्थानों में थोड़ी देर ठहरने वाला दर्द, और धीरे पैदल चलनेसे आराम [अति सामान्य हिलने झुलने से बढ़ना, इपीका],

दोनों कन्धों के बीच में दर्द और रक्त स्राव, स्वच्छ उजले लाल रंग का खून गिरना, दिल धड़कना और श्वास कष्ट, अति सामान्य परिश्रम या मानसिक आवेग से ही चेहरा लाल हो उठना।

हायोसायमस ३,६ शक्ति।—रक्त स्रावके पहिले सूखा खांसी, विशेषकर रात्रिके समय, उससे रोगी को उठकर बैठजाना पड़े, सोते सोते बार बार अचानक निद्रा भङ्ग होना, चहरा लाल, दोनो आंखों से टकटकी बांधकर देखना तथा दृष्टिका एकही स्थान पर जमजाना, सब चीजें बहुत बड़ा दीखना, बारबार अपने हाथ की ओर देखना क्यों कि हाथ बहुत बड़ा दिखलाई देता है।

फासफोरस ३०,२०० शक्ति।—छाती जकड़ी-हुई मालुम हो और सूखी खांसी, ऋतु बन्द होजावे और उसके बदले में मुहसे खून निकलना [इस अवस्था में आर्सेनिक, ब्रायोनिया और पलसाटिला भी उपकारी हैं], यक्ष्मादोषग्रस्त धातु।

पलसाटिला।—कष्टसाध्य रोगी, स्राव काला और गट्टेदार (उजले लाल रङ्गका—एकोनाइट, डल्कामारा रसटक्स), सरल खांसी, गरम मकान में सर्दी मालूम होना, जी मिचलाना और पाकाशय भीतर से खाल मालुम पड़ना, स्वच्छ ठण्डी हवा की इच्छा करना, गरम मकान के भीतर रहनेसे बढ़ना, रजःस्राव बन्द होना अथवा कम होना।

रसटक्स ६,३० शक्ति।—सूखी खांसी, मालुम हो

मानों खांसनेसे छाती के भीतर कुछ टुट जावेगा, उजले लाल रङ्गका रक्त स्राव [पलसाटिला), छाती के भीतर खुडखुडाहट होनेसे खांसी उठना, जोरसे कोई भारी चीज उठाने से, कोई बहुत ऊची वस्तु लेनेके लिये दोनो हाथ खूब ऊचे करने के कारण रक्तस्राव हो तो यह औषध देनी चाहिये।

औषध प्रयोग ।—यदि रोग प्रवल हो तो जब तक रक्तस्राव बन्द न हो अथवा कम न हो तब तक १५।२० मिनिट के अन्तर से एक एक मात्रा औषधि देनी चाहिये। रोग कम होने पर २।३ घटे के अन्तर से।

सहकारी उपाय ।—रोगी के लिये सम्पूर्ण शारीरिक और मानसिक विश्राम परम आवश्यक है। इस बात पर विशेष दृष्टि रखनी चाहिये कि रोगी को किसी प्रकार से मानसिक विकार, क्रोध अथवा दुःख न हो। यदि प्यास हो तो ठंडा जल पीने के लिये देना चाहिये। खाने पीने की सब वस्तु ठडी करके देनी चाहिये।

पथ्य ।—हलका और पुष्टिकर भोजन देना चाहिये। साबूदाना, वार्ली थोडा दूध सब से अच्छी पथ्य हैं। मच्छी मांस और तेल में पके हुए गरम पदार्थ निषिद्ध हैं। सब साग भाजी घी में बने हुए देना अच्छे हैं।

दम्मा ।

(एजमा ।

यह रोग देखने में जितना भयानक और रोगी को

कष्ट देने वाला है उतना रोगी के प्राणों के लिये संशय-जनक रोग नहीं है। श्वास कष्ट—श्वास निकलने की अपेक्षा लेने में अधिक कष्ट—खासी, गले में सांई सांई ; शब्द होना, छाती दबी हुई सी मालुम होना, मुह की रंगत बिगडी हुई, सब शरीर पसीनों से तर, रोगी श्वास लेने के लिये बेचैन। इस रोग का कोई विशेष समय नहीं है किन्तु प्राय पिछली रात में ही होता है। उस समय रोगी बिछौने पर से उठ बैठता है—दोनों कंधे और गर्दन ऊंची होजाती है, आखें निकली हुई, नाक फूली हुई, श्वास लेने के लिये रोगी हांपता रहे, इस प्रकार की कष्टकर अवस्था थोडी देर रहे किम्वा बहुत देर, फिर धीरे धीरे कफ निकलने लग जावे। श्लेष्मा निकल जाने के उपरान्त रोगी को बहुत कुछ आराम मालुम होता है और सोजाता है। इस के साथ ज्वर नहीं रहता। इस रोग का जिस प्रकार समय की कुछ निश्चय नहीं है उसी प्रकार स्थान की भी निश्चय नहीं है। जो मनुष्य जिस स्थान में अच्छा रहता हो उस को उसी स्थान में देख कर रहना चाहिये।

कारण।—प्राय यह रोग कुलगत होते हुए देखा गया है अर्थात यदि माता पिता को दमेका रोग होतो पुत्र कन्या कोभी होजाता है। इसी कारण किसी किसी परिवारमें यह रोग अधिक देखा जाता है। जिसको यह रोग पैतृक दोष के कारण होता है इसी को कठिनता से आराम होताहै। और किसी कारण से यदि दमेका रोग उत्पन्न होतो निम्नलिखित औष-

भौंसे आरोग्य होते हुए अथवा बहुत कुछ फायदा होते हुए देखा जाता है। दमेका रोग अत्यन्त दुश्चिकित्स्य रोग है। अर्थात इसकी चिकित्सा बड़ी ही कठिनता से होती है।

कोई कोई यह कहते हैं कि देहके भीतर कोई पुराना विष रहने से दमेका रोग होता है। कभी कभी चर्म रोग, यथा, खाज दाद, आम्वात इत्यादि को वाहिक औषधि द्वारा वैठा देनेसे दमा होते हुए हमने देखा है। इस बात को वेही लोग जान सके हैं जिन्होंने धीर चित्त से परीक्षा की है कि चर्मरोग की चिकित्सा करने में ऊपरी लेप लगाकर बीमारी को दवा देनेसे मनुष्यके स्वास्थ्य के लिये कितनी सांघातिक बुराइयां पैदा हो जाती है।

दमेके उत्तेजक कारणों में से तेज गन्धक, धूल, उत्तेजक दूषित भाप, गन्धक का धूंआ, वायु परिवर्तन, अजीर्ण अथवा पेट का दोष आदि प्रधान है।

चिकित्सा।—

१। पेट फूलने के कारण दमा—कार्ब वेज, चायना, सलफर, नक्सवोमिका।

२। श्लेष्मा प्रधान दमा—आर्सेनिक, कूप्रम, पलसाटिला, स्टानम, एंटिम टार्ट, इपीका, नक्सवोमिका।

३। वायु प्रधान दमा—कैकटस, कूप्रम, इपीका, लैकेसिस, लोवेलिया, नक्सवोमिका, ब्लेटा-ओरियेन्टेलिस, साम्बूकस, सलफर।

४। ऋतु दोषके साथ दमा—पलसाटिला, कूप्रम, सिपिया।

५। दमेके आक्रमण के समय—अर्ककपूर सुंघाना, इपीका,

नक्सवोमिका, आर्सेनिक, लोबेलिया, ब्लेटा, साम्बूकस।

६। दमे का दोष दूर करने के लिये—कैलकेरिया, सलफर, नक्सवोमिका, आर्सेनिक, लैकेसिस, लाईकोपोडियम।

७। सर्दी लगने से दमा—ऐकोनाईट, ब्रायोनिया, डलकामारा, इपीका, आर्सेनिक।

८। सर्दी बैठ जाने से दमा—आर्सेनिक, इपीका, नक्सवोमिका, पलसाटिला, ऐंटिम टार्ट।

९। चर्म रोग अथवा उद्भेद बैठ जाने से दमा—इपीका, पलसाटिला, आर्सेनिक, सलफर, कार्ब-वेज।

ऐकोनाईट ३,६ शक्ति।—श्वास खूब आता और जाता हो, विशेष कर सोते समय, श्वासकष्ट, गहरा श्वास नहीं लिया जासके, आक्षेपिक खांसी, अत्यन्त भय और जीका घबराहट, मृत्यु भय (आर्सेनिक), रोगी यह कहता हो कि अमुक दिन मेरी मृत्यु होगी।

आर्सेनिक ६,३० शक्ति।—श्वास का बहुत आना जाना, उस में श्वास कृच्छ्रता, दर्द और तकलीफ, विशेष कर उचाई पर चढने में, दम अटक जाने के समान आक्रमण हो, विशेष कर रात्रि के समय, सन्ध्या के समय और सोने पर जीकी बहुत बेचैनी और घबराहट और तकलीफ इस के साथ ही मृत्यु भय, अत्यन्त प्यास, बार बार थोडा थोडा पानी पीना, दम अटक जाने के भय से सो न सकना, ऐसा मनुष्य जिस के शरीर में रक्त कम हो [अधिक रक्त वाले मनुष्य को ऐकोनाईट]।

वेलेडोना ३,६ शक्ति ।—रोग का आक्रमण प्राय तीसरे पहर अथवा सन्ध्या के समय हो, ऐसा मालुम होकि फेफडे के अदर धूल भर रही है, मस्तक पीछे को हिलाने से अथवा श्वास वन्द करने से आराम, आंख और मुह लाल रग का और माथा गरम, सूखी आक्षेपिक खांसी, विशेष कर रात्रि में, निद्रालुता मालुम हो किन्तु रोगी सो न सके, रक्तपूर्ण धातु वाला मनुष्य।

ब्रायोनिया ६,१२ शक्ति ।—रोगी स्थिर और चुप चाप पडा रहना चाहे क्योंकि थोडा साभी हिलने चलने से कष्ट मालुम हो, वारम्वार सूखी खांसी अथवा खांसी के साथ डेले के डेले कफ निकलना, खांसने से अथवा सांस लेने से छाती में सुई सी डूबना, सूखा कठिन मल।

चायना १२,३० शक्ति । ऐसा मालुम होकि रोगी मर जावेगा। पानी पीनेसे और रात्रिके समय वढना, तीसरे दिन तवियत ठीक रहना।

इपीका ३,६ शक्ति । अक्षेपिक दमा और उसके साथही छाती और गलेमें जोर की सिकुडन मालुम पडना, छाती मानो जकडी हुई है और वहुत घटघड शब्द केसाथ श्वास आता जाताहै, सासलेने से छाती में धड धड शब्द होना, गले और छाती में सुकुडन होनेसे ऐसा मालुम होना मानों दम अटक जाताहै, सामान्य हिलनेसे ही वढना (ब्रायोनिया की तरह), उवकाई अथवा खासते खासते उलटी।

कूप्रम ६,१२ शक्ति ।—वायु प्रधान आक्षेपिक दमा,

अत्यन्त श्वास कष्ट और दम बन्द होनेकी आशंका, रात्रि को बढ़ना, अचानक सास चढ़ना, १ से तीन घण्टे तक रहना, फिर अचानक चला जाना, सांईसांई घड़घड़ आदि अनेक प्रकारके शब्द के साथ कष्टकर सास आना जाना। ऋतु के समय वृद्धि। बालक, हिस्टीरिया रोगी को पच भय और सर्दी के उपरान्त और ऋतु के पहले उपकारी है।

लोबेलिया इनुफ्लेटा मदर, ३शक्ति।—सास चढ़ने के पहले समस्त शरीर, यहा तक कि हाथ की अगुली से लेकर पैर की अगुली तक कुट कुट हो, श्वास प्रश्वास उद्वेगयुक्त, लम्बी सास लेने की इच्छा, सर्दी लगने से और गरम भोजन खाने से बढ़ना, दमे के आक्रमण के समय यह औषध वार वार सेवन करने से बड़ा फायदा होता है।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।—परिपाक शक्ति की दुर्बलता, पाकाशयकी पूर्णता मालुमहोना, डकार आने से कम मालूम होना, प्रातःकाल और भोजन के उपरान्त श्वास कष्ट मालूम होना, रात्रि के समय श्वास कृच्छ्रता का आक्रमण, विशेष कर आधी रात्रि के उपरान्त, खासी का अधिकता और अति कष्ट के साथ कफ निकलनो।

साम्बूकस१×,३×, शक्ति।—रात्रि के समय दमे का आक्रमण उपस्थित हो और रोगी अत्यन्त तड़फड़ावे, श्वास रोधक खासी, प्राय आधी रात्रि के समय, बिछौने पर सोने अथवा माथा नीचा करने ही से वृद्धि।

सलफर ६, ३० शक्ति।—पुराना दमा, निद्रित

दशा में अथवा सन्ध्या के समय दमे का आक्रमण उपस्थित हो, छाती के चारों ओर जकड़ा हुआ सा मालूम होना तथा ऐसा मालूम होना मानो श्वास के रस्ते में धूल भर रही है, स्वरभङ्गता के साथ सूखी खांसी, अथवा छाती में दर्द और दबाव मालूम होने के साथ सरल खांसी, रोगी वार वार दुर्वल होकर अवसन्न होजावे, माथे के ऊपर सर्वदा गरमी मालूम हो।

ऐंटिम-टार्ट ३, ६ शक्ति।—उद्वेग के साथ श्वास कष्ट और बहुत श्वास आना जाना, इस लिये सीधा होकर बैठे रहने की इच्छा हो, रोगी जब खांसता हो तब मालूम होकि छाती के भीतर श्लेष्मा भरा है किन्तु खांसने से बिलकुल नहीं निकलता [इपीका की तरह]।

विराट्रम-एल्बम ६, १२ शक्ति।—चायना, आर्सेनिक और इपीका के उपरान्त प्राय यह दिया जाता है। बहुत ही सवेरे आक्रमण उपस्थित होना, नाक कान और दोनो पैर ठंडे, कपाल में ठंडा पसीना (गरम पसीना-कैमोमिला) और अत्यन्त बलक्षय, दुर्वल करने वाला उदरामय।

औषध प्रयोग।—रोग के प्रबल होने के लक्षण जब तक कम नहो तब तक आधे घंटे के अन्तर से दवा खानी चाहिये, कम होने पर फिर ठहर ठहर कर औषध देनी चाहिये।

सहकारी उपाय।—दमा प्राय दो प्रकार का

होता है, एक श्लेष्मा प्रधान और एक वायु प्रधान। श्लेष्मा प्रधान दमे में सर्दी, स्नान, ओस आदि असह्य होते हैं, वायु प्रधान दमेमें एकसमय स्नान, यहां तक कि कभी कभी दोनो समय भी स्नान करना सह्य होता है।

निवारण का उपाय।—रोगी को प्रति दिन ठंडे जल से स्नान करना एवम् शीघ्र ही पच जावे इस प्रकार का भोजन करना चाहिये। ओस, हवा और ठंडी हवा से शरीर की रक्षा करनी चाहिये। फिट (दौरा) के समय धतूरे वा स्ट्रामोनियम के पत्ते का चुरट बना कर पीना चाहिये, गरम पानी की भाप गले में लेनी चाहिये। शोरे में ब्लाटिंग पेपर भिगो कर उस को सुखा लेने के उपरान्त जला कर उस का धूआ लेना भी अच्छा है। यदि छाती में दर्द हो तो छाती और पीठ में फ्लानल से गरम पानी का सेक देना अच्छा है। आक्रमण के समय छाती और मेरुदण्ड में असली सरसों के तेल में कपूर मिला कर मालिस करने से फायदा होता है। आक्रमण के समय इपीका आधे आधे घंटे में देना चाहिये, यदि इस से विशेष फायदा न दीखे तो आर्सेनिक देना चाहिये।

दमा साधातिक रोग न होने पर भी यह कभी कभी अत्याचार और अनियम के कारण यक्ष्मा अथवा और किसी साधातिक रोग में परिणत होजाता है। ब्रोङ्काइटिस आदि फेफड़े का दोष रहने पर स्नान, ओस और ठंड लगना बुरा है।

पथ्य।—भोजन की ओर बड़ी सावधानी रखनी

दशा में अथवा सन्ध्या के समय दमे का आक्रमण उपस्थित हो, छाती के चारों ओर जकड़ा हुआ सा मालूम होना तथा ऐसा मालूम होना मानो श्वास के रस्ते में धूल भर रही है, स्वरभङ्गता के साथ सूखी खासी, अथवा छाती में दर्द और दबाव मालुम होने के साथ सरल खांसी, रोगी बार बार दुर्बल होकर अवसन्न होजावे, माथे के ऊपर सर्वदा गरमी मालूम हो।

ऐंटिम-टार्ट ३, ६ शक्ति।—उद्वेग के साथ श्वास कष्ट और बहुत श्वास आना जाना, इस लिये सीधा होकर बैठे रहने की इच्छा हो, रोगी जब खांसता हो तब मालूम होकि छाती के भीतर श्लेष्मा भरा है किन्तु खासने से बिलकुल नहीं निकलता [इपीका की तरह]।

विराट्रम एल्बम ६, १२ शक्ति।—चायना, आर्सेनिक और इपीका के उपरान्त प्राय यह दिया जाता है। बहुत ही सवेरे आक्रमण उपस्थित होना, नाक कान और दोनों पैर ठंडे, कपाल में ठंडा पसीना (गरम पसीना—कैमोमिला) और अत्यन्त बलक्षय, दुर्बल करने वाला उदरामय।

औषध प्रयोग।—रोग के प्रबल होने के लक्षण जब तक कम नहो तब तक आधे घंटे के अन्तर से दवा देनी चाहिये, कम होने पर फिर ठहर ठहर कर औषध देनी चाहिये।

सहकारी उपाय।—दमा प्राय दो प्रकार का

पडता है मानो समस्त वायुपथ श्लेष्मा से भर रहा है अथवा घिर रहा है। यदि इसी अवस्था से रोग वन्द नहो तो, श्वासकष्ट और भी बढ जाता है, चहरा, सूजा हुआ और रक्तपूर्ण, देह ठण्डा पसीने से भीगा हुआ और रोगी चाहे कमजोरी के कारण हो, चाहे अवसन्नता या श्वास वन्द होने के कारण मृत्यु का ग्रास वन जाताहै।

यह रोग बच्चोंकोही अधिक होते हुये देखाजाताहै। पहले सामान्य सर्दीके समान मालूम होकर यहरोग आरम्भ होताहै यथा ज्वरसा होना, श्वासका जल्दी जल्दी चलना, सूखी, स्वर-भङ्गके साथ खांसी, सांई सांई शब्द, बेचैनी इत्यादि। श्वास नलीमें दर्द होनेके कारण जितना हो सका हो बालक खांसी को रोक रखनेकी चेष्टा करता है और प्रत्येकवार खासनेके उपरान्त रोताहै। दूध पीने वाला बच्चा बडे कष्टसे माका दूध पीताहै, पहले स्तन मुह में देता है किन्तु उसी समय जल्दीसे छोड देताहै, माथा हटा लेताहै और इस प्रकार चिल्ला कर रोताहै मानो उसको बडा कष्ट या यन्त्रणा होताहै। रोग बढने पर श्वास के रस्ते सब श्लेष्मा से अच्छी तरह से भर जाते है, बच्चों में इतनी शक्ति नहीं होती कि जोर से इस श्लेष्मा को निकाल कर श्वास के रस्ते को साफ करलें अन्त में श्वास वन्द होकर बालक का प्राण नाश होजाता है। नबा बोङ्काइटिम बालकों के लिये एक बहुतही साघातिक रोग होता है। बालकों को होने पर यह रोग विकार की अवस्था धारण करता है। रोगी को तन्द्रासी होजाती है और बकने लगता है, जीभ सूख जाती है, और मैल से ढक जाती है, नाडी क्षीण और तेज, देह में खूब पसीने, गले के भीतर घड घड शब्द, श्लेष्मा निकाल डालने की

चाहिये इस विषय में गड बडी करना, बहुत ही बुराई की बात है। पेट में दोष रहने के कारण प्रायः रोग का बारम्बार आक्रमण होते हुए देखा गया है। पथ्य हलका और पुष्टिकारक होना चाहिये। जिनको दूध पच जाता हो वे खूब दूध पीसकता है। दूध कभी ठंडा नहीं पीना चाहिये। इसके रोगी को शरीर दुर्बल होने पर ओसद्दवास बिलकुल नहीं करना चाहिये।

वायुनली प्रदाह।
(ब्रोंकाईटिस)।

वायु नलियों की श्लैष्मिक झिल्लियों के प्रदाह का नाम ब्रोंकाईटिस है। ब्रोंकाईटिस दो प्रकार का होता है, एक नया और एक पुराना।

(१) नये ब्रोंकाईटिस के लक्षण।—पहले सर्दी मालूम होना, ज्वर, स्वरभङ्गता, श्वास नली के भीतर गुडगुडाहट, श्वास लेने और निकालने में कष्ट मालूम होना, बारम्बार कष्ट कर खांसी, पहले सूखी खांसी हो अथवा थोडा थोडा झागदार पतला कफ निकले किन्तु पीछे बहुतसा कफ निकलता रहे, कभी कभी उस में खून का छींटा भी रहते हुए देखा गया है। रोग जैसे जैसे बढता जाता है वैसे ही कष्टकर लक्षण दिखलाई पडते जाते हैं। श्वास लेने और निकालने का कष्ट और यन्त्रणा बढती है, छाती एक प्रकार जकडी हुई के समान मालूम पडती है अथवा उस में सुकडन मालुम पडती है और खांसते समय छाती के ऊपर की ओर दर्द मालुम होता है। छाती के ऊपर कान लगा कर सुनने से साईं साईं और घड घड शब्द सुनाई

पड़ता है मानो समस्त वायुपथ श्लेष्मा से भर रहा है अथवा घिर रहा है। यदि इसी अवस्था से रोग बन्द नहीं तो श्वासकष्ट और भी बढ़ जाता है, चहरा सूजा हुआ और रक्तपूर्ण, देह ठण्डा पसीने से भीगा हुआ और रोगी चाहे कमजोरी के कारण हो, चाहे अवसन्नता या श्वास बन्द होने के कारण मृत्यु का ग्रास बन जाताहै।

यह रोग बच्चोंकोही अधिक होते हुये देखाजाताहै। पहले सामान्य सर्दीके समान मालूम होकर यहरोग आरम्भ होताहै यथा ज्वरसा होना, श्वासका जल्दी जल्दी चलना, सुर्खी, स्वर मन्द्रके साथ खासी, साईं साईं शब्द, बेचैनी इत्यादि। श्वास नलीमें दर्द होनेके कारण जितना हो सक्ता हो बालक खांसी को रोक रखनेकी चेष्टा करता है और प्रत्येकबार खासनेके उप रान्त रोताहै। दूध पीने वाला बच्चा बड़े कष्टसे माका दूध पीताहै, पहले स्तन मुह में देता है किन्तु उसी समय जल्दीसे छोड़ देताहै, माथा हटा लेताहै और इस प्रकार चिल्ला कर रोताहै मानो उसको बड़ा कष्ट या यन्त्रणा होताहै। रोग बढ़ने पर श्वास के रस्ते सब श्लेष्मा से अच्छी तरह से भर जाते हैं, बच्चों में इतनी शक्ति नहीं होती कि जोर से इस श्लेष्मा को निकाल कर श्वास के रस्ते को साफ करलें अन्त में श्वास बन्द होकर बालक का प्राण नाश होजाता है। नया बोङ्काईटिस बालकों के लिये एक बहुतही सांघातिक रोग होता है। बालकों को होने पर यह रोग विकार की अवस्था धारण करता है। रोगी को तन्द्रासी होजाती है और बकने लगता है, जीभ सूख जाती है, और मैल से ढक जाती है, नाड़ी क्षीण और तेज, देह में खूब पसीने, गले के भीतर घड़ घड़ शब्द, श्लेष्मा निकाल डालने की

शक्ति न रहना, आदि लक्षणों के उपरान्त मृत्यु सब कष्ट दूर करदेती है।

(२) पुराना ब्रोंकाईटिस—यह रोग प्राय. देखा जाता है। यह रोग या तो नये रोग की भांति अथवा क्रमशः धीरे धीरे बेमालुम उत्पन्न होकर मौजूद होजाता है। जब नये ब्रोंकाईटिस के परवर्ती उपसर्गों की सूरत में यह उत्पन्न होता है तो पहले रोग के बहुत से लक्षण रह जाते हैं यथा खासी, स्वरभङ्ग, लसदार चुपकना कफ निकलना, थोडे परिश्रम मे श्वास कष्ट, सामान्य कारण से सर्दी लग जाना, साधारण दुर्वलता आदि। जब यह पुरानी ब्रोंकाईटिस बहुत दिन तक ठहर जाती है तब स्वरभंग और सूखी खासी, गहरी और कष्टकर खासी चिरस्थायी होजाती है।

कारण।—बहुत देर तक सर्दी अथवा ओस लगने से, अचानक गरमी से सर्दी में आने से, धूल अथवा किसी तीव्र पदार्थ की गन्ध लेने से, शरीर को कपड़े आदि से ठीक तरह पर न ढक रहने से, बहुत बोलने से, वक्तृता देने अथवा गाने के उपरान्त गले और गर्दन में ठंड लगने से इत्यादि।

चिकित्सा।—१। तरुण ब्रोंकाईटिस—एकोनाईट, बेलेडोना, ब्रायोनिया, फासफोरस, मर्क्यूरियस, नक्सवोमिका, पलसाटिला, ऐंटिम टार्ट।

२। पुराना ब्रोंकाईटिस।—कार्व वेज, आर्सेनिक, कैलकेरिया, लैकेसिस, लाइकोपोडियम, स्टानम, सलफर।

३। बालकों को रोग—ऐकोनाईट, बेलेडोना, इपीका, कैमोमिला।

४। वृद्ध मनुष्यों को रोग—फार्व-वेज, हायोसायेमस, लैकेसिस फासफोरस, रस्टक्स, सलफर।

एकोनाइट ३,६ शक्ति।—रोग की प्रथमावस्था में यह औषधि अधिक व्यवहार की जाती है। शीत, ज्वर, शरीर गरम और अत्यन्त बेचैनी, बहुत ज्यादा सूखी खांसी और वायु नली में सुड़सुड़ाहट, अत्यन्त भय और मानसिक उद्वेग, सूखी किन्तु ठंडी हवा के लगने से रोग होने पर।

आर्सेनिक ६, ३० शक्ति।—सूखी खांसी और रस के साथ ही छाती में ऐसी खींचा खांचा हो मानो घाव होरहे हैं। सरल खांसी किन्तु कफ निकालने में कष्ट। श्वासकष्ट, उस के कारण उठ कर बैठा रहना पड़े। अत्यन्त प्रबल प्यास किन्तु थोड़ा थोड़ा पानी पीना, बेचैनी कमजोरी और मृत्युभय।

बेलडोना ३, ६ शक्ति।—चहरा और दोनों आंखें लाल, मस्तक के भीतर अत्यन्त पूर्णता मालुम होना, अथवा दर्द होना मानो फटा जाता है, शरीर गरम किन्तु पसीना आने वाला सा मालुम हो, आक्षेपिक खांसी उस से स्वास लेने का उपाय न रहे, प्रत्येक खांसी के आक्रमण के उपरान्त ही बालक चिल्ला कर रो उठे, नींद सी आती हो किन्तु रोगी सो न सके, सोते समय चमक उठे और उछल उठे।

ब्रायोनिया ६,१२ शक्ति।—बहुत सांस और श्वास-कष्ट, उसके कारण सीधा होकर बैठ रहना पड़े, सूखी खांसी और छातीमें सुई चुभोने वाला दर्द, प्रातःकालके समय प्रबल खांसी,

है। रोगी के कमरेमें बहुत से मनुष्योंका एकत्रित होकर गड बड करना अनुचित है क्योंकि उससे शीघ्रही कमरे की वायु दुषित होजाती है। रोगी के पास २। ३ मनुष्य ही रहें तो ठीक है।

फेफडे का प्रदाह आराम हो जानेपर एक वर्ष तक रोगी को ओस, सर्दी, और जलसे सावधान रहना चाहिये क्योंकि थोडा अनियम होनेपर सम्भव है कि यह रोग फिर होजावे अथवा रोग पुराना आकार धारण कर रोगी को बहुत दिन कष्ट दे। अनियम करनेसे इस रोगसे पुरानी खांसी और यक्ष्मा आदि अनेक कष्टदायक रोग उत्पन्न होतेहुए देखे गये हैं। फेफडे के प्रदाह के उपरान्त इसी कारण भली भात सावधान रहना चाहिये। जल वायु परिवर्तन, उपयुक्त व्यायाम द्वारा शरीर को सुस्थ और सबल रखना, प्रतिदिन स्वच्छ वायु सेवन करना, ओस सर्दी और जलसे शरीर को यथोचित रूपसे बचना परम आवश्यकीय है।

पथ्य।——साबू दाना, बार्ली आदि हलका पथ्य ठीक है। आरोग्य होने वाला होनो थोडा दूध दलिया आदि पुष्टिकारक भोजन क्रमश दिया जा सकताहै।

प्लुरिसी।

श्वास लेने और निकालनेका प्रधान यन्त्र फेफडा। छाती के भीतर एक गहराईम रहता है। फेफडा एक अत्यन्त पतली लाल झिल्ली से ढका रहता है। इसी झिल्ली का नाम प्लूरा है और इसी प्लूरा के प्रदाह का नाम प्लूरिसी है।

पहले शीत और कम्प के साथ ज्वर आता है। अति शीघ्र ही छाती में सुई चुभोने के समान दर्द मालूम होता रहता है। यह दर्द खासनेसे, श्वास लेने निकालनेसे, हिलने चलने से अधिक मालुम होता है। कहीं कहा अत्यन्त कष्टदायक खासी रहती है, और कभी कभी, खासी बिलकुल नहीं रहती है। प्लुरिसी का दर्द प्राय ही स्तन के निकट छाती के एक ओर केन्द्रकर होते हुए देखा जाता है।

सामान्य प्लूरिसी में भय का कोई कारण नहीं रहता किन्तु रोगी की दुर्बलता, रोग के कारण छाती के दोनो ओर आक्रमण, क्रमश प्रवल ज्वर, प्लूरा के भीतर अधिक जल सञ्चय आदि अशुभ लक्षण हैं।

चिकित्सा।—एकोनाईट ३,६ शक्ति।— शीत होकर ज्वर, पूर्ण और तेज नाड़ी, सूखा और गरम शरीर, तकलीफ से तडफडाना, अत्यन्त प्यास, चहरा लाल, तेज श्वास आना जाना, छाती में सुई चुभोने के समान दर्द, साथही सूखी खासी, दाहिनी करवट लेकर सो न सकना।

ब्रायोनिया ६,१२ शक्ति।— सुई चुभोने के समान दर्द, श्वास लेने और अति सामान्य हिलने चलने से बढ़ना, सिर दर्द, प्यास, बहुत देर बाद बहुतसा जल पीना, कठिन और सूखा मल, स्वभाव में ऐसा चिड़चिड़ापन कि थोड़ेसी बात में क्रोधित हो उठे।

मर्क्यूरियस ६ शक्ति।— छाती में दर्द और ज्वाला,

पार्श्ववेदना ।

(प्लुरोडाईनिया) ।

यह एक प्रकार वात का दर्द होता है । प्लुरिसी के और इस के पहचानने में प्राय: भूल होजाती है । छाती पर किसी स्थान में, प्राय कमर से कुछ ऊपर एक ओर, अचानक दर्द होने लगता है। यह दर्द अत्यन्तही कष्टदायक होता है किन्तु अधिक दिन नहीं रहता। कभी कभी ऐसा भी देखा है कि कई दिन तक यह दर्द रहता है। प्लूरिसी के समान इस में खांसी अथवा ज्वर नहीं होता। यह दर्द छाती के पट्ठो में अवस्थान करता है, इस लिये दबानेसे, गहरा सांस लेने से और दर्द की ओर वाला हाथ हिलाने से दर्द मालुम होता है।

चिकित्सा ।—आर्निका ३, ६ शक्ति ।— सुई चुभोने के समान दर्द होना, प्रधानत: बांई ओर, विशेष कर सांस लेते समय, दर्द के कारण सांस लेने निकालने में कष्ट, बाहरी किसी प्रकार की चोट लगने के उपरान्त यह रोग होतो आर्निका दिया जाता है।

ब्रायोनिया ३,६ शक्ति ।— दर्द अत्यन्त अधिक मालुम हो, मानो कोई नोकीली चीज चुभ गई है, सांस लेने निकालने में और शरीर के सामान्य हिलने हिलाने से ही दर्द बढना, रोगी अत्यन्त चिडचिडा, सामान्य कारण से ही क्रोधित हो उठे।

नकसवोमिका ६,३० शक्ति ।— हड्डी और पजर के भीतर भीतर पट्ठों में दर्द, सास लेने निकालने में छाती

के हिलने से दर्द बढना, जिस ओर दर्द हो उस करवट न सो सकना, जो लोग अमिताचारी हैं और जिन की धातु अर्शरोग से दूषित है उन के लिये यह विशेष उपकारी है।

पलसाटिला ६ शक्ति। सोते समय शरीर के एक ओर (कमर और बगल के बीच में) दर्द, विशेषकर रात्रिको, दर्द एक स्थान से दूसरे स्थान में चलता फिरता रहे, सन्ध्या होने के समय और बांई करवट सोने से बढना। यह औषधि स्त्री और मुलायम प्रकृति के मनुष्यों के लिये उपयोगी है।

सलफर ६, ३० शक्ति।—सुई चुभोने के समान दर्द छाती से लेकर पीठ तक होता हो, सोने से और हाथ उठाने से बढना।

सिमिसीफ्यूगा ३ शक्ति।—स्नायुशूल 'पार्श्व-वेदना (अर्थात् नसों का दर्द और उसी से शरीर के एक ओर दर्द)।

रैनानकूलस ३ शक्ति।—जरायु दोष के साथ हड्डी पसलियोंमें भीतर भीतर कमर और बगलके बीचमें दर्द होना। जो रोगी दुबला पतला हो उस के लिये अधिक उपकारी है।

औषध प्रयोग।—पहले दो दो घंटे के अन्तर से दवा खानी चाहिये। उपरान्त दिन में ३।४ बार।

सहकारी उपाय।—दर्द के स्थान में सेकने से

दर्द कम होता है। असली सरसों के तेल की मालिश करने से भी फायदा होता है।

पंद्रहवां अध्याय ।

मुंह के भीतर के रोग ।

मुंह का बुरा स्वाद ।

मुंह का बुरा स्वाद रहना यह केवल एक लक्षण मात्र है। बहुत से रोगों में यह लक्षण स्पष्ट दिखलाई पड़ता है और इस लक्षण को देख कर प्राय असली रोग का निर्णय किया जासकता है, जैसे कड़ुवा स्वाद रहे तो जिगर की खराबी समझनी चाहिये, मुंह का बुरा स्वाद, गले आदि के भीतर के स्थानीय रोग, नमकीन और सड़ा हुआ सा स्वाद होतो यक्ष्मा दोष, खट्टा स्वाद होतो पाकाशय का दोष समझा जाता है। और यदि किसी प्रकार का स्वाद न होतो यान्त्रिक स्नायविक रोग समझा जाता है।

चिकित्सा ।—

१। प्रातःकाल के समय कड़वा स्वाद ।—ब्रायोनिया, कैलकेरिया कार्ब, मर्क्यूरियस ।

२। मीठा स्वाद ।—बेलेडोना, ब्रायोनिया, चायना, मार्क्यूरियस, पलसाटिला ।

३। खट्टा स्वाद ।—कैलकेरिया-कार्ब, चायना, नक्सवोमिका, एसिड-फास्फरिक, सल्फर ।

४। नमकीन स्वाद — आर्सेनिक, कार्व-वेज, नक्सवोमिका।

५। सड़ा हुआ स्वाद।—कैमोमिला, मर्क्यूरियस, पलसाटिला।

६। फीका स्वाद।—ब्रायोनिया, चायना, पलसाटिला, स्टाफिसेग्रिया, सलफर।

७। बिलकुल स्वाद न रहना।—बेलेडोना, हीपर, लाईकोपोडियम, फासफोरस, विराट्रम।

८। सब कड़ी चीजें कड़वी मालूम देती हों।—ब्रायोनिया, कार्बोसिन्थ, हीपर, सलफर।

९। खाने और पीने की सब चीजें कड़वी लगती हों।—ब्रायोनिया, चायना, पलसाटिला।

१०। सब खाद्य पदार्थों में खट्टा स्वाद आता हो।—लाईकोपोडियम, नक्सवोमिका।

११। सब खाद्य-पदार्थों में नमकीन स्वाद आता हो।—आर्सेनिक, बेलेडोना, चायना, सल्फर।

मुंह में दुर्गन्ध।

मुंह में दुर्गन्ध आना बहुत ही बुरा मालूम होता है। कभी कभी स्वयम अपने को और पास बैठने वाले मनुष्य को भी असह्य हो उठता है। अनेक कारणों से मुंह में दुर्गन्ध आने लगती है उन में से दांत नष्ट होजाना, मसूड़ों का रोग, दांतों में मैल सचय होजाना, पाकाशय का दोष, तम्बाकू और शराब पीना, और यथोचित रूप से दातुन कुल्ले न करना आदि प्रधान कारण हैं।

चिकित्सा।—ऊपर जो सब कारण लिखे गये हैं

इस रोग की चिकित्सा में उन्हीं सब कारणों को दूर करने के सिवाय और कुछ उपाय नहीं है। यदि दांतों में छेद होगये हों अथवा और किसी प्रकार से दांत नष्ट होगये हों और इसी कारण से मुह में दुर्गन्ध आती हो तो किसी दांत के डाक्टर से उस की चिकित्सा करानी चाहिये। यदि मसूढे में फोडा अथवा दांत के जड में मवाद पड जाने आदि कारणों से मुह में दुर्गन्ध आती होतो उस की उपयुक्त औषधि सेवन करनी चाहिये। दांतों पर मैल जमने के कारण यदि मुह में दुर्गन्ध होतो सावधानी से उस मैल को छुडा देना चाहिये। दांत जितने स्वच्छ रखे जासकें उतना ही अच्छा है, इस लिये प्रति दिन दातुन अवश्य करनी चाहिये। भोजन के उपरान्त प्रत्येक बार दांतों को अच्छी तरह धो डालना चाहिये। जो लोग तम्बाकू पीते हैं उनके मुहकी गन्ध किसी प्रकार दूर होने की उम्मेद नहीं हैं। यदि पाकाशय के दोष से मुह में दुर्गन्ध होतो उपयुक्त औषधि सेवन करनी चाहिये।

केवल प्रात काल के समय मुह में दुर्गन्ध होतो—नक्सवो मिका, साईलेशिया।

केवल प्रातःकाल और रात्रि के समय—पल्सटिला।

भोजन के उपरान्त—कैमोमिला, सलफर।

पारे के अपव्यवहार के कारण से—कार्बवेज, हीपर, लैकेसिस, सलफर।

मुख क्षत।

(स्टोमाटाईटिस—मुह में घाव या छाले)

मुह में घाव या छाले होना पाकाशय दोष का एक

प्रधान चिन्ह है। भूख कम लगना, अजीर्ण, ज्वर आदि से मुह में घाव या छाले होजाते हैं। मसूढे अचानक गरम और लाल होजाते हैं उन में दर्द होने लगता है और फूल उठते हैं, मसूडों में, होठों के भीतर की ओर, गाल में, तालु में, जिभ में छोटे२ छाले होजाते हैं। मुह से बदबू निकलती है और बदबुदार बहुतसी लार निकलती रहती है। लार के साथ काला २ खून भी गिरता है। दांत हिलते हैं और कभी कभी गिरभी जाते हैं। गले की सब गांठें फूल उठती हैं और तरांती है, रोगी बहुत दुर्बल होजाता है और अविराम ज्वर रहता है अर्थात थोडा२ ज्वर भीतर बनाही रहता है।

चिकित्सा।—आर्सेनिक ६,३० शक्ति।—मुह में लार और नीले रंग की, प्रदाहित, ज्वालायुक्त, बहुतसी चिटचिटी, बदबूदार खून मिली हुई लार निकलती है, सड जाने की आशंका रहती है और मसूढे कालेसा रंग के होजाते हैं।

कार्बो-वेज १२, ३० शक्ति।—यदि पारा अप व्यवहार करने से अथवा अत्यंत नमक मिले हुए भोजन करने से रोग उत्पन्न हो, मसूढे दांतों के पास से झुक पडता हो और सहज ही खून गिरता हो।

डल्कामारा ३, ६ शक्ति।—यदि सर्दी लगने से हो, और गले की सब गाठें सूज जावें और कडी हो जावें, लार गिरना, मसूढे नरम होजाना और सहज ही में खून गिरना, साधारण सर्दी लगने से ही बढना।

मर्क्यूरियस ६ शक्ति।—मसूढे में खुजली चले,

जलन हो और लाल रंग, सहजही रक्त पडे [कार्बो वेज की तरह], मसूढे दांतों के पास से झुक पडे, छूने से दर्द, और को जलन और फूलना, मुंह से लगातार दुर्गंध युक्त लार टपकना, रात्रि को वृद्धि, अधिक पसीने आने पर भी कुछ आराम न होना, हरे आम मिला हुआ मल और दस्त होने की हाजत।

नक्सवोमिका ६, ३० शक्ति।—मुखमध्य (मुंह के बीच का भाग) प्रदाहित, विशेष कर तालू और मसूढे, मुह और गले में दुर्गन्ध युक्त छाले, मुंह से सडी हुई बुरी दुर्गंध [मर्क्युरियस की तरह], कोष्टबद्धता, कठिन और बडा मल।

ऐसिड-नाइट्रिक ६ शक्ति।—मुह में छालों के साथ जिगर का दोष (यकृत दोष), और पारे के दोषके रहने पर।

औषध प्रयोग।—जब तक फायदा न दीख पडे तब तक एक एक दूर औषध ३ तीन घंटे के अंतर से, यदि उपकार न दिखलाई पडे तो और कोई औषध तजवीज करनी चाहिये।

सहकारी उपाय।—रोग की प्रथमावस्था में नीबू के रस में पानी मिलाकर कुल्ल करने से उपकार दिखलाई पडता है। दुर्गंध मिटाने के लिये एक आउंस पानी में ८ ग्रेन पोटाश क्लोरेट नामक औषध मिला कर कुल्लों करना अच्छा है।

पथ्य।—रोग के बढ़ने के समय दूध, साबूदाना और बार्ली अच्छा पथ्य है। इस के उपरान्त और और खाने के पदार्थ दिये जासकते है। मांस, मच्छी और खटाई बिलकुल वर्जित है।

मुखौष।

अपरिपाक, प्लीहा यकृत रोग (तिल्ली और जिगर के रोग) पुराना ज्वर, मैलेरिया दूषित ज्वर आदि इस रोग के प्रधान कारण है। यह घाव प्रायः ही पहले होंट के भीतर की ओर, गाल में और कभी कभी जीभ के ऊपर दिखलाई पड़ते है। घावों में अत्यन्त जलन होती है और दर्द होता है विशेषकर स्पर्श करने से, घांव प्रतिदिन शीघ्र ही बहुत बढ़ जाता है, अत्यन्त दुर्गन्ध निकलने लगती है, और गलने वाले घाव के कारण शीघ्र ही गाल में छेद होजाता है। कुछ भाग टपक पड़ता है, मुह बिगड़ जाता है और लगातार बदबूदार लार टपकती रहती है। यदि शीघ्र ही इस को आराम न होतो, रोगी दुर्बलता और कष्ट से मृत्यु के मुह में चला जाता है।

चिकित्सा।—आर्सेनिक ६, ३० शक्ति।—इस रोग की एक प्रधान औषध है। रोगी शय्या में पड़ा रहता है, पुराना बुखार, तिल्ली और जिगर का बढ़ना, हाथ पैरों में सूजन, घावों में दुर्गन्ध, और जलन।

कार्बो-वेज १२, ३० शक्ति।—जिन में जीवनी शक्ति नहीं है, अत्यन्त दुर्गंध, अत्यन्त कमज़ोरी।

लैकेसिस १२,३० शक्ति ।—अत्यन्त जलन, लगातार ज्वर, अत्यन्त प्यास, मुह और शरीर सूखा हुआ, घाव का स्थान बरफ के समान ठंडा, घाव नीले से रंग का अथवा काला सा।

मर्कूरियस ६ शक्ति ।—होट, गाल, और मसूढों में गले हुए घाव, गले की सब गाठें सूजी हुई, उन में जलन, गरम अथवा ठंडी चीज लगने से दर्द बढना।

सल्फर ३० शक्ति ।—गलने वाले घावों में कभी कभी यह औषध लगाने से उपकार दीखता है।

चायना ६,३० शक्ति ।—बारम्बार अत्यन्त रक्त निकलना, हाथ पैर अथवा सब शरीर ठंडा, चहरा रक्तशून्य।

सहकारी उपाय । घावों के ऊपर बिसमथ सबनाईट्रेट छिडक देने से फायदा दीखता है। घावों के स्थान को जहां तक होसके साफ रखना चाहिये। बदबू दूर करने के लिये पोटाश क्लोरेट का लोशन अच्छा है।

पथ्य । सहज में पचने वाला और हलका भोजन करना चाहिये। मांस मच्छी इत्यादि बिलकुल वर्जित है। दूध दिया जासकता है।

मसूढों से खून गिरना।

मसूढों से खून निकलना और किसी रोग का एक प्रकार का लक्षण है यथा मुह के घाव, विकार ज्वर,

पुराना बुखार, तिल्ली और जिगर के कारण, पुराना ज्वर इत्यादि। दांत उखाड़ने के उपरान्त बहुत रक्त स्राव होता है।

चिकित्सा। इस रोग की प्रधान औषध—कैलकेरिया-कार्ब, कार्बवेज, क्रेकासिस, मर्क्युरियस, नेट्रम-मियूरियाटिक, फासफोरस, फासफोरिक येसिड, साईलेशिया, और सलफर।

जिस कारण से रक्त गिरता हो इसको ठीक समझ कर औषधि तजवीज करनी चाहिये। यदि पुराने जिगर या तिल्ली के विकार ज्वर-आदि होने से रक्त स्राव होवे तो कार्बवेज मार्क्युरियस, नेट्रम-म्युरेटिक, चायना, फेरम, और सलफर उपकार करता है।

सविरामज्वर चिकित्सा में देखो।

दांत उखड़ने के कारण यदि रक्तस्राव हो तो एकोनाईट, आर्निका वा फास्फोरस प्रधान औषध हैं। प्रत्येक घण्टा अथवा आधे घण्टे के उपरान्त औषध प्रयोग करना चाहिये। यदि खाने की औषधों से रक्त बन्द न हो तो सलफेट आफ आयरन, टैनिन, सुगर आफ लेड वा क्रियोजोट ऊपर लगाये जासक्ते हैं। इनमें से किसी एक औषध को थोड़े से पानी में मिलाकर एक टुकड़ा लिन्ट अथवा कपड़े में तर कर के दांतका मसूढे के भीतर रख देने से खून गिरना बन्द हो जाता है।

मसूढेमें फोड़ा।

मसूढे में फोड़ा होने से बड़ाही कष्टदायक होता है। यह फोड़ा मसूढे को फोड़कर अथवा कभी कभी कनपटी

को फोडकर भी बाहर निकलजाता है। पहिले अत्यन्त दर्द होताहै, उपरान्त पकने पर मवाद पडजाता है। यदि यह फोडा शीघ्र ही अच्छा नहीं हो जावे तो फिर इसमें सर पडजाती है और दांत नष्ट होने का भय रहता है।

चिकित्सा।—बेलेडोना ३,६ शक्ति।—फोडा लाल रंङ्ग का कडा और उसमें दर्द होता हो, कभी जलन के साथ दर्द होता हो, कभी तरांता हो, और कभी उसमें खपकन होती हो।

हीपर ६,१२ शक्ति।—जब यह निश्चय मालुम हो जावे कि इस में मवाद पडजावेगी। गण्डमाला दूषित धातु और पारे के अपव्यवहार के उपरान्त।

मार्कूरियस ६,१२ शक्ति।—पहिले ही यदि प्रयोग कर दिया जाय तो प्राय फोडा पक नहीं सकता, दर्द बेलेडोना के समान।

साइलेशिया १२,३० शक्ति।—मसूढे मे, दर्द और जलन, जब मवाद पैदा होगया हो और जब मवाद बदबूदार पतला हो, पानीसा, मसूढे में सर पड जावे, और किसी तरह आराम न होता हो।

औषधि प्रयोग।— तीन तीन घंटे में एक मात्रा। यदि पुराना भाव पड जावे अथवा सर पड जावे तो दिन में दो बार।

सहकारी उपाय।—यदि ऐसा मालुम होकि फोडे में मवाद पड गया है और औषधि से नहीं निकलता तो छुरी से उसको चीर देना उचित है। मुद सर्वदा स्वच्छ रखना चाहिये।

दन्त शूल।

(टुथएक)।

दन्त शूल अथवा दांत के दर्द के समान कष्टदायक कोई और दर्द है कि नहीं इस में सन्देह है। मसूढ़ों की अनेक प्रकार की पीडा, दन्त क्षय, पाकाशय का दोष, अचानक सर्दी लग जाने आदि कारणों से दांतों में दर्द होने लगता है। दन्त क्षय (जिसको साधारणतः दांतों में कीड़ा लग जाना कहते हैं) के कारण दांत पोले होजाते हैं और उन के भीतर की सब कोमल स्नायु और मज्जा बाहर निकल पड़ती है। इस के उपरान्त खाया हुआ पदार्थ उस गढ्ढे में भर कर स्नायु और मज्जा को उत्तेजित कर देता है। इसी से अत्यन्त कष्टदायक दन्त शूल उपस्थित होजाता है।

इस लिये यह परमावश्यक है कि दांतों की यत्न पूर्वक रक्षा करनी चाहिये और स्वच्छ रखने चाहिये। यत्न पूर्वक दांतों को स्वच्छ न रखने से केवल यही बात नहीं है कि यन्त्रणा दायक दर्द उपस्थित होजाता है किन्तु कभी कभी दांत भी गिर जाते हैं और मनुष्य के स्वास्थ्य और सुख स्वच्छन्दता में भारी विघ्न पड़ जाता है। सब खाये हुए पदार्थों के परिपाक का प्रधान उपाय दांत है। यदि उपयुक्त रीति से खाये हुए पदार्थ न चबाये जावें तो उन का भली भांति परिपाक नहीं हो सकता।

चिकित्सा।—एकोनाईट ३, ६ शक्ति।—दर्द के कष्ट से रोगी पागल की तरह होजाता है। लप

तक फैला हुआ, दर्द का रात्रि के समय बढना, दांत में टटानी, दांत हिलाना, पसीने से कुछ उपकार न होना, मुह से बहुतसी लार गिरना।

नक्सवोमिका ६,१२ शक्ति।—दर्द कान, मस्तक और ठोडी की हड्डी तक फैला हुआ, जाबडे के नीचे की गांठ सूजी हुई, रात्रि में बहुत सबेरे मानसिक परिश्रम से और गरम मकान में रहने से बढना, खुली हुई हवा में रहने से आराम, जो लोग केवल बैठे ही रहते हैं और किसी प्रकार का शारीरिक परिश्रम नहीं करते, शराब पीना है और मसाले दार घी में पके हुए अधिक पदार्थ खाते है उन के लिये यह अधिक उपयोगी है।

पल्साटिला ६ शक्ति।—मुलायम तबियत के लोग, ठण्डी चीज से आराम, गरम चीज से बढना, गरम मकान में भी सरदी सी लगना, ऋतु थोडा हो अथवा बिलकुल ही बन्द होगया हो।

रस्टक्स ६ शक्ति।—दांत हिलता हो और लम्बा मालूम होता हो, मसूढा सूजा हुआ और जैसी खुजली घाव में चलती है वैसी ही खुजली चलना और आग जलना, फटन सी होती हो, चमके मारते हों और झन झनाहट के समान दर्द हो, विश्राम के समय और गीली हवा में बढना, बाहरी गरमी के प्रयोग से आराम। रस्टक्स और कैमोमिला के प्रयोग से बहुत-से यन्त्रणा दायक दन्त रोगों को आराम किया है

सीपिया १२, ३० शक्ति ।—गर्भावस्था में दन्त शूल, दर्द पहले कान, पीछे समस्त हाथ में, ऊपर से अंगुली तक फैले, बिगडे हुए रङ्ग का मुख मण्डल और चहरे पर स्याही कैसे दाग, बदबूदार बहुतसा श्वेत प्रदर।

स्टाफिसेग्रिया ६ शक्ति ।— दन्तक्षय, दांत काले होकर सहज ही टूट जावें, मसूढा दर्द करता हो, घाव होगये हों और सूजन आगयी हो, विनष्ट दांतों में और अच्छे दांतों के मसूढों में दर्द, बहुत सुबह और कोई ठंडी चीज पीने से बढ़ना, चहरे पर ठंडा पसीना, दोनों हाथ ठंडे।

सलफर ६, ३० शक्ति ।—किसी उत्तम तजवीज की हुई औषधिसे भी यदि फायदा न होवें तो सलफर देने के उपरान्त उस औषधि के देने से फायदा दीखता है सन्ध्या के समय अथवा रात्रि में बिछौने पर सोने से अथवा ठंडे जलसे बढ़ना, मस्तक के ऊपर जलन और गरमी मालूम पड़ना, हाथ पैर ठंडे, थोडा और काला रजस्राव।

औषधि प्रयोग —दर्द के समय १, २, ३, घंटे के अन्तर से। आराम होने पर ठहर ठहर कर देना चाहिये।

सहकारी उपाय ।—दांतों की रक्षा करने का प्रधान उपाय यह है कि उनको स्वच्छ रखना चाहिये, अतः एव दातन करने का अभ्यास बहुत ही अच्छा है। बरफ का पानी और बहुत गरम चाय अथवा बहुत खटाई नहीं खानी चाहिये क्योंकि इससे दांत नष्ट होजाते हैं। भोजन करने के उपरान्त प्रत्येक बार दांत अच्छी तरह साफ करने

चाहिये जिससे दांतों की सन्धों में खाई हुई चीज के कण न रह जावें। प्रत्येक वार खाने पीने के उपरान्त कुल्ले करके मुहको अच्छी तरह साफ करना चाहिये विशेषकर रात्रि को शयन करने के पहले

गले का दर्द ।

सोर थ्रोट ।

गले के भीतर प्रदाह उतपन्न होने से यह दर्द होने लगता है। मुह फाड कर गलेकी भीतर परीक्षा करके देखनेसे दिखलाई पडता है कि अमुक स्थान लाल है, कुछ सूजा हुआ है, वहां गरम मालूम होता है जलन, भारीपन और दर्द मालुम होता है। विशेषकर निगलने के समय। सर्दी लगनेसे ही गलेमें दर्द प्राय. हुआ करता है।

चिकित्सा।—ऐकोनाइट- ३,६ शक्ति।— रोग की प्रथमावस्था में व्यवहार किया जाताहै। गले के तीव्र प्रदाह और ज्वर, गले के भीतर, तालू, टांसिल की गांठ, आदि स्थानों कालाभा लाल रङ्ग। (इस अवस्था मे बेलेडोना भी दिया जाता है), निगलने में कष्ट और स्वरभङ्ग।

बेलेडोना ३, ६ शक्ति।— गले के भीतर प्रदाह, जलन और खुश्की, गले के भीतर ऐसा मालूम हो कि कुछ अटक रहा है (मर्कुरियस के समान), गला मानो बहुत ही सुकडा हुआ मालुम होता है, विशेषकर जब दर्द दाहिनी ओर मालुम हो (बांई ओर दर्द होने से लेकेसिस)।

कैमोमिला ६, १२ शक्ति।—यह बच्चों के लिये ही बहुत उपकारी है। यदि बालक बहुत रोता हो और चिडचिडे स्वभाव का हो तो यह दवा देनी चाहिये।

लैकेसिस १२, ३० शक्ति।—गले का दर्द, छोटे से किसी स्थान में दर्द मालूम हो, ऐसा मालुम हो कि गले के भीतर कोई पोटली अथवा पिंडसा अटक रहा है, गले के भीतर जलन और स्वरभङ्ग, गले में किसी चीज का सस्पर्श सह्य न होता हो, सोने के उपरान्त ही बढना।

मर्क्यूरियस ६, १२ शक्ति।—सर्दी के कारण, गले का दर्द, निगलने में सुई चुभोने के समान दर्द होना, दर्द कान और गरदन की गाठ तक फैला हुआ (कैमोमिला की तरह), हाथ पैरों में भडकन हो और रोगी को सर्दी मालुम होती हो, आराम न होना और पसीने आना, समस्त रात्रि और सर्द हवा में बढना।

बैराईटा-कार्ब ६, १२ शक्ति।—यदि बेलेडोना और मर्क्यूरियस से कुछ फायदा न हो और प्रधानतः टासिल गाठों में प्रदाह हो।

फाइटोलैका ३ शक्ति।—पीने से और बाहरी व्यवहार से (कुले करने से) उपकार करता है।

औषध प्रयोग।—जब तक फायदा न हो ३ घटे के अंतर से देनी चाहिये, उपरान्त कुछ विलम्ब से।

सहकारी उपाय ।—एक कपडे के टुकडे को ठंडे पानी में भिगो-कर और निचोड कर गले के चारों ओर लपेट रखना चाहिये और उस के ऊपर केले का पत्ता अथवा गटापर्चा लगा कर ऊपर से २।३ तह फलालेन की लपेटनी चाहिये। रात्रि के समय इस प्रकार करने से दर्द को शीघ्र ही आराम होता है।

बैरिस्टर, धर्म प्रचारक, व्यवसायी, गवैये, व्याख्यान दाता आदि जिन को बहुत चिल्लाने का काम पडता है उनको दाढी रखना अच्छा है।

पथ्य ।—गले में दर्द होने पर हलका और पतला भोजन ही अच्छा पथ्य है। इसलिये दूध, दूधसूजी, दूधसाबूदाना आदि खाना सुविधा जनक होता है।

गले में घाव ।

अलसारेटेड थ्रोट ।

गलेका दर्द पुराना होने पर फिर गले में घाव पैदा होते हैं। यह घाव प्राय गहरे नहीं होते, गलेके ऊपर के ओर, पीछे के ओर, टांसिल गांठों में दिखलाई पडते हैं। गले में घाव होने पर गले के भीतर खुश्की और एक प्रकार का कष्ट उपस्थित होता है, बार बार खखार कर श्लेष्मा निकालने को जी चाहता है।

चिकित्सा ।—बेप्टीशिया १× शक्ति ।—सडा हुआ कालासा रंग का घाव, श्वास वायु में अत्यन्त दुर्गन्ध, सिर दर्द, कमजोरी।

काली-बाईक्रोमिकम ३,६ शक्ति।—काग, जीभके ऊपर की ओर टान्सिल की गांठ और मुह के ऊपर की ओर घाव, तालू में छोटे छोटे लाल रंग के दाग, ऐसा मालुम होकि इन के भी घाव हो जावेंगे, नाक से बदबूदार स्राव निकलना।

लैकेसिस ६, १२ शक्ति।—गले के भीतर और टान्सिल गांठ में प्रदाह करने वाले घाव, हक्‌ हक्‌ कर के कफ निकालना, विशेषकर सन्ध्या के समय ऐसा मालुम होना कि एक घावका स्थान विदीर्ण होगया है, गले के भीतर अत्यन्त शुष्की।

मर्क्यूरियस ६, १२ शक्ति।—गले के भीतर और टान्सिल गांठ में घाव, निगलने में तेज कांटा चुभने के समान दर्द, गले के भीतर दर्द, अत्यन्त शुष्क मालुम होना, निगलने में गले के पीछे सुई चुभोने के समान दर्द।

नाईट्रिक-एसिड ३,६ शक्ति। गले के भीतर घाव, विशेषकर पारे के अपव्यवहार के उपरान्त, मुंह से सड़ी हुई गन्ध निकलना (मर्क्यूरियस की तरह)।

औषध प्रयोग। प्रतिदिन प्रातःकाल और सन्ध्या के समय दो बार।

सहकारी उपाय। मुंह की बदबू दूर करने के लिये एक आउन्स पानी में १० बूंद फार्मेलिन मिला कर

कुल्ली करना अच्छा है। इस के सिवाय कार्बोलिक ऐसिड इसी प्रकार पानी में मिला कर कुल्ली करने से दुर्गन्ध दूर होती है। यदि गले में घाव होतो बहुत बोलना अच्छा नहीं है।

पथ्य । मांस, मच्छी और शराब इत्यादि बिलकुल वर्जित हैं। साग भाजी, रोटी, चावल, दूध आदि सब दिये जासकते हैं।

सोलहवां अध्याय ।

पाकाशय के रोग ।

अक्षुधा । (ऐनोरेक्सिया) ।

अधिकांश स्थलों में भूख कम लगना पाकाशय का अथवा किसी धातुगत रोग का एक लक्षण मात्र है। भोजन का अनियम, शराब, गांजा तम्बाकू आदि नशीली चीजों का सेवन, परिश्रम न करना आदि क्षुधामान्द्य के प्रधान कारण हैं। निम्नलिखित औषधें इस रोग में उपकारी हैं।

चिकित्सा ।— चायना १२,३० शक्ति ।— अक्षुधा, सब प्रकार के खाद्यों की अनिच्छा, खाने की सब चीजें कड़वी लगना [इन लक्षणों में ब्रायोनिया और पलसाटिला भी उपकारी हैं], दुर्बल करने वाला कोई रोग, रक्तस्राव आदि के उपरान्त अक्षुधा होतो दिया जाता है।

हीपर सलफर १२,३० शक्ति।—अत्यन्त सावधानी रखने पर भी सहज ही पेट का दोष उत्पन्न हो, सड़ा हुआ स्वाद और सब खाने की चीजों से घृणा। पारा और कुनेन के अपव्यवहार के उपरान्त अक्षुधा उत्पन्न होने पर विशेष उपकार करता है।

मर्क्युरियस ६,१२ शक्ति।—सड़ा हुआ स्वाद विशेषकर प्रातःकाल के समय (पलसेटिला भी फायदा करता है), बिलकुल भूख न लगना, बैठे रहने से ऐसा मालुम होना कि पेट के भीतर खाई हुई वस्तु पत्थर के समान बैठ रही है।

नक्सवोमिका ६,३०,२०० शक्ति।—कड़वा स्वाद, कड़वी डकार, कड़वी उल्टी (पलसेटिला भी फायदा करता है), सब प्रकारके खाद्य में स्वाद मालुम होना, खाद्य पदार्थसे अनिच्छा, विशेषकर रोटी और तम्बाकू से अनिच्छा, गाढ़ी शराब और खड़िया मिट्टी खानेकी इच्छा, कोष्ट-बद्धता बड़े कष्ट से निकलना। जो लोग बिलकुल बैठे रहते हैं और कुछ परिश्रम नहीं करते और जो अमिताहारी अर्थात् आवश्यक से अधिक खाने वाले हैं उनको इस औषध से अधिक उपकार होता है।

पलसाटिला ६,३० शक्ति। सड़ा हुआ, कड़वा स्वाद विशेष कर खाने पीने के वस्तुओं को निगलने के उपरान्त, चर्बी अथवा तेलकी चीजों से, मास रोटी और दूध से अनिच्छा, भोजन के समय डकार, जो चीज अन्त में खाई हो, उसका स्वाद और गंध आना [इस अवस्था में

चायना और नक्समवोमिका भी फायदा करती है], तम्बाकू पीने के कारण अक्षुधा। जो लोग नरम प्रकृति के हों और उनको सहजही में आसु निकल आते हों उनके लिये यह अधिक उपकारी है।

अजीर्ण रोग, यकृत के रोग आदि देखो।

औषध प्रयोग।—लगातार तीन दिन तक भोजन करने से एक घंटा पहले औषधि एक बार सेवन करनी चाहिये, उपरान्त १।४ दिन औषधि बन्द रखनी चाहिये। इससे यदि फायदा नहो तो और कोई औषधि उक्त नियमों से सेवन करने को दी जावे।

सहकारी उपाय।—प्रतिदिन प्रातःकाल स्नान और खुली हुई हवा में घूमना और व्यायाम करना विशेष उपकारी है। पीने की चीजों में स्वच्छ पानी और दूध के सिवाय और कुछ नही पीना चाहिये। हवादार मकान में सोना चाहिये और प्रातःकाल उठना चाहिये। सब प्रकार की नशीली वस्तुओं का निषेध है।

पथ्य।—अक्षुधा में पथ्य के प्रति दृष्टि रखना ही प्रधान है। एकही पथ्य सब लोगों को एकसा सह्य नहीं होता इस लिये पथ्यके विषयमें कोई एक नियम नहीं किया जासका। जिसको जो पथ्य सह्य हो और सहज में पच जावे उसके लिये वही अच्छा है।

अस्वाभाविक क्षुधा।
(मारविड ऐपीटाईट)।

यहभी अजीर्ण का एक लक्षण है। कीडे रहने पर,

गर्भावस्था में, हिस्टीरिया रोग में, और कभी किसी कठिन रोग से अच्छे होने के समय अस्वाभाविक क्षुधा होते हुए देखी जाती है। रोगी की भूख किसी प्रकार नहीं बुझती—सर्वदा ही कुछ न कुछ खाने की इच्छा होती है।

चिकित्सा।—चायना ६, ३० शक्ति।—न बुझने वाली भूख, विशेषकर रात्रि में, खट्टे फल खाने और शराब पीनेकी इच्छा, मीठे और उत्तम पदार्थ खाने की इच्छा, अत्यन्त प्यास किन्तु थोड़ा थोड़ा पानी पीना (आर्सेनिक)।

सीना ६,३०,२०० शक्ति।—कृमि दोष रहने पर, अस्वाभाविक प्रबल क्षुधा पेट भर कर खाने पर भी फिर भूख [इस लक्षण में, मर्क्युरियस और स्टाफिसेग्रिया भी फायदा करते हैं], पेशाब-खुला-रखने से थोड़ी देर में ही दूध के समान सफेद हो जावे।

साइलेशिया १२,३० शक्ति।—अत्यन्त क्षुधा किन्तु अरुचि, कोष्ठबद्ध, मल थोड़ा, मल बाहर निकल कर फिर अन्दर चला जावे।

स्टाफिसेग्रिया ३,६ शक्ति।— पेट भरा रहने पर भी राक्षसी क्षुधा, शराब और तम्बाकू के प्रति इच्छा [नक्सवोमिका के समान]।

औषध प्रयोग।—दिन में २।३ बार।

सहकारी उपाय।—किसी कठिन रोग से अच्छे होने पर अथवा बहुत दिन तक किसी रोग को भुगत कर अच्छे

वृद्ध मनुष्यों के लिये—कार्ब-वेज, नक्स-मश्चेटा, वैराइटा।

गर्भवती स्त्रियों के लिये—आर्सेनिक, फेरम, इपीका, लैकेसिस, क्रियोजोट, फासफोरस, पलसाटिला।

मानसिक अवस्था के कारण—नक्सवोमिका [कार्य चिन्ता के कारण); इग्नेशिया (शोकके कारण), एकोनाईट, चायना वा नक्सवोमिका, (रात्रि जागरण के कारण)।

शरीर क्षयकारी नि:सरण, यथा उदरामय, रस, रक्तस्राव और मवाद निकलने के कारण—चायना, एसिड फास्फोरिक, फासफोरस, कार्ब-वेज, कैलकेरिया। सर्दी लगनेसे—एकोनाईट आर्सेनिक, मर्कुरियस, पलसाटिला।

अधिक वा अनियमित भोजन करनेके कारण—एंटिम क्रुड, इपीका, नक्स, पलसाटिला। शराब पीने के कारण—कार्ब वेज, लैकेसिस, नक्स, सलफर। चाय पीनेके कारण—फेरम वा थूजा। तम्बाकू पीने के कारण—काकूलस, इपीका, नक्स, पलसाटिला।

क्षुधामान्द्य।—कैलकेरिया, चायना। अधिक और अनियमित क्षुधा—चायना, सिना। उबकाई—इपीका, एंटिमनि क्रुड। हिचकी—नक्सवोमिका, जेलसीमीनम, आर्सेनिक। मुहमें पानी भरआना—ब्रायोनिया, लाइकोपोडियम, नक्सवोमिका। उबटी—इपीका, क्रियोजोट। छातीपर आग जलना—पलसाटिला, नक्सवोमिका, कैपसिकम। अम्ल—कैलकेरिया कार्ब, फासफोरस, सलफ्यूरिक-एसिड। पेटफूलना—कार्ब वेज, लाइकोपोडियम, अर्जेन्टम-नाइट्रिक। पाकाशय शूल—नक्सवोमिका, विसमथ, काकूलस, आर्सेनिक।

नक्सवोमिका ६, ३० शक्ति।—प्रातःकालके समय मुहमें सड़ाहुआ वा कड़वा स्वाद रहना, हमेशा खट्टी डकार आना, पेटमें

दर्द और भारापन मालूम होना, भोजन करने के उपरान्त पेटमें कटनसी होना और भारापन, मुहमें पानी भर आना विशेषकर शराबियोंके, मल अत्यन्त कठिन—दस्त जानेकी हमेशा हाजत हो, किन्तु कोष्ट साफ नहो। जो लोग शराब पीते हैं, अपरिमित भोजन करते हैं और बहुत बैठे बैठे काम करते हैं उनके लिये विशेष उपयोगी है।

पलसाटिला ६,३० शक्ति।—चर्बी और तेल में पके हुए पदार्थों के खाने से अपाक, जीभ पर सफेद और पीले रङ्गका मैल, प्रातःकाल के समय मुहका स्वाद बिगडा हुआ, भोजन करनेके उपरान्त डकार, मुहमें जल भर आना, पेटमें कटन, पतला दस्त, विशेषकर रात्रिको। नरम प्रकृति की स्त्रियों के लिये यह औषध अच्छी है।

ब्रायोनिया ६,१२ शक्ति।—बहुत गरमी लगनेके उपरान्त ठण्डा पानी पीनेसे यदि रोग हो, भोजनकी अनिच्छा, यहांतक कि उसकी गंध भी असह्य मालुम हो, भोजन करनेके उपरान्त पाकस्थलीमें दर्द और भारीपन, सब चीजोंका ही कडुवा स्वाद मालुम हो, अत्यन्त सिर दर्द, कोष्टबद्धता, मल सूखा और कठिन।

लाईकोपोडियम १२, ३० शक्ति।—दुर्बल रोगियों को अजीर्ण, देर से भोजन पचना; भोजन के उपरान्त निद्रालुता, पेट अफरना, दस्त साफ न होना। पेट फूलने और कोष्टबद्धता में लाईकोपोडियम और पेट फूलने और उदरामय में कार्बो वेजीटेबिलिस उपकारी है।

आर्सेनिक ६, ३० शक्ति।—फल और खट्टी

चीज खाने से, भोजन के उपरान्त उबकाई और उलटी, पेट में जलन मालुम होना, अत्यन्त प्यास, बार बार थोडा थोडा पानी पीना, बेचैनी, पेट में पत्थर के समान भारापन।

कैलकेरिया-कार्ब १२, ३० शक्ति।—कमर में कुछ भी आंट कर न रख सके, मुंह का खट्टा स्वाद, खट्टी उलटी, सिर दर्द, उदरामय, थोडे परिश्रम सेही थक जाना, खांसी और कमजोरी।

सलफर ३०, २०० शक्ति।—यह औषधि पुरानी हालत में विशेष यदि अर्श रोग होतो नक्सवोमिका के साथ पर्यायक्रम से व्यवहृत होती है। और और औषधों के प्रयोग के समय बीच बीच में इस औषधि की एक एक बूंद देने से विशेष उपकार दीखता है।

ऐंटिम-क्रुड ६ शक्ति।—अधिक खाने से रोग हो, जीभ सफेद मैल से ढकी हुई, जो कुछ पदार्थ अन्त में खाया है उसी की डकार उठे, जी मिचलाता और उलटी, प्यास, रात्रि के समय बढना।

कार्ब-वेज १२ शक्ति।—बारम्बार डकार, उस से थोडी देर आराम मालुम हो, खाने वा पीने के समय ऐसा मालुम हो मानो पेट फट जावेगा, खट्टी और बदबूदार डकार और पेट के भीतर जलन।

चायना ६, ३० शक्ति।—ऐसा मालुम होकि पेट भर रहा है और फटा फटा करता है, डकार आने से

कुछ आराम न हो, सब ही प्रकार के खाद्य पदार्थों से अनिच्छा, शराब अथवा खट्टी चीज की इच्छा, कमजोरी, प्रत्येक बार भोजन करने के उपरान्त सोनेकी इच्छा होना।

सीपिया १२ शक्ति।—परिपाक शक्ति की अत्यन्त कमजोरी, कडवी या खट्टी डकार, चहरा पीले रंग का, नाक पर काले दाग, मल कठिन और गांठे।

औषध प्रयोग।—प्रतिदिन दो बार।

सहकारी उपाय और पथ्य।—इस रोग की चिकित्सा करते समय निम्नलिखित नियमों की प्रति दृष्टि रख कर औषध व्यवहार करना चाहिये।

१—अच्छी तरह चबा कर धीरे धीरे भोजन करना चाहिये, खाई हुई वस्तु जब तक दांतों से भली भांति पिस नहीं जाती और लाल के साथ मिल नहीं जाती, पचती नहीं है। जिस प्रकार जल्दी करने से कोई कार्य्य अच्छी तरह सम्पन्न नहीं होता उसी तरह जल्दी [illegible]ना परिपाक क्रिया का प्रधान विघ्न

[illegible]मय इस बात पर ध्यान रखना [illegible]ाते हैं। प्रति दिन नियमित समय [illegible]ी के अनुसार उचित भोजन

[illegible]ा अनुचित है। इस से पाकाशय [illegible]खाये हुए पदार्थ के साथ विमि-

क्षण अर्थात् मिलने में हानि पहुंचती है।

४—ऐसा भोजन करना चाहिये जो सहज में परिपाक हो और पुष्टिकारक हो। इस विषय में किसी विशेष नियम का उल्लेख करना असम्भव है। जिस को जो चीज सह्य हो वही खानी चाहिये।

५—पीने की चीजों में स्वच्छ शीतल जल सब से अच्छा है। शराब पीने आदि का बिलकुल निषेध है, इस से सिवाय नुकसान के कुछ भी फायदा नहीं है। भोजन के समय अधिक जल पीना बुरा है। अधिक पानी पीने से पाकस्थली की गरमी कम होजाती है, और उस का रस अधिक पानी के साथ मिल कर अधिक पतला होकर उस की क्रिया को रोकता है। इसी कारण हमारी प्रकृति के अनुसार अधिक बरफ खाना भी दूषणीय है।

६—भोजनके समय मानसिक अवस्था के ऊपर परिपाक क्रिया पूर्ण रूप से निर्भर है। इस लिये उस समय दुःख, शोक, क्रोध, और विरक्ति करना अन्याय है। प्रसन्न चित्त होकर स्थिर भाव से बन्धु बान्धव और कुटुम्बियों के साथ आनन्द पूर्वक वार्तालाप करते हुए भोजन करना चाहिये।

७—पूर्ण आहार करने के उपरान्त ही कठिन मानसिक और शारीरिक परिश्रम करना अनुचित है। इसी प्रकार अत्यंत थक जाने के उपरान्त भोजन करना अन्याय है। आज कल अजीर्ण रोग की अधिकता देखते हैं इस का प्रधान कारण झट पट रोटी टुकड़ा चबाना और आफिस या स्कूल को भाग जाना ही है। प्रतिदिन प्रातःकाल ठंडे जल से स्नान करना, नियमित परिश्रम

और व्यायाम [कसरत करना], प्रफुल्लता और आमोद मैं शरीर को स्वस्थ रखने के प्रधान उपकरण हैं।

छातीपर जलन होना।

(पाइराशिस)

छातीपर जलन होना अजीर्ण का एक प्रधान लक्षण है। इससे पेटमें लेकर छाती तक जलन मालुम होती है और काली काली उलटी होती है। खट्टी अथवा जलन पैदा करने वाली डकार आती है अथवा अचानक मुहमें एक एक कुलक पानी भर आता है।

चिकित्सा।— कार्ब-वेज १२,३० शक्ति।— मुह में पानी भर आना विशेष कर रात्रि के समय, पाकाशय में जलन के साथ खट्टी डकार, शराब पीने आदि और रात्रि जागरण के उपरान्त।

चायना ६,१२ शक्ति।— प्रत्येक बार भोजन करने के उपरान्त छाती पर जलन, मुहमें पानी भरआना, खाली डकार उठना और पाकाशय में दबाव मालुम पड़ना, प्रत्येक भोजनके उपरान्त ही ऐसा मालुम होना, मानो पेट अलग्त भर रहा है।

नकसवोमिका ६, ३० शक्ति।— रात्रिके समय कड़वा अथवा खट्टा थोड़ासा पानी मुहमें भरआवे, प्रत्येक बार भोजन करनेके उपरान्त उलटी, पाकाशय के स्थानको दबाने से सहा न होना, शराबियों के मुहमें पानी भरआना, इत्यादि।

पल्साटिला ६ शक्ति ।— जो कुछ खाया जावे उसीकी गंध और स्वाद मिली हुई डकार उठना, भूक लगने के समान पेटमें कष्ट मालुम होना, कड़वा पानी मुहमें भर आना, मृदु और अश्रुप्रवण प्रकृति अर्थात् ऐसा मनुष्य जो नरम प्रकृति का हो और जिसको जल्दी रुलाई आजाती हो।

सीपिया ६,३० शक्ति ।— खाने पीने के उपरान्त मुंहमें पानी भर आना, पाकाशय में जलन (इस लक्षणोंमें आर्सेनिक और फासफोरस भी दिया जाता है), गर्भवती स्त्रीयों के लिये विशेष उपयोगी है (नक्सवोमिका)।

फासफोरस ६ शक्ति ।—छाती पर जलन, कड़वा अथवा बदबूदार पानी भर आना, भोजन के उपरान्त खाई हुई चीज़ की खट्टी होकर डकार उठे [नक्सवोमिका], अत्यन्त निद्रालुता, विशेषकर भोजनके उपरान्त।

कैलकेरिया-कार्ब ६,१२ शक्ति ।—पुराना अम्ल रोग में उत्तम है।

सलफर ६,३० शक्ति ।—पुराना होनेपर और और औषधों के साथ बीच बीच में एक एक मात्रा सलफर देना अच्छा है। यह नक्सवोमिका के साथ पर्यायक्रमसे भी दिया जाता है।

खट्टी डकार—कैलकेरिया-कार्ब, कैमोमिला, चायना, लाइकोपोडियम, नक्सवोमिका।

बिना पचा हुआ पदार्थ गलेमें भर आता हो—ब्रायोनिया, इग्नेशिया, फासफोरस, लैकेसिस ।

औषध प्रयोग ।—दिन २।१ मात्रा ।

सहकारी उपाय और पथ्य ।—अजीर्ण का विषय देखो ।

वमन ।

[वोमिटिं]

उलटी होना बहुत से रोगों का लक्षण है । पाकाशय, यकृत, [जिगर] वृक्क, तिल्ली, जरायु, आंत और मस्तिष्क रोगों से प्राय ही उपस्थित रहते हुए देखा जाता है । इसके सिवाय अधिक भोजन, कीड़ोंका उपद्रव, गर्भ संञ्चार, गाड़ी अथवा नौकामें बैठना, विरक्ति वा घृणा पैदा करने वाली वस्तु देखना आदि कारणों से उलटी होती है ।

चिकित्सा ।—**ऐंटिम-क्रूड ६, १२ शक्ति** ।—अधिक भोजन करने के कारण जी मिचलाना और उलटी । इस अवस्था में इपीका, नक्सवोमिका, अथवा पलसेटिला भी दिये जासकते हैं । अत्यन्त भयंकर उलटी, किसी प्रकार बन्द न होती हो [ऐंटिम टार्ट भी फायदा करती है] । जीभ में दूधके समान सफेद मैल ।

आर्सेनिक ६, ३० शक्ति ।—उलटी होना, विशेष कर खाने पीने के उपरान्त, अधिकतर पीने के उपरान्त, हरासा और, पीलासा श्लेष्मा और पित्त, अथवा काले से रंग का पदार्थ उलटी निकलना, अचानक अत्यन्त कमजोरी ।

आमोनिया-२,६ शक्ति ।—पीने अथवा खाने के

बाद उलटी, कडवी पित्तकी उलटी, उलटी होने के समय गाँई और सुई चुभोने के समान दर्द।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति।— खाई हुई चीज की उलटी होना, वहभी खट्टी या कडवी, कडवी पित्त की उलटी, बालकों के लिये ही विशेष फायदा करने वाली है।

काकूलस ३,६ शक्ति।— गाड़ी में अथवा नौका में बैठने से किम्वा किसी प्रकार झूलने से जी मिचलाना और उलटी, समुद्र यात्राके समय उलटी।

कोनियम ३, ६ शक्ति।—काफी के फोकके समान पदार्थ का उलटी में निकलना, गर्भवती स्त्रियों की उलटी इपीका और नक्सवोमिका भी फायदा करती है।

इपीका ३, ६ शक्ति।—जी मिचलाना और उलटी होने पर यह उत्तम औषधि है। सर्वदा और लगातार जी मिचलाना, खाई हुई चीज किम्वा कडवा पित्त किम्वा हरा चिटचिटा पदार्थ उलटी में निकलना, पाकाशय में भयङ्कर दर्द, तम्बाकू पीने और तेलकी आदि में पके हुए भोजन करने से पेट का दोष।

नक्सवोमिका ६, १२ शक्ति।—भोजन के उपरान्त जी मिचलाना, शराबियों को खाली उबकाई, खट्टी बदबू और खट्टे स्वाद मिली हुई श्लेष्मा की उलटी और सिर दर्द, उजले लाल या काले रंग के रक्त की उलटी, बारम्बार हिचकी।

पलसाटिला ६ शक्ति।—पाकाशय की दुर्बलता

हो और रोगी बहुत ही थोडा भोजन कर सका हो, प्रत्येक बार भोजन करनेके उपरान्त उलटी, घीमें पके हुए आदि पदार्थ भोजन करनेसे उलटी, स्त्रियों के लिये विशेष उपकारी है।

विराट्रम ऐल्बम ६, १२ शक्ति।—प्रबल वमन और लगातार जी मिचलाना, बहुत ऐसी कमजोरी कि बिछौने पर पडे रहने की इच्छा रहती हो [आर्सेनिक की तरह], खाये हुए पदार्थ की उलटी, कडवा, खट्टा, झागदार, सफेद या पीले हरे से रग का श्लेष्मा, काली कडवी और रक्त की उलटी, हिलने झुलने से या पीने सेही उलटी होजाना, चाय पीने से ठडा पसीना, अचानक कमजोरी और नाडी दुर्बल [आर्सेनिक]।

औषध प्रयोग।—कठिन अवस्था में प्रत्येक आधे अथवा एक घंटे के अन्तर से जब तक फायदा न हो। इतनी कुछ कठिन न होतो ३।४ घंटे के अन्तर से एक एक मात्रा।

सहकारी उपाय।—अधिक भोजन अथवा दुष्पाच्य (कठिनाई से पचने वाले) पदार्थ खाने से यदि उलटी होती होतो गले में अगुली डाल कर अथवा गरम जल पी कर उलटी कर डालना ही अच्छा है। बार बार उलटी होना अथवा जी मिचलाना आदि होतो बरफ मुह में रखने से फायदा दिखलाई पडता है। उस समय साबू-दाना आदि हल्का पथ्य उचित है। कभी कभी उलटी बन्द करने के लिये सोडावाटर और आहार के लिये

दूध में सोडावाटर मिला कर देने से उपकार दीखता है।

रक्तवमन (लोहू की उलटी)।

(हिमैटीमिसिस)।

उलटी होने से पहले पाकाशय के स्थान पर एक प्रकार का बोझ पूर्णता, दर्द और कष्ट मालुम होता है, मुंह का नमकीन स्वाद, जी मिचलाना, चक्कर आना, और कमजोरी रहती है तथा सिर घूमा करता है। उलटी में जो रक्त निकलता है उस का परिमाण थोड़े से बहुत अधिक भी हो सकता है। कभी यह रक्त उजले लाल रंग का और पतला और कभी काले रंग का और जमा हुआ।

पाकाशय में कोई शिरा (नस) टूट जाने से, इस प्रकार खून की उलटी होती है। अत्यन्त शराब पीना, अति तीव्र औषध सेवन करना, बाहरी चोट लगना, अर्श (बवासीर) का रक्तस्राव अचानक बन्द होना, और अचानक स्त्री का ऋतु बन्द होना आदि खून की उलटी होने के उत्तेजक कारणों में प्रधान गिने गये हैं।

चिकित्सा।—एकोनाईट ३, ६, शक्ति।— जब रक्तपूर्ण और युवा मनुष्यों को रक्त की उलटी हो, रक्त उजले लाल रंग का हो, अत्यन्त मृत्युभय और मन का उद्वेग।

आर्निका ३, ६ शक्ति।—यदि बाहरी चोट लगने

से खून की उलटी हो, खून काला और जमा हुआ, पाका शय में दर्द मालूम होना।

आर्सेनिक ६, १२, ३० शक्ति ।—पाकाशय में गरमी और दर्द, काले से रंग के पित्त और रक्त की उलटी, अचानक अत्यन्त कमज़ोरी, अत्यन्त बेचैनी।

चायना ६, ३० शक्ति ।—दुबले पतले और कमज़ोर देह वाले मनुष्य के लिये, रक्तस्राव के कारण अत्यंत दुर्बलता।

इपीका ६ शक्ति ।—अचानक उलटी, रक्त काला और खट्टा, चहरा बिलकुल पीले रंग का और चक्कर आना, मरोरा और लगातार जी मिचलाना, पाकाशय में बहुत ही ज्यादा दर्द।

फासफोरस ६ शक्ति ।—उजले लाल रंग की उलटी, चहरा, होंठ, मसूढे और जीभ रक्तशून्य, जो कुछ पिया जाय वह पेट में पहुंच कर गरम होने से ही उलटी होजावे, अत्यन्त निद्रालुता, विशेषकर, भोजन के उपरान्त ।

सिकेली ३, ६ शक्ति ।—दुबली पतली देह वाला मनुष्य, रोगी आदमी की रक्त की उलटी, काले से, सडे हुये रक्त की उलटी, रोगी स्थिर होकर सो रहे, कोई दर्द न हो, किन्तु अत्यन्त दुर्बल, चहरे पर मुर्दापन, रक्तशून्य और देह ठंडे पसीने से नहाया हुआ।

औषध प्रयोग।—यदि प्रबल रक्तस्राव हो तो एक घंटे वा आधे घंटे के अन्तर से औषध देनी चाहिये। उपरान्त जैसी आवश्यकता हो ३। ४ घंटे के अन्तर से।

सहकारी उपाय। ठंडे पानी में कपड़ा भिगो कर पेट के ऊपर रखने से विशेष उपकार दीखता है।

पथ्य। उलटी होने के कई एक घंटे के उपरान्त आहार देना चाहिये। दूध, बार्ली, साबूदाना, आदि हल्का पथ्य ही ठीक है। जो कुछ खाने को दिया जावे ठंडा कर के देना चाहिये। गरम गरम कुछ भी नहीं देना चाहिये।

हिचकी।

[हिक्कफ़]

हिचकी सुस्थ दशा में एवं बहुत से रोगों की शेषावस्था में भी दिखलाई पड़ती है। हैजे के रोग में हिचकियां एक कष्टदायक लक्षण है। पुराने रोग की अंतिम दशा में हिचकी आने से रोग बहुत ही कष्टदायक और दु साध्य होजाता है।

चिकित्सा। जब जिस रोग के साथ हिचकी उपस्थित हो तब उसी रोग के लक्षणों के अनुसार चिकित्सा करना उचित है। सामान्य कारण से साधारण दशा में अथवा बच्चों को हिचकी आने से ठंडा पानी

अथवा शरबत पिला देने से बन्द होजाती है। यदि इस से बन्द न हो तो २। १ मात्रा नक्सवोमिका ६, , १२ वा ३० यथेष्ट है।

कष्टकर और प्रबल हिचकी—हायोसायेमस, विराट्रम-विर, स्ट्रामोनियम।

ठंडा जल पीना के बाद—नक्सवोमिका। गरम जल पीने के बाद—विराटम एल्बम। बच्चों को—इग्नेशिया वा स्ट्रामो-नियम।

सप्तदश अध्याय।

पेट के रोग।

शूल वेदना [कालिक]।

शूलवेदना अत्यन्त भयानक और कष्टदायक रोग है। यह दर्द कभी कभी बिलकुल ही नहीं रहता। फिर अचानक आरम्भ होजाता है। दर्द नाभि अथवा बडी आंतों के पास होता है। दर्द कभी कभी इतना अधिक होता है कि रोगी तकलीफ के मारे जमीन में लेटने लग जाता है, चिल्लाता है और दर्द के कारण बेचैन होजाता है। किसी किसी का जी मिचलाता है, उलटी होती और कोरी डकार आती है। चहरे पर ठंडा पसीना आता है और सूरत देखने से मालुम होता है कि रोगी बडा कष्ट पारहा है। कभी पेट फूल जाता है और क्षुधा भी नहीं

जाना, और कभी पेट बिलकुल बैठ जाता है और दबाने से आराम मालुम देता है। कोष्ठबद्धता प्रायः रहती है।

चिकित्सा।—

१। अपाक के कारण—नक्सवोमिका, पलसाटिला, इपीका, आर्सेनिक,

२। बालकोंको—कैमोमिला, बेलेडोना, सीना, इपीका, आईरिस, ।

३। पैत्तिक—मर्कुरियस, इपीका, पाडोफाईलम, डायस्कोरिया, आईरिस।

४। वायुप्रधान—कालोसिन्थ, बेलेडोना, इग्नेशिया, ओपियम, प्लम्बम्।

५। पेट फूलनेके कारण—नक्सवोमिका, कैमोमिला, लाईकोपोडियम, डायस्कोरिया, आईरिस।

एकोनाईट ३,६ शक्ति।— एक प्रकारके प्रदाहके साथ शूलवेदना, मूत्राशय तक फैली हुई, थोडा थोडा और कष्टके साथ पेशाव होना, दर्द इतना असह्य होकि उससे रोगी चिल्लाताहो, तडफताहो, और पागलके समान उसकी दशा हो जावे, अत्यन्त मृत्युभय और मानसिक उद्वेग।

बेलेडोना ३,६ शक्ति।— पेट के भीतर जकडन, नाभिके पास फोडेके समान ऊंचा हो उठे, ऊपरी दाबसे और झुकजानेसे आराम, दर्द ठहर ठहर कर हो, जैसे अचानक दर्द हो, वैसेही अचानक चलाजावे।

कार्व वेज ६,१२ शक्ति।— पेटके भीतर वायु

सञ्चय, बारम्बार डकार आना किन्तु आराम न होना, पेट में गड़गड़ाहट, बिछौनेपर पड़ा रहना, चहरे पर मुर्दापन, हाथ पैर ठण्डे, तीसरे पहर ४ बजेसे लेकर ८ बजे तक बढ़ना।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति।— पेट ढोलके समान फूलजावे, पेटफूलनेके कारण शूलका दर्द, खट्टी उलटी, अत्यन्त बेचैनी कोईबात पूछनेपर भलमनसाहित के साथ जवाब न देसकता हो, बालक बराबर गोदी में घूमना चाहे, दर्द के कारण पागल के समान हो।

चायना ६,१२ शक्ति।—पेट फूलनेके कारण शूल का दर्द और उसके साथ प्यास, नाभि के पास असह्य दर्द, पेट इतना भरा हुआ कि टनटनाता हो (मानो फट जावेगा— कार्ब-वेज, लाईकापोडियम) फल खानेसे दर्द।

कालोसिन्थ ३,६ शक्ति।— दर्द अत्यन्त प्रबल, काटनेके समान, ऐंठन या बायठेके साथ, सब पेटमें ऐसा मालूम होकि जोरसे पत्थर से दाब रखा है, आगेको और झुक जावे, अत्यन्त बेचैनी, कराहना और कातर शब्द कहना।

इपीका ४,६ शक्ति।— पाकाशयमें अकथनीय भयानक दर्द, नाभि के चारों ओर फाटने के समान दर्द, सञ्चालन से बढ़ना और विश्राम से आराम, लगातार जी मिचलाना, झुकनेसे उलटी होना, उलटी होने के उपरान्त सोने की इच्छा करना।

लाईकोपोडियम १२,३० शक्ति।— पेटमें वायु

सञ्चय के कारण शूलका दर्द, ऐसा मालूम होकि पेट फट जावेगा, डकार आना किन्तु आराम न पडना ।

मर्क्यूरियस ६ शक्ति ।— पेटमें दर्द, दर्दके समय सर्दी लगना और कम्प होना, वारम्वार दस्तकी हाजत, जङ्घा(जाघ)और दोनों पैरोंमें ठण्डा चिटचिटा पसीना।

नक्सवोमिका ६,१२,३० शक्ति ।— पाकाशयमें दर्द और गलेकी ओर दवाकर उठता हो, पत्थर के समान पाकाशयमें वोझ मालूम होना, अजीर्ण अथवा अनुचित भोजन करनेसे पेट फूलनेके साथ शूलका दर्द, वार वार दस्तकी हाजत किन्तु दस्त न होताहो । जिनेका क्रोध करने वाली प्रकृति है, जिगर (यकृत) में विकारहै और वेहिसाव औषधिया खाई जाचुकी हैं उन्हीं के लिये विशेष उपयोगी है।

पलसेटिला ६ शक्ति ।— सडा हुआ कडवा स्वाद, विशेपकर कुछ खाने पीने से, पाकाशय की गहराई में कटन, खाई हुई चीजकी डकार उठना, वारम्बार पतला मल, अनेक प्रकार का मल, रात्रिके समय अधिक दस्त होना, रोगी शरीर ढकना न चाहताहो, और ठंडी स्वच्छ वायु की इच्छा करता हो, तेल घी आदि में पकी हुई चीजें खानेसे रोग, सहज ही में रो देना।

औषध प्रयोग । प्रवल वेदना (बहुत ही ज्यादा दर्द) के समय जवतक आराम न मालूम पड़े २० । ३० मिनट अन्तर से औषध सेवन करनी चाहिये। दर्द कम होने पर २।२ घंटेके अन्तरसे औषध सेवन करना यथेष्ट है।

सहकारी उपाय ।— गरम फलालेन का सेक और गरम पानी की पिचकारी देनेसे तत्क्षण आराम मालूम पड़ता है। रोगी के पथ्यकी ओर विशेष दृष्टि रखनी चाहिये।

यकृत प्रदाह ।

[हिपाटाईटिस्]

यकृत प्रदाह प्राय होतेहुए नहीं देखाजाता । शरीर में यकृत (जिगर) एक प्रधान यन्त्र है, विशेषकर परिपाक विषय में इसका रस अर्थात् पित्तकी क्रिया प्रधान है । यकृत प्रदाहके प्रधान लक्षण.—प्रबल ज्वर, दाहिनी ओर दर्द, कभी कभी यह दर्द छाती तक फैला हुआ, दोनो कन्धों की हड्डियों के बीचमें भी दर्द मालूम हो, यह दर्द खासते में, सांस लेने निकालने में और दाहिनी करवट सोनेसे अधिक मालुम हो, यकृत के स्थान पर हाथ न लगाया जावे, यह स्थान बहुत गरम और कभी कभी सूजा हुआ, स्वास प्रश्वास में कष्ट, सूखी कष्टदायक खांसी, पेटमें दर्द और कोष्ठबद्धता, पेशाब थोड़े लाल रंगका, जीभ मोटी और पीले रंग के मैलसे ढकीहुई।

यकृत प्रदाहको यदि आराम नहो तो वह ७ । ८ दिनसे अधिक नहीं ठहरता । यदि प्रदाह शीघ्र आराम न होतो कभी कभी पक उठता है, अथवा कभी पुराना आकार धारण कर बहुत दिनतक रहताहै।

कारण ।—शोक, दुःख, क्रोध आदि मानसिक आवेग, प्रबल जुलाब, मद्यपान, बाहरी चोट आदि ।

चिकित्सा ।— एकोनाईट ३,६ शक्ति ।—

प्रबल प्रदाह ज्वर, यकृतमें सुई चुभोनेके समान असह्य दर्द, दर्दके मारे प्राणोंकी आशा छोड़दे, अत्यन्त बेचैनी, घबराहट और मृत्युभय, सिर दर्द, कड़वी पित्तोंकी उलटी, पेशाब बन्द।

बेलेडोना ३,६ शक्ति ।—यकृत स्थान पर तेज दर्द, छाती और कन्धोंतक फैला हुआ, सब पेटमें टन्टनाहट, थोडेसे भी हिलने डुलनेसे कष्ट माळुम होना, मस्तकमें रक्तकी अधिकता और सिर दर्द, कायना, सोते सोते चमक उठना अथवा उछल पडना, बकना, शब्द अथवा उजाला असह्य होना, पेशाब पीला।

ब्रायोनिया ६ शक्ति ।—दाहिनी ओर जलन अथवा सुई चुभोने के समान दर्द, दाहिने कन्धे और बाहुमें दर्द, पीले रङ्गकी जीभ, कडवी पित्त की उलटी, होट सूखे और फटे हुए, सिर दर्द, बिछोने में उठकर बैठनेसे उलटी होना, अत्यन्त चिड़चिड़ापन, सभी बातोंपर चिढ़उठना, कठिन, सूखा हुआ मल।

मर्क्युरियस ६ शक्ति ।—यकृतमें दर्द, दाहिनी करवटसे न सो सकना, यकृतका प्रदाह, टनटनाहट, शरीरका पीला रंग, खासने अथवा छीकनेसे मानो दर्द छातीसे लेकर पीठतक फैलता हो, पसीने आना किन्तु उससे कुछ आराम न पडना, हरा पित्त मिलाहुआ अथवा झागदार मल, वारवार दस्त जानेकी हाजत होना और कायना।

नक्सवोमिका ६ शक्ति ।—खट्टा वा कडवा स्वाद, मिर्चों की उलटी, यकृत में लपकन के साथ दर्द और

दावने से दर्द, सिर दर्द, स्वाभाविक कब्ज की आदत, रातमें ३ बजे के उपरात नींद न आना (रातमें ३ बजे के पहले नींद न आना—मर्कुरियस), जो लोग खाने पीने में बेहिसाबपन करते हैं और जो केवल बैठे बैठे काम करते हैं।

पीडोफाईलम ३ शक्ति।—यकृत के स्थान में दर्द, जी मिचलाना और पित्तकी उलटी, यकृत के स्थानको सर्वदा हिलावें और रगडे, मुंहका कडवा स्वाद, विना दर्दका प्रात कालका उदरामय।

औषध प्रयोग।—कठिन अवस्था में २। ३ घंटेके अन्तर से। आराम मालूम पडनेपर ठहर ठहरकर अथवा ३। ४ घंटेके अन्तरसे।

पथ्य।—तेल-घीमें पकेहुए खाद्य, मांस, मच्छी, शराब और दूध विलकुल वर्जित है। साबूदाना, बार्ली आदि हल्का भोजन करना चाहिये। दर्द और ज्वर दूर होजाने पर अन्नका पथ्य और सब्जी तरकारी तथा अच्छे पके हुए फल दिये जासकते हैं।

पुराना यकृतप्रदाह।

(यकृतका दोष)

आजकल यकृतका दोष एक साधारण रोग होगयाहै। इस दोष का प्रधान कारण खाने पीनेका अनियम और अत्याचारही है। पहले समयमें हिन्दु लोग खाने पीने के विषयमें बहुत सतर्क रहतेथे और नियम पूर्वक सब काम करतेथे इसी कारणसे पुराने जमानेमें यकृत दोष बहुतही

कम दिखलाई पडताथा। पहले समय में १० बजेसे पहले झट पट खापीकर स्कूल या आफिस नहीं जाना पडताथा। मद्य मांसका प्रचार नहीं था। पुलाव पूरी आदि घीमें पके हुए पकवानों का इतना व्यवहार नहीं होता और न प्याज, लहसन गरम मसाले आदि इतने अधिक खाये जातेथे, काम काज के कारण, पेट भरलेने के कारण अथवा स्वेच्छा चरिताके दोपसे खाने पीनेके विषयमें अनेक प्रकारके अनियम नहींथे और आज कलसे समान पहले लोग इतने परिश्रम से नही - घव रातेथे और न इतने आलसी थे। अतएव यकृत का रोग अम्ल रोग, वा परिपाक सम्बधी कोईभी रोग उस समयमें इतना प्रवल नहीं होताथा।

इस रोग के प्रधान लक्षण भी नये यकृत प्रदाह रोग के समान ही हैं, किन्तु अन्तर इतना ही है कि उतने प्रवल नहीं होते। यकृत के स्थान पर थोडा दर्द, पेट और पीठ की ओर फटासा जाना, जीभपर पीले रग का मैल, कडवा स्वाद, भूख कम, प्रात काल के समय जी मिचलाना, भोजन करनेके उपरान्त पाकाशयमें दर्द और पूर्णता मालुम होना, थोडा थोडा सिरदर्द, केवल सोने की इच्छा और आलस्य मालुम होना, निरुत्साह (फुरती न रहना) और कमजोरी, उदासीनता, चर्म और आंखों का पीला रङ्ग, कोष्ठवद्धता, मल मटिया रङ्गका, येही सब यकृत दोष के प्रधान लक्षण।

चिकित्सा।— ब्रायोनिया ३, ६ शक्ति।— सुई चुभोनेके समान दर्द, दाहिने कन्धे और, बाहुमें, दर्द, सबही साथ फटने लगते हों, अत्यन्त चिड़चिडापन, कोष्ठबद्धता, मल सूखा और कठिन।

कैलकेरिया-कार्ब १२,३० शक्ति।—भूख बन्द, कमरमें धोती कसकर न बांध सकना, कडा, विना पचाहुआ मल, रंग मिट्टी के समान, गण्डमाला दोष।

चायना ६,१२ शक्ति।—परिपाक शक्तिकी कमजोरी और भूख न लगना, कडवी डकार उठना, यकृत बडी, छूनेसे दर्द, विशेषकर कुनेन के अपव्यवहारके उपरान्त, विना दर्दके, विना पचाहुआ मल।

मर्क्यूरियस ६ शक्ति।—मुहमें घाव और दुर्गन्ध, जीभपर पीले रङ्गका मैल, कडवा, खट्टा, सडाहुआ अथवा मीठा स्वाद, यकृतके स्थानपर दर्द, पेशाब लाल रंगका, गाढा हरे रंगका, झागदार मल और पेटमें दर्द।

नक्सवोमिका ६,१२ शक्ति।—सिर घूमना, प्रातःकाल मुहका सडाहुआ अथवा कडवा स्वाद रहना, जिगरके स्थान में लपकन, भोजन करनेके उपरान्त पाकाशयमें अत्यन्त पूर्णता मालूम होना, कमरमें धोती सह्य न होती हो, स्वाभाविक कब्जकी आदत, मल बडा और कडा। जो लोग सर्वदा घीमें पकेहुये पदार्थ आदि खाते हैं और नशीली चीजें व्यवहार करतेहैं उनहीं के लिये यह औषध विशेष गुणकारी है।

पाडोफाईलम ३ शक्ति।—प्रातःकाल के समय सिर दर्द, जीभ सफेद, यकृत के स्थान में पूर्णता और दर्द मालूम होना, सफेद खडियाके समान वारवार मल और अत्यन्त दुर्गंध।

सलफर ६,३० शक्ति।—उदास चित्त, कुछभी अच्छा न लगता हो। रोनेकी इच्छा हो, कपाल में भारापन मालूम होना, माथेके ऊपर सदा गरमी, जीभ सफेद, अग्रभाग लाल।

सीपिया ६,१२ शक्ति।—पुराने यकृत रोगकी यह एक प्रधान औषध है।

लैकेसिस १२,३०शक्ति।—यकृतमें तेज दर्द, यह दर्द पाकाशय तक फैलाहुआ। जोलोग शराबी है यह औषध उनके यकृत के रोग में अधिक फायदा करती है।

चेलीडोनियम ३ शक्ति।— यकृत का पुराना रक्ताधिक्य [जिगरकी पुराना खूनकी ज्यादती), दाहिने कंधे की हड्डी के नीचे सर्वदा दर्द, जीभ पीली, कोष्ठबद्धता।

औषध प्रयोग।— आवश्यकतानुसार एक एक बूंद दिनमें ३। ४ वार।

पथ्य।—शराब, मच्छी, मास, घीमें पके हुये पकवान आदि बिलकुल वर्जित है। रोटी, चावल, सब्जी तरकारी, अच्छे पके हुये फल दूध आदि सुपथ्य है। भोजन के प्रकार, परिमाण और समय की ओर विशेष ध्यान रखना चाहिये। [प्रकार—भोजन कैसा है खाने के योग्य है अथवा नहीं। परिमाण—कितना खाना चाहिये यदि अधिक खालिया जायगा तो नुकसान करेगा। समय—सर्वदा नियत समय पर भोजन करना चाहिये)।

सहकारी उपाय।—यकृत के रोग में धूप लगना अच्छा नहीं है। अच्छी तरह व्यायाम (कसरत) करने की पूरी आवश्यकता है। औषध से उतना उपकार नहीं होता जितना कि प्रतिदिन नियमित रूपसे व्यायाम करनेसे होता है। प्रतिदिन प्रातःकाल के समय उठकर और स्नान करने के उपरान्त चिरायता आदि कडवी चीज खाना। पित्ताधिक्य के लिये उपकारी है। यकृत के ऊपर प्रतिदिन ३। ४ वार सेकने से विशेष उपकार होता है।

पीलिया।

(जानडिस।)

पीलिया स्वयम् कोई प्रधान रोग नहीं है। यह यकृत विकार का एक लक्षण मात्र है। इस रोग में शरीर और आंख पीले रंग के हो जाते हैं। मल मिट्टी के समान काले से रंग का होता है, पेशाव भी काले से रंगका होता है। शरीर का पीलापन कभी कभी इतना गहरा होता है कि काले से रंगका दीखने लगता है। शरीर में खुजली चलती है, जीभ पर सफेद मैल जमा रहता है, भूख कम, मुहका कडवा स्वाद, उल्टी होने की इच्छा अथवा कडवी उल्टी हो, यकृत में दर्द रहना। थोड़ा बहुत ज्वर भी रहते हुये देखा जाता है।

क्रोध आदि अति प्रबल मानसिक आवेग, ज्वर में कुनाइन, आर्सेनिक इत्यादि औषधों का अपव्यवहार, मद्यपान और यकृत की पीड़ा इत्यादि इस रोग के कारण हैं।

चिकित्सा।— एकोनाईट ३,६ शक्ति।—

प्रवल ज्वर, शरीर पीला, थोडा लाल रङ्गका पेशाब, मानसिक उद्वेग (घबराहट) और मृत्युभय।

ब्रायोनिया ३,६ शक्ति।—दाबने से यकृतमें सुई चुभोनेके समान दर्द होना, जीभ पीले मैलसे ढकी हुई, कडवी पित्त मिलीहुई उलटी, कोष्टबद्धता, मल कठिन और सूखा हूआ।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति।—भय वा क्रोध के कारण, बालकों के लिये विशेष उपकारी है। मल हरा और पतला, पेटमें दर्द, बालकको बहुत रुलाई आता हो, केवल गोदी में बैठकर धूनेको कहता हो।

चायना ३,६ शक्ति।—शरीर पीले रङ्गका, सिर दर्द, यकृतका बढजाना, कठिन होजाना और दाबनेसे दर्द होना, गले भीतरका कडवा स्वाद, जोकुछ खाया जावे वही कडवा मालुम हो, पेट मानो भराहो और फटा जाता हो, पीले रंगका पतला मल, एक दिन के अन्तर से रोग चढना।

मर्कूरियस ६ शक्ति।— सब शरीर पीले रंगका, यकृतमें दर्द, मल सफेद, दस्त जाते समय और उपरात बहुत हाजत, मुंहसे दुर्गन्ध, भोजनकी अनिच्छा, उदरामय वा आमाशय, जी मिचलाना और उलटी, जीभ गाढे मैलसे ढकी हुई।

नक्सवोमिका ६,१२ शक्ति।—यकृत बडी और सख्त, खट्टा वा सडा हुआ स्वाद, भोजनमे अनिच्छा, यकृत में दर्द, कोष्टबद्धता, बार बार हाजत हो किन्तु दस्त न

होना हो, रात्रिमें ३ बजनेके उपरान्त फिर नींद न आना, प्रात काल के समय बढना। जो लोग परिश्रम नहीं करते और जो लोग अमिताहारी हैं अर्थात् खाने पीनेके नियम पालन नहीं करते।

पाडोफाईलम ३,६ शक्ति।— पित्त निकलना बन्द होनेसे पीलियाका रोग, अत्यन्त जीमिचलाने के साथ पित्ताधार [जिसमें पित्त रहताहै] के पास दर्द होना, यकृत में टनटनाहट, यकृत बढी हुई, मल मिट्टी के समान काला।

चेलीडोनियम ३ शक्ति।—शरीर और आंख पीले रंगकी, यकृत और दाहने कन्धेमें दर्द, कडवा स्वाद, मल सफेद, यकृत बडी और उसमें दर्द।

आयोडियम ६ शक्ति।—पुराना रोग, विशेषकर पारा अपव्यवहार के उपरान्त।

क्रोटेलस् ६ शक्ति।—यदि रोग किसी प्रकार अच्छा न होताहो और साघातिक आकार धारण करे।

सलफर ६,३० शक्ति।—यकृत में दर्द, मुंहका खट्टा वा कडवा स्वाद, पेट फूल जावे, माथे के ऊपर गरमी, रात्रि के समय शरीर में खुजली, दिनमें निद्रा, रात्रिको नींद न आना, कोष्ठबद्ध अथवा प्रात कालके समय उदरामय।

औषध प्रयोग।—प्रति दिन चार, पांच बार औषध का सेवन करना चाहिये। यदि पुराना रोग होतो

दिनमें २ वार प्रातःकाल और सन्ध्या समय।

सहकारी उपाय।—यकृत प्रदाह देखो।

उदरामय।

[डायेरिया]

उदरामय अत्यन्त साधारण रोग है। यदि सामान्य होतो भोजन आदि का नियम पालन करनेसेही जाता रहताहै। यदि कठिन और पुराने आकारका होतो विशेष सावधानी के साथ औषध देनी चाहिये।

लक्षण।—वार वार पतला, बहुत ज्यादा और पानीसे दस्त होते रहते हैं, साथही उबकाई वा जी मिच लाना, पेट फूलना, पेट में कटन, बदबू दार डकार आदि नाना प्रकारके उपसर्ग होते हैं। दस्त कभी पतला होता है, कभी पानीसा, कभी कभी आम, पित्त वा खून मिला हुआ। अनेक समय सामान्य उदरामय की ओर ध्यान न देनेसे वह कठिन और सांघातिक हेजेके रोगमें बदल जाता है। प्राय नये उदरामय में ठीक इलाज और परहेज न करनेसे उसका पुराना आकार होजाता है। उससे रोगीका शरीर क्रमशः क्षीण और दुर्बल होजाता है। अपरिमित (वे हिसाव) भोजन, अपाच्य (न पचने वाली) चीजें खाना, अपरिष्कृत [साफ न किया हुआ] और दूषित जल पीना, ओस, सर्दी वा अत्यन्त गरमी लगना, मानसिक आवेग आदि अनेक कारणों से उदरामय उत्पन्न हो जाता है।

और और अनेक रोगोंका लक्षणस्वरूप उदरामय उपस्थित होता है, जैसे यक्ष्मा, ज्वरातिसार, आतिसारिक विकार ज्वर आदि रोगोंमें उदरामय होता है।

चिकित्सा।—कठिन से पचने वाले खाद्य खानेसे उदरामय—पलसाटिला, पेटिमकुड, इपीका किम्वा नक्स-वोमिका।

ग्रीष्मकालका उदरामय—चायना [सामान्य], विराट्रम-एलवम [वायठे आते होतो], आइरिस [पित्त वमन और सिर दर्द], आर्सेनिक (अत्यन्त कमजोरी)।

नया उदरामय और अचानक अत्यन्त कमजोरी—आर्सेनिक, कार्व वेज, सिकेली, विराट्रम।

पुराना उदरामय—आर्सेनिक, कैलकेरिया, चायना, फेरम हीपर, लाइकोपोडियम, फासफोरस, फासफोरिक एसिड, पाडोफाइलम, सलफर।

उदरामय के साथ पर्यायक्रमसे कोष्ठबद्ध—पेटिमकुड, ब्रायोनिया, नक्सवोमिका।

ठंडा जल पीनेसे—आर्सेनिक, कार्व वेज, पलसाटिला।

सर्दी लगनेसे—कैमोमिला, चायना, डलकामारा, मर्क्युरियस, पलसाटिला।

तेल, घी आदिमें पकी हुई चीजें खानेसे—पलसेटिला, कार्व-वेज।

डर जानेसे—एकोनाइट, ओपियम।

फल खानेसे—आर्सेनिक, चायना, पलसाटिला।

शोक पानेसे—फालोसिन्थ, जैलसीमीनम।

अचानक आनन्द के कारण—काफिया, ओपियम।

सूतिकावस्था [सोवड] में—एंटिमटार्ट, डल्कामारा, हायोसायेमस।

दूध पीने से—कैलकेरिया, सलफर।

गर्मी लगनेसे—एकोनाईट, पाडोफाईलम।

बिना दर्दके उदरामय—एपिस, आर्सेनिक, चायना, फेरम, फासफोरिक एसिड, पाडोफाईलम।

गर्भावस्थामें—एन्टिमटार्ट, डल्कामारा, लाईकोपोडियम, फासफोरस।

पानीमें भींगनेसे—एकोनाईट, रस्टक्स।

एकोनाईट १,३ शक्ति।—अचानक पेटमें असह्य दर्द के साथ उदरामय, अत्यन्त दर्द, तपडफना, ज्वर, प्यास और मृत्युभय, उठकर बैठजाने से सिर घूमता हो अथवा चक्कर आते हों, अचानक पसीने बन्द होनेसे अथवा ठंडी हवा लगनेसे रोग होनेपर।

आर्सेनिक ६,१२,३० शक्ति।—मल, गाढा, हरे रंगका, आम अथवा काला पानीके समान, अचानक अत्यन्त कमजोरी, बेचैनी, लगातार इधर उधर करवटें बदलना, अत्यन्त प्यास, से, बार बार थोडा थोडा जल पीना, पीने वा खानेसे उलटी, कोई चीज ठंडी खाने से वृद्धि, (कोई चीज [illegible] खानेसे आराम—फासफोरस)।

बेलेडोना ३ शक्ति।—पेटमें मडोडेका दर्द, दर्द जितनी जल्दी आये उतनी जल्दी चला जाये, निद्रालुता किन्तु नींद न आना, सोते सोते अचानक चमक पडे और उछल पडे, सन्ध्या के ३ बजे और निद्राके उपरान्त बढना।

कैल्केरिया-कार्ब १२,३० शक्ति।—गडमाला के रोगी को उदरामय, पेट सर्वदा फूल रहे पतला शरीर किन्तु मुख अच्छी, मल सफेदी लिये हुए अथवा पानी के समान, पुराना उदरामय, मल मिट्टी के समान, सोते समय कपाल में पसीना, दोनो पैर ठण्डे और गीले।

कार्ब-वेज १२, ३० शक्ति।—बेमालूम दस्त निकल जाना, अत्यन्त दुर्गन्ध, अन्तिम अवस्थामें जब जीवनी शक्ति कम होता है और प्राय नाड़ी नहीं पाई जाती, अत्यन्त वायुनि सरण, पेट फूलनेके साथ उदरामय।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति।—मल हरा, पानीसा, पेटमें अत्यन्त दर्द, गरम पतला मल, सड़े हुए अण्डे के समान मल में दुर्गन्ध, अत्यन्त असहिष्णु (सहन न करने वाला), कुछ बात पूछनेपर भलमनसात और मुलामीयतसे उत्तर न दे सका हो, बालक बहुत ही रोने वाले हों और केवल गोदी में फिरनेको चाहें, रात्रि में बढना।

चायना ६,१२ शक्ति।—मल पीलासा, पानी के समान, सफेद या कालासा, दर्द नहो, अजीर्ण, बदबूदार मल, पेट बहुतही फूला हुआ, बहुत कमजोर और पसीने आते हों, बहुत बदबूदार वायु निकलता हो, रात्रिमें भोजनके उपरान्त और एक दिनके अन्तर से बढना।

सीना ६, ३० शक्ति।—सफेद पीला मल, नाक खुरसना, सफेद, घुला हुआ पेशाब, सोते समय बेचैनी,

बार बार करवट बदलताहो और सोकर जाग उठताहो, सोते समय दांत किडानाहो, कीडे।

कालोसिन्थ ६ शक्ति।—मल गाढा पीले रंगका, झागदार या पतला, आम मिलाहुआ और फातीसा, दस्त जानेसे पहले पेटमें अत्यन्त दर्द, पेटके भीतर असह्य दर्द, पट्ट होकर दाबकर सोनेसे आराम।

डल्कामारा ६ शक्ति।—सर्दी लगकर रोग होनेसे।

जेलसीमिनम ६,१२ शक्ति।—बुरी खबर, भय, शोक, दुःख और दुखदाई मानसिक अवस्था आदिके कारण उदरमय।

इपीका ६,३० शक्ति।—मल घासके समान हरा आम, झागदार, दस्त जानेसे पहले और दस्त जाते समय जी मिचलाना और पेटमें दर्द, पीले रंगकी उलटी, हरा या चिटचिटा श्लेष्मा, चहरा रक्तशून्य, हाथ पैर ठंडे, पेट फूलनेके कारण शूलका दर्द।

मर्कूरियस ६ शक्ति।—मल गाढा हरा, आम मिला हुआ, झागदार अथवा रक्त मिलाहुआ, बार बार दस्त जानेकी हाजत और दस्त जाते समय और पीछे शूल मारना, सर्दीसी लग कर पेटमें ऐंठाका दर्द, मुंह में घाव और बहुतसी लार गिरना, खट्टी गन्ध, रात्रिमें पसीना, विशेषकर मस्तक में, रात्रि को बढना।

फासफोरस १२,३० शक्ति।—पुराना बिना दर्दका

उदरामय, प्रातःकाल के समयमें बढ़ना, मल विना पचा हुआ, पानीसा और उसमें साबूदानेके से टुकड़े, क्रमशः शरीर दुर्बल हो (यदि दुर्बल न होतो—ऐसिड-फासफोरिक); कोई चीज पीनेसे पेटमें जाकर गरम होतेही निकल जावे, दिन में विशेषकर अहार के उपरान्त निद्रालुता।

फासफोरिक-ऐसिड ६,१२ शक्ति।—विना दर्द के उदरामय, मल सफेदसा, पानी के समान या पीलासा, अत्यन्त दुर्गन्ध, पेटमें बहुत गड़गड़ाहट होताहो, अत्यन्त तौचिछलता भाव (लापरवाहीसी तथा शरीरका गिरा पड़ना), किसी वस्तुकी इच्छा नहो, किसीके अनुरोधसे कुछ नहो, बारम्बार पानीसा विना रंगका बहुतसा पेशाब करने से बहुतसा पसीना, दुर्बलता नहीं।

पाडोफाईलम ६ शक्ति।—विना दर्दके उदरामय, बहुत सा पानीके समान मल, और पीले रंगका आम मिला हुआ मल, दस्त जाने से पहले ऐसा शब्द होना मानो पानी पेटमें गड़गड़ाता है, दस्त जाते समय काच निकल आना, सूखी उलटी, पैर, पीडरी और जांघ के पास बांयठे, प्रातःकाल के समय और गरमी में बढ़ना।

पलसाटिला ६ शक्ति।—मल हरासा, पीलासा और पित्त के समान, मन सर्वदा परिवर्तनशील [बदलने वाला अर्थात कभी मनमें कुछ हो और कभी कुछ], रात्रिके समय उदरामय बढ़ना, फल अथवा बरफकी कुलफी खानेसे उदरामय, ठंडी स्वच्छ हवा चाहना, गरम मकान के भीतर बढ़ना [गरम घरके भीतर आराम—

आर्सेनिक] गरम मकान में रहने परभी सरदीसी लगना, जीभ सफेद मैलसे ढकी हुई, मुहका बुरा स्वाद, प्यास नहीं।

नक्सवोमिका ६,१२,३० शक्ति।—बार बार थोडा थोडा मल, कभी कभी दस्त जाना किन्तु दस्त न होना, दस्त जानेसे पहले हाजत, दस्त जानेके उपरान्त पूरा आराम, शराब पीने और रात जागने आदि कारणों से रोग, शरीर गरम किन्तु शरीर उघाडने की इच्छा न होना। पर्यायक्रमसे कब्ज और उदरामय, अर्थात् एक बार कब्ज मालुम हो और दूसरी बार उदरामय।

सलफर ३० शक्ति।—प्रात काल उदरामय, दस्त जानेसे पहले बहुत हाजत और पेटमें दर्द, मस्तक में सर्वदा गरमी मालुम पडना, खट्टी वा कडवी उलटी, बारम्बार दुर्बलता के कारण एक प्रकारकी शिथिलता, शरीरमें खाज आदि बैठजाने के कारण रोगकी उत्पत्ति।

विराट्रम-एल्वाम ६, १२ शक्ति।—मल बहुत, और पानीके समान, कालासा हरेसे रंगका, दस्त जाते समय और दस्त जानेसे पहले बहुत हाजत और दर्द, दस्त जानेके उपरान्त बहुत कमजोरी, गलेमें और कपाल पर ठंडा पसीना निकलना, बहुत ज्यादा उलटी, ठंडे पानीकी बहुत प्यास, अत्यन्त कमजोरी।

रुबिनिस स्पिट कैम्फर।—अचानक हैजेके समान दर्द और उलटी, सर्दी वा कम्प, पाकाशय और पेटमें अति प्रबल दर्द, हाथ पैर ठंडे। इस अवस्थामें ५ बूद चीनीके

साथ मिलाकर १५। २० मिनटके अन्तरसे देना चाहिये।

औषध प्रयोग।—रोग की प्रकृति के अनुसार औषध देनी होती है। जब दस्त १। २ या ३ घंटेके अन्तर से हो तब प्रत्येक उसके उपरान्त एक एक मात्रा औषध देना बुरा नहीं है। इस प्रकार औषध देनेके उपरान्त यदि आराम मालुम होतो ठहर ठहरकर औषध दीजाय या बिलकुलही बन्द करदी जाय। पुराने उदरामय में प्रतिदिन दोबार औषध देनाही यथेष्ट है।

सहकारी उपाय और पथ्य।—उदरामय में पथ्य की ठीक व्यवस्था ही प्रधान औषध है। नई हालतमें सावूदाना, आरारोट वा बार्ली पथ्य है। क्रमशः चूनेके पानी के साथ दूध दिया जासकता है। पुरानी अवस्थामें पुराना चावल अच्छा होता है। अनेक समय जल वायु परिवर्तन करना आवश्यकीय होजाता है। नये उदरामय में दूध कुपथ्य है।

रक्तामाशय।

(डिसेन्ट्री)

लक्षण।—आमरक्त वा आमाशय भयानक रोग होता है। इस रोगका प्रधान लक्षण आंतों में प्रदाह और घाव, बार बार दस्त आना और आम वार खून मिलाहुआ, दस्त आनेके समय कांखना और जोर देना, नयी अवस्थामें ज्वरभी रहना है। साधारण रोगमें केवल आम निकलता रहता है किन्तु यदि रोग कठिन होतो आम के साथ खून भी निकलता है, केवल रक्त, मच्छी धोये हुए जल के समान, और कभी सड़ा हुआ दुर्गन्धमय दस्त होता है।

रोग घटने की हालतमें बहुत जल्दी जल्दी दस्त होना है, रोगी भी उठनेकी शक्ति से वञ्चित होजाता है, अतमें बकना, हिचकी, ठंडा पसीना, सिर हिलाना आदि अशुभ लक्षण, दिखलाई पडते हैं।

नई हालत से रोग पुराना आकार धारण करता है। पुराना रोग होनेपर उसकी उतनी तेजी तो नहीं रहती किन्तु रोग दुःसाध्य और कष्टकर होजाता है।

चिकित्सा।—नियमित समय पर रोग का लौट आना अर्थात् जब पहला रोग हुआ हो उसी समय रोग का लौटकर होना—चायना।

अत्यन्त प्रबल और कष्टदायक पेटका दर्द—कालोसिन्थ।

सर्दी लगने वा पानी में भीगनेसे रोग—डलकामारा।

रोगकी तीव्रता उत्तीर्ण होनेपर—नक्सफर।

भीतर भीतर ज्वर, रात्रि के समय बेमालूम मल निकलना—रसटक्स।

गोंद के समान केवल डेला डेला सफेद आम—कालि चिकम।

प्रत्येक दस्त के साथ काच बाहिर निकल आना—पाडोफाई लम।

एकोनाईट ३,६ शक्ति।—रोगकी प्रथमावस्था में विशेषकर यदि उसके साथ ज्वर होतो एक एक घंटेमें औषध देनी चाहिये, इससे आराम होता है। यदि एकोनाईट से फायदा न होतो कैमोमिला, नक्स, मर्क्यूरियस, वा पलसेटिला देना चाहिये।

कालोसिन्थ ३,६ शक्ति।—यह प्राय सब प्रकार के आमरक्तके साथ व्यवहार किया जाता है। दस्त के

साथ रक्त मिला हुआ आम, नाभिके चारों ओर बेचैन करने वाला दर्द और कटन, पेट फूला हुआ, और पेटमें दर्द—हाथ न लगाने देना, असह्य दर्द के कारण रोगी पट्ट पड़ा रहे और पेटमें तकिया लगाकर उससे दावकर रखे। यह मर्कुरियसके साथ पर्यायक्रम से भी दिया जाता है।

मर्कूरियस-कर ३,६ शक्ति।—रक्त मिला हुआ आमाशय होतो सबसे अच्छी दवा है। दस्त के उपरान्त अत्यन्त वेग और पेशाव वन्द होना।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।—बार बार थोड़ा दस्त, पतला रक्त मिला हुआ, दस्त के उपरान्त आराम मालूम होना।

इपीका ६,३० शक्ति।—जी मिचलाना, वा उल्टी, अत्यन्त खाँसना, पेटमें दर्द, मल पहले आम पीछे रक्त मिला हुआ आम।

सलफर ३० शक्ति।—अत्यन्त साघातिक अवस्था में या और औषधों से कुछ फायदा न दीख पड़े तो यह औषध दी जाती है। पेटमें अत्यन्त दर्द यहांतक कि हाथ भी न रखा जावे। रोग पुराना होजावे तो बीच बीच में सलफर और नक्सवोमिका देनेमें फायदा मालूम होता है। दस्त जाने के उपरान्त भी बहुत देरतक दस्त की हाजत होना।

रस्टक्स ६ शक्ति।—मल ठीक धोई हुई मछलियोंके पानी के समान, रात्रिको बढ़ना।

फासफोरस ६,३०शक्ति।—विना दर्द के आम और

रक्तस्राव, दस्तकी जगह का खुला रहना।

लाईकोपोडियम १२,३० शक्ति ।—पुराना आमाशय रोग, पेटमें अत्यन्त वायु उत्पन्न होना, कांखना, ऐसा मालूम हो मानो औरभी दस्त होगा।

ऐलोज ६ शक्ति ।—पेट गडगडाना, रक्त मिलाहुआ मल, शूल, अथवा हाजत बहुतही ज्यादा, दस्त जानेके उपरान्त मानो चक्कर आना।

केन्थेरिस ६ शक्ति ।—आम और रक्त मिलाहुआ मल, मानों आंतें खुरच कर बाहर हो गयी हैं, दस्त जाते समय पेटमें दर्द और उपरान्त कम्प, पेशाब थोडा और बारबार पेशाबका वेग।

आर्सेनिक ६,१२,३० शक्ति ।—मल काला, रक्त मिला हुआ, दस्त जानेकी जगह में घाव के समान मालुम होना, मलद्वारपर जलन, बहुत हाजत, बहुत कमजोरी, जब रोग बहुत बढजावे और मल काला और बहुत बदबूदार हो, बहुत दुर्गन्ध, बहुत कमजोरी नाडी, क्षीण वा विलुप्त, तडपना आदि लक्षण होतो आर्सेनिक प्रधान औषध है।

औषध प्रयोग ।—नये रोगमें और रोगकी प्रथमावस्था में एक एक घंटे में औषध देनी चाहिये। यदि रोग हलका हो तो २।३ घंटे के अन्तर से औषध दी जाती है। पुराने रोगमें दिनमें दोबार औषध देना यथेष्ट है।

सहकारी उपाय और पथ्य ।—पथ्य की ओर

विशेष दृष्टि रखनी उचित है। सहज में पचजावे इस प्रकार का हलका और पुष्टिकारक पथ्य देना चाहिये। प्रबल अवस्था में अरारोट ही अच्छा पथ्य है। सहन होनेपर दूध, कच्चा बेल सिजाकर, उसका पानी देनेमे आहार और औषधि दोनों होते हैं। पेटका दर्द निवारण करनेके लिये, पुलटिस, वा फलालेन का सेक गरम पानी से करना अच्छा है। रोगी को ठंडा जल और खाने पीने की चीजें ठंडी करके देना चाहिये। पुराने आमाशय में कच्चा बेल भूजकर देना अच्छा पथ्य है।

कीडोंका उपद्रव।

कीडोंका उपद्रव हमारे देशमें सर्वदाही देखने में आता है, विशेषकर बालक तो कदाचित कोई हीं ऐसा होगा जिसको बाल्यावस्था में कीडोंका उपद्रव न हुआ हो। कीडोंके विषय में अनेक प्रकार के सन्देह और व्यर्थ की चर्चा प्रचलित है। कीडोंका चिकित्सा अत्यन्त दुःसाध्य होनेपरभी होमियोपैथिक औषध कृमि वातु नष्ट करने के लिये प्रधान सहाय हैं। आंतों की श्लैष्मिक झिल्लियोंके विकारके कारण कीडे पैदा होजाते हैं। किसी तीव्र औषध द्वारा कीडोंको निकाल डालनेसेही रोगकी चिकित्सा नहीं होती, किन्तु कृमि-चिकित्सा का यही उद्देश्य होना चाहिये जिस से फिर कीडे उत्पन्न न हों और आंतों की श्लैष्मिक झिल्लीका कीडे उत्पन्न करने वाला विकार दूर हो। यह रोग कीडों का नहीं है किन्तु आंतों की दूषित अवस्थाही रोग है जिस से कीडे उत्पन्न होते हैं।

कीडे ३ प्रकारके होतेहैं; एक बहुत पतले सूतके समान कीडे

असङ्ख्य बाहर निकलते हैं। उनका निवास स्थान बडी आंत हैं। कभी कभी ये छोटे कीडे प्रस्राव और योनिद्वार से प्रवेशकर बहुत खुजली और स्राव उत्पन्न करते है। गुह्यद्वारमें खुजली और क्या बालक हो और क्या वृद्ध सभी को रात्रि में निद्रा खोकर हैरान करडालता है। कभी गुह्यद्वारसे अपने आपही निकल आते है। दूसरे प्रकार के कीडे गोल बडे, दो मुहवाले और कुछ पतले होते हैं। ये छोटी आंतों में रहते है और कभी कभी पाकाशय में जाकर गले और मुखके द्वारा बाहर निकलते हैं। बडे आदमियों की अपेक्षा बालकों को ही इस प्रकार के कीडे अधिक होते हुये देखे गये हैं। कभी कभी एक साथ गुच्छे के गुच्छे कीडे जकडे हुये बाहर निकलते है। तीसरे प्रकार के कीडे फीते के समान चपटे होते हैं, उपरोक्त दो प्रकार के कीडों की अपेक्षा ये कम होते हुये देखे जाते हैं। कीडों के कुछ विशेष लक्षण होते है। इन लक्षणों को देख अथवा जान सकने से कीडों के विषयमें सन्देह उत्पन्न होता है। यथा —चहरा रक्तशून्य, आंखों के चारों ओर नीलेसे दाग, आंखों की पुतलिया फैली हुई वा सुकडी हुई, नाक खुजाना और खोंटना, नींद न आना, मानों डरलगता है इस प्रकार चिल्लाकर जाग पडना, दांत किडकिडाना, पेटके दबाकर पट्ट होकर सोने की इच्छा, भूखकामी न रहना, अथवा कभी बहुत प्रबल भूख, पेट फूलाहुआ और कडा, उदरामय या कब्ज एक न एक लगाही रहना, पेटमें और टूडीके पास कटन होना वा दर्द करना, गुह्यद्वार में खुजली, जी मिचलाना, स्वभाव में चिडचिडापन, पेशाव गाढा और सफेद इत्यादि।

चिकित्सा।—जब कीडोंका उत्पात शीघ्रही निवारण करना आवश्यक होजावे तब गोल कीडोंके लिये स्वान्टोनाइन २x चूर्ण दो दो ग्रेन के हिसाब से तीन तीन घंटे के अन्तरसे देना चाहिये। बालकों के लिये सीनाही उपकारीहै। अनारके जड की छाल सिजाकर खिलानेसे कीडे निकल जाते हैं। छोटे कीडेकी उत्पात में नमक और पानी की पिचकारी लगाना अच्छा है। प्रतिदिन असली सरसों का तेल गुह्यद्वारमें उगलीसे लगाने से छोटे कीडे नष्ट हो जाते हैं।

एकोनाईट ३,६ शक्ति।—ज्वर, नाभि के चारों ओर कडापन और समस्त पेट फूलाहुआ, बार बार दस्त की हाजत किन्तु दस्त न होना अथवा सामान्य आम पडना, गुह्यद्वार में खुजली, रात्रि के समय अधिक खुजली, अत्यन्त भय, बालक बिछाने पर सोने में डरता हो।

बेलडोना ३,६ शक्ति।—चहरा और आंख लाल, निद्राके समय भयानक रूपसे चमक और उछल पडे, बेमालूम दस्त और पेशाब निकल जाना, सोते समय दांत किडकिडाना, कराहना या गुनगुन करना और ऐसा मालुम होना मानो कष्ट होता है।

केलकैरिया-कार्ब १२,३० शक्ति।—कृमि-धातु दूर करनेकी यह प्रधान औषध है। सिर दर्द, आंखों के चारों ओर काले रङ्गके दाग, पेट फूला रहना, चहराभी फूला हुआ और रक्तशून्य, नाभि के चारों ओर दर्द,

गुह्यद्वार में खुजली, विशेषकर सन्ध्या के समय, गंडमाला-दूषित धातु।

चायना ६ शक्ति।—उदरामय, प्रायः सर्वदाही कीडे निकलना, नाक खुरचना और पेट फूला रहना, विना दर्द के अजीर्ण मल।

सीना ६,३०,२०० शक्ति।—लगातार नाक खुरचना, वेचैन निद्रा, सूखी खांसी, विशेषकर रात्रिको, पेट कडा और फूला हुआ, नाभि के पास प्राय: सर्वदाही दर्द, पेशाब थोडी देर रखदेनेसे ही दूध के समान हो जावे।

लाइकोपोडियम १२,३० शक्ति।—पेटमें वायु जम कर फूला रहे, मालुम हो मानो पेटके भीतर कुछ चलता है और हिलता है, सूत के समान कीडे, मलद्वार में अत्यन्त खुजली, कब्ज।

मार्कूरियस ६ शक्ति।—गोल वा सूत के समान कीडे, मलद्वार में बहुत खुजली, कीडे बाहर निकलकर भी चलता रहे, बराबर भूक और खाने की इच्छा किन्तु खाने पर भी दुबला और कमजोर, मुहमें दुर्गन्ध, मलमें आम रहना।

सल्फर १२,३०,२०० शक्ति।—यह तीन प्रकार के कीडों के लिये उपकारी है। गुह्यद्वार आदि स्थानों में सुरसुराहट और चटन, दिनको ११ बजेके समय अत्यन्त क्षुधा, दिनके समय वारम्वार दुर्बलता के साथ अवसन्नता, शरीर में फोडे फुसी।

आंतोंकी एक प्रकारकी दूषित अवस्थाके कारण वहां बहुतसा आमके समान-लसदार-पदार्थ पैदा होजाता है। सब कीडे उसीको खाकर जीवित-रहते हैं। होमियोपैथिक औषध सेवन करनेसे आंतोंकी यह दूषितावस्था दूर होतीहै, कीडोंकी खुराक आम पैदा होना बन्द होजाताहै, अतएव सब कीडे मरकर बाहर निकल पडतेहैं और फिर कभी पैदा नहीं होते।

औषध प्रयोग।—साधारणतः दिनमें दोवार किन्तु कभी कभी जब ज्वर आदि उपद्रव हो तो तीन चार घंटेके अन्तरसे एक एक मात्रा देनी चाहिये। छोटे कीडोंका उत्पात होनेसे नमक के पानीकी पिचकारी उत्तम है।

पथ्य।—कीडोंके उपद्रव में पथ्यके ऊपर विशेष दृष्टि रखनी चाहिये। भात, रोटी, दाल, सब्जी तरकारी, दूध, घी, अच्छे पकेहुए फल, आदि खानेम कुछ हर्ज नहीं है। सब प्रकारका मीठा वा मिठाई, कच्चा या बहुत पका हुआ फल फूल, सडा हुआ या बासी किसी प्रकारका खाद्य बिलकुल निषिद्ध है।

कोष्ठबद्ध।

(कान्स्टीपेशन)

स्वाभाविक रीतसे कोष्ठ स्वच्छ न होने तथा दस्त जाते समय दर्द और कष्ट होनेका नामही कोष्ठबद्ध है। कोष्ठबद्ध प्रायः एक लक्षण विशेष होता है और इससे मालुम होताहै कि शरीरका कोई न कोई यंत्र बिगड गया है। अतएव केवल कोष्ठबद्धको एक रोग समझना भूल है।

भोजनका अनियम, आलस्य और निर्जन वास, वार वार जुलाब लेना, यकृत की क्रियामें कमी और आंतोंकी कमजोरी के कारण यह रोग होताहै। औषध सेवनसे आंतों के सब पट्ठोंको सतेज और वलिष्ठकर सुस्थ वनालेने सेही रोग दूर होताहै।

चिकित्सा।— एंटिमक्रूड ६ शक्ति।—कठिन मल बहुत कष्टसे बाहर निकलता हो, पूरी उमर वाले मनुष्यको एक वार कोष्ठबद्धता और एक वार उदरामय, ऐसा मालूम हो मानों बहुतसा दस्त होगा किन्तु केवल थोडीसी वायु निकल जावे, अन्तमें कठिन मल निकले।

ब्रायोनिया ६ शक्ति।—होठ और मुह सूखा हुआ और प्यास, वार वार डकार, विशेषकर भोजनके उपरान्त, सिर दर्द, मानो माथा फटा जाता है, हिलाते चढना, सूखा कडा मल, स्वभाव बहुत चिडचिडा।

कैलकेरिया-कार्व १२,३० शक्ति।—मल कठिन, वडा, वडा मल निकलने के उपरान्त मस्तकमें उदासीनता, दोनो पैर ठंडे और गील। जिन स्त्रियोंको बहुत और जल्दी जल्दी ऋतु होताहै उनके लिये उपकारी है।

ग्राफाईटिस १२,३० शक्ति।—मल कठिन गाठ दार, गुठलोंके वीच वीचमें आम, मलके साथ कभी कभी थोडा आम पडता हो, चर्मरोग, सब शरीरमें खुजली के साथ चकत्ते, उनमेंसे चिटचिटा रस निकलना।

इग्नेशिया ६ शक्ति।—सर्दी लगकर अथवा गाडी

में बैठनेसे कोष्ठबद्धता, दस्त जानेके बाद ऐसा मालुम होना मानो मल द्वारसे सरल आंत की ओर छुरी लगाई जाती है, मन शोक और दुःख से पूर्ण, ऐसा बवासीर जिसमें रक्त न पडता हो।

लाइकोपोडियम ६,१२ शक्ति।—दस्तकी हाजत हो किंतु दस्त नहो विशेषकर सन्ध्या के समय, मल अत्यन्त कठिन, बहुत थोडा और बडी मुश्किलसे निकलता हो, दस्त जानेके उपरान्त ऐसा मालुम हो बहुतसा मल रहगया है, अम्ल और छाती में आग जलना, पेट बहुत गडगडाना।

नक्सवोमिका १२,३०,२०० शक्ति।—मल बडा, कठिन और कष्टके साथ निकलता हो, बारबार दस्तकी हाजत, ऐसा मालुम हो मानो मल द्वार बन्द होगया है अथवा बहुत सकडा है। खट्टी या कडवी डकार उठना, पाकाशय में पत्थरकासा दबाव मालुम होना, गर्भवती स्त्रियां, जो लोग कुछ परिश्रम नहीं करते और केवल बैठे रहतेहैं, जो लोग सर्वदा घी मिरच आदि मिले हुए कठिनतासे पचने वाले पदार्थ खाते हैं और जो बारबार जुलाब की दवा खाते हैं उनके लिये यह उपकारी है।

ओपियम ३,६ शक्ति।—पुराने उदरामयसे या बहुतसी दस्तावर दवा खानेसे अन्त में ऐसा अवस्था होती है कि आंतोंका वेग अथवा कार्य बिल्कुल नहीं रहता, एक एक सप्ताह तक दस्त नहीं होता, मल छोटा छोटा कडा और काला काला गुठले दार, भयके कारण कोष्ट बद्ध, आंतोंका पक्षाघात।

सीपिया ६,१२ शक्ति ।—मलद्वारपर बोझ मालुम होना वा कुछ पिंडासा अटक गयाहै ऐसा मालुम होना, दस्त होजानेपरभी उसका दूर न होना, गर्भवती स्त्री अथवा जिनकी जरायु में किसी प्रकारका रोग है उनके लिये यह विशेष उपकारी है।

साईलेशिया १२,३० शक्ति ।—कब्ज, सरलान्त्र (सरल आंत) में मानों इतनी शक्ति नहीं है कि दस्त को बाहर निकालदे, बडे कष्टसे यत्न जोर लगानेसे थोडा मल निकलते निकलते फिर भीतर चला जाय, स्त्रियोंका कब्ज, विशेषकर ऋतु के समय और ऋतुसे पहले, बालकोंका कब्ज।

प्लम्बम १२,३० शक्ति ।—मल छोटा छोटा कडा और गुठलेदार, बारबार प्रबल दर्द, मलद्वार का सुकडा हुआ मालुम होना।

प्लाटिना १२,३० शक्ति ।—नरम मल निकलते समय भी कष्ट, बारम्बार दस्तका वेग, अत्यन्त कांखना पडे किन्तु थोडा ही दस्तहो, घूमने के समय कोष्ठबद्ध।

सलफ़र १२, ३०, २०० शक्ति ।—मल कठिन और बडा बडा, आम मिला हुआ, मलत्यागके उपरान्त मलद्वार आदि स्थानोंमे जलन और दर्द, कठिन गुठलेदार मल, थोडाही दस्त हो, उसके साथही बवासीर, दस्त जाते समय पहली बार दस्त की चेष्टामें कष्ट, इसलिये रोगी दस्तके लिये न जानाहो, माथेके ऊपर बराबर गरमी।

पुराने रोगमें, विशेषकर उसके- साथ घवासीर रहने पर नक्सवोमिका और सलफर-सप्ताहमें दो वार सलफर और दोवार नक्स पर्य्यायक्रमसे व्यवहार करनी चाहिये। हाइड्रास्टस अच्छी औषध है। इस औषधसे यदि कुछ फायदा न दीखे तो कैलकेरिया कार्व वा ग्रफाइटिस दिया जासकता है।

औषध प्रयोग।—प्रातःकाल और सन्ध्या दिनमें दोवार।

सहकारी उपाय।—कभी जुलाव न लेना चाहिये। सामान्य कोष्ठबद्धता होते ही जुलाब लेनेका अभ्यास बहुत ही बुरा है। आजकल देखते हैं प्राय लोग सप्ताहमें अथवा महीनेमें दोवार जुलाब लेते हैं, इससे रोगको आराम नहीं होता केवल थोडे समयके लिये आरामसा मालूम होकर फिर रोग बढ़जाता है। जल इस रोग की महौषधि है,—प्रति दिन प्रातःकाल ठण्डा पानी पीना और ठण्डे पानी से स्नान करना बहुत गुणदायक है। यदि पटमें गाठहीं अथवा बहुतदिन तक कोष्ठबद्धता रही हो तथा उससे अत्यन्त कष्ट हो तो गरम पानी में साबुन घोल कर पिचकारी लगाई जासकती है। प्रतिदिन नियमित समय पर शौच जाना, दस्त की हाजत मालुम पडने पर उसी समय उसको निवृत्त करना, नियमित रूपसे भ्रमण करना और व्यायाम करना आदि सामान्य नियमों पर दृष्टि रखनी चाहिये।

पथ्य।—पथ्य के विषय में भी विशेष ध्यान रखना चाहिये। दुग्ध, शरबत आदि पीनेकी चीजें यथेष्ट दी

जासकतीहै । मांस खाना बहुत बुराहै । पके हुए फल यथा अरड खरबूजे, आम, सीताफल आदि अत्यन्त गुणकारी हैं । भुसी मिली हुई आटेकी रोटी, दही, छाछ आदिसे कोष्ट स्वच्छ रहताहै ।

अर्श—ववासीर ।

पाइल्स ।

लक्षण ।—मलद्वारकी शिरा [नस] फूल जातीहै और चमडा कडा होकर मस्से पैदा होजातेहैं । मलद्वारके भीतर मस्से होनेसे उनको भीतरके मस्से और बाहर होनेसे उनको बाहरके मस्से कहतेहैं । इनमेंसे कभी खून गिरताहै, और कभी नहीं गिरता । मस्सा कभी एकही होताहै और कभी बहुतसे एक साथ इकट्ठे होजाते हैं । इन सब मस्सोंमें खुजली, हूल मारना, लपकन, अकडन, जलन आदि अनेक प्रकारके कष्ट मालुम होतेहै । कभी दस्त के साथ एक एक बूंद और कभी बहुत ज्यादा खून गिरताहै ।

चिकित्सा ।—साधारण ववासीर—नक्सवोमिका, सलफर, पाडोफाईलम । कोष्ठबद्धके कारण ववासीर—सलफर, इस्कूलस, नक्सवोमिका, कालिन्सोनिया, कार्वोवेजीटेविलिस । गर्भावस्थामें ववासीर—एलोज, कलिन्सोनिया, नक्सवोमिका । रक्तस्रावयुक्त अर्श—हैमोमेलिस, सलफर, [फ लाम्मा रगका खून], इस्कूलस, एकोनाईट, एलोज (बहुत रक्तस्राव), चायना (बहुत रक्तस्रावके उपरान्त) । रक्तस्राव नहो—पर्यायक्रमसे नक्सवोमिका, और सलफर ।

अत्यन्त दर्द—एकोनाइट । जलन और खुजली—कैपसीकम, आर्सेनिक । रस गिरना, रक्त न पड़ना—मर्क्युरियस, इस्कूलस, पलसाटिला । बवासीर पकजानेपर—मर्क्युरियस ।

एकोनाइट ३,६ शक्ति ।—यदि अत्यन्त दर्द और जलन हो और लाल रङ्गका रक्तस्राव होतो यह औषध दी जाती है । मस्सोंमें यदि खिंचन या टन टनाहट होतो यह दवा फायदा करती है ।

आर्सेनिक ६,३० शक्ति ।—अत्यन्त दर्द, असह्य जलन और दुर्बलता । शराब पीनेवालोंका बवासीर ।

कालिन्सोनिया ।—पुराना बवासीर, साथही अत्यन्त कोष्ठबद्धता । अधिक रात्रिके समय बढ़ना, प्रातःकाल के समय कमी ।

हैमामेलिस ३ शक्ति ।—दर्द और रक्तस्राव में यह उपकारीहै । थोड़ा रक्तस्राव और दुर्बलता अधिक ।

हाइड्रासटिस १ शक्ति ।—जब कोष्ठबद्ध ही प्रधान उपसर्ग हो उठे ।

नक्सवोमिका ३० शक्ति ।—जो लोग केवल बैठे रहतेहैं और अति पुष्टिकारक पदार्थ खाते हैं उन बवासीरमें यह उपकारीहै, शराब पीने वाले, कोष्ठबद्ध किन्तु बारबार दस्त जाने की इच्छा, काच बाहर निकल आना ।

सलफर ३० शक्ति ।—पुराने बवासीर में यह अत्यन्त गुणकारी है । कोष्ठबद्ध रहने पर इससे विशेष उपकार होता है ।

नक्सवोमिका और सलफर ।—यह अर्शरोग की अव्यर्थ महौषध है । एक बूंद सलफर प्रातःकाल और एक बूंद नक्सवोमिका रात्रिको सोते समय एक सप्ताह तक व्यवहार करनी चाहिये ।

सहकारी उपाय ।—मांस और सब प्रकारके गरम मसाले, मिर्च लाल व काली आदि गरम चीजें खाना निषिद्ध है । प्रतिदिन ठंडे पानी का व्यवहार, यथानियम परिश्रम, नहीं पचनेवाले पदार्थों का परित्याग आवश्यक है । ऐसे भोजन करना उचितहै जिससे कोष्ठ नरम रहे, इसलिये बवासीर के रोगी को भोजनके समय फल मूल अधिक खाना चाहिये । बवासीर के रोगी को प्रतिदिन सोने से पहले टट्टी जानेका नियम रखना बहुत अच्छा है । ऐसे रोगी को स्नान और भोजन पर विशेष दृष्टि रखनी चाहिये ।

जिस अर्शमें रक्तस्राव न हो, उस में यदि जलन और अत्यन्त दर्द होतो गरम पानी का सेक करने से आराम मालुम होताहै । गरम पानी में एकोनाईट वा आर्निका मिलाकर [एक आउन्स पानीमें दस बूंद औषध] उसमें कपडा भिगोकर रखनेसभी फायदा होताहै । यदि मस्से पकतेसे दीर्घ पडें तो उनमें पुलटिस लगाना अच्छा है । यदि मस्सोंमें अत्यन्त खुजली मालूम होती होतो बोरासिक ऐसिडमें वेसेलिन मिलाकर मलम त्यारकर लगानेसे उसी समय खुजली मिट जाती है । इस्कूलस सिरेट अर्शके लिये बहुतही उपकारीहै ।

कांच बाहर निकलना ।

(प्रोलेप्सस् येनी)

उदरामय वा रक्तामाशय बहुत दिन तक रहनेपर ज़ोर करते करते कांच बाहर करनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त कोष्ठबद्ध, अर्श आदि रोगोंमें भी कांच बाहर निकल आती है।

चिकित्सा। — कैलकेरिया-कार्ब १२,३० शक्ति।— गण्डमाला दूषित धातु, जिनबालकों का माथा बड़ा होता है और तालु (ब्रह्मरन्ध्र) में शीघ्र हड्डी पैदा नहीं होती, शरीर दुबला किन्तु पेट कड़ा और मोटा तथा उत्तम क्षुधा, उदरामय, कीचड़के समान मल, मलद्वारमें अत्यन्त सुरसुराहट और खुजली।

मार्क्यूरियस ६ शक्ति।— उदरामय अथवा रक्तामाशय रोगके अत्यन्त वेगके साथ कांच निकल आना।

नक्सवोमिका ६, १२, ३० शक्ति।— स्वाभाविक कोष्ठबद्ध धातु, मल सख्त, बड़ा और सहज ही बाहर न निकलता हो, जो लोग परिश्रम नहीं करते और खाने पीने के सम्बन्ध में अत्याचार करते हैं, दर्दके साथ बवासीर, सब लक्षणों का प्रातःकाल के समय बढ़ना।

पाडोफाइलम ३, ६ शक्ति।— विना दर्दके मल, मल त्याग के समय और उपरान्त कांच निकलना।

नक्सवोमिका और सलफर ।—यह अर्शरोग की अव्यर्थ महौषध है। एकबून्द सलफर प्रातःकाल और एक बूंद नक्सवोमिका रात्रिको सोते समय एक सप्ताह तक व्यवहार करनी चाहिये।

सहकारी उपाय ।—मांस और सब प्रकारके गरम मसाले, मिर्च लाल व काली आदि गरम चीजें खाना निषिद्ध है। प्रतिदिन ठंडे पानी का व्यवहार, यथानियम परिश्रम, नहीं पचनेवाले पदार्थों का परित्याग आवश्यक है। ऐसे भोजन करना उचितहै जिससे कोष्ठ नरम रहे, इसलिये बवासीर के रोगी को भोजनके समय फल मूल अधिक खाना चाहिये। बवासीर के रोगी को प्रतिदिन सोने से पहले टट्टी जानेका नियम रखना बहुत अच्छा है। ऐसे रोगी को स्नान और भोजन पर विशेष दृष्टि रखनी चाहिये।

जिस अर्शमें रक्तस्राव न हो, उस में यदि जलन और अत्यन्त दर्द होतो गरम पानी का सेक करने में आराम मालुम होताहै। गरम पानी में एकोनाईट या आर्निका मिलाकर [एक आउन्स पानीमें दस बूंद औषध] उसमें कपड़ा भिगोकर रखनेसभी फायदा होताहै। यदि मस्से पकतेसे दाग पड़ें तो उनमें पुलटिस लगाना अच्छा है। यदि मस्सोंमें अत्यन्त खुजली मालूम होती होतो गेलामिक ऐसिडमें वेसेलिन मिलाकर मलम त्यारकर लगानेसे उसी समय खुजली मिट जाती है। इसकुलस सिप्ट अर्शके लिये बहुतही उपकारीहै।

कांच बाहर निकलना।

(प्रोलेप्सस् एनी)

उदरामय वा रक्तामाशय बहुत दिन तक रहनेपर और करते करते कांच बाहर करनी पडती है। इसके अतिरिक्त कोष्ठबद्ध, अर्श आदि रोगोंमें भी कांच बाहर निकल आती है।

चिकित्सा। — कैलकेरिया-कार्ब १२,३० शक्ति।— गण्डमाला दूषित धातु, शिशुबालकों का माथा बडा होता है और तालु (ब्रह्मरन्ध्र) में शीघ्र हड्डी पैदा नहीं होती, शरीर दुबला किन्तु पेट कडा और मोटा तथा उत्तम क्षुधा, उदरामय, कीचडके समान मल, मलद्वारमें अत्यन्त सुरसुराहट और खुजली।

मार्क्यूरियस ६ शक्ति।— उदरामय अथवा रक्तामाशय रोगके अत्यन्त वेगके साथ कांच निकल आना।

नक्सवोमिका ६, १२, ३० शक्ति।— स्वाभाविक कोष्ठबद्ध धातु, मल सख्त, बडा और सहज ही बाहर न निकलता हो, जो लोग परिश्रम नहीं करते और खाने पीने के सम्बन्ध में अत्याचार करते हैं, दर्दके साथ बवासीर, सब लक्षणों का प्रातःकाल के समय बढना।

पाडोफाइलम ३, ६ शक्ति।— बिना दर्दके अजीर्ण मल, मल त्याग के समय और उपरान्त कांच बाहर निकलना।

सलफर १२,३०,२०० शक्ति ।—दस्त आते समय कांच निकलना, मलद्वार और नरम आंत (सरला न्त्र) में खुजली, जलन और लपकन, गंडमाला दूषितधातु और जिनको चर्मरोग हो ।

औषध प्रयोग ।— दिनमें २ । ३ बार ।

सहकारी उपाय ।—दस्त होने के उपरान्त अच्छी तरह धोकर काच को हाथ के सहारे से फिर दाबकर प्रविष्ट करदेना चाहिये । दस्त साफ होता है कि नहीं इसपर विशेष ध्यान रखना चाहिये अतएव खाने पीने की चीज़ों के विषयमें भी पूरीसहायता की आवश्यकता है । टट्टी जाते समय बहुत जोर नहीं करना चाहिये ।

सप्तदश अध्याय ।

जननयन्त्र सम्बन्धीय पीडा ।

उपदंश ।—(सिंफिलिस) गरमी, आतशक ।

अपवित्र स्त्रीसहवासके कारण पहले जननेन्द्रियमें एक प्रकारके घाव पैदा हो जाते हैं । उससे फिर क्रमशः सब शरीर में विष फैलकर त्वाम स्थान में अनेक प्रकार यन्त्रों पर आक्रमण कर अनेक प्रकारके धातुगत रोग उत्पन्न करदेता है । यह रोग स्पर्शाक्रामक होता है, अर्थात् स्पर्शमात्र से ही इसका विष शरीर में प्रविष्ट होजाता है । गर्मी के रोग से छुआ छूत होने पर यथा उसके वस्त्रादि वा गमछेको व्यवहार करना, झूठा हुक्का पीना । झूठे गिलास से पानी

पीना आदि से भी यह रोग लग सकता है। उपदंश के रोगवाली धाय नौकरानी या नौकर के हाथ से यदि बालक का पालन पोषण कराया जावे तो उस बालकको भी यह रोग होजाना सम्भव है।

इस रोग की ४ अवस्था होती है। [१] प्राईमरी या प्रथमावस्था, जब जननेन्द्रिय में पहले घाव उत्पन्न हो जाते हैं और पासवाली रान की गांठों में उसका प्रभाव होजाता है उसको प्राईमरी अवस्था कहते हैं। [२] सेकिंडरी या धातुगत अवस्था, जब रक्त दूषित और विषाक्त [जहरीला] हो जाताहै और जहां पहले घाव हो वहां से बहुत दूर मुह में, गलेके भीतर गांठोंमें, आंखोंमें तथा चमड़ेमें उसका असर फैल जाता है तब उसको धातुगत उपदंश कहते हैं। इस अवस्था में यह रोग जितना स्पर्शात्मक होता है अर्थात् स्पर्शसे दूसरे को लगजाता है दूसरी किसी अवस्थामें वैसा नहीं होता। अतएव ऐसे दूषित मनुष्यसे सर्वदा सावधानी के साथ दूर रहना चाहिये। [३] टार्शियरी वा तृतीयावस्था, कुछ दिनमें थोड़े अच्छे होजाने पर जब देहके सब तन्तु यथा हड्डी आदि पर उसका असर होना आरम्भ होता है तब उसको उपदंश की टार्शियरी अवस्था कहते हैं। द्वितीयावस्थामें रक्त और तृतीयावस्था में रक्तसे देहके सब तन्तुओं पर असर होजाता है इस लिये हड्डियों की अनेक प्रकार की पीड़ा, घाव, अनेक स्थानों का फूल उठना आदि लक्षण दिखाई देते हैं। [४] पैतृक उपदंश, बालकों को पिता मातासे गर्भावस्थाही में उपदंश धातुगत रोग होजाताहै। इसलिये कभी कभी पिता के दोषसे बालक समस्त शरीर में उपदंश के घाव लेकर भूमिपर जन्म लेता हुआ देखाजाता है।

सल्फर १२,३०,२०० शक्ति ।—दस्त आते समय काच निकलना, मलद्वार और नरम आंत (सरलान्त्र) में खुजली, जलन और लपकन, गण्डमाला दूषितधातु और जिनको चर्मरोग हो।

औषध प्रयोग ।— दिनमें २ । ३ वार।

सहकारी उपाय ।—दस्त होने के उपरान्त अच्छी तरह धोकर काच को हाथ के सहारे से फिर दाबकर प्रविष्ट करदेना चाहिये। दस्त साफ होता है कि नहीं इसपर विशेष ध्यान रखना चाहिये अतएव खाने पीने की चीजों के विषयमें भी पूरीसहायता की आवश्यकता है। टट्टी जाते समय बहुत जोर नहीं करना चाहिये।

सप्तदश अध्याय ।

जननयन्त्र सम्बन्धीय पीडा ।

उपदंश ।—(सिफिलिस) गरमी, आतशक ।

अपवित्र स्त्रीसहवासके कारण पहले जननेन्द्रियमें एक प्रकारके घाव पैदा हो जाते हैं । उससे फिर क्रमशः सब शरीर में विष फैलकर खास स्थान में अनेक प्रकार यन्त्रों पर आक्रमण कर अनेक प्रकारके धातुगत रोग उत्पन्न करदेता है । यह रोग स्पर्शाक्रामक होता है, अर्थात् स्पर्शमात्र से ही इसका विष शरीर में प्रविष्ट होजाता है । गर्मी के रोग से छुआ छूत होने पर यथा उसके वस्त्रादि या गम छेको व्यवहार करना, झूठा हुक्का पीना । झूठे गिलास से पानी

पीना आदि से भी यह रोग लग सकता है। उपदंश के रोगवाली धाय नौकरानी या नौकर के हाथ से यदि बालक का, पालन पोषण कराया जावे तो उस बालककोभी यह रोग होजाना सम्भव है।

इस रोग की ४ अवस्था होती है। [१] प्राइमरी वा प्रथमावस्था, जब जननेन्द्रिय में पहले घाव उत्पन्न हो जाते हैं और पासवाली रान की गाठों में उसका प्रभाव होजाता है उसको प्राइमरी अवस्था कहते है। [२] सेकिंडरी वा धातुगत अवस्था, जब रक्त दूषित और विषाक्त [जहरीला] हो जाताहै और जहा पहले घाव हो वहा से बहुत दूर मुह में, गलेके भीतर गाठोंमें, आखोंमें तथा चमडेमें उसका असर फैल जाता है तब उसको धातुगत उपदंश कहते हैं। इस अवस्था में यह रोग जितना स्पर्शाक्रामक होता है अर्थात् स्पर्शसे दूसरे को लगजाता है दूसरी किसी अवस्थामें वैसा नहीं होता। अतएव ऐसे दूषित मनुष्यसे सर्वदा सावधानी के साथ दूर रहना चाहिये। [३] टार्शियरी वा तृतीयावस्था, कुछ दिनमें थोडे अच्छे होजाने पर जब देहके सब तन्तु यथा हड्डी आदि पर उसका असर होगा आरम्भ होता है तब उसको उपदंश की टार्शियरी अवस्था कहते हैं। द्वितीयावस्थामें रक्त और तृतीयावस्था में रक्तसे देहके सब तन्तुओं पर असर होजाता है इस लिये हड्डियों की अनेक प्रकार की पीडा, घाव, अनेक स्थानों का फूल उठना आदि लक्षण दिखाई देते हैं। [४] पैतृक उपदंश, बालकों को पिता मातासे गर्भावस्थाहीमें उपदंश धातुगत रोग होजाताहै। इसलिये कभी कभी पिता के दोषसे बालक समस्त शरीर में उपदंश के घाव लेकर भूमिपर जन्म लेता हुआ देखाजाता है।

नीतिज्ञान, स्वच्छ कपड़े पहनना और सदाचार से देह और मन दोनो ही अकलङ्कित रहते हैं। आजकल आहार विहार के अनेक प्रकारके कुराचार लोगोंमें प्रविष्ट होगये है, उनके वशीभूत होकर मनुष्य केवल अपने देह को ही नहीं, वरन अपने मनको भी कलुषित कर सदासर्वदा के लिये तनमनसे दुखी रहकर बहुत ही बुरीतरह अपनी आयुष्य पूरी करते हैं तथा अपनी समाज को पापके भार से बोझों मारते हैं। उपदंशका विष पुरुष परम्परासे पितासे पुत्रमें परिचालित होता है। विवाहित पुरुषको यह भली भांति स्मरण रखना चाहिये कि उसकी नीति और सदाचार के ऊपर उसके घरकी नीति, सदाचार, स्वास्थ्य और सुख निर्भर है। आजकल धर्म और नीति की शिक्षा के अभावसे यह कर्तव्यज्ञान जितना शिथिल होताजाता है उतनी ही ये सब जघन्य पीडायें फैलती जाती है। ऐसे पवित्र देह मनुष्यों की संख्या बहुत ही कम है जिनके शरीरमें प्रमेह और उपदंश का विष बिलकुल ही नहो। बस यही कारण है कि आजकल समाजका स्वास्थ्य और सुख इतना कम होगया है।

मनुष्यके पापका दंड हाथों हाथ मिलता है। उपदंश रोगकी यन्त्रणा और कष्ट बहुत ही बुरा है। पहले घाव होते हैं उनसे एक कष्ट होता है, उसके उपरान्त एक या दो रानों की गांठें फूलती हैं, उनमें जलन होती है और बड़े दर्द के साथ यह होजाती है। वे पकती हैं, उनमें मवाद पैदा होता है और अन्त में असावधानता के कारण तथा यथोचित यत्न न करने से, खराब पड़जाती और बड़ा भारी कष्ट उपस्थित होता है। धातुगतरोग के कष्ट का तो कुछ

पारापारही नही है। नाक मुहके भीतर गला तालु गाय आदि स्थानोंमें घाव होजाते है, अनेक प्रकारके चर्मरोग नाक और तालू की हड्डी का गलजाना, वात, पुराना ज्वर आदि उपदश रोगके जो कुछभी उपसर्ग हैं वे सब वर्णन नहीं किये जासकता।

चिकित्सा।—प्रथमावस्था में—मर्क्युरियस-सल (उपदश के घाव), एसिड नाइट्रिक (गले हुए घाव अथवा यदि बहुत पारा व्यवहार किया गया हो), मर्क्युरियस-कर (प्रमेह और उपदश दोनो एक साथ), थूजा (मस्से की तरह विवर्द्धन), बेलेडोना [प्रदाहित और दर्द के साथ घर], आर्सेनिक-आयोड [दर्द के साथ बद और पकने की आशङ्का], फाइटोलक्का, पाडोफाइलम या सलफर [उपदशके घाव और चर्म रोग दोनो एक साथ]। ऊपरी प्रयोग के लिये आईडोफार्म।

द्वितीयावस्था में—एसिड नाइट्रिक, मर्क्युरियस, काली क्लोरेटम, [गले और मुह में घाव], मर्क्युरियस-कर, काली हाईड्रो [आखोंमें रोग], आरम, स्टीलिंजिया सारसा [वात अथवा हड्डियों की रोगों]

तृतीयावस्था में—काली हाइड्रो, आरम, फासफारस, एसिड फासफोरिक, साईलेशिया, मेजेरियम, एसाफेटिडा (हड्डियों का अनेक प्रकारकी पीडा यथा फूलना, घाव, क्षय, दुर्गन्ध आदि), आर्सेनिक, आर्सेनिक-आयोड [दूपित घाव], अरम, काली बाईक्रम, कैलकेरिया-कार्ब, काली-क्लोर [नाककी पीडा और स्राव], अराम, चायना, फासफोरस, कार्ब वेज, आर्सेनिक [उपदश दूपित धातु]।

पैतृक उपदश—मर्क्युरियस, एसिड नाइट्रिक, फाईटोलैका, चायना, आर्सेनिक-आयोड, सलफर।

प्रथमावस्था में प्रधान औषध :—

मर्क्यूरियस साल ३,६ शक्ति (विचूर्ण)—नये उपदंशके लिये यह सर्व प्रधान औषध है। घावका किनारा लाल रङ्गका, बीचमें सफेद, अत्यन्त दर्द और सहज ही रक्त गिरना, किनारे कड़े।

मर्क्यूरियस-कर ३, ६ शक्ति ।— जिस उपदंशके घाव शीघ्र शीघ्र चारो ओर फैलजावें घावोसे पतला लालसा मवाद निकलताहो, एक साथ प्रमेह, उपदंश और चर्म रोग।

मर्क्यूरियस आयोड ३, ६ शक्ति (विचूर्ण) ।— बिना दर्दके घाव, शरीरके अनेक स्थानो की सब गांठो पर असर, रान की गांठ बड़ी, सूजी हुई किन्तु पकने के लक्षण दिखलाई न पड़े।

आर्सेनिक ६, ३० शक्ति ।—गलेहुए घाव, घाव की अस्वाभाविक मास वृद्धि अथवा उससे पानी के समान, बदबूदार घाव पैदा करने वाला पतला मवाद निकलना।

नाईट्रिक-एसिड ६, ३० शक्ति ।—जिस उपदंश के घावों की चिकित्सा के लिये बहुत ही अधिक पारा व्यवहार कियागया हो, घावों से सहजही में और बहुतसा रक्त गिरे, घाव पैदा करने वाला स्राव।

आर्सेनिक-आयोड ३, ६ शक्ति (विचूर्ण) ।— रान की गाठके पकने की आशङ्का होने पर बद बैठाने के लिये यह एक सर्व प्रधान औषधि है।

द्वितीय और तृतीयावस्था में :—

मार्क्यूरियस ६, ३० शक्ति ।—ज्वरसा मालुम होना, गले के घाव, वात का दर्द, विश्राम और शय्या की गरमी का बढ़ना, शरीरमें अनेक प्रकार के उद्भेद, गलेमें कम गहरे घाव, आखोंमें जलन, टान्सिल गाठ आदिका सूजना, जलन करना और उनमें घाव पैदा होना, भीतरी ज्वर और देह की क्षीणता [दुबलापन]।

कालीहाईड्रो३,६शक्ति ।—दूसरी और तीसरी अवस्थामें विष दूर करने के लिये विशेषकर उनके लिये जिनने अधिक पारा व्यवहार किया हो यह एक उत्तम औषध है। स्थान स्थानमें फूल उठना, चर्मरोग, टान्सिल गाठों मे घाव, हड्डियों को ढकने वाली झिल्लियो में प्रदाह, नाक मुहके भीतर वा गले के भीतर घाव, उनमेंसे घाव पैदा करने वाला और जलन करने वाला स्राव, सर्दी।

अरम १२,३० शक्ति ।—नाकसे बदबूदार स्राव, नाक तालू आदि स्थानों की हड्डी सड जाना, नाक तालू आदि स्थानों में घाव, उनमें दुर्गन्धयुक्त स्राव, मस्तक की हड्डी का फूलना, उपदंश के दोष से वात, आत्महत्या करने की इच्छा, उपदंश और पारे के विषसे जब शरीर जर्जरित होता है तब यह औषध उपकार करती है।

नाईट्रिक-ऐसिड ६, ३० शक्ति ।—मुहम घाव और होठोंके कोने फटे हुए। पहले अधिक पारे का व्यवहार कियागया हो तो यह अधिकतर उपकारी है।

काली वाईक्रम ३,६ शक्ति ।—टान्सिल गांठ का घाव

प्रथमावस्था में प्रधान औषध :—

मर्क्यूरियस साल ३,६ शक्ति (विचूर्ण)—नये उपदंशके लिये यह सर्व प्रधान औषध है। घावका किनारा लाल रङ्गका, बीचमें सफेद, अत्यन्त दर्द और सहज ही रक्त गिरना, किनारे कड़े।

मर्क्यूरियस-कर ३, ६ शक्ति।— जिस उपदंशके घाव शीघ्र शीघ्र चारो ओर फैलजावें घावोंसे पतला लालसा मवाद निकलताहो, एक साथ प्रमेह, उपदंश और चर्म रोग।

मर्क्यूरियस आयोड ३, ६ शक्ति (विचूर्ण)।— विना दर्दके घाव, शरीरके अनेक स्थानो की सब गांठो पर असर, रान की गांठ बड़ी, सूजी हुई किन्तु पकने के लक्षण दिखलाई न पड़े।

आर्सेनिक ६, ३० शक्ति।—गलेहुए घाव, घाव की अस्वाभाविक मांस वृद्धि अथवा उससे पानी के समान, बदबूदार घाव पैदा करने वाला पतला मवाद निकलना।

नाइट्रिक-एसिड ६, ३० शक्ति।—जिस उपदंश के घावों की चिकित्सा के लिये बहुत ही अधिक पारा व्यवहार कियागया हो, घावों से सहजही में और बहुतसा रक्त गिरे, घाव पैदा करने वाला स्राव।

आर्सेनिक-आयोड ३, ६ शक्ति (विचूर्ण)।— रान की गांठके पकने की आशङ्का होने पर उसे बैठाने के लिये यह एक सर्व प्रधान औषधि है।

द्वितीय और तृतीयावस्था में :—

मार्क्यूरियस ६, ३० शक्ति ।—ज्वरसा मालुम होना, गले के घाव, वात का दर्द, विश्राम और शय्या की गरमी का बढ़ना, शरीरमें अनेक प्रकार के उद्भेद, गलेमें कम गहरे घाव, आखोंमें जलन, टान्सिल गांठ आदिका सूजना, जलन करना और उनमें घाव पैदा होना, भीतरी ज्वर और देह की क्षीणता [दुवलापन]।

कालीहाईड्रो ३, ६शक्ति ।—दूसरी और तीसरी अवस्थामें विष दूर करने के लिये विशेषकर उनके लिये जिनने अधिक पारा व्यवहार किया हो यह एक उत्तम औषध है। स्थान स्थानमें फूल उठना, चर्मरोग, टान्सिल गाठों में घाव, हड्डियों को ढकने वाली झिल्लियों में प्रदाह, नाक मुहके भीतर वा गले के भीतर घाव, उनमेंसे घाव पैदा करने वाला और जलन करने वाला स्राव, सर्दी।

अरम १२,३० शक्ति ।—नाकसे बदबूदार स्राव, नाक तालू आदि स्थानों की हड्डी सड़ जाना, नाक तालू आदि स्थानों में घाव, उनमें दुर्गन्धयुक्त स्राव, मस्तक की हड्डी का फ़ूलना, उपदंश के दोष से वात, आत्महत्या करने की इच्छा, उपदंश और पारे के विषसे जब शरीर जर्जरित होता है तब यह औषध उपकार करती है।

नाईट्रिक-ऐसिड ६, ३० शक्ति ।—मुहमें घाव और होठोंके कोने फटे हुए। पहले अधिक पारे का व्यवहार कियागया हो तो यह अधिकतर उपकारी है।

काली बाईक्रम ३,६ शक्ति ।—टान्सिल गांठ का घाव

किसी प्रकार अच्छा न होता हो, गलेके बीच, आंखें, चर्म और हड्डियों को ढकने वाली झिल्लियें अनेक प्रकार के रोग।

पारेके दोषमें नाईट्रिक पेसिड फायदा करता है, उपदंश का दोष निवारण करनेके लिये हीपर-सलफर अच्छा है, उपदंशके दोष के कारण हड्डीमें दर्द हो तो मार्क्यूरियस, काली-आयोड, मेजेरियम। हड्डी फूलने पर फ्लूरिक पेसिड, पेसिड-फोस, स्टाफि सेग्रिया, साईलेशिया। हड्डी गलने पर वा हड्डियों का नाश होने पर साईलेशिया, कैलकेरिया, फासफोरस।

औषध प्रयोग ।—नयी अवस्था में दिनमें ३।४ बार। पुरानी अवस्थामें केवल २।१ ही बार।

सहकारी उपाय ।——सब प्रकार के मानसिक और शारीरिक परिश्रमों को छोड़ देना चाहिये। स्वास्थ्यके अनुकूल पुष्टिदायक और हलका भोजन करना चाहिये। सब प्रकार की गरम वस्तु और नशीली चीजें बिलकुल वर्जित है। शरीर और घाव के स्थान सर्वदा स्वच्छ रखना चाहिये। उपदंश के रोगी का छूत का पूरा बचाव रखना चाहिये। किसी प्रकार की पारा मिली हुई औषध चाहे खाने की हो वा लगाने की हो बिलकुल व्यवहार नहीं करनी चाहिये। एक विष को दूर करने के लिये एक दूसरे विष को शरीर में घुसादेना युक्ति सगत नहीं है। उपदंश के साथ पारे का दोष मिलकर अत्यन्त हानि पहुंचाता है। अताई वा अशिक्षित चिकित्सक की औषध कभी व्यवहार न करनी चाहिये, क्योंकि वे लोग शीघ्र फल दिखाने के लिये पारा मिली हुई औषध दे डालते हैं।

बद ।

(व्यूबो)

लक्षण ।—प्रमेह वा उपदंश (गरमी का रोग) के दोष के कारण रान की सब गांठों में प्रदाह होने लगता है, इसी को बद कहते हैं। सब गांठों का फूलजाना, दर्द होना, लाल रंग, तथा गरम और कड़ी होजाना आदि इसके लक्षण। क्रमशः उनमें मवाद पड़जाता और वे पकजाती हैं। इस समय प्रतिदिन ठंड लगकर ज्वर होआता है। बद प्रायः पकजाती हे।

चिकित्सा ।—बेलेडोना ३, ६ शक्ति ।—प्रथमावस्था में अर्थात् जब अत्यन्त दर्द और टनटनाहट, लाल रंग, प्रदाह आदि हो।

मर्क्यूरियस आयोड ३, ६ शक्ति (विचूर्ण) ।—जब बद अत्यन्त कड़ी हो जावे।

हीपर-सलफर ६, १२ शक्ति ।—बद पक जाने पर और पारे का दोष उपस्थित रहने पर।

आर्सेनिक आयोड ३, ६ शक्ति (विचूर्ण) ।—बद, बद के प्रारम्भ में, अत्यन्त सूजन, पकउठने का ढंग। इस औषध से बद को बैठ जाते देखा है।

कार्ब-एनीमेलिस १२, ३० शक्ति ।—गांठ कठिन होजावे। हीपर और साइलेशिया घाव होने पर भी

दिये जाते हैं। सर पड़ने के से ढग दिखलाई पड़े तो साहिलेशिया १२ शक्ति विशेष उपकारी है।

सहकारी उपाय ।—बद होतेही पूरी तरहसे विश्राम करना परम आवश्यकीय है, इस दुखमें थोडा बहुतभी घुमना फिरना बहुत नुकसान करने वाला है। यदि बद क्रमश बढने लगे तो लगातार गरम पुलटिस लगानी चाहिये। बद प्रायः पक उठतीहै, बैठती नहीं। पकनेपर नश्तर लगानेकी आवश्यकता होतीहै। जबतक घाव अच्छी तरहसे न सूख जाय तबतक बिस्तरसे कभी नहीं उठना चाहिये। घावको थोडा थोडा आराम होतेही चलना फिरना आरम्भ करदिया जावे तो सर पडजातीहै। सर पडनेपर रोग बहुत दुःसाध्य और कष्टदायक होजाता है।

प्रमेह।

[गनोरिया]।

इस रोगके प्रधान लक्षण ये है—स्त्री वा पुरुषकी जननेन्द्रियमें प्रदाह और उसमेंसे मवाद निकलना। यह सक्रामक [छुतसे लगने वाला] रोग होताहै और प्रायः अपवित्र स्त्री सहवाससे उत्पन्न होताहै। पहले मूत्र नलीमें खुजली पीछे जलन, सुजन और साथही ज्वर हो आताहै। मवाद पहले पानीके समान होताहै पीछे सफेद वा पीले रङ्गका निकलने लगताहै।

प्रमेह की परवर्ती (पीछे होने वाली) पीडायें सब विशेष कष्टदायक और असाध्य होतीहै। अचानक प्रमेह

बन्द होजाने पर दोनो अण्डकोष प्रदाहित, कड़े होजाते हैं तथा सूज जाते हैं। पुराने प्रमेह में कभी कभी मूत्रनली बन्द होजाती है, उससे रोगी पेसाब नही कर सकता। प्रमेह के उपरान्त आरज फुलना, बात आदि रोग भी होते हुए देखे जातेहैं। पुरुषेन्द्रिय और उसका चमड़ा सूज जाता है और कभी कभी मुद्रा* नामका कष्टदायक रोग उत्पन्न होजाता है। कभी पुरुषेन्द्रिय कड़ी हो जातीहै या टेढी पड़जातीहै, सोते समय प्रायः यह उपसर्ग उपस्थित होताहै।

चिकित्सा।—एकोनाइट ३,६ शक्ति।— प्रथमावस्थामें सब प्रकारके लक्षणों में, पशाबमें जलन और कष्ट होनेपर यह दवा दी जातीहै।

कैनाबिस सैटाईवा ३ शक्ति।—मूत्र नलीमें दर्द, लालवर्ण, मूत्र नलीमें सूजन, हरे रंगका स्राव निकलना और पेशाब करनेमें कष्ट।

केन्थेरिस ३,६ शक्ति।—अत्यन्त और बहुवार की इच्छा, पुरुषेन्द्रिय का कड़ा होना, बारम्बार पेशाब करनेकी इच्छा, पेशाबमें अत्यन्त जलन, थोड़ा थोड़ा मूत्रस्राव, रक्तस्राव।

---

* प्रमेह के कारण-पुरुषेन्द्रिय के अगिकी खाल बहुत सूज जाती है और उसमें प्रदाह होने लगती है एवं इन्द्रीका मुख बन्द होजाता है इससे पीबपूरी तरह से निकल नहीं सकती है और खाल का खुलना मुदना भी बन्द होजाता है इसी को बङ्गभाषा में "मुद्रा" और इगरेजी में "फाईमोसिस्" कहते हैं।

मर्क्यूरियस-साल ६ शक्ति ।—पहले मवाद पतला और पानीके समान, पीछे गाढा और पीले रंगका अथवा रक्त युक्त । पुरुषेन्द्रिय या पुरुषेन्द्रियकी खाल सूजकर फुला होजानेपर यह औषध गुण दिखातीहै ।

हीपर-सल्फर ६, १२ शक्ति ।—मर्क्यूरियसके उपरान्त यह दी जातीहै । सफेद मवाद और जलन कम होनेपर यह दवा दीजातीहै ।

पलसाटिला ६ शक्ति ।—मूत्र नली बन्द होनेसे पतली धारसे पेशाब होना, मवाद बन्द होजानेपर और अण्डकोष प्रदाहित होनेपर यह दवा फायदा करतीहै ।

कैपसीकम ३, ६ शक्ति ।—गाढा पीले रंगका मवाद, पेशाब निकलनेके स्थानके बीचमें अत्यन्त जलन और गरमी मालूम पडना ।

औषध प्रयोग ।—प्रबल अवस्थामें ३ । ४ घंटेके अन्तरसे । पुराने रोगमें दिनमें २ वार ।

सहकारी उपाय ।—सब प्रकारके उत्तेजक पदार्थ निषिद्धहैं । रोगकी प्रबल अवस्थामें अधिक परिश्रम करना और घूमना नुकसान करताहै । यदि पैदल चलना पडेतो एक लंगोट अवश्य बांधना चाहिये । रोगके स्थानको साबनसे धोकर स्वच्छ रखना चाहिये । प्रतिदिन प्रात.काल स्नान करना और मिसरीका शर्वत पीना तथा शरीरको ठंडा रखना आवश्यक है ।

प्रमेहके सब परवर्तीउपसर्गः।

प्रथम, पुराना प्रमेह।

प्रमेह प्राय: पुराना आकार धारण करताहै विशेषकर यदि उसकी अच्छी चिकित्सा नहो, पुराना प्रमेह प्राय: असाध्य होजाताहै। नीचे कुछ एक औषधें लिखतेहैं।

चिकित्सा।—

सीपिया ३०, नेट्रम-म्युरेटिकम ३०, सलफर ३०, नाइट्रिक एसिड ३०, थूजा ३०, पेट्रोलियम ३०, अति उत्तमहै।

द्वितीय, पुरुषेन्द्रियका कड़ापन और टेढ़ापन।

प्रमेह के उपरान्त पुरुषेन्द्रिय नीचेकी ओर अथवा बगलकी ओर झुक जाताहै। इस समय पुरुषेन्द्रिय कठिन, सूजी हुई और उसमें दर्द मालूम होता है।

चिकित्सा।—पुरुषेन्द्रियके ऊपर टिंचर आयोडीन थोड़ेसे पानीमें मिलाकर लगानेसे प्राय: फायदा मालूम पड़ता है।

गाढे, पीलेरंगके मवादके साथ यदि टेढापन होतो कैपसीकम ३, उक्त लक्षणके साथ पेशाबमें जलनहो अथवा रक्त-स्राव होतो केन्थेरिस ३, अचानक बन्द होजानेपर पलसाटिला ३०, उपकारी।

तृतीय, रक्तस्राव।

चिकित्सा।— एकोनाइट ३ शक्ति।—

अत्यन्त प्रदाह, ज्वर, प्यास, पुरुषेन्द्रियका कड़ापन और अत्यन्त गरमी मालुम होना।

अर्जेंटम-नाईट्रिकम ६ शक्ति।—उत्तम औषध है। पेशाब करनेमें कष्ट और मवाद निकलना और रक्तस्राव, अथवा रक्त मिलाहुआ पेशाब होतो कैन्थेरिस ३ शक्ति उपकारीहै। यदि अण्डकोष प्रदाह होतो पलसाटिला ६ शक्ति।

चतुर्थ मुद्रा।

लक्षण।—पुरुषेन्द्रियके अग्रभागकी खाल बहुत सूजीहुई और प्रदाहित हो तथा बन्द होजावे, इससे मवाद पूरीतरह न निकल सकताहो और पुरुषेन्द्रियकी खाल खोली न जावे।

चिकित्सा।—अग्रभागकी त्वचा (खाल) का अत्यन्त फूलना, साथही जलन, कटन, लाल रंग और दर्दहो तथा फट जानेपर मर्क्यूरियस ६ शक्ति। त्वचा और अग्रभाग में अत्यन्त सूजन होतो रसटक्स ६ वा एपिस ६, सलफर भी इस रोगकी अति उत्तम औषधहै।

पहले औषध प्रयोग कर देखना चाहिये। यदि औषधसे कुछ उपकार न दीख पडेतो नश्तर लगाकर उसको खुलवादेना उचित है।

पंचम, अण्डकोष फूलना।

चिकित्सा।—पलसाटिला ६ वा ३०, मर्क्यूरियस ६, आरम ३०, क्लिमेटिस ६ आदि उत्तम औषधियां हैं। इस प्रकारकी अवस्थामें लंगोट आदि बांधना चाहिये जिससे अण्डकोष झूलने न पावें।

प्रमेहके कारण जो बात उत्पन्न होतीहै उसकी प्रधान

औषध—क्लिमेटिस ६, पलसाटिला, ३०, सारसा ६, थूजा ३०, सलफर ३० ।

स्वप्नदोष ।

स्वप्नमें अथवा और किसी समय अनिच्छासे वीर्यपात और उसके साथ पुरुषेन्द्रियकी दुर्बलताको हम साधारणतः नाम स्वप्नदोषही कहते हैं । स्वप्नदोषके समान दुर्बल करनेवाला, देह और मनको कलुषित और दूषित करने वाला, सांसारिक सुख स्वच्छन्दताका शत्रु शायद और कोई रोग नहीं है । यह बड़ाही कष्टसाध्य रोग है ।

इस रोगका मूलकारण यौवनका माथी हस्त मैथुन दोषहै । जिसने हस्त मैथुनके भीषण प्रभावको ध्यान पूर्वक जाँचकीहै, समाजमें, नवयुवकोंमें, स्कूलके बालकोंमें इसके फैलाव और इसकी सत्यानाश करनेवाली मूर्तिका अनुसन्धान कियाहै वह चकित, स्तम्भित और भयभीत हुए बिना रहनहीं सकता । इसके अतिरिक्त जो दोष नवयुवकों स्वास्थ्य और सुखको मिट्टीमें मिला देताहै, उसके प्रति माता, पिता और अविभावक शिक्षकोंकी ऐसी लापरवाही देखकर औरभी ममाहत, व्यथित, और हैरान होना पड़ताहै । यह बात सबको जाननी चाहिये और अपने बालकोंको समझाना चाहिये कि इस कुव्यसनसे, बुद्धि वृत्ति क्षीण होतीहै, स्मरण शक्ति दुर्बल होतीहै, मानसिक प्रवृत्ति नीच होती है, स्नायुविधान रोगग्रस्त होता है, जीवनीशक्ति क्षय होती है और देहमन और आत्मा कलुषित होताहै । नहीं कहसक्ते कि इससे बढ़कर दोष रखनेवाला और कोई

पापभी है अथवा नहीं।

यह दोष यौवनके प्रारम्भमें अपनेसे बडी उमर बाल बालकोंमें प्रचलित होताहै। दोषी निर्दोषको इस प चारमें प्रवर्तित करता है। बालक नहीं जानता कि इस पाप कुफल क्या होगा। पिता माता और सरक्षकोंका कर्त है कि बालकोंपर सर्वदा तीव्र दृष्टि रखें, उनको कुसङ्ग और बडी उमर बालकों के साथ एकान्तमें नहीं बैठने दे चाहिये। यदि किसीमें कुटेव पडभी जावे तो उपदे नीति शिक्षा, धर्मभय के द्वारा तथा मुलामियत के स समकाकर उनको निवृत्त करना चाहिये।

यह बात सबको ही जान लेनी चाहिये कि एक ब इस पापकर्म में पडनेके उपरान्त उस से फिर छुटका पाना बहुतही कठिन है। इस लिये पहिले ही से यह अभ्यास न पडने पावे सो अच्छा है, इस विषय में वृथ लज्जा से हानि होती है।

इस कुअभ्यास का बुराफल बहुत दिन तक छुपा नह रह सका। शरीर दुबला, लावण्यहीन, आंखों के चारों ओर कालिमा, सिरदर्द, दृष्टि की कमजोरी, सिरघूमना चहे पर असङ्ख्य मुहासे, अजीर्ण, भूखकी कमी, साथही फुर्ती नष्ट होजाना, स्मरणशक्ति और बुद्धिका ह्रास, उदासीनता मन दुखित रहना, ससार सुख यहां तक कि जीवन पर्य्यन्त से उदासी आदि लक्षण शीघ्रही प्रकाशित होते हैं।

चिकित्सा।—हस्त मैथुन के कारण अनिच्छा होने पर भी वीर्यपात होजाने का प्रधान चिकित्सा यह है कि जिस अवगुणसे यह रोग उत्पन्न हुआ हो उसको तुरन्तही

बिलकुल छोडदेना चाहिये । सब काम उत्तेजना करने वाली चिन्ता, किताब पढना, चित्रादिकोंका देखना और जिससे कुप्रवृत्ति उत्तेजित होतीहै, ऐसी सब बातें बिलकुल छोडदेना चाहिये । प्रतिदिन स्नान, नियमित स्वास्थ्यकर भोजन, यथोचित व्यायाम, सत्कार्य और सदालाप, कठिन शय्या यथा चटाई पर सोना, प्रातःकाल उठना आदि नियमोंपर विशेष दृष्टि रखना चाहिये । सब उत्तेजक पदार्थ यथा गरम मसाले, मास प्याज आदि बिलकुल छोड देना चाहिये ।

कैलकेरिया-कार्ब १२, ३० शक्ति ।—रोगी मनमें दुःखी और उदास रहता हो, रोने की इच्छा, कैसी भी दुर्घटना से भय, सोते समय बेमालुम बारबार वीर्य निकल जाना, दोनों पैर ठण्डे और गीले ।

चायना ६, ३० शक्ति ।—किसी प्रकारके भी परिश्रम में जी न लगना, हस्तमैथुन के कारण अत्यन्त दुर्बल करने वाला स्वप्नदोष, परिपाक शक्ति दुर्बल और भूख न लगना, रात्रिके समय बहुतसा दुर्बल करने वाला पसीना ।

नक्सवोमिका ६, १२, ३० शक्ति ।—रोगी को क्रोध बहुत आता हो, मारने को प्रस्तुत होजाते, क्रोध स्वभाव और एकान्त में रहने की इच्छा करता हो, स्वाभाविक कोष्टबद्ध, मल बहुत बडा और कठिन, जो खाने पीने में बहुत बेसिलसिले रहते हैं और जिन्होने जुलाबों की बहुत औषधें खाई हैं उनके लिये यह औषध गुणकारी है ।

फासफोरिक—एसिड ६, १२ शक्ति ।—

पापभी है अथवा नहीं।

यह दोष यौवनके प्रारम्भमें अपनेसे बडी उमर वा
बालकोंमें प्रचलित होताहै। दोषी निर्दोषको इस प
चारमें प्रवर्त्तित करता है। बालक नहीं जानता कि इस पा
कुफल क्या होगा। पिता माता और संरक्षकोंका क
है कि बालकोंपर सर्वदा तीव्र दृष्टि रखें, उनको कुसंग
और बड़ी उमर बालकों के साथ एकान्तमें नहीं बैठने दे
चाहिये। यदि किसीमें कुटेव पड़भी जावे तो उपदे
नीति शिक्षा, धर्मभय के द्वारा तथा मुलामियत के स
धमकाकर उनको निवृत्त करना चाहिये।

यह बात सबको ही जान लेनी चाहिये कि एक ब
इस पापकर्म में पड़नेके उपरान्त उस से फिर छुटका
पाना बहुतही कठिन है। इस लिये पहिले ही से यह
अभ्यास न पड़ने पावे सो अच्छा है, इस विषय में वृथ
लज्जा से हानि होती है।

इस कुअभ्यास का बुराफल बहुत दिन तक छुपा न
रह सका। शरीर दुबला, लावण्यहीन, आंखों के चारो
ओर कालिमा, सिरदर्द, दृष्टि की कमजोरी, सिरघूमना चहे
पर असङ्ख्य मुहासे, अजीर्ण, भूखकी कमी, साथही फुर्त
नष्ट होजाना, स्मरणशक्ति और बुद्धिका ह्रास, उदासीनता
मन दुखित रहना, संसार सुख यहां तक कि जीवन पर्य्यन्त
से उदासी आदि लक्षण शीघ्रही प्रकाशित होते हैं।

चिकित्सा।—हस्त मैथुन के कारण अनिच्छा
होने पर भी वीर्यपात होजाने का प्रधान चिकित्सा यह है कि
जिस अवगुणसे यह रोग उत्पन्न हुआ हो उसको तुरन्तही

बिलकुल छोडदेना चाहिये। सब काम उत्तेजना करने वाली चिन्ता, किताब पढना, चित्रादिकोंका देखना और जिससे कुप्रवृत्ति उत्तेजित होतीहै, ऐसी सब बातें बिलकुल छोडदेना चाहिये। प्रतिदिन स्नान, नियमित स्वास्थ्यकर भोजन, यथोचित व्यायाम, सत्कार्य और सदालाप, कठिन शय्या यथा चटाई पर सोना, प्रातःकाल उठना आदि नियमोंपर विशेष दृष्टि रखना चाहिये। सब उत्तेजक पदार्थ यथा गरम मसाले, मांस प्याज आदि बिलकुल छोड देना चाहिये।

कैलकेरिया-कार्ब १२, ३० शक्ति।—रोगी मनमें दुखी और उदास रहता हो, रोने की इच्छा, कैसी भी दुर्घटना से भय, खाते समय बेमालुम बारबार वीर्य निकल जाना, दोनों पैर ठण्डे और गीले।

चायना ६, ३० शक्ति।—किसी प्रकारके भी परिश्रम में जी न लगना, हस्तमैथुन के कारण अत्यन्त दुर्बल करने वाला स्वप्नदोष, परिपाक शक्ति दुर्बल और भूख न लगना, रात्रिके समय बहुतसा दुर्बल करने वाला पसीना।

नक्सवोमिका ६, १२, ३० शक्ति।—रोगी को क्रोध बहुत आता हो, मारने को प्रस्तुत होजावे, क्रोधी स्वभाव और एकान्त में रहने की इच्छा करता हो, स्वाभाविक कोष्ठबद्ध, मल बहुत बडा और कठिन, जो खाने पीने में बहुत बेसिलसिले रहते हैं और जिन्होंने मलाइयों की बहुत औषधें खाई हैं उनके लिये यह औषध गुणकारी है।

फासफोरिक—ऐसिड ६, १२ शक्ति।—

बिलकुल लापरवाही, बात करने की यहां तक कि प्रश्न का उत्तरदेने को भी जी न चाहता हो, वारवार विना इच्छा के शुक्रपात, और वह बहुत दुर्बल करने वाला, विशेषकर स्नायुविधान (नसें) आक्रान्त, प्रातःकाल के समय बहुतसा पसीना।

स्टाफिसेग्रिया ६ शक्ति ।—बहुत ही उदासीनता, मिजाज ठीक नहीं, केवल रोग की चिन्ता करना और रोने की इच्छा, पलकों के किनारे प्रदाह, ताकत की कमी, कामोद्दीपक स्वप्नके साथ स्वप्नदोष।

जेलसीमीनम ३, ६ शक्ति ।—सिथिलता के कारण स्वप्नदोष, पुरुषेन्द्रिय का उत्तेजित न होकर बेमालुम वीर्यपात, अण्डकोषों में टनटनाहट, स्वप्नदोष और कामोद्दीपक स्वप्न, उदासी, चहरा रक्तशून्य, आंखें भीतर की ओर घुसीहुई।

डिजीटेलिस ६, १२ शक्ति ।—विना इच्छा वीर्य पात, कामोद्दीपक स्वप्न और पुरुषेन्द्रिय में दर्द के साथ स्वप्नदोष, पुरुषेन्द्रिय की दुर्बलता, सामान्य हिलने चलने से छाती धड़कना, भविष्यत् के लिये निराशा और भय।

डायोस्कोरिया ६ शक्ति ।—यह स्वप्नदोष की उत्तम औषध है।

नेट्रम-म्यूरेटिक १२,३० शक्ति ।—रति शक्तिकी दुर्बलता, सङ्गम होनेपरभी स्वप्नदोष, अधिक रति क्रियाके कारण शारीरिक दुबलता, यहातक कि पक्षाघात, सङ्गम वा रतिक्रिया के विषयमें चिन्ता करतेही पुरुषेन्द्रियका उत्तेजित

होना और थोड़ासा रस निकलजाना।

कोनियम ३,६ शक्ति।—ध्वजभङ्ग, अण्डकोष सूखकर छोटे होजावें, थोड़ी उमरमेंही बुढ़ापा, अत्यन्त रति-क्रियाका कुफल।

लाईकोपोडियम १२,३० शक्ति।—ध्वजभंग, पुरुषेन्द्रिय छोटी और शिथिल, पुरुषेन्द्रिय उत्तेजित नहो अथवा बहुतही कमहो, स्मरण शक्ति और परिपाक शक्ति दुर्बल, अत्यन्त अधिक स्मरोग।

सेलेनियम १२,३० शक्ति।—बहुतही शीघ्र वीर्य स्खलन, और बहुत थोड़ी पुरुषेन्द्रियकी उत्तेजना, शुक्र बहुतही पतला, मनमें काम चिन्ता किन्तु ध्वजभग, बैठते सोते चलते या दस्त जाते समय थोड़ासा रसनिकलना।

अत्यन्त कामोद्दीपन—हायोसायेमस, मर्क्यूरियस, नक्सवो-मिका, फासफोरस, स्ट्रामोनियम।

अत्यन्त हस्तमैथुन प्रवृत्ति—कैल्केरिया, नक्स, सलफर। ध्वजभङ्ग—एगनस, बैराईटाकार्ब, कैल्केरिया, कोनियम, हायोसायेमस।

औषध प्रयोग।—दिनमें २। ३ बार।

सहकारी उपाय।—सबसे पहले रोगका कारण दूर करना चाहिये। प्रतिदिन रात्रिमें सोते समय ईश्वरकी प्रार्थना अवश्य करनी चाहिये। सोनेसे पहले भगवत्स्मरण और ...म करनी चाहिये, उसके उपरान्त शयन करना चाहिये।

पथ्य ।—आहार पुष्टिकर और हलका होना उचित है । खाने पीनेकी चीजोंमें किसी प्रकारकी उत्तेजक वस्तु न होनी चाहिये । मांस बिलकुलही निषिद्ध है । रात्रिके समय भोजन बहुत हलका होना चाहिये ।

अष्टादश अध्याय ।

मूत्रयन्त्र सम्बन्धीय रोग ।

वृक्कक प्रदाह । (नेफ्राईटिस)

कमरके पास मेरुदण्डके दोनो ओर, जो मूत्रग्रन्थि [गांठ] हैं उनको वृक्कक कहतेहैं । इन वृक्कक गांठोंमें रक्त से मूत्र उत्पन्न होताहै । पहले सरदी लगकर ज्वर होताहै और एक अथवा दोनों वृक्ककोंमें तेज दर्द होताहै और [illegible] मालूम होताहै, बराबर पेशाब करनेकी हाजत होतीहै [illegible] कष्टसे और तकलीफसे बहुत थोडा पेशाब [illegible] । यदि वृक्ककोंमें होतो जिस ओर दर्दहो उस करवट [illegible] जाता, सोधे खडे होनेसे अत्यन्त दर्द होताहै । [illegible] मूत्रवाहिनी होकर मूत्राधार और पुरुषेन्द्रिय [illegible] । कभी कुचकी से अण्डकोषोंमें मालूम होताहै । [illegible] ८ । ९ दिनसे अधिक नहीं रहता किन्तु जब [illegible] पुराना पडजाता है तो महीने वहां तक कि [illegible] पर्यन्त कष्ट देता रहता है । इसमें शीतला या ठंड लगना, [illegible] पीना, पेशाब उत्पन्न करने वाली तीक्ष्ण औषध सेवन

करना, गिरना या चोटलगना, अधिक भारी वस्तु उठाना इत्यादि इस रोगके कारण हैं।

चिकित्सा।— एकोनाइट ३,६ शक्ति।— प्रथमावस्थामें तेज ज्वर, नाडी तेज और बहुत प्यास, पेशाब बन्द, मृत्युभय, सिर घूमना इत्यादि।

बेलेडोना ३,६ शक्ति।—दर्द वृक्क से, लेकर मूत्राधार पर्यन्त चमके मारकर उठताहो, अचानक जैसे दर्द उठताहो उसी प्रकार चला जावे, पेशाब थोड़ा उजले लाल या पीले रंगका, सफेद गाढा पदार्थ नीचे जम जावे. ऐसा मालुम हो मानो पीठ टूट पड़ेगी, इसलिये हिलचल न सकता।

कैन्थेरिस ३,६ शक्ति।—शरीर गरम, प्यास और घबराहट, वृक्क आदि स्थानोंमें चमक मारना, काटनेके समान दर्द, सर्वदा पेशाब करनेकी इच्छा, बोधार बूंद पेशाब, कभी रक्त मिला हुआ, मूत्राधार में जलन, काटनेके समान दर्द, पेशाब करनेकी हाजत हो किन्तु बिलकुलही पेशाब नहो, उलटी उबकाई और पेटमें बहुत दर्द।

लाईकोपोडियम ३,१२,३० शक्ति।—वृक्क शूल, मूत्रनलीसे लेकर मूत्राधारतक दर्द, विशेषकर दाहिनी ओर मालुमहो, पेशाबमें लाल रंग, बालुके समान पदार्थ नीचे जम जावे, प्रत्येकबार पेशाब करनेसे पहले पीठमें भयानक दर्द, जैसे पेशाब आरम्भ हो वैसेही दर्दमें आराम मालुम पड़े।

हीपर-सलफर ६,१२ शक्ति।—जहां मवाद पड़ गई हो अथवा मवाद पड़नेकी आशङ्का मालुम पड़े। वृक्क प्रदेशमें लपकन, एकवार शीत और एक वार कम्प और गरमी मालुमहो, उपरान्त बहुत पसीना।

मर्क्यूरियस ६ शक्ति।—जब हीपरके समान सब लक्षणहो किन्तु हीपरसे कुछ फायदा मालुम न पड़े। पेशाब थोड़ा, लालरङ्ग और बहुत गन्ध आतीहो, पसीने बहुत आवें किन्तु उससे कुछ आराम मालुम न पड़े।

नक्सवोमिका ६,१२,३० शक्ति।—जो लोग किसी प्रकारका परिश्रम नहीं करते, अमिताहारी है अर्थात् खाने पीनेमें ठीक नियमोंका प्रतिपालन नहीं करते और जब अर्शका रक्तस्राव बन्द होकर रोग उत्पन्न हो, कमरमें अत्यन्त दर्द, पेशाब करनेकी हाजत किन्तु एक एक बूंद करके सामान्य पेशाब हो, अत्यन्त कष्ट और जलन, कोष्टबद्ध।

पलसाटिला ३,६ शक्ति।—स्त्रीया जिनको ऋतु कमहो अथवा नहो, बार बार पेशाब करनेकी हाजत किन्तु पेशाब नहोकर केवल कष्ट, सफेद पानीके समान पेशाब, उसमें गाढा पदार्थ नीचे जम जाय, गरम घरमें सर्दीसी लगना, प्रात काल मुहका बुरा स्वाद, बैठकर उठनेसे सिर घूमना।

सीपिया ६,१२ शक्ति।—चहरेका पीला रग, पाकाशय खाली मालुम होना, पेशाबके समय बहुत तेज

जलन और दर्द, बहुत बदबूदार पेशाब, उसमें कीचड़के समान पदार्थ जमजाना और किसी बर्तनमें रखनेसे उसम विद्दस जाना मलद्वार में बहुत भार मालुम होना, दस्त होजाने परभी बस मे कुछ आराम मालुम न होना।

टेरीबिन्थ ३,६ शक्ति।—घुला हुआ, थोडा, रक्त मिलाहुआ पेशाब, अधिक रक्तस्राव, सर्दी लगनेसे बृक्कके प्रदाह, शोथके लक्षण।

आर्सेनिक ३० शक्ति।—पुराना रोग, उदरी, शोथ इत्यादि लक्षण रहने पर।

सलफर १२,३० शक्ति।—पुराने रोगमें अ और औषधोंसे पूरा आराम न होने, अधिक बदबू पेशाब, कमरके स्थानमें जलन और खेंचनके समान दर्द पुराने रोगमें कालचीकम, चेलीडोनियम, हृम्यम आ उपकारी हैं।

औषध प्रयोग।—नई अवस्थामें २। ३ घंटेक अन्तरसे जब तक फायदा नहो दवा देनी चाहिये। फायदा दीखने ३। ४ घंटेके अन्तरसे।

सहकारी उपाय।—तरुणावस्थामें पसीने होव शरीरका मैल दूर हो यह देखना उचितहै। साधारण किसी प्रकारकी ठंडी हवा शरीरमें न लगनी चाहिये लिये सर्वदा फलालेन आदि गरम कपड़े पहने रहना उचित पहली अवस्थामें वृक्क के स्थानपर सेकनेसे आराम मा होताहै। पुरानी अवस्थामें बहुतसी कसरत और स

खुली हुई हवाका सेवन करना, प्रतिदिन ठंडे जलसे स्नान करना आदि उपकारी है।

पथ्य।—प्रथमावस्थामें साबुदाना, बार्ली, आदि पथ्य ठीक हैं। जब फायदा दिखलाई पडे और ज्वर नहोता चावल रोटी दिये जासकते हैं। मांस, मच्छी, निषिद्ध है। दूध बहुतसा पीनेमें हर्ज नहीं। प्यास बुझानेके लिये बहुतसा ठंडा पानीपीने को दियाजाय।

पथरी।

(ग्रावेल)

जब छोटी पथरी वृक्क से मूत्रवाहक नलीमें होकर मूत्राधार में आवे और वहांसे पेशाब में होकर बाहर होतो बड़ाही भारी कष्ट होताहै। यह छोटी पथरी वृक्क में उत्पन्न होतीहै। आकार सबका सर्वदा समान नहीं होता। पथरी निकलते समय मूत्रवाहक नलीसे मूत्राधार और अण्डकोष तक असह्य यन्त्रणा और दर्द होताहै, दोनो अण्डकोष ऊपर उठजाते हैं, उलटी, बार बार पेशाब करने की हाजत, थोडा, लाल रंगका और कभी रक्त मिला हुआ पेशाब, इत्यादि लक्षण वर्तमान रहतेहैं। जैसे पथरी मूत्राधारमें आकर पहुंचतीहै वैसेही दर्द कम होताहै वा आराम मालुम होताहै किन्तु जबतक पथरी बिलकुल पेशाब के साथ न निकलजाय तबतक बारबार पेशाबकी हाजत होती है और मूत्रपथ के मुंहपर पथरी अटक रहकर पेशाब का वेग बन्द होजाताहै।

चिकित्सा ।— कैलकेरिया-कार्ब १२,३० शक्ति । गण्डमाला दूषित धातुवालेको पथरी, दर्द, और पेशाब करनेकी हाजत, रात्रिमें बढ़ना, पेशाबमें बदबू और उसमें सफेद पदार्थ जम जाना, शरीरमें दुबलापन और कमजोरी ।

बेलेडोना ३,६ शक्ति ।—मूत्रनलीसे मूत्राधारमें वायठोंके साथ दर्द, पेशाब बन्द, केवल बूंद, बूंद पेशाब हो ।

केन्थेरिस ३,६ शक्ति ।—वृक्क में दाहके साथ दर्द, वह मूत्रनलीसे चलकर मूत्राधार तक फैलजावे, बूंद बूंद पेशाब, पेशाब में जलन, रक्त मिला हुआ पेशाब ।

लाईकोपोडियम ६,१२,३० शक्ति ।—वृक्कमें दर्द, दाहिनी ओर, बारम्बार पेशाबकी हाजत, पेशाब के साथ लाल बालू निकलना, प्रत्येक बार पेशाब करनेसे पहिले पीठमें दर्द ।

नक्सवोमिका ६,१२,३० शक्ति ।—दर्द विशेष कर दाहिने वृक्कमें, यह दर्द पुरुषाङ्ग और दाहिने पैर तक फैला हुआ, शुक्रवाहक नलीमें वायठोंके साथ सुकड़न, दोनों अण्डकोष पेटमें घुसे हुए, जी मिचलाना, उलटी, मूत्राधार का वेग और शूलके समान दर्द, दस्त जानेकी हाजत हो किन्तु दस्त नहो ।

फास्फोरस ६,१२,३० शक्ति ।—मूत्रयन्त्रकी शक्ति

जलन के साथ गरमी, वार वार पेशाव, पेशावमें अत्यन्त जलन और काटनेके समान दर्द इसलिये चिल्लाचिल्लाकर रोता हो, सर्वदाही पेशाव करने की इच्छा, बहुत ही थोडा रक्त मिलाहुआ पेशाव होना।

केनेबिस सैटाईवा ३ शक्ति ।—प्रमेहके कारण मूत्राशय प्रदाह, मूत्रपथमें जलन, एक साथ पेशाव बन्द होना वा सर्वदा पेशावकी हाजत, विशेष कर रात्रिमें, साथही जलन के साथ दर्द, केवल कुछ बूद रक्त मिला हुआ पेशाव।

टेरिबिन्थ ३,६ शक्ति ।—तलपेट (पेड़ू) छूने में दर्द, तकलीफसे बहुत कम पेशाव होना, पेशावकी रास्तामें दर्द, एकदफे मूत्राशयमें भयकर जलन और काटनेकासा दर्द, फिर एकदफे नाभि (टूडी) स्थान में ठीक वैसाही दर्द, विश्राम में बढना, खुली हुई हवामें टहलनेसे कम होना, खूनकी पेशाव।

लैकासिस १२,३० शक्ति ।—बहुतसा झागदार कालासा रगका पेशाव, ऐसा मालुमहो मानो मूत्राधार में एक गोलाकार कुछ है (कोई कीडाके समान रेंगताहोतो ऐसालोगा), सोकर उठनेके बाद बडा कष्ट।

नक्सभोमिका ६,१२ शक्ति ।—मूत्राशय और मूत्रपथमें जलन ओर दर्द, वारवार पेशाव करनेकी निष्फल चेष्टा। केवल कुछ बूंद, लाल रगका, रक्त मिला हुआ, जलन पैदा करने वाला पेशाव हो, मूत्रपथ जोरके साथ बन्द होजाय अतएव पेशाव बन्द, कोष्टबद्ध, जो लोग कुछ

परिश्रम वा व्यायाम नहीं करतेहैं, जो लोग शराब पीते हैं ।

फासफोरिक ऐसिड ६,१२ शक्ति ।—अत्यन्त पेशाब करनेकी हाजत और चहरा रक्तशून्य, गरमी और प्यास, वारबार पेशाब, खून के छिछड़े मिलाहुआ दूधके समान पेशाब साथही वृक्कमें दर्द और संसारसे उदासीनता ।

पलसाटिला ३,६ शक्ति ।—मूत्राशय के स्थान में दर्द, पेशाब बन्द, तलपेट लाल, गरम और टटनाहट, बैठने से, खांसनेसे वा टहलनेसे बेमालुम पेशाब निकल जाना, पेशाबके बाद मूत्राशयमें बायटोंके साथ दर्द, यह नितम्ब और दोनों जांघों तक फैला हुआ, थोड़ा, लाल रङ्गका पेशाब, उसमें लालरंग, रक्त मिला हुआ पदार्थ वा श्लेष्मा पेशाबमें जम जाना ।

सलफर ६,१२,३० शक्ति ।—कठिनतासे आराम होनेवाला पुराना रोग, पेशाब श्लेष्मा और रक्त मिलाहुआ, अत्यन्त दुर्गन्ध, पेशाब के समय मूत्रपथमें जलन, पेशाब की हाजत रोक न सकना, विशेषकर रात्रिमें, मस्तक के ऊपर सर्वदा जलन, दुबला मनुष्य जो कमर झुकाकर चलताहो ।

इनके सिवाय एपिस, मर्क्यूरियस, फासफोरस, कार्ब-वेज, सेनेगा, आदि औषध उपकारी हैं ।

औषध प्रयोग ।—अत्यन्त यन्त्रणाके समय १ । २ घंटेके अन्तरसे । इसके उपरान्त ठहर ठहरकर ।



चिकित्सा।— केन्थेरिस ३,६ शक्ति।— वेग पेशावकी हाजत, बूंद बूंद रक्त गिरना, मूत्राशयमें थकर दर्द, पानी पीनेसे दर्द बढना।

इपीका ६ शक्ति।—रक्तमूत्र, पेट और मूत्र-यमें काटनेके समान दर्द, बहुतसा रक्तस्राव, चहरे आदि स्थानोंपर बिलकुल मुर्दापन, रक्तकी उलटी।

मर्कुरियस ६ शक्ति।—मूत्र रक्त मिला हुआ दीख पडे, उसमें सफेद २ टुकडे अथवा मवादके समान मालूम हो, मूत्रपथसे रक्तप्रस्राव।

नाईट्रिक ऐसिड ६ शक्ति।—अत्यन्त रक्तस्राव, पेशाव में असह्य दुर्गन्ध किंवा घोडेके पेशाव के समान गन्ध, पारा व्यवहार होनेके उपरान्त विशेष उपकारीहै।

नक्सवोमिका ६,१२,३० शक्ति।—शराब पीनेसे, रजस्राव किंवा बवासीरका रक्त बन्द होनेसे ऐलो-पेथिक औषध खानेके कारण रोग उत्पन्न होनेसे।

फास्फोरस ६,१२ शक्ति।—जिन मनुष्योंको थोडेसे घावसे अधिक रक्तस्राव हो उनके लिये उपकारीहै।

औषध प्रयोग।—यदि रोग कठिन न होतो दिनमें २। ३ वार अभीष्ट है।

पथ्य।—पथ्य ऐसा होना चाहिये जो आसानीसे पचजावे, किसी प्रकारकी उत्तेजक या गरम वस्तु व्यवहार न

करनी चाहिये । चावल, दूध, शरबत, कच्चे नारियल का पानी सब्जी, तरकारी अच्छे पथ्य हैं । मांस और मच्छी बिलकुल निषिद्ध हैं । घरसे बाहर धूपमें घूमना वा काम करना उचित नहीं, पूरा शारीरिक विश्राम आवश्यकीय है ।

अवारित मूत्रश्राव ।

(इनीयूरीसिस)

यह बालकों को और वृद्ध मनुष्यों को होने वाला रोग है । मुत्रवेग धारण करनेकी अर्थात् पेशाव का हाजत रोकनेकी शक्ति किसी को थोडी कम होजाती है और किसीको बिलकुल लुप्त होजाती है । जब बिलकुल विलुप्त हो तब यह दशा होती है कि जैसे मूत्र इकट्ठा होने लगा वैसेही बूंद बूंद करके निकलने लगा, रोगीको यह बहुतही बुरा मालुम होने लगता है । और जब थोडीसीही शक्ति कम होतीहै तब यह होताहै कि थोडा मूत्र एकत्रित होने पर रोगी उसको रोक सकता उसके उपरान्त अचानक मूत्रका वेग इतना बढजाता है कि किसी तरह नहीं रोका जासकता । बालकोंको, विशेषकर रात्रिमें सोते समय इस रोगका प्रादुर्भाव होते हुये देखा गयाहै । इस रोगकी चिकित्सा बालकको मारना पीटना नहीं है क्योंकि मारना पीटना और झिडुकना अन्यायहै । चेचक खांसी वा ज्वर यदि मारने पीटनेसे अच्छे होसकते होतो यह रोगभी मारने पीटने अच्छा हो सकताहै ।

चिकित्सा।— बेलेडोना ३,६ शक्ति।— मूत्राधारके मुहपर जो कुकड़ा पैदा करने वाले पट्ठे हैं उन में पक्षाघात होनेके कारण लगातार बूंद बूंद पेशाब होता है।

सीना ६,१२,३०,२०० शक्ति।—बेमालूम पेशाब होना, विशेषकर रात्रिमें। यदि कीड़ों के कारण रोग उत्पन्न होतो यह औषध उपकार करती है।

कोनियम ३,६ शक्ति।—रात्रि में बार बार पेशाब होना, पेशाब बिलकुल ही रोकनेकी शक्ति न रहना, रात्रिमें बिछोने के ऊपर पेशाब करना। वृद्ध मनुष्योंके लियेही यह औषध विशेष उपयोगीहै।

नक्सवोमिका ६,१२,३० शक्ति।—खान पीनेकी गड़बड़ या शराब पीनेसे रोग होता है।

फास्फोरिक-एसिड ६,१२, शक्ति।—यदि हस्त मैथुन इस रोगका कारण हो, जो शिशु अथवा बालक बहुत जल्दी बढ़ रहे हों।

पलसाटीला ३,६ शक्ति।— बैठे रहनेके समय या घूमनेके समय बूंद बूंद करके पेशाब गिरताहो, खांसते समय और छींक समय पेशाब पतला होना। कोमल प्रकृतिके मनुष्यों के लिये और उनके लिये जिनको कि रोना जल्दी आजाताहै यह औषध उपयोगीहै।

रसटक्स ६ शक्ति।—रात्रिके समय अथवा बैठ रहनेपर या विश्राम के समय बेमालूम पेशाब होना, बात

रोगके लिये अथवा जिसकी धातुमें वातका प्रकोप हो उसके लिये यह औषध उपकारी है।

सीपिया ६,१२ शक्ति ।— रात्रि में, विशेषकर पहली नींद आतेही बेमालूम पेशाब, पेशाब में अत्यन्त दुर्गन्ध, और पेशाबके नीचे कीचड़सी जमजाना, उस कीचड़का बरतन में चिपकजाना।

सलफर ३०,२०० शक्ति ।—रात्रिमें बिछोनेपर पेशाब करना, पुराना रोग, विशेषकर जिनको चर्म रोगहै उनके लिये विशेष उपयोगी है।

फेरम–फास ३,६ शक्ति ।—रोगी रात्रिमें ५।६ बार बिछोनेपर पेशाब करताहो।

जेलसीमिनम ३,६ शक्ति ।—रात्रिमें हो अथवा दिनमें हो पेशाब रोकनेकी शक्ति न रहना।

मुलेन आयल ।—यह नई निकाली हुई औषध बालकोंको शय्यापर पेशाब करनेके लिये बहुतही उत्तम औषध है। और और औषधों से फायदा दिखलाई न पड़े तो यह औषध प्रत्येकको परीक्षा कर देखनी चाहिये।

औषध प्रयोग ।— दिनमें २।३ बार।

दूसरा उपाय । आलस्यके कारण अथवा जागते रहनेपरभी पेशाब करनेपर बालकको थोड़ा दण्ड देनेसे अथवा धमकानेसे निवारित होताहै। किन्तु इसका अच्छी तरह निश्चय किये बिनाही बालकको धमकाना या मारना बिलकुल अनुचितहै। सोनेसे पहले पेशाब कराकर

बालकको सुलाना चाहिये प्रथम उस समय दूध वा जल कुछभी पीनेको न देना चाहिये । रात्रिके समय बालकको उठाकर दो एक बार पेशाब करादेने से फिर कुछ भय नहीं रहता । प्रतिदिन ठंडे पानीसे स्नान कराना चाहिये ।

—o—

२० वां अध्याय ।

चर्मरोग समूह ।

अम्वात ।

लक्षण ।—रामबाणके पत्ता लगने के समान शरीरमें चकत्ते पड़जाते हैं और फूल उठता है, खुजली चलतीहै और जलन होतीहै। भोजनके दोषसे सर्दी लगनेसे और कभी कभी ज्वरके साथ यह रोग देखा जाताहै। अम्वात पुराना [illegible] कष्टसाध्य हो जाताहै। जबतक इसका कारण मालूम नहो [illegible] आराम होता [illegible] ।

चिकित्सा ।—एपिस ६ शक्ति ।—उत्तम औषध है । अत्यन्त फूलना, डंक मारनेके समान वा जलनके साथ खुजली ।

एकोनाइट ६ शक्ति ।—अत्यन्त ज्वर रहनेपर ।

डल्कामारा ६ शक्ति ।—सर्दी लगनेसे रोग होनेपर । अजीर्ण वा मासिकधर्मका दर्द रहनेपर पल्सेटिला ६ शक्ति ।—खाने के दोषसे यह रोग उत्पन्न हो अर्थात् पेटका दोष होतो एन्टिमक्रूड ६ शक्ति फायदा करता है

रस्टक्स ६ शक्ति ।—भींगा मच्छी वा केकड़

आदि खानेसे अग्घात हो और घावके समान दर्द हो।

आर्टिका ३ शक्ति ।—बहुतोंकी रायसे यह सब उत्तम औषध हैं, विशेषकर अम्लता बढ़नेपर पेटका रोग हो, उल्टी आदि उपसर्ग उपस्थित होनेपर।

पुराने अवस्थामें फेरकेरिया १२ और सल्फर ३० अच्छी औषध है। रात्रिमें खुजली बढ़नेपर सल्फर ३० देना चाहिये।

सहकारी उपाय ।—ओस या सर्दी लगना निषिद्ध है। गरम पानीसे स्नान करना चाहिये। खानेके नियमोंका पूरा पालन करना चाहिये, न पचने वाले भोजन बिलकुल छोड़ देने चाहिये।

—o—

खुजली खाज ।

यह छूतका रोग है। यह रोग चर्मके नीचे एकेरस नाम एक प्रकार के छोटे २ कीड़ों से उत्पन्न होता है। खुजली इस का प्रधान लक्षण है। ये सब फोड़े प्रायः शरीर के सब कोमल अङ्गों में आक्रमण करते हैं। बालकों के नितम्ब भाग, पैर और हाथों में प्रायः यह रोग होता है। सामान्य फुन्सियां होकर क्रमशः सब शरीर में घाव हो जाते हैं, इसी को खाज कहते हैं। इन बातों का अधिक विवरण करने की आवश्यकता नहीं है।

चिकित्सा ।—सल्फर ६,३० शक्ति ।— खुजली और खाज दोनों रोगों की यह एक मात्र औषध है। दिन में २। ३ बार दी जाती है।

अनन्त खुजली—खाल उधेड़डालने की इच्छा हो, रात्रि के समय खुजली बढ़ना, खुजलीके उपरान्त जलन इत्यादि सलफरके लक्षण हैं। इसके सिवाय सूखी खुजलीमें मर्क्युरियस ६ और सलफर ६ ढ़ाक्क दिनके अन्तरमें पर्यायक्रमसे जबतक कुछ फायदा अथवा परिवर्तन नहो तबतक देते रहना चाहिये। कोई नये लक्षण प्रकाशित होनेपर कार्बोवेजीटबलिस १२ या हीपर ६ देने चाहिये।

खाजमें सलफर ६ व लाइकोपाडियम १२ पर्यायक्रम से २। १ दिनके अन्तरसे देना चाहिये। खाज सूख आने पर कार्बोवेजीटेबलिस १२ या मर्क्युरियस ६ देना चाहिये। सलफर और लाईकोपोडियम से कुछ फायदा न दीखे दिनमें एक मात्राके हिसाब कास्टिकम ६ देना चाहिये। यदि इससे भी कुछ फायदा नहो तो एक दिनके अन्तर से एक एक मात्रा मर्क्युरियस दीजाये।

औषधप्रयोग।—दिन में २ बार।

सहकारी उपाय।—किसी प्रकार की बाहरी औषध लगाने से खाजकी चिकित्सा करना होमियोपैथिक शास्त्र के विरुद्ध है। मरहम, तेल, किसी पेड़का दूध आदि बाहरी प्रयोगों द्वारा खाज बैठादेने के बाद अनेक प्रकार के कठिन रोग उत्पन्न होसकते हैं। रोगी की धोती अंगाछा आदि किसी को व्यवहार नहीं करने चाहिये। रोग अच्छा होजाने पर भी पुराने कपड़े वगैरह धोबी से धुलवाये बिना कभी व्यवहार न करने चाहिये क्योंकि खाज कीड़े उनमें लगे रहते हैं और पीछे शरीरमें प्रवेशकर रोग उत्पन्न करसकते हैं। औषध की अपेक्षा सफाई और स्वच्छता

इस रोग की सबसे अच्छी औषध है। रोगसे कष्ट पाकर ऐसी वैसी मरहम या औषध व्यवहार करना अनुचित है।

दद्रु।

(रिंगवर्म)

यह उड़ना रोग है। रोग के स्थान में प्रत्येक लोमकूप (बाल का गड्ढा) में एक प्रकार के कीड़े उत्पन्न होजाते हैं उनमें खुजली चलती है, रस निकलता है और जलन होती है। यह प्राय असाध्य होता है किन्तु प्रथमावस्था में औषध की परीक्षा करना उचित है, औषध प्रयोग करने का यही मतलब है कि रक्त की दूषित अवस्था दूर हो और कीड़ों की उत्पत्ति होना बन्द होजाय।

चिकित्सा।— कास्टिकम।— ६, १२ शक्ति।— गर्दन की ओर दाद, सरस, और बहुत खुजली हो, विशेष कर सन्ध्या के समय, पुराना रोग।

मार्क्यूरियस ६, १२ शक्ति।— दाद, विशेषकर दोनो बाँहों पर, पकजाय, घाव होजाय और छुने से जलन हो, पास के स्थानों में दर्द और टनटनाहट।

रश्टक्स ६ शक्ति।— छोटी २ फुंसी जिसमें रस हो, जलन और खुजली।

सीपिया १२, ३० शक्ति।— दादरोग की उत्तम औषधि है। दाद सरस, खुजली और जलन। यह औषधि विशेष कर स्त्रियों को, उपकारी है

स्टाफीसेग्रिया ६ शक्ति ।—दाद सूखा हुआ और पपड़ी पड़जावे, सन्ध्याके समय भयङ्कर खुजली, और खुजाने से जलन हो।

सल्फर १२, ३० शक्ति ।—रोग असाध्य मालुमहो, असह्य खुजली और जलन।

वैसीनीलम २०० शक्ति ।—यह नई निकाली हुई औषध दादके लिये सबसे अच्छी है। यह धातूगतदोष को दूरकर रोगको अच्छा करती है।

औषध प्रयोग ।—प्रतिदिन २ बार। पुरानी अवस्था में दिनमें एकबार या २। ३ दिनके अन्तर से देनी चाहिये।

सहकारी उपाय ।—सर्वदा स्वच्छ रहना चाहिये। कार्बोलिक साबुन व्यवहार करना अच्छा है। इसरोग वाले मनुष्यके कपड़े, अंगोछा इत्यादि किसी दूसरे मनुष्यको व्यवहार नहीं करने चाहिये। गोया पाऊडर, एसेटिक एसिड टिंक्चर आयोडिन आदि बाहरी प्रयोग की औषधों से रोग दब सक्ता है किन्तु आरोग्य नहीं होता। ऐसी वैसी ऊपरी औषधि लगाना निषिद्ध है।

—o—

छाजन।

(एकजेमा।)

लक्षण ।—चमड़े का प्रदाह, रस पड़ना, सूखी पापड़ी

पडजाना, खुजली चलना, विशेषकर रातके समय बढजाना प्राय बालकोंके पेशमें देखा जाताहै कानके पीछे होनेसे उसका कानचट्टा कहते हैं।

चिकित्सा।—रस्टक्स ६ शक्ति।—मोटी पापडी रस निकलना, खुजलीके उपरान्त जलन, क्रमागत खुजली और सुरसुराहट।

सलफर ६, ३० शक्ति।—माथेके और कानके पीछे, चकत्तार, फूटकर रक्त निकलना, यदि असह्य खुजली हो तो प्रातःकाल और सन्ध्या के समय सेवन करनी चाहिये।

आर्सेनिक ६, ३० शक्ति।—पुराने रोगमें विशेष कर रात दिन जलन रहन पर।

डलकामारा ६ शक्ति।—पानीके समान रस निकलना, खुजानेसे रक्त गिरना, शीत और वर्षाकाल में बढना।

क्रोटन ३, ६ शक्ति।—उलटी और उदरामय रहने पर।

दूध पीते हुये बालक के चहरे पर—केलकेरिया, कार्बवेज, हिपेटिस, बोरक्स।

कान के पीछे—आर्सेनिक, कार्बवेज, हीपर, मर्कुरियस, रस्टक्स।

नाभि और रान में—केलकेरिया, ग्राफाइटिस, लीडम, मर्क्युरियस, सीपिया, सलफर।

माथेमें—क्रोटन-टिग, आर्सेनिक, मर्क्युरियस, एनटिम-टार्ट, लाइकोपोडियम, नेट्रम म्यूरेटिक, हीपर, केलकेरिया।

मलद्वारमें—एसिड नाईट्रिक, कार्ब वर्नीमेलिस, आर्सेनिक, सलफर।

अण्डकोषमें—पेट्रोलियम, सलफर, क्रोटन टिग, लाईकोपोडियम।

सहकारी उपाय।—रोगके स्थानको साबुनसे धोकर गरम तेल लगाना चाहिये। जितना स्वच्छ रखा जायगा उतनाही रोग जल्दी अच्छा होजायगा। इस बातपर निगाह रखनी चाहिये कि घावका रस किसी दूसरे स्थान में न लगे। जहा रस लगेगा वहीं घाव होजायगा।



स्फोटक (फोडा)।

(बाइल)

लक्षण।—बडा होनेपर फोडा और छोटा रहनेपर फुन्सी कहलाती है। पहले जलन, लाल रग, दर्द—पीछे मवाद होकर मुह होजाता है। कभी कभी अपने आप फूटजाता है, और कभी नश्तरसे उसको फाटना पडता है। रक्त दूषित होकर प्राय बालकोंके माथे और मुहपर फोडे और फुन्सी होते देखे जातेहैं।

चिकित्सा।— एकोनाईट ३,६ शक्ति।—फोडा अत्यन्त प्रदाहित, ज्वर और बेचैनी, फोडेके स्थानपर अग्निके समान जलनहो।

बेलेडोना ३, ६ शक्ति।—जब पहले लालहो, टपकन

होतीहो, दर्दहो और फूलकर उसमें लसदार मवाद उत्पन्न होनेसे पहिले।

आर्निका ६ शक्ति ।—होट, आखोंके पलक आदि कोमल स्थानोंमें फुन्सी होकर फूल उठने और उनमें बहुत दर्द रहने पर।

हीपर-सलफर ६,१२ शक्ति ।—मवाद उत्पन्न होना, न रोका जासके।

मर्क्यूरियस ६ शक्ति ।—पहिले देनेसे पकने नहीं देता और पकजानेपर मवाद निकाल देता है। बगलमें, गलेमें, और रान आदि स्थानोंमें गाठ पकजानेपर फायदा करता है।

साईलेशिया १२,३० शक्ति ।—पुरानी अवस्थामें विशेषकर सर पडजाने पर।

यदि बार बार फोडे होते रहते होंतो सलफर ३० वा २०० शक्ति से शरीर और रक्तकी दूषितावस्था दूर होती है।

यदि बहुत धीरे२ पकने लगे तो हीपरसलफर अत्यन्त यन्त्राहयुक्त और वेदना होतो बेलेडोना या मार्क्यूरियस।

युवावस्थामे चहरेपर मुहासे होकर शकलको बहुतही बिगाड देते है। कोई २ फुन्सी बडी होकर बहुत कष्ट देतीहै और उनमें दर्द होताहै। मुहासों के लिये कार्बवेजीटेबलिस, हीपर, केलकेरिया, सलफर उत्तम औषध हैं। युवावस्था में इन्द्रियोंके दोष से मुहास होंतो केलकेरिया देना चाहिये।

औषध प्रयोग।—१। ३ घंटेके अन्तर एक एक मात्रा। यदि सलफर दीजाय तो प्रति दिन संध्याके समय एक मात्रा।

सहकारी उपाय।——अत्यन्त दर्द होतो अलसीकी पुलटिस बांधनी चाहिये। यदि अपने आप न फूटजायतो नश्तरसे थोडा चीरा लगा देना चाहिये। बारबार फोडा होना रोकने के लिये स्वास्थ्य सम्बन्धीय नियमों पर दृष्टि रखनी चाहिये।

——०——

विद्रधि।

(एब्सेस)

लक्षण।—तन्तु वा यन्त्रमें मवाद उत्पन्न होजानेको विद्रधि कहते हैं। इसके साथ साथ दर्द और प्रदाह रहताहै एवम् अन्त में मवाद निकल आताहै। यह फोडे नये और पुराने दो तरहके होते हैं। पट्ठोंमें, हड्डीके ऊपर, यकृत, स्तन आदि स्थानोंमें यह होते हुये देखे जाते हैं।

१ म, तरुण विद्रधि।

लक्षण।—पीडित स्थान सूजाहुआ, प्रदाह और वेदना युक्त। कुछ दिन बाद उसमें मवाद होता है, दर्द, टपकन, अगुलीसे दाबनेसे उसके भीतर मवाद मालूम होना, पीछे क्रमशः उस में मुंह होकर फट जाता है और उसमें से

है । इसका जितना ऊपरी प्रयोग किया जाय उतनाही जल्दी घाव सूखताहै । कपडा मैला होनेही जल्दी २ बदल देना चाहिये । आवश्यकता पडनेपर पुराने पपसेसको प्राय: छुरीसे काटदेना पडता है ।

क्षत वा घाव ।

(अलसर्) ।

लक्षण ।—किसी रोग, चोट अथवा किसी बाहरी कारणसे चमडा फटकर घाव उत्पन्न होजाताहै । कभी वह शीघ्र सूख जाता है, और कभी प्रदाहित होकर अत्यन्त कष्ट देता है, अथवा कभी पुराना होकर ऐसा होजाताहै कि आरामही नहीं होताहै, इस कारण भीतर सर पडकर वा चारों ओर फैलकर कष्टदायक होजाता है । शरीर में पारेका दोष रहनेसे घाव होनेकी अधिक सम्भावना रहतीहै और घाव होजानेपर शीघ्रही नहीं सूखता ।

चिकित्सा ।—औषध देनेका उद्देश्य यह है कि स्वास्थ्यकी उन्नति हो ।

साईलीशिया १२,३० शक्ति ।—पुराना और सामान्य घाव, सूखने में विलम्ब ओर सर पडजानेपर ।

वेलेडोना ६, शक्ति ।—अत्यन्त वेदना युक्त घाव और चारों ओर लाल रंग ।

हाईड्रास्टिस २ शक्ति ।—मुह, गला, नाक, और आख आदि स्थानों में घाव होने पर यह फायदा करती है । इस का लोशन और कुल्ली आदि आवश्यकता के अनुसार व्यवहार किये जाते हैं ।

आर्सेनिक ३० शक्ति ।—अत्यन्त प्रदाह युक्त और जलन के साथ घाव, सहजही रक्त वा पतला सडा हुआ मवाद निकलना, घाव अच्छा न होता हो ।

हीपर-सलफर ३०, कैलकेरियाकार्ब ३०, सलफर ३० शक्ति ।—धातु परिवर्तन करनेके लिये व्यवहार किया जाता है ।

अत्यन्त मवाद निकलते रहने पर—चायना, मर्कुरियस, पल्साटिला, हीपर सलफर वा सलफर दिया जाता है ।

सडा हुआ घाव होने पर—आर्सेनिक, लैकेसिस्, कार्बो-वेजीटेबलिस, हीपर, सिकेली, साईलेशीया ।

हड्डीमें घाव होने पर—फासफोरिक एसिड, रूटा, केल केरिया, साइलेशिया, ऐसाफेटीडा, मार्कुरियस, मिजेरियम ।

घाव होकर रक्त निकलने पर—आर्सेनिक, चायना, फोस्फारस, कार्बो वेज, लाईकोपोडियम, नाईट्रीक-एसिड, सलफर ।

उपदंश के कारण घाव—मर्कुरियस, नाईट्रिक-एसिड, थूजा ।

पारा अपव्यवहार होने के कारण—आरम कार्बे-वेज, हीपर, सलफर, नाईट्रिक एसिड ।

सहकारी उपाय ।—कैलेण्डुला लोशन तयार कर [९ भाग पानी में १ भाग औषध] घाव के स्थान को सावधानी से धोना चाहिये। घाव की पट्टी को पानी से भिगोकर सावधानीसे खोलना चाहिये। आवश्यकता के अनुसार कभी प्रति दिन, कभी दिनमें २वार घावको साफकरना चाहिये। शरीरके जिस स्थान में घाव हो उसको विलकुल निश्चल रखना आवश्यक है। यदि पैरमें घाव होतो चलना अथवा पैर लटकाकर वैठना विलकुल निषिद्ध है। सहज में पचनेवाला और पुष्टि कारक भोजन करना चाहिये। मच्छी, मास, अधिक दुग्ध और मीठा निषिद्ध है।

घावमें चाहे जैसी मरहम लगा देना अनुचित है। घावके स्थान को कभी खुला न रखना चाहिये। घाव जितना स्वच्छ रखाजायगा उतनाही शीघ्र घाव सूखजायगा।

कुनख-।

हाथ पैरकी उगुलीके नाखून की नोक वढकर मांसमें घुसजातीहै और घाव पैदा करती है उसको कुनख वा कुर्णी कहते हैं।

चिकित्सा ।— **आर्सेनिक ६,३० शक्ति** ।—जलन, घावका स्थान कालासा रग, इसमेंसे वदबू निकलना।

साईलेशिया १२,३० शक्ति ।—दर्द, पैरके तलुए में पसीने और उसमें बुरी गन्ध।

सलफर ३० शक्ति ।—अगुली मोटी, चिलकदार

सूजी हुई, पक जावे और मास पड़जाय, उसम टनटनाहट और दर्द।

इन के सिवाय ग्राफाईटिस, मर्क्युरियस, एन्ट्रिमक्रूड उपकारी है।

सहकारी उपाय।—अगुली में अत्यन्त दाह और टनटनाहट होतो गरम पानीमें रोकने से सहजहीमें दर्द मिट जाताहै। निहूनीसे नाखुनका काना बहुत सावधानीसे काट डालना चाहिये। फरीक्लोराईड्‌ का लोशन वा चूर्ण बाहरी प्रयोग करनेसे यह कष्टदायक रोग बहुतही शीघ्र आरोग्य होजाता है।

विसारी।

(व्हिट्‌लो)

लक्षण।—यह अत्यन्त कष्टदायक रोग है। अंगुलीके आगेके भागमें प्रदाह होकर मवाद उत्पन्न होजाताहै। उत्ताप, असह्य वेदना, लपकन, लाल रंग इत्यादि इसके लक्षण हैं। अंगुली से लेकर समग्र हाथ दर्द करने लगता है।

चिकित्सा।—चोट लगनेसे—लीडम। मवाद उत्पन्न होनेसे पहले—हीपर, लेकेसिस, पीछे—साइलेशिया, सलफर।

साईलेसिया १२,३० शक्ति।—विसारीकी यह एक उत्तम औषध है। रोगका सूत्रपात होतेही यह औषध

२ घण्टेके अन्तरसे व्यवहार करनी चाहिये । आरम्भसेही इस औषधका प्रयोग किया जायतो मवाद उत्पन्न नहीं होसका। पहले केवल साईलेशिया व्यवहार करनेसे प्राय. रोग दबते देखाहै । अत्यन्त ज्वर आदि होतो एकोनाईट, और साईलेशिया पर्यायक्रमसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ३० शक्ति ।जब सूजा हुआ स्थान कालासा रंगका हो अत्यन्त जलन वा दुर्गन्ध युक्त ।

एकोनाईट और बेलेडोना ३ शक्ति ।— ज्वर, प्रदाह मस्तिष्क लक्षण आदि होतो इन दवाइयोंमेंसे एकका प्रयोग करना होताहै। अत्यन्त दर्द, प्रदाहित स्थानका लाल रंग लपकन, प्यास और बेचैनी आदि लक्षणोंमें यह दो औषधि पर्यायक्रमसे व्यवहार कीजातीहै।

मर्कूरियस ६ शक्ति ।—रोगके बहुतसे समयोंमें दिया जाता है। रातके समय असह्य दर्द और धीरे २ मवाद होतो यह औषध उत्तम है।

हीपरसलफर १२,३० शक्ति ।— मवाद उत्पन्न होतेही यह उत्तम औषध है।

फ्लुरिक-एसिड ६ शक्ति ।–मुर्दा हाड होतो यह दवा निकाल देती है।

निवारणका उपाय ।—हीपिससे निवारण न होतो सलफर; मर्कूरियस से न होतो लैकेसिस, साईलेशियासे न होतो फ्लुरिक येसिड। मवाद उत्पन्न होने से पहिले नाईट्रिक एसिड पानी में मिलाकर अंगुली में लगा‌ने से घिसारी

तडमूलसे नष्ट होजाती है। फेलकेरिया-फार्यके सेवन से उसका पुन होना बन्द होताहै।

सहकारी उपाय।— रोग आरम्भ होतेही अगुली को बार बार गरमपानीमें डबोरखना और हाथ नीचे न रखकर ऊंचा रखना बहुत फायदे मन्दहै। दर्द दूर करनेके लिये गरम पुलटिस बांधनी चाहिये। आवश्यकता होतो चीरा लगादिया जाता है किन्तु चीरा लगाते समय साव-धानी रखनी चाहिये जिससे अगुलीकी छोटी नस न कट जावें। घाव हो जाने पर कैलन्डूला लोशन से धोना चाहिये।



मस्से।

वार्टस्।

मस्से कष्टदायक नहीं होते हैं किन्तु कभी कभी देखने में बुरे मालूम होते हैं। चेहरे पर होनेसे चेहरे की खूबसूरती को बिगाडते हैं। यदि बहुतसे मस्से होने लगें तो औषध द्वारा उनका निवारण करना उचित है।

चिकित्सा।——थूजा मस्सों की एक बहुत उत्तम औषधिहै। मस्सेके ऊपर थूजा का मूल अर्क [बिना किसी प्रकार के मेलके] दिन में २। ३ बार लगाना आवश्यकीय है, साथही थूजा ६ शक्ति खानी चाहिये। इसी प्रकार एक सप्ताह तक अथवा १० दिन तक करने से फायदादीख सक्ता है। यदि फायदा दीखे तो इस औषधि और भी कई दिन तक

व्यवहार करना चाहिये । फायदा न हो तो रस्टक्स को इसी प्रकार खाना और लगाना चाहिये ।

एन्टिम-क्रूड द्विशक्ति ।— जब मस्सा कड़ा हो और सहज ही टूटजाय ।

केल्केरिया ६,१२ शक्ति ।—जब अंगुलीके पास हो ।

यदि बहुत से मस्से होने लगें तो सल्फर ३० शक्ति एक दिनके अन्तर से एक बार के हिसाब से १ वा २ सप्ताह तक सेवन करने से विशेष फल दीखसक्ता है । मस्से को सर्वदा यदि हात से दाबाजाय अथवा हिलाया जाय तो शीघ्र बढजाता है । मस्से तोड डालने से बहुत रक्त गिरता है ।

—०—

ठेक ।

(कण्ठा)

दाब वा घर्षण से चमड़ा मोटा, कड़ा होकर फूल जाता है उसको प्राय ठेक कहते हैं । ठेक प्राय पैर में और पैर की अंगुली में जिस जगह गट्टी वा जूते के साथ रगड़ लगती है वहीं होता है । ठेक के बीच में एक जगह होती है जहां सब दर्द एकत्रित हो जाता है ।

चिकित्सा ।— आराम करने के लिये निम्नलिखित चिकित्सा उपकारी है –(१) कुछ मिनट तक ठेकको गरम पानी में भिगो रखना चाहिये और पीछे तेज धार वाली छुरी से बहुत चोट से उसको काट डालना चाहिये । उपरान्त आर्निका लोशन (एक औंस पानीमें २० बूंद औषध)

से उस स्थान को भिगोरखना चाहिये। इस से यदि कुछ फायदा न दीख पड़े तो (२) रात्रि के समय स्पिरिट टरपेंटाइन में रुई भिगोकर ठेकके स्थानको बांध रखना चाहिये। इसमे ठेंककी कठिनता बहुतही शीघ्र दूर होजाती है। (३) फेरी परक्लोराइड या केस्टर ऑयल लगाना भी फायदेमन्द है।

कभी कभी यह रोग धातु गत दोष के कारण उत्पन्न होता है। इस धातुगत दोष दूर करनेके लिये औषधि सेवन करनी चाहिये। नीचे लिखी हुई औषधों में से एक को तजवीजकर प्रयोग करने से दोष दूर होता है —एण्टिम क्रूड, लाईकोपाडियम, फास्फोरस, सीपिया, साईलेशिया, सल्फर, (६, १२, ३० शक्ति)।

प्रतिदिन एक मात्रा औषध एक सप्ताह तक सेवन करनी चाहिये। इसके उपरान्त एकसप्ताह तक बिलकुल औषध सेवन करना बन्द रखना चाहिये। उस समय कुछ फायदा दिखलाई न पड़े तो और कोई औषध तजवीज कर इसी नियमके अनुसार सेवन करनी चाहिये॥

खुशकी (फियास)।

(डैनड्रफ)

यह एक प्रकार का सामान्य चर्म रोग है। मस्तक में चर्म के उसी स्थान पर होताहै जहां बाल होते हैं। इसको प्रचलित भाषामें फयासभी कहते है। इसमें छोटे छोटे सफेद भुसी के समान चप्पलें निकल जाती हैं और फिर

उत्पन्न होती हैं। इससे मस्तकमें बड़ी खुजली होती है

चिकित्सा।— मस्तक को अच्छी तरह स्वच्छ रखना और प्रति दिन स्नान के समय इस बात पर दृष्टि रखनी इसकी प्रधान चिकित्सा है। इसके सिवाय नीचे लिखी औषधों में से किसी औषधकी प्रतिदिन एक मात्रा सेवन करने से फायदा दिखलाई पडता है —केलकेरिया कार्ब, ग्राफाईटिस, लाईकोपोडियम, सीपिया, सल्फर, (१२, ३० शक्ति)।

शिरोदद्रु ।

यह दूसरेके शरीर से लगकर पैदा हुआ मस्तकका एक प्रकार चक्राकार दाद है। यह साधारणतः बालकोंकाही रोगहै। यह सक्रामक रोगहै, इस लिये रोगी का व्यवहार किया हुआ अगोछा,कङ्घा वा बुरुश व्यवहार करनेसे दूसरे को भी यहरोग होते हुये देखा गया है।

पहिले बालों की जड में चक्राकार लालरङ्गका उद्भेद उत्पन्न होता है, उसमें असख्य छोटी २ फुन्सिया उठती हैं। यह सब फुन्सियां शीघ्रही गलकर बहुतसी एक साथ जुडजाती और विस्तृत होकर प्राय. समस्त मस्तक पर हो जाती हैं। इनसे रस निकल कर जमजाता है और सूखी हुई कड़ी पापडी पड जाती है, इन पापडियों को उखाड डालने स नीचे के स्थान लाल रङ्ग और सामान्य ऊंची बहुत सी फुन्सियां देखी जाती हैं। इसके वेगसे गर्दन आदि स्थानों की सब गाठें कमती ज्यादा फूल जाती हैं। इस उद्भेद से जो रस निकलता है वह गाढा, लसदार, चिट-

चिटा और बदबूदार होता है। यह रोग बहुत दिनतक रहने से मस्तकके सब बाल क्रमशः उड़जाते हैं।

चिकित्सा।-- बालोंको कटवाकर बिलकुल छोटे कर देने चाहिये। यदि पापडी बडी, मैली, कडी और सूखी हुई होतो थोडे नारियल के तेल से भिगोकर यत्न और सावधानी से उचेल डालनी चाहिये। इसके उपरान्त समस्त मस्तक गरमपानी और साबुन से रगड कर धो डालना चाहिये और पीछे सूखे कपडे से पोंछ डालना चाहिये। सूख जाने पर नारियल का तेल लगाना चाहिये।

चिकित्सा।-केलकेरिया कार्ब १२,३० शक्ति।--गण्ड-माला दूषित धातु के लिये यह और सल्फर उपकारी है। उद्भेद से मस्तक में मैली पापडी पडना, यह पापडी सूखी हुई और कभी कभी इसमें बहुतही खुजली चलना, शरीर का चमडा सूखा हुआ और खसखसा, बाल देखने में सन के समान।

हीपर-सल्फर ६, १२ शक्ति।—चर्म में स्वास्थ्य के लक्षण न रहना, थोडा सा घाव होते ही उसमें मवाद पडकर पकजाना [ग्राफाइटिस भी फायदा करता है] उद्भेद भरसही और छूनेसे उनमें दर्द होता हो, जब रोग कपाल चहरा और गरदन तक फैल जाय अथवा दो आखें प्रदा-हित हों और उनमें दर्द हो।

ग्राफाईटिस १२,३० शक्ति।—सरस उद्भेद और उस में से लसदार चिरांयदा रस निकलना, रोग मस्तक

के पास से कान के पीछे तक झुक आवे [सीपिया भी फायदा करती है], उद्भेदमें दुर्गन्ध ।

रस्टक्स ६, ३० शक्ति ।—रसपूर्ण मवाद युक्त उद्भेद, मोटी पापड़ी पड़ना और बाल उड़जाना, बदबू, खुजली, रात्रि में वृद्धि, रोगकी प्रथमावस्था में जब फुन्सिया जल के साथ उठें और अत्यन्त खुजलीहो तब रस्टक्स बहुत फायदा करता है।

सलफर ३०,२००शक्ति ।—गण्डमाला दूषित धातु,उद्भेद सूखी पापड़ी के साथ, सहजही रक्त गिरताहो और बद बूदार, बालकों का कीड़ों का दोष, इसलिये मलद्वार में अत्यन्त खुजली ।

औषध प्रयोग ।—पहिले एक दिन २।३ बार, फायदा दीखने पर एक बार।

---

२१ वां अध्याय।

स्त्रीरोग समूह।

ऋतु [मेनस्ट्रूएशन]

यौवनारम्भमें सुस्थ शरीर वाली स्त्रियोंके जरायुसे गतिमास रक्तस्राव होता है, इसको रज स्राव कहते हैं। यह रज दर्शनही स्त्रियों का यौवनारम्भ है। हमारे देशमें १२ और १४ वर्ष के भीतर बालिकाओं को प्रथम ऋतु होते हुये देखा जाता है । भिन्न २ धातु और भिन्न अवस्थाओं के अनुसार

देरसे अथवा शीघ्र बालिकाओं को प्रथम ऋतु होता है। परिश्रमी और दरिद्र बालिकाओंकी अपेक्षा विलासपरायणा और अलस प्रकृति की बालिकाओं को प्रथम रजोदर्शन पहिले होता है। कोई रोग न हो तो प्रति २८ दिन के अन्तर से रक्तस्राव होताहै।

ऋतुकाल साधारणत तीन दिन तक रहता है। अनेक-कारणों से वह २ दिनसे लेकर ७ दिनतक रहते हुये देखा जाता है। प्रत्येक बार ४ औंस से लेकर ६ औंस तक रक्त-स्राव होता है। यह रक्त शिराके रक्तके समान कालासा और पतला होता है।

अवस्था बढने पर यह रक्तस्राव बिल्कुल बन्द होजाता है। परन्तु इस अवस्थाका कुछ नियम नहीं है। ५० वर्षसे कुछ पहिले या पीछे ऋतु बन्द होते हुये प्राय देखा जाता है। ऋतु बिलकुल बन्द होनके समय मासिक धर्मके सम्बन्धमें अनेक प्रकार के अनियम दिखलाई पडते हैं।

देहके और २ स्वाभाविक स्रावों की भांति स्त्रियोंका रज स्रावभी एक स्वाभाविक स्राव है। इस स्वाभाविक स्रावमें किसी प्रकारकी गडबड होने से अनेक प्रकारके रोग उपस्थित हो जाते हैं। अतएव स्त्री और पुरुषों को सावधानी से इस रज स्राव पर दृष्टि रखनी चाहिये।

प्रथम रजोदर्शन में विलम्ब।

प्रथम रजोदर्शन में विलम्ब होने पर भी यदि स्वास्थ्य में किसी प्रकार की हानि अथवा विघ्न न हो तो चिन्ता करने की कुछ बात नहीं है। यदि यौवनावस्था में होने वाले

शरीर के सब प्रकार के विकार देखे जाने पर भी रजो दर्शन में देरहो, प्रतिमास कमरमें दर्द, जांघ और तलपेट आदि स्थानों में दर्द आदि और और लक्षण दिखलाई देतो उस समय सुचिकित्साद्वारा प्रकृति की सहायता करना हो उठता है।

चिकित्सा ।— एकोनाईट ३,६ शक्ति ।— रक्त प्रधान धातुकी बालिका, जो कुछ परिश्रम नहीं करती हैं, केवल बैठी रहती है, मस्तकमें रक्त आना, सोकर उठने के बाद सिर घूमना ।

आर्सेनिक ६, ३० शक्ति ।— प्रात काल सोकर उठने के समय चहरा फीका और सूजा हुआ तथा दोनों पैरों में सूजन, शरीर में गरमी मालूम होना और कमजोरी, दुर्बलता ।

बेलेडोना ३,६ शक्ति ।— नाक से बार बार रक्तस्राव (इस लक्षण में ब्रायोनिया फायदा करता है), दोनों आंखें लाल, उजाला और शब्द असह्य, जनन यन्त्रों में प्रसव वेदना के समान दर्द [इस लक्षण में सीपिया भी फायदा करता है], दाहिने डिम्बाशयमें प्रदाह ।

ब्रायोनिया ३,६ शक्ति ।— ऋतुके समय ऋतु न होकर नाक से बार बार रक्तस्राव, कोष्ठबद्ध, कठिन सूखा हुआ मल, चिड़चिड़ा और क्रोधी स्वभाव, चुपचाप बैठे रहने की इच्छा ।

काकूलस ३,६ शक्ति ।— जब सब स्नायविक लक्षण

वर्तमान हों, तलपेट में दर्द, साथही श्वासकष्ट और कराहना, गाडी में बैठनेसे सिरमें दर्द हो और उल्टी हो।

फास्फोरस ६,१२,३० शक्ति।—कृशाङ्गी सुन्दरी और प्रसन्नचित्त रहने वाली बालिका, छाती की गठन अच्छी न हो, यक्ष्माकी आशङ्का, कफके साथ थोडा थोडा खून निकलताहो।

पलसेटिला ६, ३० शक्ति।— चहरा फीका, गरम मकान में रहने पर भी सर्दी सी लगना, पेट और पीठ में दर्द, हिस्टीरिया के लक्षण, एकबार हसना और एकबार रोना, उदासिनता और नैराश्य, अश्रुप्रवण अर्थात् शीघ्र रोने वाली और नरम प्रकृति के धातु, परिश्रम करनेसे और खुली हुई हवा में रहने से अच्छा रहना। सन्ध्या होने के समय साधारणतः बढना।

सीपिया १२,३० शक्ति।—दुर्बल धातु, नाक और गाल के ऊपर मुहासे के समान पीला रंगका दाग, हाथ पैर ठंढ और मस्तक पर बारबार गरमी मालूम होना, अत्यन्त उदासीनता और बारबार रोना (इन लक्षणों में पलसाटिलाभी फायदा करता है।

सलफर ३०,२०० शक्ति।—मस्तक के ऊपर सर्वदा गरमी मालूम होना, भूक न लगना, भोजन के उपरान्त जी मिचलाना, शरीरका चर्म ऐसा मालुम हो मानो स्वास्थ्य रहित होगया है, सामान्य चोट लगने से अथवा कटजाने से उसमें मवाद पैदा होकर पकजाना, गण्डमाला दूषित धातु।

औषध प्रयोग।—दिनमें एक मात्रा के हिसाब से एक सप्ताह तक औषध देनी चाहिये। इसके उपरान्त ४।५ दिन औषध बन्द रखनी चाहिये। यदि कुछ फायदा दीखे तो औरभी कुछ दिन सेवन करनी चाहिये। यदि फायदा न हो और ऐसा मालुम हो कि रोग बढ़ता है तथा ऋतु नहीं होता तो और कोई औषध निर्वाचन कर उपरोक्त नियमों पर सेवन करना चाहिये।

सहकारी उपाय।—शारीरिक परिश्रम बहुत आवश्यकीय है। विलासिता और आलस्यही इस रोग का मूल कारण हैं, इस लिये यह रोग धनवती बालिकाओं को ही हुआ करता है। प्रति दिन प्रातःकाल स्नान करना उपकारी है।

पथ्य।—सहज में पचने वाला और पुष्टकर भोजन देना चाहिये। सब प्रकार के गरम और उत्तेजक पदार्थ निषिद्ध हैं। चाय पीना भी निषिद्ध है।

मृत्पाण्डु।
(क्लोरोसिस्)।

यह रोग यौवनारम्भ में ऋतु सम्बन्धीय गड़बड़ होनेसे बालिकाओं को ही हुआ करता है। ऋतु बन्द होना पाकाशयमें दर्द, चेहरा रक्तशून्य और फीका, मुह में दुर्गन्ध, भूख न लगना अथवा अखाद्य जैसे मट्टी, खड़िया, कोला

कागज आदि खानेकी रुचि, कोष्ठबद्धमल, अजीर्ण, शरीर रक्तशून्य, होट और आखे रक्तशून्य और फीकी, आखों के चारों ओर नीलासा मण्डलाकार दाग, सिरदर्द, सिर घूमना, दिल धडकना, कानों में शब्द सुनाई पडना, अत्यन्त दुर्बलता आदि इस रोगके प्रधान लक्षण है। यदि ऋतु निलकुलही वन्द न हो जाय तो प्राय बहुत थोडा होता है, और फीके रङ्गका पानीके समान होता है।

चिकित्सा।—एन्टिमक्रूड ६,१२ शक्ति।— जीभपर मैला दूधके समान सफेद मोटा लेप, पाकशय का दोष साथही भूख न लगना और मुह में डकार के साथ पानी भर आना।

आर्सेनिक ६,३० शक्ति।— चहरे का फीका रग और आखों के पलक सूजे हुये, अत्यन्त प्यास, वारवार थोडा थोडा पानी पीना, कम्पन, वारवार चक्कर आना, बहुत कमजोरी, गर्म मकान में रहने की इच्छा।

केलकेरिया-कार्ब १२,३० शक्ति।— उदास चित्त, रोने की इच्छा, चहरे का फीका रग, आखों के चारों ओर काला मण्डलाकार दाग, सिर घूमना विशेषकर सीढीपर चढने से, मांस खाने मे घृणा, खट्टी चीज और कठिनता से पचने वाले पदार्थ यथा चाय खडिया, मिट्टी आदि खाने की इच्छा, भोजन के उपरान्त पेट फूल उठना और दिल धडकना, सर्वदा हारना, ठन्डी हवा में रोग बढना, गण्डमाला दूषित धातु।

चायना ६,३० शक्ति।— किसी प्रकार के परि-

श्रम करनेकी इच्छा न होना, परिपाक क्रिया की दुर्बलता, खट्टी डकार उठना और पेट फूलजाना, विना दर्द के दुर्बल करने वाला उदरामय, मल अजीर्ण, अधिक रक्तक्षय अथवा बहुत दिन तक रहने वाले रोग के उपरान्त यह रोग होनेसे फायदा करता है।

फेरम ६,३० शक्ति ।—चहरे का रग फीका या हरा सा, थोड़े परिश्रमसे अथवा मानसिक आवगमे ही चहरा लालहो जाना, दिल धडकना अथवा स्वास कष्ट, सर्वदा सो रहने अथवा वैठे रहने की इच्छा, रोगी बहुत कमजोर और थोड़े ही परिश्रमसे थक जावे, कफ के साथ खून निकलना और कन्धों की हड्डी में दर्द, ऋतु या तो विलकुल वन्द हो जावे और या फीका और पानी के समान हो।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति ।—पाकाशय और यकृत विशेषत विगडे हुये, कड़वी या खट्टी डकार, अत्यन्त चिड़ चिडापन और अकेले वैठे रहने की इच्छा, फीका पील रग का चहरा, मन में इतनी चिन्ता उपस्थितहो कि रात्रि ३बजेके उपरान्त नींद न आवे, स्वाभाविक कोष्टवद्धधातु।

पलसाटीला ६,३० शक्ति ।—प्रथम रजोदर्शन देरसे हो अथवा प्रथम ऋतु होकर फिर वन्द हो जावे, तलपेट में खेंचन या दबावकासा दर्द, वारवार दिल धड़कना, और व्यायाम करने से स्वास वन्द होना, हाथ पैर ठण्डे यहां तक कि गरम घर में भी सर्दी सी मालूम हो, जीभपर सफेद मैल, प्रात काल के समय मुहका बुरा स्वाद,

किसी प्रकार का तेल, घी या चर्बी मिला हुआ भोजन सहन न हो, सर्वदा सरस भोजन खाने की इच्छा।

सीपिया १२, ३० शक्ति ।—ऋतु बन्द और बारबार श्वेत प्रदर स्राव, हिस्टीरिया या वायुकी प्रबलता के कारण सिरदर्द, अत्यन्त उदासीनता और बार बार रोना, नाक और गालों पर पीले रंगके दाग, भोजन बनाने की सामान्य गन्ध से भी जी मिचला उठना, पेशाब में दुर्गन्ध नीलापन और मिट्टी के समान नीचे जम रहना।

सलफर ३०,२०० शक्ति ।—रोग के प्रारम्भ में और गण्डमाला दूषित धातु वाले मनुष्यके लिये यह उपयोगी है। दिनमें सर्वदा नींदसी आना किन्तु रात्रि में नींद न आना, पहिला ऋतु देर से हो और मैल से भरा हुआ, सूखा शरीर, मस्तकके ऊपर अत्यन्त गरमी, स्नायविक दुर्बलता, चक्कर आना और खुली हुई हवा में रोग बढ़ना, स्नान करने की अनिच्छा।

सहकारी उपाय ।—यत्न के साथ औषधि निर्वाचन कर प्रातःकाल और सन्ध्या के समय दो बार एक सप्ताह तक देनी चाहिये, इसके उपरान्त ५।६ दिनके लिये सब औषध बन्द रखनी चाहिये। यदि इस समयके बीच में कुछ फायदा दिखलाई न पड़े तो फिर कोई दूसरी औषध तजबीज कर ऊपर के नियमोंके अनुसार देनी चाहिये।

—o—

स्वल्परजः।

(एमेनोरिया)

मासिक ऋतु विलकुलही वन्द हो अथवा कुछ समय के लिये वन्द होतो उसको रज.रोध वा स्वल्परज. कहते है। ऐसा होने से अनेक प्रकार के कष्टदायक लक्षण उपस्थित होते है यथा—पट और पाकाशय में वायटों के साथ दर्द, जी मिचलाना वा उवकाई, सिरदर्द, चहरा लाल, बांयठे, वकना, हिस्टीरिया, दिल धडकना और श्वासकष्ट इत्यादि। क्रमश रज रोध होने से अचानक यह सव कष्टदायक लक्षण उपस्थित न होकर क्रमश रोगी दुर्वल, अलस और फीके रंगका होता है, इसके साथही उत्साह नहीं रहता और भूखवन्द हो जाती है, देखने में चहरे पर रोगीपन और उदाशीनता मालुम होती है, स्नायविक लक्षण जैसे दिल धडकना, स्वासकृच्छता आदि उपस्थित होते हैं और जिनको राजयक्ष्माकी आशङ्का होती है उनपर यह रोग स्पष्ट प्रकाशित होजाता है। अचानक सर्दी लगना, शोक, दुःख आदि, अचानक प्रवल मानसिक आवेग, छाती, यकृत वा और किसी यन्त्र आदि के रोग के कारण यह रोग प्राय उपस्थित होता है।

चिकित्सा— **एकोनाईट ३, ६ शक्ति।—** यदि सर्दी लगने के कारण ऋतु वन्दहो, मस्तकमें वा छाती में रक्त आना, मस्तक-में चमके मारना और वकना, सिर घूमना, यौवनके आरम्भमें, रक्त प्रधान वाली स्त्रियां।

आर्सेनिक ६, ३० शक्ति।— चहरे का फीका रंग,

अत्यन्त सामन्य परिश्रमसे ही बहुत कमजोरी और थकान, भूख न लगना, उदासीनता, मृत्युभय, अधिक सर्दीसी लगना, बहुत कपडे पहिनने वा अग्नि के पास बैठने की इच्छा, बहुत प्यास किन्तु थोडा थोडा पानी पीना, आधी रात के उपरान्त रोग बढना।

बेलेडोना ३,६ शक्ति।—प्रत्येक ऋतु का समय आने पर लपकन के साथ सिरदर्द, चहरा लाल और मस्तक नीचा करने पर रक्त आना, तलपेट में दर्द, ऐसा मालुम हो मानों ऋतु होगा [इस लक्षण में कैमोमिला भी फायदा करता है], उजाला और शब्द सहा न होना।

ब्रायोनिया ३,६ शक्ति।—तलपटी में दबाव सा मालुम होना और माथा ठलकना, ऋतु का समय आने पर ऋतु न होकर नाक से रक्त निकलना, कोष्ठबद्ध, कठिन सूखा हुआ मल, सामान्य हिलने चलनेसे ही सब लक्षणों का बढना।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति।—प्रसव क दर्द के समान दर्द, ऋतुके पहिले पेट और जाँघ में अत्यन्त दर्द, अत्यन्त चिडचिडा स्वभाव, जरासी बात में चिड उठना, बहुत सा विकारयुक्त पदार्थ होना।

कालोसिन्थ ६ शक्ति।—क्रोध वा मनमें दुःख को दाब रखने से ऋतु बन्द, अत्यन्त पेट में दर्द इस लिये झुक जाना पडता है, अत्यन्त कष्ट और बेचैनी।

क्रोकस ६ शक्ति।—ऐसा मालुम हो मानों ऋतु

होना और साथही ऋतु निकलनेके स्थान में दर्द, ऐसा मालुम होना मानो पेट में कुछ हिलता है, नाक से गाढा काला रस्सी के समान लम्बा रक्तस्राव ।

डलकामारा ६ शक्ति ।— सर्दी लगजानेसे अथवा पानी में भीगने से रज-रोध, प्रत्येक ऋतु के समय शरीर में एक तरह की फुन्सी सी निकल आना, जब शर्दी लगे तबही शरीर में आमवात अथवा और किसी प्रकारके उद्भेद निकलना ।

ग्राफाईटिस १२,३० शक्ति ।—रज रोध और साथ ही दोनों बाहुओं में और नीचेके अङ्गोंमें बोझ मालुम पडना, समय पर ऋतु दिखलाई पडते, स्राव फीके रङ्गका और बहुत सा, दोनों पैर ठण्डे और सूजे हुये, शरीर में उद्भेद, और उनसे लसदार चिपकना रस निकलना ।

पलसेटिला ६,३० शक्ति ।—रज रोध विशेषकर पैर भीगने से, कपाल में कतरन के समान दर्द, माथे के ऊपर दबाव मालुम पडना, सिर घूमना और कपाल के भीतर भों भों करना, दन्तशूल, दर्द अचानक एक ओर से दूसरी ओर जाना, दिल धडकना, पाकाशय में दर्द, जीमिचलाना और उलटी, गरम मकानके भीतर सर्वदा सर्दी सी लगना, मुलायम प्रकृति, जल्द रोने वाले, उदासचित्त, सन्ध्याके समय समस्त लक्षणोंका बढना ।

सीपिया १२,३० शक्ति ।—बीच बीच में सिर दर्द, दन्तशूल, चहरा फीके रङ्ग का और उसमें मुहासे के

समान पीले रङ्ग के दाग, स्नायविक दुर्बलता और सहज ही में पसीने आजाना।

कलकेरिया-कार्ब १२, ३० शक्ति।—गण्डमाला दूषित धातु, पुराना अजीर्ण और उदरामय, दूधके समान सफेद प्रदर स्राव, गले की सब गिलटियां सूजी हुई, सिर घूमना, पुराना सिर दर्द, हाथ पैर आदि ठण्डे, खांसी आदि लक्षणों में यह दिया जाता है।

सिमीसीफ्यूगा ३, ६ शक्ति।—हिस्टीरिया, सिर दर्द, बायें स्तनके नीचे और साधारणत बाई पसलीमें दर्द, बातका दर्द, अत्यन्त वायु प्रधान धातु।

फेरम ६,३० शक्ति।—कमजोरी, उदासीनता, दिल धड़कना, अजीर्ण, कभी कभी प्रदरस्राव; चेहरा रक्त, फीका और सूजासा, रक्ताल्पता के और और सब लक्षण।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।—प्रात काल सिरमें दर्द, कोष्टबद्ध बारबार अजीर्ण और उदरामय, बायठे आदि लक्षण।

सेनेसिओ ३,६ शक्ति।—ऋतु के बीच के समय में यह औषध देने से अत्यन्त चमत्कार फल दीख पड़ता है।

सलफर ३०,२०० शक्ति।—सिर में फटन, मस्तक में रक्तागम और माथे के भीतर भों भों शब्द, माथे के ऊपर सर्वदा उत्ताप मालूम होना, चेहरा रक्त और फीका,

आंखों के चारों ओर काली मण्डलाकार दाग, दिन अवसन्न भाव, दिनक ११ बजे असह्य भूख।

औषध प्रयोग।—दिनमें २।३ वार। बन्द होनेपर ३।४ घंटेके अन्तरसे एक २ मात्रा जाती है।

सहकारी उपाय।—कमजोरी अथवा कारण रज रोध होने से पथ्य की ओर विशेष ... चाहिये। गर्भ सञ्चारनकी सम्भावना हो तो थोड़े बिना, औषध देना अनुचित है। तलपेट को गरम सेकने से प्राय फायदा होता है। दोनों पैर गरम डुबो रखने से भी विशेष उपकार होता है।

रजःशूल।

(डिसमेनोरिया)

इसको प्रचलित भाषामें बाधक वेदना कहतेहैं रोग प्राय देखने में आताहैं। पीठ, कमर, जांघ ओर तथा डिम्बाधार में अधिक दर्द ही इस रोग का सबसे लक्षणहै। किसी किसी को ऋतुमें कुछ दिन पहिलेसे ठीक ऋतुके समय दर्द आरम्भ होकर २।१ दिन कभी २ ऋतुके समय कई दिनतक रहताहै। आर्तवस्राव फीका रंग जमाहुआ रक्त गिर...

चिकित्सा।—वेलेडो... पहिले दर्द

मस्तकमें रक्तागम और दृष्टिमें गडवड, भयानक दृश्य दीखना और चिल्लाना, काटने और फाडने को चाहना, चहरेका सूजासा रहना और सुर्खी, प्रसवके दर्द के समान अत्यन्त दर्द मानो गुह्यद्वारसे सवही निकल पडेगा। दर्द जितनी जल्दी २ हो उतनीही जल्दी कम होजाय, स्राव उजले लाल रंगका, कभी जमा हुआ और बदबूदार।

केलकेरिया-कार्ब १२,३० शक्ति।—ऋतुसे पहिले स्तन फूलना और तर्राना, सिर दर्द, पेटमें दर्द, कम्प और प्रदर प्रस्राव, ऋतुके समय पेटके भीतर काटने के समान दर्द, दन्त शूल, पेटमें प्रसव के दर्द के समान दर्द और नसों का फूलना, दोनो पैर ठंडे, गण्डमाला धातु।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति।—प्रसवके दर्दके समान जरायुमें दाब मालुम पडना, स्राव कालासा जमा हुआ और दोनों जांघमें फटनेके समान दर्द, बार बार पेशाब करनेकी इच्छा, मस्तकपर गरम पसीना, दर्द बिलकुल सह्य न होना, किसी बातका भलमनसात के साथ जवाब न देसकना।

सिमीसीफ्यूगा ३,६ शक्ति।—थोडा वा बहुत जमा हुआ रक्तस्राव, पीठमें बहुत तेज दर्द, इस दर्दका जाघ और कमर तक झुक आना, प्रसवके दर्दके समान दर्द (कैमोमिला के सामन), हिष्टिरिया के वांयठे और तल पेटमें टनटनाहट मालूम होना, चित्त उदास।

कोनियम ६ शक्ति।—स्राव थोडा और भूरे रङ्ग का

ऋतु से पहिले दोनो स्तन फूल उठना, कडे होजाना और दर्द होना (कैल्केरियाके समान) हृतपिंड में कटनके समान दर्द और सोने में अथवा करवट बदलते में सिर घूमना ।

नक्सवोमिका ६, ३० शक्ति ।—ऋतु जल्दी होना, स्राव गाढ़ा और जमा हुआ, पेटमें मरोड़े के समान असह्य दर्द, जीमिचलाना अथवा पीठ कमर में हड्डी टूट जानेके समान दर्द, बार बार पेशाब करनेकी हाजत, कोष्ठबद्ध, बार बार दस्त जानेकी हाजत, किन्तु दस्त न होना, मल कठिन और कष्टसे निकलताहो ।

पलसाटिला ६ शक्ति ।—ऋतु देरसे हो, रक्त गाढ़ा और काला, ठहर ठहर कर रक्तस्राव, तलपेट में मानों पत्थरसा दब रहाहै, दर्द इतना तेज कि रोगी तड़फता हो, चिल्लाताहो और रोताहो [सिमीसीफ्यूगाके समान], उठनेमें सिर घूमना, मुलायम, सहजहीं रो उठे ऐसी स्त्री, गरम मकान में बढ़ना ।

सीपिया १२, ३० शक्ति ।—ऋतु बहुत पहले हो और बहुत थोड़ा हो, पेटमें दर्द और कराहनेके समान इतनी तकलीफ कि आलती पालती मारकर बैठनाहो, ऋतुसे पहले प्रदर स्राव, इस स्रावसे सब स्थान में फफोले पड़जावे, पाकाशय में कष्टदायक खालीपन, प्रातःकालके समय उलटी या जीमिचलाना, कठिन, गुठलेदार मल और मलद्वार में बोझ मालूम होना ।

सलफर ३०, २०० शक्ति ।—स्राव गाढ़ा, काला और

घाव पैदा करनेवाला, पेटमें अत्यन्त खेंचनेके समान दर्द, साथही अत्यन्त गरमी, सर्दी, बार बार गरमी मालूम होना और अवसन्नता, पुराना चर्मरोग, दुबली स्त्रियां जो झुककर चलती हैं।

पाडोफाईलम ३ शक्ति।—बांयठों के दर्दके साथ रज:शूल, कराहने के समान दर्द, स्राव थोडा, पास के सब यन्त्र जैसे मूत्राधार सरलान्त्र और आंतों में बांयठे।

बोरेक्स ६ शक्ति।—बन्ध्यात्व के साथ रज:शूल।

जेलसीमीनम ३ शक्ति।—दर्द के समय यह औषधि प्रयोग करने से शीघ्रही आराम होता है।

औषध प्रयोग।—दर्दके समय आधे वा १ घंटेके अन्तरसे औषध देनी चाहिये।

सहकारी उपाय।—गरम पानीका सेक और गरम पानी पीनेसे प्रायः फायदा दीख पडताहै। दर्दके साथ ऋतु उपस्थित होनेसे पहिले सलफर और कैलकेरिया पर्यायक्रम से व्यवहार करना चाहिये। बाधक वेदना सन्तान होनेमें प्रधान विघ्नकारी है।

—o—

प्रचुर रजःस्राव (बहुतसा रज . व
(मैनरेजिया)

ऋतुके समय जरायुसे बहुतसा रक्त स्राव

ऋतु से पहिले दोनो स्तन फूल उठना, कडे होजाना और दर्द होना (कैलकेरियाके समान) हृतपिंड में कटनके समान दर्द और सोने में अथवा करवट बदलते में सिर घूमना ।

नकसवोमिका ६,३० शक्ति ।—ऋतु जल्दी २ होना, स्राव गाढा और जमा हुआ, पेटमें मरोड के समान असह्य दर्द, जीमिचलाना अथवा पीठ कमर में हड्डी हट जानेके समान दर्द, बार बार पेशाब करनेकी हाजत, कोष्ठबद्ध, बार बार दस्त जानेकी हाजत, किन्तु दस्त न होना, मल कठिन और कष्टसे निकलताहो ।

पलसाटिला ६ शक्ति ।—ऋतु देरसे हो, रक्त गाढा और काला, ठहर ठहर कर रक्तस्राव, तलपेट में मानों पत्थरसा दब रहाहै, दर्द इतना तेज कि रोगी तडफता हो, चिल्लाताहो और रोताहो (सिमीसीफ्यूगाके समान), उठनेमें सिर घूमना, मुलायम, सहजही रो उठे ऐसी स्त्री, गरम मकान में चढना ।

सीपिया १२, ३० शक्ति ।—ऋतु बहुत पहले हो और बहुत थोडा हो, पेटमें दर्द और कराहनेके समान इतनी तकलीफ कि आलती पालती मारकर बैठनाहो, ऋतुसे पहले प्रदर स्राव, इस स्रावसे सब स्थान में फफोले पडजाय, पाकाशय में कष्टदायक खालीपन, प्रातःकालके समय उलटी वा जी मिचलाना, कठिन, गुठलेदार मल और मलद्वार में बोझ मालुम होना ।

सलफर ३०,२०० शक्ति ।—स्राव गाढा, काला और

घाव पैदा करनेवाला, पेटमें अत्यन्त खेंचनेके समान दर्द, साथही अत्यन्त गरमी, सर्दी, वार वार गरमी मालूम होना और अवसन्नता, पुराना चर्मरोग, दुवली स्त्रियां जो झुककर चलती हैं।

पाडोफाईलम ३ शक्ति।—वायठों के दर्दके साथ रजःशूल, कराहने के समान दर्द, स्राव थोडा, पास के सब यन्त्र जैसे मूत्राधार सरलान्त्र और आंतों में वांयठे।

बोरेक्स ६ शक्ति।—वन्ध्यात्व के साथ रजःशूल।

जेलसीमीनम ३ शक्ति।—दर्द के समय यह औषधि प्रयोग करने से शीघ्रही आराम होता है।

औषध प्रयोग।—दर्दके समय आधे वा १ घंटेके अन्तरसे औषध देनी चाहिये।

सहकारी उपाय।—गरम पानीका सेक और गरम पानी पीनेसे प्राय फायदा दीख पडता है। दर्दके साथ ऋतु उपस्थित होनेसे पहिले सलफर और केलकेरिया पर्यायक्रम से व्यवहार करना चाहिये। वाधक वेदना सन्तान होनेमें प्रधान विघ्नकारी है।

प्रचुर रजःस्राव (वहुतसा रजःस्राव)
(मैनोरेजिया)

ऋतुके समय जरायुसे वहुतसा रक्तस्राव होनेको स्त्रियां

प्रचलित भाषा में खूब कटना कहतीं हैं। यह ठीक नियमित समय में हो सकता है, अथवा, आगे पीछे होकर भी बहुत दिन ठहर सकता है। इस लिये रज-स्राव के साथ २ नीचे लिखे हुये लक्षण दीख पड़ते हैं। अलसता, पीठ, जांघ और नीचेके अङ्गों में चलता फिरना दर्द, सर्दीसी मालुम होना, दोनों पैर ठंडे, भूख न लगना इत्यादि। इस रोगके बहुतसे कारण होते हैं। जरायुकी बनावटमें विलक्षणता, बहुत और अनुचित अनियमित खाना पीना, ऋतुके समय स्वामी सहवास वा किसी प्रकारकी उत्तेजना आदि इस रोगके प्रधान कारणों में गिने गये हैं।

चिकित्सा।— एकोनाईट ३,६ शक्ति।— कम उमर और रक्त पूर्ण धातु वाली स्त्रिया, बहुत रज-स्राव और सायही मृत्युभय और मानसिक उद्वेग, सीधा होकर उठ बैठनेमेंही सिर घूमना।

बेलेडोना ३, ६ शक्ति।— ऋतु बहुत पहले और बहुत ज्यादा, स्राव उजले लाल रंगका और गरम, बहुत वेग मालुम होना, दर्द मानो सब गुप्त द्वारसे निकल पड़ेगा, लपकन, सिर दर्द और कमरमें दर्द, जरायु में खिचने के समान दर्द, इसीसे चिल्लाना, सबको काटने और चीज वस्तु तोड फोड डालनेकी इच्छा।

केलकैरिया कार्ब १२,३०. शक्ति।— ऋतु बहुत जल्दी जल्दी हो, बहुतहो और अधिक दिनतक ठहरे, रज स्रावके पहिले दोनों स्तन सूजे हुये और दर्द मालूम होना, सिर

दर्द, पेटमें दर्द, कम्प, पेशाब के समय पेटमें काटनेके समान दर्द, दांतोंमें दर्द और कराहना, झुकनेसे सिर घूमना, उठनेसे या सीढ़ी चढ़नेसे बढ़ना, दोनों पैर इतने ठंडे और गीले मानों पैरमें भीगा हुआ मोजा पहिना है, सामान्य ठंडी हवाभी सह्य न होना।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति।—बहुतसा काला और जमा हुआ रक्तस्राव, ठहर २ कर ऐसाही रक्तस्राव होना, जरायुमें प्रसव वेदना के समान अत्यन्त दर्द और पैरा की नसों में टूट जाने के समान दर्द, अत्यन्त असह्य और सहन नहीं, कोई बात पूछनेसे भलमनसात के साथ उत्तर न दे सकना, बार बार बहुतसा विना रंगका पेशाब।

सिमीसीफ्यूगा ३,६ शक्ति।—ऋतु बहुत पहिले हो और ज्यादा हो, स्राव काला और जमा हुआ [इस लक्षण में कैमोमिला और क्रोकस फायदा करता है] पीठ में और जांघ से लेकर पैरके नीचे तक दर्द, नितम्बों में फटन के समान दर्द, और जरायु में दाब मालूम होना, अत्यन्त वायु प्रधान धातु और स्नायु दुर्बलता, हिस्टीरिया के वायटे, मस्तक और आंख के गढ़ों में अत्यन्त दर्द, शीत, सामान्य हिलने से बढ़ना।

क्रोकस ६ शक्ति।—ठीक समय पर ऋतु होना किन्तु बहुत ज्यादा और देर तक रहने वाला, स्राव काला और जमा हुआ, रस्सी के समान लम्बा, रक्त सामान्य हिलनेसे साथ बढ़ना, चहरे पर पीलापन और मिट्टी के समान [मीठीपियासी तरह], ऐसा मालुम हो मानो पेट में

भीतर कुछ हिलता है [सेवाईना की तरह], अत्यन्त दुर्बल और सीढ़ी चढ़ने में दिल धड़कना।

नक्सवोमिका ६, १२,३० शक्ति ।—ऋतु बहुत पहिले और बहुत ज्यादा हो, स्राव कालासा रङ्गका खून, स्राव पहले रहकर बन्द होजाय और फिर होने लगे (सलफरके समान), कमर, जाघ और नितम्बोंमें दर्द, विना कारणही क्रोधित हो उठना, [कैमोमिलाकी तरह], स्वाभाविक कोष्ठबद्ध धातु, वार वार दस्त जानेकी हाजत।

फासफोरस १२,३० शक्ति ।—ऋतु बहुत शीघ्र बहुत ज्यादा और अधिक दिन ठहरने वाला, उसके साथ पेट और कमरमें दर्द, बहुत कमजोरी, दोनों पैर ठडे, पेटमें कमजोरी और खालीसा मालुम होना, भोजन के उपरान्त वायुका बहुत डकार आना, भोजनके वाद नींदसी आना, मल कड़ा और बहुत कष्टसे होना, लम्बी और कृशाङ्गी।

सेवाईना ३,६ शक्ति ।—बहुतही ज्यादा, और दुर्बल करने वाला रज स्राव, स्राव फीके लाल रग और कुछ जमा हुआ खून, प्रसव वेदना के समान दर्द रान तक फैलाहो, पीठसे लेकर दर्द जननेन्द्रिय तक आताहो, अत्यन्त वायु प्रधान धातु और हिस्टीरिया के सब लक्षण [इगनेशिया के समान], गर्भस्राव की आशका।

सिकेली ६ शक्ति ।—बहुत ज्यादा और बहुत दिन तक ठहरने वाला ऋतु, स्राव कालासा पतला रक्त, हिलने चलने से बढ़ता [क्रोकसके समान], ऋतुके पहिले

सबही रोगोंका चढना, दुबली पतली स्त्रियोंके, लिये, यह फायदा करता है।

सीपिया १२, ३० शक्ति।—बहुत पहिले और बहुत ज्यादा ऋतु, ऋतुके पहिले पेटमें अत्यन्त दर्द, पाकाशयके भीतर बहुत कष्ट देने वाला खालीपन मालुम देना, बदबूदार पेशाब, चहरे पर, विशेषकर नाकपर मुहासे के समान पीले रङ्ग के दाग, जरायु टूट जाता ऐसा मालुम होना मानो सबही जननेन्द्रिय द्वारा बाहर निकल पडेगी [बेलडोना के समान]।

सलफर ३० शक्ति।—ऋतु बहुत दिन ठहरे, ऐसा मालुम हो कि सब अच्छा होगया है किन्तु बारबार लौट आना, जलन पैदा करनेवाला स्राव, दोनों आंखोंमें दर्द उत्पन्न करे और उनमें खट्टी बदबू (बदबू—बेलेडोना), पहिले अचानक गरमी मालुम होना और उस के उपरान्त ही कमजोरी और अप्रसन्नता, मस्तक के ऊपर सर्वदा गरमी मालुम होना, हाथ पैरों में जलन, खूनी बवासीर।

औषध प्रयोग।—जब बहुत ज्यादा, रक्तस्राव होता रहे तब आराम न होने तक २०।३० मिनट के अन्तरसे औषध देनी चाहिये। रोग यदि सामान्य हो तो २।३ घण्टके अन्तरसे औषध प्रयोग करनाही यथेष्ट है।

सहकारी उपाय।—सब प्रकारकी मानसिक चिन्ता और उद्वेग, परिश्रम और चलना फिरना बिलकुल निषिद्ध है। रक्तस्राव निवारण करनेके लिये पीठके नीचे

तकिया लगा कर पैर ऊंच और मस्तक नीचा कर रोगी को चित्त सुला देना चाहिये और हिलना झुलना न चाहिये। अत्यन्त रक्तस्राव होतो ठण्डा जल पिलाना, सब शरीर ठण्डा रखना, पैरों में पीठ में, और तलपेट में ठण्डा जल प्रयोग करना विशेष उपकार दिखलाता है। किसी प्रकार की गरम वस्तु व्यवहार करना निषिद्ध है। जिनको बहुत ज्यादा रजस्राव होता है उनको कुछ समय तक स्वामी सहवास बन्द रखना आवश्यक है। ऋतु के समय स्वामी सहवास करनेके दोष से प्राय यह रोग होता है।

रजोलोप।

(क्लाईमैक-टेरिक)।

वृद्धावस्थामें रजस्राव क्रमशः कम होकर अन्तमें बिलै कुल बन्द होजाता है। साधारणत ४५ से ५० के भीतरही रजोलोप होताहै, किन्तु किसीको कुछ पहले किसीको कुछ पीछेभी हो सकता है। जितनाही रजोलोप होनेका समय निकट आने लगता है उतनाही ऋतुके समय और परिमाण में अनेक प्रकारकी गड़बड़ दिखलाई पड़ती है। स्राव कभी बहुत थोड़ा या कभी बहुत ज्यादा होता है। कभी स्राव असमय में अचानक दिखलाई पड़ताहै, केवल थोड़े समय रहता है, और फिर अचानक बन्द होजाता है। कभी ऋतु दनमें भारे ? और क्रमशः लुप्त होता है कि किसी प्रकारके उपसर्ग होते हुये नहीं दीख पड़ते किन्तु

प्रायः रजोलोपके कुछ पहिले से सिर घुमना, सिर दर्द, ठहर २ कर अचानक गरमी मालुम पड़ना, क्षायविक सब लक्षण, कमजोरी, अर्श, जननेन्द्रियमें खुजली, और बहुत से कष्टदायक उपसर्ग दिखलाई देकर बड़ा कष्ट देते हैं।

चिकित्सा। ग्लायोनिया ६ शक्ति। मस्तक में रक्त आनेके कारण सिर दर्द, ऐसा मालुम हो मानो कपाल फटकर विदीर्ण होजायगा और नाकसे खून गिरना, हिलने चलने से सब लक्षणोंका बढ़ना, कोष्टबद्ध, कठिन सूखा मल, अत्यन्त चिड़चिड़ा स्वभाव।

काकूलस ६ शक्ति।—पेशाब के बदल प्रदरस्राव, बिछाने पर उठकर बैठनेसे बढ़ना इतनी दुर्बलता कि बात न कही जाय, सिर घुमना [ग्लायोनिया के समान], स्नायुविधान [नसों के समूहका ढंग] की उत्तेजनशीलता।

इगनेशिया ६ शक्ति।—हृदय में गुप्त दुःख भरा हुआ, ऐसा मालुम हो मानों मस्तक के बगलमें कील फूटी निकलती है, । रज स्कन्ट, काला, जमा हुआ और बदबूदार।

लैकेसिस ३०, २०० शक्ति।—रजोलोप के समय स्त्रियोंके लिए विशेष उपकारी है [पलसाटिलाभी], बार बार जरायुसे रक्तस्राव, मस्तक में भार मालुम होना और मस्तक के ऊपर जलन और लपकन मालुम होना, जरायुमें अत्यन्त सामान्य दाब या स्पर्शभी सह्य न होना, पावों

डिम्बाधार, सूजा हुआ, उसमें दाब वा सुई-चुभोनेके समान दर्द, रात्रिमें सर्दी और दिनमें गरमी मालूम होना, नींदके उपरान्त सब लक्षणोंका बढ़ना ।

पलसाटिला ६, ३० शक्ति ।— मुलायम प्रकृति और जल्द रोने वाली स्त्रियों के लियेही विशेष उपकारी है, स्नायविक दुर्वलता, और गरम मकानमेंभी सर्दीसी लगना, एक-ओरका सिर दर्द, ऊपरकी ओर देखनेसे सिर घुमना, पाकाशयमें दाब और जरायुमें दर्द मालुम होना, मुहका सड़ा हुआ स्वाद, उल्टी करनेकी इच्छा विशेषकर प्रात कालके समय, जलन पैदाकरने वाला, पतला, घाव पैदा करने वाला प्रदरस्राव, समस्त लक्षणोंकाही सन्ध्याके समय बढ़ना ।

सीपिया ३०, २०० शक्ति ।—अत्यन्त उदासीनता, वार वार रोना (पलसेटिलाभी), सन्ध्याके समय बहुत तेज लपकन, सिर दर्द, प्रधानत दोनों कनपट्टीमें, नाकके ऊपर और दोनों गालों में मुहासे के समान पीले रंगके दाग, जरायु हट जाना और कमर में-जलन मालूम होना, पीलासा या सफेद प्रदर, साथही कमरमें खुजली ।

सलफर ३०,२०० शक्ति ।—मस्तक के ऊपर आग के समान सर्वदा गरमी [शीतलता—सीपिया], दोनों आंख, हाथ, और पैरोंमें जलन, प्रात काल मुहका सड़ा हुआ स्वाद (पलसेटिलाभी), पेटके ऊपर हाथ न लगने देना मानो पेटके भीतर सब सड़ गया है और घाव होगये हैं, जलन करने वाला दर्दके साथ प्रदरस्राव, जिस स्थान में लगे

उसी स्थान में दर्द हो, दिनमें बार बार कमजोरी और अव सन्नता मालुम होना।

औषध प्रयोग ।—आवश्यकता के अनुसार ३। ४ घंटे के अन्तर से देना चाहिये। प्राय दिनमें २। १ बार औषध लेनाही यथेष्ट है।

पथ्य ।—पथ्य हलका और सहजमें पचने वाला देना उचित है। मच्छी और मांस बिलकुल निषिद्ध हैं। इस अवस्थामें सबजी तरकारी अच्छा पथ्य है। सब प्रकारकी उत्तेजक खाने पीनेकी चीजें बिलकुल छोडदेनी चाहिये। खुली हुई हवामें परिश्रम, प्रतिदिन स्नान करना फायदा करता है। रुईके गद्देकी अपेक्षा कठिन चटाईपर सोना अच्छा है। इस अवस्थामें कुछ कुछ कम भोजन करना चाहिये।

—o—

श्वेत प्रदर।

(ल्यूकोरिया)।

जननेन्द्रिय वा जरायुसे एक प्रकारका सफेद स्राव निकलता है, इसको प्रदर रोग कहतेहैं। यह रोग प्राय देखनेमें आताहै। यहरोग कभी २ छोटी २ बालिकाओंकोभी होताहै।

पहले स्राव सफेद रहताहै, कपडों में थोडा २ सफेद दाग लगताहै और वह सूखकर कडा पडजाता है। इस अवस्थामें लापरवाही कर यदि भली भांति इलाज न किया जाय तो स्राव बढकर पीलेसे अथवा हरेसे रङ्गका हो

जाताहै । सब स्थानमें जलन होती है और फफोला के समान घाव से होजाते हैं । स्राव सब रोगियोंको सर्वदा एकसा नहीं होता । कपडे में सामान्य दाग लगने२ क्रमशः बहुतसा स्राव होते हुवे देखा जाताहै । साधारणतः इसका परिमाण ऋतुसे पहिले और पीछे और कभी२ गर्भावस्था मेंभी बढ़जाता है ।

यदि प्रारम्भमें ही रोग अच्छा न हो तो क्रमश शरीर दुबला होता जाता है और भूक न लगना, चहरा रक्तशून्य, फीका और सूजा हुआ, मानसिक उदासीनता, पेट और कमरमें दर्द और कमजोरी आदि सब लक्षण उपस्थित होते हैं । गर्भधारण करने की शक्ति भी लुप्त होजाती है । अजीर्ण और भूक न लगना प्रबल होकर शरीर को और भी दुर्बल करदेता है ।

कारण ।—इस रोगका प्रधान कारण विलासिता और आलस्य, प्रसव वेदनाका कष्ट पाना, ऋतुमें गड़बड़, अत्यन्त स्वामी सहवास, गर्भस्राव, साफ स्वच्छ न रहना इत्यादि ।

चिकित्सा ।—**एलूमीना ३०,२०० शक्ति** ।—अत्यन्त प्रदर स्राव, खडे होने से स्राव बहकर जाघ और पैरों पर होकर गिरे, घाव पैदा करने वाला, जलन पैदा करने वाला, जननेन्द्रियमें जलन और यहा सब स्थान में फफोले पड जाना और प्रदाहित, कोष्ठबद्ध ।

आर्सेनिक ६, १२, ३०, २०० शक्ति ।—

घाव और जलन पैदा करने वाला स्राव, सब स्रावोंका तरोना, स्राव गाढा, पीले रंगका, खडेहोनेसे किम्वा वायु नि.सरन होनेसे बूद पडना, रात्रिके समय अत्यन्त घबराहट, यन्त्रणा और बेचैनी, दुवली पतली स्त्रियोंके लिये।

कैलकेरिया १२,३०,२०० शक्ति।—दूधके समान सफेद-स्राव, पेशाब करते समय अथवा ठहर ठहर कर हो, ऋतु बहुत पहले और बहुत ज्यादा, साधारणत बहुत दुर्बल, पैदल चलने से अत्यन्त परिश्रम और थकना, ठडी हवा पहले सह्य न होना, दोनो पैर ठडे और गीले, गण्डमाला दूषित धातु।

चायना १२,३०,२०० शक्ति।—दुवले शरीरकी स्त्री जिसको अधिक रक्तस्राव होगयाहै, ऋतुके पहले प्रदर, साथही रान और गुह्यद्वारमें दर्दकेसाथ बोझ मालूम पडना, रक्तके साथ प्रदर, बीच २ में काला जमा हुआ अथवा बहुत बदबूदार पीबके समान स्राव होना, जननेन्द्रियके भीतर बहुत कष्टदायक खुजली और सुरसुराहट।

काकूलस ६,३० शक्ति।—थोडा, अनियमित ऋतु, ऋतु के बीच के समय प्रदर स्राव का होना [ऋतुके उपरान्त-पलसाटिला], पानीके समान स्राव साथही पीब के समान पतला पदार्थ मिला हुआ, झुकने से या बेठनेसे स्राव छलककर बाहर निकल जाना, कष्ट दायक रज, उसके उपरान्त बवासीर, पेट सूजा हुआ।

कोनियम ६,३० शक्ति।—कमरमें कमजोरी और

लगडासा, प्रदर स्राव, उससे सब स्थान में जलन होना, और फफोला पडजाना, स्राव सफेदमा या दूधके समान और दर्दके साथ, जरायुके मुखका कडापन वा घाव, ऋतुके समय सिर घुमना विशेषकर सोते समय, कष्टके साथ रज स्राव वा रज शूल [वाधक वेदना], साथही छातीके बांये ओर चक्के मारनेके समान दर्द।

लैकेसिस ३०,२००शक्ति ।—ऋतुके पहिले प्रदर स्राव, स्राव बहुत जलन करने वाला, चिकना, उससे कपड़ा कडा पडजाय और हरा दाग लगजाय [पीलेरंगका दाग—नक्स वोमिका], ऋतु नियमित समयहो किन्तु बहुतही थोडाहो और बहुतही थोडीदेर रहे, कमरमें कोई कपडा आदि कसकर न पहना जाय, वृद्धावस्थामें रजोलोप होने के समय रोग[सोपिया]।

नक्सवोमिका ६,३०,२००शक्ति ।—बदबूदार प्रदर स्राव, उस से कपडे में पीला दाग लगजाय, और जरायु में दर्द, ऋतु कभी भी नियमित समय पर नहो, स्वाभाविक कोष्ठबद्ध धातु, साथ ही बार बार दस्त जाने की हाजत, विलासिता, गरम मसाला मिले हुये घी में पके हुये सब पदार्थों का खाना और अलसता यदि रोग के कारण हों तो यह औषध विशेष उपकार करती है।

पलसाटिला ६,३०,२०० शक्ति ।—जलन करने वाला पतला स्राव करने वाला प्रदर, दूध के समान प्रदर, जननेन्द्रिय सूजी हुई, विशेषकर ऋतु के उपरान्त, प्रदरस्राव गाढा, सफेद, ऋतुके पहले और ऋतु के समय में होने पर भी पलसाटिला फायदा करता है। बैठे रहने के उपरान्त

उठने से सिर घूमना और सर्दी सी लगना, मुलायम प्रकृति, शीघ्र रोने वाली स्त्री।

सीपिया १२,३०,२०० शक्ति।—वृद्धावस्था में रजोलोप होनेके समय, गर्भावस्थामें वा यौवनावस्थामें रोग (ल्यूकोरिया), प्रदरस्राव, साथ ही जरायु ग्रीवा में सुई चुभोने के समान दर्द और जननेन्द्रिय में खुजली, पीलासा, जल के समान, दूध के समान, वा श्लेष्मा के समान स्राव, चहरे पर, विशेष कर नाकके ऊपर मुहासे के समान पीले रंग के दाग, पेशाब में अत्यन्त दुर्गन्ध, उस में कीच के समान पदार्थ नीचे जमजाना।

मार्क्यूरियस ६,३० शक्ति।—स्राव पीलेसे रंगका, उसमें मवाद हो, तरीने और खुजली हो; बहुत रज स्राव, पतला और देखनेमें स्वाभाविक के समान नहीं, दुर्बलता, शीतलता, चहरा फीके रङ्गका इत्यादि।

सलफर ३०,२०० शक्ति।—प्रदरस्राव, जलन और उसमें दर्द, जननेन्द्रिय नरोना, स्राव पतला पीलेसे रङ्गका, स्रावके पहले जननेन्द्रियमें ऐंचन के समान दर्द जननेन्द्रिय में जलन, दिनमें बार बार कमजोरी और अवसन्नता मालुम होना, मस्तकके ऊपर सर्वदा गरमी, हाथ पैरोंके तलुएमें जलन, हाथ पैर बिछौने के अन्दर न रख सके।

बाह्य प्रयोग।—हाईड्रास्टिस वा कैलन्डुला मूल बिना मिला हुआ अरक १० बूंद १ औंस पानी में मिलाकर पिचकारी लगाने से बहुत फायदा होता है।

औषध प्रयोग।—प्रातःकाल और सन्ध्याके समय

दो माशा औषध एक सप्ताह तक देना यथेष्ट है। इसके उपरान्त कुछ दिनतक औषध बन्द रखने पर यदि कुछ फल न दीखे तो और औषध सावधानी से तजवीज करके देना चाहिये।

सहकारी उपाय।—इस रोगकी चिकित्सा के समय ऋतु सम्बन्धी कोई गड़बड़ है या नहीं यह जानकर रोगी की उचित औषध देनी चाहिये। सर्वदा ठंडे पानी से रोगके स्थान को स्वच्छ रखना चाहिये। अत्यन्त परिश्रम, मानसिक उद्वेग वा उत्तेजना और स्वामी सहवास बिलकुल बन्द रखना चाहिये।

—०—

गर्भधारण।

(प्रिगनेनसी)।

जननेन्द्रियका एक मात्र उद्देश वंश वृद्धि है। विवाह और स्त्री पुरुषके सङ्गमका मुख्य फल सन्तान उत्पत्ति है। पुरुष और स्त्री जब पिता और माता होते हैं उस समय मनुष्य हृदयकी एक सबसे बड़ी जुम्मेदारी उनके ऊपर आकर पड़ती है। इस भारको ग्रहण कर जो उस फलको प्राप्त नहीं करसकते उनका चरित्र प्राय पशु वृत्तिके समान देखा जाता है। पिता माताके शारीरिक अवयव और मानसिक प्रवृत्ति सन्तान मे पाये जाते हैं इसमें सन्देह नहीं है।

पिता माताका चरित्र मानसिक उत्कर्ष, धर्म्म भाव, अथवा और चाहे सो कहो इसका फल जितना सन्तानके लिये होगा उतना माता पिताके लिये

नहीं होसकता। जो इस सत्यको सर्वदा अपने हृदयमें स्थान देकर इस पाप परिवेष्टित जगतमें अनेक प्रकारके प्रलोभों से मुह मोड कर धर्म्म पथमें चल सकते हैं वही यथार्थ में माता पिता कहने के योग्य है। इस सत्यकी ओर यदि सब लोग दृष्टिपात करें तो आजतो पाप स्रोत वह रहा है वह इतना न रहे।

गर्भ सञ्चारके कुछ लक्षण ऐसे हैं जिनसे कि उसका निश्चय किया जासकता है। यह सब लक्षण सब स्त्रियों को एक समान नही होते। किसी को अधिक और किसीको कम, किसीको ठीक समय पर होते हैं और किसीको आगे पीछे देखे जाते हैं। इन लक्षणों में नीचे लिखे हुयेही लक्षण प्रधान।

(१) गर्भ सञ्चारका सब से पहला लक्षण ऋतु बन्द होनाहै। किसी रोगके कारण ऋतु बन्द न होनेसेही जाना जाताहै कि गर्भ सञ्चार हुआ। कभी २ (ऐसा बहुत ही कम होता है) गर्भसञ्चार होने परभी पहले कुछ एक महीनो तक ऋतु होते हुये देखा जाता है।

(२) प्रात काल के समय उलटी। गर्भसञ्चारके दो सप्ताहसे ६ सप्ताहके भीतर, कभी २ सञ्चार होतेही, प्रात-कालके समय उलटी वा जी मिचलाना, मुहसे पानी गिरना आदि देखा जाता है। अच्छे खाद्योंमें अरुचि और अखाद्य पदार्थों में रुचि होनाभी गर्भसञ्चारका एक प्रधान लक्षण गिना गया है।

[३] स्तन बडा हो और उसके चारों ओर काला दाग दिखलाई पडे।

[४] स्तनमें दूध उत्पन्नहो।

[५] पेट बड़ा हो।

[६] पेटके भीतर बालक हलता रहे। पेटके भीतर सन्तान के पहले हिलने के ४॥ महीने पीछेही प्रसव वेदना होतीहै।

[७] पेटके ऊपर कान रखनेसे बालकके हृदयकी धडकन सुनाई देती है। नाभी के नीचे तलपेटमें और बांई ओर कान लगाकर सुननेसे घडीके शब्दके समान बालकके दिलकी धडकन सुनी जाती है। यह शब्द प्रायः ५ मासमें सुनने में आताहै। यह शब्द एक मिनटमें जितनाहो उससे, पुत्र अथवा कन्याका निश्चय किया जासकता है यथा:—

प्रति मिनट बालकके दिलकी धडकन।

११० से १२५ तक—निश्चित पुत्र।

१२५ से १३० तक—सम्भवत पुत्र।

१३० से १३४ तक—सन्देहयुक्त, किन्तु पुत्रहोना ही सम्भव है।

१३४ से १३८ तक—सन्देहयुक्त, किन्तु कन्या होनाही सम्भव है।

१३८ से १४३ तक—सम्भवतः कन्या।

१४३ से १७० तक—निश्चित कन्या।

गर्भावस्था के समय माता के व्यवहार और मानसिक प्रकृतिके ऊपर भविष्यत सन्तान की शारीरिक, नैतिक और मानसिक दशा निर्भर है। इस समय जो रोग माता को हो वही बालक को भी होजाता है। यदि माता का रक्त दूषित न हो तो बालक पवित्र रक्त से बढता रहता है, यदि

माता को पूर्ण शक्ति हो तो बालक मोटा ताजा होता है। माता का मानसिक भाव प्रसन्न, पवित्र और न्यायपरायन हो तो भविष्यत सन्तान के हृदय में भी इन सब सद्गुणों का बीज आरोपित होजाता है। असल बात यह है कि माता का शारीरिक मानसिक और नैतिक भाव में बिलकुल गड़बड़ न होने पावे यह ध्यान देने की बात है।

यदि माता पिता अपनी सन्तान को निरोगी पवित्र चरित्र और उन्नत हृदय देखना चाहें तो उनका सबसे पहले स्वयं इनगुणों का अधिकारी होना चाहिये। गर्भावस्था के समय माताको इन सब विषयों पर सावधानी से चलना चाहिये। पहले आहार, सहजमें पचने वाला और पुष्टिकर, अच्छीतरह पेट भरके खाना चाहिये। लोभ के वशीभूत होकर अखाद्य भोजन बिलकुल वर्जित हैं। गर्भसञ्चार के पहले कुछ महीने जो अरुचि हो उस पर विशेष ध्यान रखना चाहिये। बहुत खटाई, लालमिरच, मट्टी और और स्वास्थ्य को बिगाड़ने वाली चीजोंसे गर्भवती स्त्रीका दूर रहना परम आवश्यक है।

दूसरे, विहार। गर्भसञ्चार हुआ है यह जानतेही स्वामी सहवास बिलकुल बन्द करदेना चाहिये। घरके लोगोंको उचित है कि इस समय से लेकर प्रसव कालतक स्त्रीके रहन सहन पर दृष्टि रखें और ऐसा प्रबन्ध करें जिससे उसके हृदय में चिन्ता बिलकुल न रहे मन धर्म्म विषयमें लगा रहे, मनमें बुरे विचार न उत्पन्नहों और सन्तोष के साथ किसी काममें लगी रहे। इस समय में मनमें किसी प्रकार की बुरी चिन्ता, शोक, भय और दुख, बिलकुल न होने चाहियें। नित्य नियमित स्नान, आहार और निद्रा अत्यन्त आवश्यकीय हैं। गर्भावस्थामें सवारी

बैठना, देश भ्रमण, कठिन परिश्रम बिलकुल निषिद्ध हैं।



गर्भ धारणके समय का निर्णय ।

गर्भ धारणका ठीक समय निर्णय करना कठिन है तथापि साधारणतः अन्तिम ऋतुसे गिनेपर २८० दिन ४० सप्ताह वा नो मासकाही नियम है। किसी २ को इतने समयके पहले वा पीछे भी सन्तान होती हुई देखी जाती है। ७ महीने पहले जो सन्तान होती है वह प्राय नहीं बचती।

नीचे लिखी हुई तीन अवस्था यदि ठीक नियमित समय पर हों तो प्रसव कालके विषयमें बहुत कुछ निर्णय किया जासकता है। [१] अन्तिम ऋतका ठीक दिन मालुम होना। [२] प्रातःकालके समय जी मिचलाना वा उलटी—यह अवस्था गर्भ सचार के ६ सप्ताह उपरान्त होती है। (३) जरायु के भीतर बालक का सञ्चरन [बनना] गर्भ सञ्चारन के ४॥ महीना बाद माताको यह सञ्चरन मालुम होता है। इस के अतिरिक्त प्रसवके २। ३ सप्ताह पहले पेट बड़ा और कमर कुछ मामूली से ज्यादा पतली होजाती है सन्तान जल्दी प्रसव होनेका यह एक प्रधान चिन्ह है।



गर्भावस्थकी पीड़ा।

प्रातःकालके समय जी मिचलाना व उलटी।

जरायु के साथ पाकाशय का जो अति घनिष्ट सम्बन्ध

यह गर्भ सचार होतेही उलटी होना, जी मिचलाना, मुंह में पानी भर आना आदि लक्षण से स्पष्ट जाना जाता है। यह किसी को शीघ्र और किसी को देर से प्रकाशित होते हैं। यह लक्षण प्रायः छठें सप्ताहमे आरम्भ होकर तीसरे महीने तक रहते हैं। कभीर उलटी और जी मिचलाना इतना प्रवल होता है कि पेट में खाने पीने की कोई चीज नहीं रहसकती इस से रोगी कमजोर और दुवला होजाता है।

चिकित्सा।—आर्सेनिक ६, ३० शक्ति।— खाने और पीनेसेही, उलटी, किसी प्रकार न रुकने वाली उल्टी, इसकारण दुवलापन और कमजोरी, जलकी प्यास किन्तु बहुत थोडा जल पीना, जल अथवा दूधके समान कोईभी पतली चीज पीनेसे उलटी।

इपीका ६ शक्ति।— उलटी और जी मिचलाना तथा पाकाशयमें एक प्रकारकी गड़वड़ सी मालूम होना, बराबर जी मिचलाना, पलभरकोभी बन्द न होना, पित्त वा श्लेष्माकी उलटी, पेट नरम।

क्रियाजोट ६ शक्ति।— प्रात कालकी उलटी किसी प्रकार अच्छी न होतो यह औषध चमत्कार गुण दिखलाती है।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।— जी मिचलाना वा उलटी, विशेषकर प्रात कालके समय, खाते २ अथवा खाने पीने के उपरान्त, कड़वी डकार, उलटी हो जाने के

उपरान्त आराम सा मालुम होना, मुह में पानी भर आना, हिचकी, पाकाशयमें बोझ मालुम होना, कोष्ठवद्ध इत्यादि।

पलसाटिला ३,३० शक्ति।—प्रत्येक वार भोजन करनेके बाद उलटी, प्रातःकालके समय मुहका बुरा स्वाद, खाने पीनेकी सब चीजों में अरुचि, उदरामय, मुलायम प्रकृति और शीघ्र रोदेनेवाली स्त्री।

फासफोरस ६,३० शक्ति।—भोजनके उपरान्तही बहुत नींद आना, खट्टी उलटी और डकार, जल वा दूध पेटमें जाकर गरम होतेही निकल जाना।

विरेट्रम ऐलवम् ६,१२,३० शक्ति।—सर्वदा जी मिचलाना और मुंहसे थूक निकलना, अत्यन्त पित्त, श्लेष्मा और अन्तमें खूनकी उलटी, कपालमें ठंडा पसीना, ठंडा पानी पीनेकी इच्छा, बहुत कमजोरी और उदरामय के समान मालूम होना।

औषध प्रयोग।—साधारणतः प्रातःकाल और सन्ध्याके समय दिनमें दो वार। यदि रोग प्रवल होतो २। ३ घन्टे के अन्तर से औषध देनी चाहिये।

सहकारी उपाय।—बहुतही सहज में पचने वाले और पुष्टिकारक भोजन करने चाहिये। उचित परिश्रम, चित्त सतुष्ट और प्रसन्न, तथा गृह कार्य में मन व्याप्त बिलकुल आवश्यकीय है। यदि गरम भोजन सह्य न होतो ठंडे करके खाने चाहिये। सब प्रकारके अखाद्य

जैसे बहुत खटाई लाल मिरच जली हुई मिट्टी बिलकुल निषिद्ध हैं।

मुंहमें पानी भर आना और छाती में जलन।

गर्भावस्था में येह एक साधारण रोग है। पेट और गले तक जलन साथही खट्टी डकार आना। पेट में दर्द मुंह में बेस्वाद का अथवा कड़वा पानी भर आना, आदि लक्षणभी देखे जाते हैं।

चिकित्सा।— नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।— छाती में जलन और खट्टी डकार, मुहके भीतर कड़वा और खट्टा पानी छलक उठना, हिचकी, स्वाभाविक कोष्ट-बद्ध धातु, कठिन बड़ा मल।

फास्फोरस ६,३० शक्ति।— खट्टी डकार (नक्सवोमिका के समान), भोजनके उपरान्त मुह में पानी भर आना, साथही डकार, जी मिचलाना, मुहसे पानी गिरना, मुह में पानी भर आना, विशेषकर खट्टी चीज खाने के उपरान्त।

पलसेटिला ६ शक्ति।— खाई हुई चीजकी बारबार डकार आना, मुहका बुरा स्वाद, विशेषकर प्रात काल उठनेके उपरान्त, कड़्या पानीके समान पदार्थ गलेसे मुहमें छलक आवे, भोजनके समय जी मिचलाना।

सीपिया १२, ३० शक्ति।— सन्ध्याके समय मुहसे पानी उठना, थोड़ासा आहार करनेसे ही बन्द होना, दूधके

समान पतली, उलटी, सड़े हुये अन्डेके समान डकार उठना, नाक के ऊपर मुहासे के समान दाग।

सलफर ३० शक्ति।—प्रात काल मुंहका बुरा स्वाद, बहुत लार निकलना, खार के स्वादसे जी मिचलाना और उलटी होना, माथे के तालुए में गरमी मालूम होना।

केलकेरिया १२,३० शक्ति।—खट्टी डकार उठना।

सलफोरिक ऐसिड ६ शक्ति।—पुराने मद्यका रोग रहने पर।

औषध प्रयोग।—प्रत्येक वार भोजन करनेके १ घन्टे पहले १ मात्रा औषध खानी चाहिये।

पथ्य।—आहार सुव्यवस्थाही प्रधान नियम और चिकित्सा है। सहजमें पचने वाला भोजन करना चाहिये। बहुत मसालेदार भोजन करना उचित नहीं। अरुचि के कारण अखाद्य भोजन बिलकुल छोड देने चाहिये। कम खानाभी अच्छा है किन्तु कुपथ्य और नुकसान पहुचाने वाली चीज खाना उचित नहीं।

कोष्टबद्ध।

गर्भावस्था में, विशेषकर पूर्णावस्था में कोष्टबद्ध एक स्वाभाविकही लक्षण है। इसको रोग नही समझना चाहिये किन्तु कोष्टबद्ध के कारण कोई कष्ट, भूख न लगना, नींद न आना, भोजन न पचना आदि उपसर्ग उपस्थित होतेही औषध देनी चाहिये।

चिकित्सा।—ब्रायोनिया ३, ६ शक्ति।—आन्तों की क्रिया न होने के कारण कोष्ठबद्ध विशेष कर गरमीके दिनोंमें, साथही मस्तकमें रक्त सञ्चार, क्रोध स्वभाव इत्यादि।

कौलिनसोनिया ३ शक्ति।—बवासीर और कोष्ठबद्ध, विशेषकर साथ ही जरायु रोग हो।

हाईड्रास्टिस १× शक्ति।—साधारण कोष्ठबद्ध।

नक्सवोमिका ६,१२,३० शक्ति।—अपाक, बार बार दस्त की हाजत किन्तु दस्त साफ न होना, पेट फूलना, बवासीर। पुरानी कोष्ठबद्ध धातु होने पर इसके साथ सलफर पर्यायक्रम से व्यवहार किया जाता है। प्रातःकाल सलफर और रात्रि के समय नक्स देना चाहिये।

सलफर ३० शक्ति।—पुराना रोग।

और २ सब लक्षण कोष्ठबद्ध की चिकित्सा में देखो।

सहकारी उपाय।—इस रोग का एक प्रधान कारण उचित परिश्रम न करना और अलस भाव से बैठे रहना है। इसलिये उचित परिश्रम करना अत्यन्त आवश्यक है। प्रातःकाल उठते ही ठण्डा जल पीना उपकार करता है। प्रतिदिन ठण्डे पानी से स्नान करना अच्छा है। किसी प्रकार का जुलाब लेना या दस्तावर दवा खाना बिलकुल निषिद्ध है। यदि कई दिन तक लगातार दस्त न होने से कष्ट हो तो थोड़े गरम पानी में साबुन घोलकर उसकी पिचकारी लगाई जासकती है। पिचकारी देते समय नीचे लिखी

हुई बातों पर अच्छी तरह से ध्यान देना चाहिये—(१) नली के मुह पर अच्छी तरह से नारीयल का तेल लगाना चाहिये, (२) नल के भीतर से हवा अच्छी तरह से निकालकर पिचकारी दीजाय, इसलिये २।४ वार वाहर पिचकारी चलाकर तव गुह्यद्वार में लगानी चाहिये, (३) धीरे २ और सावधानी से पिचकारी देनी चाहिये, (४) यदि दर्द मालूम होतो थोडी देर के लिये पिचकारी बन्द कर जब दर्द बन्द हो जावे तब फिर पिचकारी लगानी चाहिये, (५) जब तक दस्त की पूरी हाजत न हो तब तक धीरे धीरे पिचकारी लगानी चाहिये ।

पथ्य ।— दूध, पके हुये मीठे फल, और ठंडा पानी फायदा करता है । मांस खाना विलकुल निषिद्ध है । सब प्रकार की तरकारी खाने को दीजासकती है ।

—o—

उदरामय ।

गर्भावस्था में उदरामय बहुत ही बुरा रोग है । रोग उपस्थित होते ही ध्यान देकर उसकी चिकित्सा करनी चाहिये । यदि ठीक समय में उसकी चिकित्सा न की जाय तो शरीर दुर्वल होकर गर्भ नष्ट होसकता है ।

चिकित्सा ।— ऐन्टीमोनीक्रूड ६, १२ शक्ति ।— मल पानी के समान और बहुत, साथ ही पाकाशय का दोष, जीभ दूध के समान सफेद मैल से ढकी हुई, कडवी पित्त की अथवा श्लैष्मा मिली हुई उलटी ।

आर्सेनिक ६,३० शक्ति ।—दुर्वलकारी उदरामय,

मल में बिना पचा हुआ खाया हुआ पदार्थ, बहुत कमजोरी, बेहोश होकर गिरजाना, अति शीघ्र बलक्षय, पीने या खाने के उपरान्त उलटी।

आयोनिया ६ शक्ति।—गरमी के दिनों में उदरामय अथवा जिस समय शरीर में किसी प्रकार की गरमी पहुचे उस समय ठंडा पानी पीने से रोग, प्रातःकाल और हिलने चलने से बढना।

कैमोमिला ६, १२ शक्ति।—गरम उदरामय के समान पतला दस्त, बहुत बदबूदार, मल हरा, पानी के समान क्षतकारी साथ ही पेट में दर्द, बहुत अधीरता, मलमनसात के साथ जम्हाव नदेसकना, रात में बढना।

चायना ६, १२ शक्ति।—पीले रंग का पानी के समान उदरामय, अजीर्ण और पेट में वायु सञ्चय, अत्यन्त कमजोरी, पसीने आना, फल खाने से उदरामय।

डल्कामारा ६ शक्ति।—मल हरासा, पीलासा, पानी के समान या सफेदसा, दस्त जाने से पहले और दस्त समय पेट में दर्द, अचानक वायु ठंढी होने से रोग।

लाईकोपोडियम १२,३० शक्ति।—पेट में अत्यन्त वायु इकट्टी होजाना और गड गड़ बज बज शब्द के साथ उदरामय।

मार्क्यूरियस ६ शक्ति।—आम और मलयुक्त उदरामय, दस्त जाते समय कांपना, रात्रि में और गरमी के दिनों में बढना, पसीने आना।

पाडोफाइलम ६ शक्ति ।—विना दर्द के उदरामय, बहुतसा पानी के समान दस्त अथवा पीले रंग का आम मिला हुआ मल, दस्त जाने के पहले पानी के शब्द के समान गड़गड़ाहट के उपरान्त, दस्त हो; प्रातःकाल दस्त हो इस के सिवाय रात्रि में और गरमी के दिनों में बढ़ना ।

औषध प्रयोग ।—आवश्यकताके अनुसार २ । ३ । ४ घण्टे के अन्तर से औषध देनी चाहिये । आहार पर विशेष दृष्टि रखनी चाहिये । ध्यान रखना चाहिये कि रोग जल्दी ही आराम होजाय ।



सिरदर्द और सिर घूमना ।

चिकित्सा ।— ऐकोनाईट ३,६ शक्ति ।—वायु और रक्त प्रधान धातु वाले मनुष्य के लिये, माथा उठाते अथवा झुकाते समय सिर घूमना, कपाल में भारीपन और पूर्णता मालूम होना ।

वेलेडोना ३, ६ शक्ति ।—शिर घूमना और आखों के सामने अन्धेरा दिखलाई पड़ना, लपकन के साथ सिर दर्द, साथ ही मस्तक में रक्त आना, चहरा और आख लाल ।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति ।—कान में भौं भौं, अन्धेरा दीखना और सिर घूमना, खट्टी डकार, स्वाभाविक कोष्ठबद्ध, प्रातःकाल के समय कष्ट बढ़ना ।

पलसेटिला ६ शक्ति ।—सिर दर्द, विशेषकर

एक ओर, पाकाशय का दोष विशेषकर तेल वा घीमें पके हुये पदार्थ खाने से, सन्ध्या के समय बढना।

सीपिया १२, ३० शक्ति ।—केवल खुली हुई हवा में भ्रमण करने से सिर घूमना, सन्ध्याके समय माथे की रगों में अत्यन्त दर्द, पाकाशय खाली मालुम होना, कोष्ठबद्ध।

इसके सिवाय ब्राययोनिया, सिमीसीफ्यूगा, जेलसीमीनम, इगनेशिया, आर्सेनिक, कैकूलस आदि आवश्यक हो सकते हैं।

औषध -प्रयोग ।—साधारणतः प्रातःकाल और सन्ध्या दो समय। रोग यदि अधिक प्रबल होतो २। ३ घन्टे के अन्तरसे एक एक मात्रा।

गर्भावस्था में दन्तशूल।

गर्भावस्थामें किसी २ स्त्रीके दांतोंमे दर्द होताहै। यह स्नायु शूल के समान कभी कुछ देर रहता है, पीछे बन्द होकर, फिर होने लगता है।

चिकित्सा ।—इस रोगकी प्रधान औषध एकोनाइट, बेलेडोना, कैलकेरिया, कैमोमिला, मर्क्युरियस, नक्सवोमिका, पलसेटिला, सीपिया, और स्टाफेसेग्रिया हैं।

पेशाबकी हाजत न रोक सकना।

गर्भसञ्चारके साथ २ किसी २ स्त्रीको यह रोग

उत्पन्न होताहै। कभी पेशाव बरावर एक २ बूंद होताहै, कभी बेमालुम पेशाव निकल जाताहै। मूत्राधार के ऊपर गर्भ के बालक का बोझ पडनेसे यह रोग उत्पन्न होताहै।

चिकित्सा ।— एकोनाईट ३ शक्ति ।—कष्टके साथ पेशाव, पेशावकी हाजत किन्तु अत्यन्त यन्त्रणा भय और घवराहट।

वेलेडोना ३,६ शक्ति ।—सर्वदा एक २ बूंद पेशाव हो, पेशावकी हाजत न रोक सकना।

कास्टिकम १२,३० शक्ति ।—रात्रिके समय बेमालुम पेशाव निकल जाना।

पलसाटिला ६ शक्ति ।—वैठे रहनेके समय अथवा घुमनेके समय बेमालुम पेशाव निकल जाना, वार वार पेशाव करने की हाजत।

सलफर ३० शक्ति ।—वार वार पेशाव करना, विछोने पर पेशाव करना, गर्भावस्था में पेशाव होने में कष्ट।

औषध प्रयोग ।—एक सप्ताह तक प्रातःकाल और सन्ध्या के समय एक एक मात्रा।

पैर फूलना।

गर्भ की पूर्ण अवस्था में स्त्रियोंके पैर जांघ और यहां तक कि जननेन्द्रिय तक फूल जाती हैं। जरायु में बालक

के बोझ से नीचे के अगों में यथोचित रक्त सञ्चालन में बाधा पडना ही इस का प्रधान कारण है ।

चिकित्सा ।— आर्सेनिक ६,३० शक्ति ।— पैर ठडे, फूलने के साथ अत्यन्त कमजोरी, नाडी दुर्बल ।

एपिस ६ शक्ति ।—जल्दी २ बहुत ज्यादा सूजन, पेशाब का कष्ट ।

चायना ६ शक्ति ।—उदरामय, आमाशय आदि कारण से दुर्बलता होने पर ।

सलफर ६,३० शक्ति ।—पहलेके चर्म रोग गर्भावस्था के समय लोप हो जाने पर यह अधिक उपकारी है ।

सहकारी उपाय ।—बैठे रहने के समय पैर ऊचे रखने चाहिये । घूमने की अपेक्षा खडे रहने में दोष है । रात्रि के समय सोने के उपरान्त सूजन बहुत कम होजावे ।

गर्भस्राव

(एवरशन्)

गर्भावस्था के रोगों में यही रोग सब से अधिक साधातिक रोग है । इस म केवल बालक ही का जीवन नष्ट नहीं होता किन्तु कभी २ स्त्री का जीवन भी सशय में पडजाता है । एक बार गर्भस्राव होने पर फिर ठीक उसी समय इस विपत्त की आशका रहती है । प्राय तीसरे महीने में अथवा कभी इस से पहले या पीछे गर्भस्राव होते हुये देखाजाता है ।

लक्षण।—ऋतु से पहिले शरीर में जिस प्रकार की अस्वस्थता मालूम होतीहै इससे पहले भी ठीक इसी प्रकारका अनुभव होताहै। पहले दर्द, श्लेष्माके समान पदार्थ, पीछे रक्तस्राव और स्राव से अन्तमें पानी निकलकर बालक निकल पडता है। जब तक बालक और फूल न निकले तब तक स्त्री का निस्तार नहीं है।

अनेक प्रकार के बाहरी कारण जैसे गिरना, चोट लगना पैर फिसल जाना, ऊंचा नीचा पैर पडना वा भारी चीज उठाना, ऊंचे नीचे रस्ते में बैल गाडी वा घोडे गाडी आदि में बैठकर चलना इत्यादि, स्वामी सहवास, मानसिक आवेग यथा शोक, दुःख, क्रोध इत्यादि, दस्तावर औषध खाना आदि गर्भस्राव के प्रधान कारण गिने जाते हैं।

चिकित्सा।— एकोनाईट ६ शक्ति।— भय पाकर गर्भस्राव, रक्तस्रावके साथ मृत्यु भय, निश्चय मृत्यु होनेका विश्वास, अत्यन्त आशङ्का और मानसिक उद्वेग, बुखारसा रहना और बेचैनी।

आर्निका ६,३० शक्ति।—गिरना, चोट वा धक्का लगकर रोग, विशेषकर यदि प्रसव वेदनाके साथ रक्त वा और कोई स्राव दिखलाई पडे, चोट लगनेके समान सब शरीरमें दर्द।

बेलेडोना ६ शक्ति।—मुह और होट में लाल, पलेकी नसोंमें लपकन और मस्तकमें गर्मी, कराहने के समान दर्द, प्रसव द्वारसे मानो सब बाहर निकल पडेगा (सीपियाके समान), उजले लाल रंगका बहुतसा रक्त-

स्राव, दर्दका अचानक उठना और अचानक बन्द होजाना, शब्द वा प्रकाश सह्य न होना।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति।—प्रसव वेदना के समान ठहर २ कर दर्द, साथही काला वा जमा हुआ रक्तस्राव, पेटमें अत्यन्त दर्द, बगल तक फैला हुआ, साथही बार बार पेशाव, अत्यन्त अधीरता और बेचैनी, दर्दसे चिल्लाना, चिड़चिड़ापन।

चायना ६,३० शक्ति।—दुर्बल शरीरवाली स्त्री जिसको अनेक प्रकारके स्राव आदि होतेहों, गर्भस्रावके उपरान्त जब भ्रमि [चक्कर] के समान रक्तस्राव हो, सिर घूमना, आखोंसे अन्धकार दीखना, नींदसी आना और अचेत होकर पड़ना, माथेपर बोझ मालूम हो, कानोंमें भनभनाहट और हाथ पैर ठण्डे होना।

क्रोकस ६ शक्ति।—जब रक्त काला रस्सीके समान हो, सामान्य हिलने चलनेसे रक्तस्राव बढ़ना, पेट के भीतर कोई जीव है ऐसा मालुम होना (सेवाईना के समान)।

इग्नेशिया ६,३० शक्ति।—शोक दुःखके कारण रोग, दुःखित और उदास चित्त और लम्बी सांस छोड़ना।

इपीका ६ शक्ति।—क्रमागत उजले लाल रंगका रक्तस्राव, बराबर जीमिचलाना, एक पलभरभी चैन न पड़ना।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।—प्रत्येक वेग के

साथ दस्त या पेशाब का वेग मालूम होना, पेट में असह्य दर्द और साथ ही जी मिचलाना, अत्यन्त चिढ़चिढ़ापन और अकेले रहने की इच्छा, कब्ज, जिगर बढ़ना।

पलसाटिला ६ शक्ति ।—एक बार रक्तस्राव और एक बार दर्द, थोड़ी देर के लिये स्राव और कम होना, फिर दुगने वेग से निकलना, दम घुटने के समान मालूम होना, खुली हुई स्वच्छ वायु चाहना, बन्द और गरम मकान में बढ़ना, गरम मकान में रहने पर भी सर्दी सी लगना, जरायु में फूल अटक रहना, मुलायम और शीघ्र रोदेने वाली स्त्री।

सैवाइना ३, ६ शक्ति ।—दाब कर बाहर निकला आता है ऐसा दर्द और कुनकुनाहट, पीठ से लेकर नले [वस्ति] तक तेज दर्द फैला हुआ, अधिक स्राव, उजले लाल रंग का कुछ पतला और कुछ जमा हुआ रक्त। जिन स्त्रियों को प्राय तीसरे मास में गर्भस्राव होता है यह उन्हीं के लिये उपकारी है।

सिकेली ६ शक्ति ।—गर्भस्राव के उपरान्त विशेष उपकारी है। बहुतसा काले रंग का पतला रक्तस्राव, सामान्य हिलनेसे ही बढ़ना, दुबली पतली और कमजोर शरीर वाली स्त्रियों का रक्त स्राव जरायु क्रिया रहित, बहुत कमजोरी, नाड़ी क्षीण, प्राय डूबी हुई, मृत्यु भय, दर्द बहुत सामान्य या बिलकुल न रहना।

हेमामेलिस ३,६ शक्ति ।—बिना दर्दके रक्तस्राव।

वाईबरनम ३,६ शक्ति ।—जल निकलनेसे पहले

और जब आक्षेपिक [वांयठे) वा मरोडके समान दर्द हो तब इस औषध से गर्भस्राव बन्द होता है।

औषध प्रयोग।—गर्भस्रावकी आशङ्का को अवस्था के अनुसार २०। ३० मिनट वा एक घन्टे के अन्तर से औषध देनी चाहिये। आशङ्का कम होनेपर २। ३ घन्टेके अन्तरसे।

सहकारी उहाय।—गर्भस्रावकी आशका उपस्थित होतेही रोगीको स्थिर होकर सो रहना चाहिये और जब तक आशङ्का दूर न हो तबतक इसी अवस्थामें रहना चाहिये। केवल पैरोंको स्थिर रखनेका उद्देश नहीं है, सब शरीरका पूर्ण विश्राम आवश्यकीय है। गर्भावस्था में स्वामी सहवास, मानसिक चिन्ता, उद्वेग वा भय, अधिक कठिन परिश्रम, स्वास्थ्य विरुद्ध भोजन वर्जित है।

निवारणका उपाय।—जिनको एक वार गर्भस्राव हुआहै उनको फिर गर्भ सचार होनेपर विशेपकर ठीक उस समय जबकि पहिले गर्भस्राव हुआथा अधिक सावधान रहना चाहिये। जिनको वार वार गर्भस्राव हुआ है उनको गर्भसचार होतेही नीचे लिखी हुई दवाइयों मेंसे लक्षण अनुसार दवा तजवीज कर २।३ महीने तक दिनमें एक या दो वार वरावर सेवन करानी चाहिये:-काओफाईलम, सिमीसीफ्यूगा, हेलोनीयस, पलसाटिला, सेवाइना वा सिकेली। जब साधारण स्वास्थ्य या धातुमें दोषहो तब नीचे लिखी हुई दवाइयोंमेंसे कोई एक धातु परिवर्तक दवा देनी चाहिये।

कैलकेरिया १२,३० शक्ति।-गडमाला दूषितधातु।

हेलोनायस ६ शक्ति।—साधारण रक्तात्पता लक्षण।

सीपिया १२,३० शक्ति।—पहले अनियमित और कम ऋतु हो, चर्मरोग, उल्टीके साथ सिर दर्द इत्यादि।

गर्भस्राव के उपरान्त।—गर्भस्राव होने के उपरान्त प्रसव के पीछे जिन नियमों को पालन करना बतलाया गया है ठीक उन्ही नियमों के अनुसार चलना चाहिये। रोगीको पूरा शारीरिक और मानसिक विश्राम अत्यन्त आवश्यकीय है। गर्भस्राव के उपरान्त जरायु के स्वाभाविक सुस्थ दशा में होने से पहले रोगी के सन्तान पालन और घरके कामकाज में लगने से अनेक प्रकारे के कठिन और कष्टकर जरायु रोग जैसे प्रदर इत्यादि उत्पन्न होजाते हैं और इन सब से देह दुर्बल होजाता है। इसलिये गर्भस्राव के उपरान्त कम से कम तीन महीने तक शारीरिक विश्राम की पूर्ण आवश्यकता है। एक बार गर्भस्राव होने पर कुछ दिन तक स्वामी सहवास अवश्य छोड देना चाहिये। जिनको बार बार गर्भस्राव होता है उनको बार बार गर्भ भी रहता है। इस कारण ऐसे रोगी को थोडे दिन आब हवा बदलना और पतिसे जुदा रहना जरूरी है। हमारे देश के मनुष्य और स्त्री इन सब नियमों को न जानने के कारण इतना शोक रोग और दारिद्र भोग करते हैं।

प्रसव।

प्रसव का ढङ्ग हमारे देश में जितना बुरा है पृथ्वी के किसी देश में इतना बुरा नहीं है। स्त्री और सोवड के विषय में कितना बुरा रिवाज है और स्त्रियों के हृदय मे कितने प्रकार के भ्रम घुस रहे हैं इस का कुछ ठिकाना नहीं। बड़े ही दुःख की बात है कि हमारे देश में विद्या का इतना प्रचार होने पर भी बालक उत्पन्न होते समय की कुप्रथा अभीतक वैसी ही चली जाती है। हमारे देश में जितने बालक मृत्यु के ग्रास बनते हैं उसकी अपेक्षा विलायत में बहुत ही कम मरते हैं। हमारे यहां सोवड का मकान बहुत ही छोटा गीलासा और अन्धकारमय होता है, इस पर भी प्रसव के समय उस में बहुत से मनुष्य भरजाते हैं इस से शीघ्र ही उस की वायु बिगड जाती है। पैदा होते ही बालक इस यम पुरी के समान स्थान में थोड़ी देर रहते ही बीमार होजाता है। इसीलिये सोवड में बालकों की मृत्यु संख्या इतनी अधिक होती है।

सूतिका गृह (सोवड)

मनुष्यों के लिये खुला स्वच्छ हवादार मकान, साफ बिछौना उचित उजाला और निर्मल वायुकी आवश्यकता होती है, बालकों के लिये भी इन सब सामग्रियोंकी आवश्यकता कुछ कम नहीं है वरन अधिकही है। इन सब बातोंके अभाव से जैसे मनुष्य थोडेही समयमें रोगी होजाताहै वैसेही बालक भी रोगी होकर मृत्युका ग्रास बनताहै। इस लिये

घरमें एक अच्छा मकान सोवडके लिये होना अत्यन्त आवश्यकीय है । घर स्वच्छ और दरवाजे खिडकीदार होना चाहिये । घरमें यथोचित वायु सचार होनाभी बहुत जरूरी बात है । जहां नयी सोवड बनाने की आवश्यकता हो वहां यह सवसे पहले देखना चाहिये कि घर सूखा और साफ है वा नहीं । प्रसवसे बहुत दिन पहिले मकान का निश्चय करलेना चाहिये जिससे मकान भली भांति सूख जावे । जमीन यदि गीली होतो फूस वा घास विछाकर तव चटाई विछानी चाहिये । वालकको बहुत हवा न लगे इस वातपर अच्छी तरह ध्यान देकर दूरके दो आमने सामने के जगले कभीकभी खोल देनें चाहिये । सफाई रखनाही वालकका जीवन है । हमारे देशमें यह वडी बुरी प्रथा है कि सोवडमें आग जलाकर सव घरको धूएसे भर डालते है । सहजही समझनेकी वात है कि उस धूएसे भरे हुए घरमें जव हम पलभर भी नहीं ठहर सकते १० । १२ दिनमें वालककी क्या दशा होती होगी ? यदि सोवड में आग रखनेकीही आवश्यकता होतो कोयलेके सिवाय और किसी प्रकारकी आग न रखनी चाहिये । सोवडमें चिथडे और कुडा न रहना चाहिये जिससे वदबू पैदा हो ।

प्रसव वेदना ।

जिनकी रहन सहन जितनी सीधी सादी होतीहै उनकी शारीरिक क्रियाभी उतनीही सहज और स्वाभाविक होती है । वनमें रहने वाली और असभ्यजातिया प्रसवको ऐसी

कुछ बातही नहीं समझतीं,—उनके मैदान में रास्तेमें अथवा वनमेंही सन्तान उत्पन्न होजाती है। धनी और विलासी लोगोंके लिये प्रसव एक बड़ी टेढ़ी बात होती है, यहां तक कि कभी कभी उनके प्राणों तक पर आबीतती है। यदि विशेष कष्टदायक लक्षण उपस्थित नहों तो कोई औषध देनेकी आवश्यकता नहीं है।

चिकित्सा।— कैमोमिला ६, १२ शक्ति।— थोड़ा दर्द ही असह्य मालूम हो, कष्टके साथ दर्द और निराशा, तड़फना, दर्द वायठों के साथ और कष्टदायक, रोगी बहुत ही बेचैन, किसी प्रश्न का उत्तर देते समय चिढ़ उठे।

काफिया ३ शक्ति।— दर्द बहुत ही ज्यादा हो, भयकर चिल्लाना और रोना, प्रसव द्वार आदि स्थानों का तरोना, हाथ न लगाने देना, रात्रि के समय अनिद्रा।

इग्नेशिया ६ शक्ति।— हिस्टीरिया रोग वाली स्त्री, शोकातुर स्त्री, पाकाशय में शून्यता और कमजोरी, आहार करने पर भी आराम मालुम न होना, किसी अंग में वायठें आना, रोगी शोकाकुल, सर्वदा लम्बी सांस लेना।

नक्सवोमिका ६, ३० शक्ति।— अनियमित दर्द, दर्द होने परभी प्रसव क्रिया जल्दी न हो, ऐसा मालूम हो कि पीठ और जांघ गिरती जाती हैं, प्रत्येक बार दर्द होने के साथ दस्त या पेशाब की हाजत। स्वाभाविक कोष्ठबद्ध धातु, चिड़चिड़ा स्वभाव।

पलसाटिला ६, ३० शक्ति।— दर्द बहुत कम

और बहुत देरसे हो, दर्द क्रमश कम होता जावे, जरायु की क्रिया हीनता के कारण दर्द, दिल धडकना वा दम घुटना, चक्कर आने के समान अवस्था उत्पन्न करता हो, रोगी स्वच्छ ठडी हवा की इच्छा करता हो, गरम मकान में कष्ट मालूम होना, कोमल प्रकृति की शीघ्र रोदेने वाली स्त्री ।

जेलसीमिनम ६ शक्ति ।— जरायु का मुंह कडा होगया होतो इससे नरम होता है, दर्द ऊपर पीठ वा छाती की ओर जाय ।

सिकेलि ३, ६ शक्ति ।—दुर्बल स्त्री, बहुत कम दर्द और दर्द ठहर २ कर होने के समान मालुम होना ।

बेलडोना ३, ६ शक्ति ।— दर्द अधिक और स्वाभाविक हो किन्तु जरायु का मुह कडा हो, किसी तरह न खुलना हो, चहरा लाल, सिर दर्द, हाथा मे खेंचन, दर्द अचानक आवे अचानक जाय, उजाला शब्द आदि न सहना ।

औषध प्रयोग ।— आवश्यकतके अनुसार १५ । २० वा ३० मिनट के अन्तरसे ।

सहकारी उपाय ।—कम समझ दाई के हाथसे प्रसव कार्य कभी नहीं कराना चाहिये । प्राय मूर्ख दाईके हाथ से प्रसूति (जच्चा) के बहुत कष्ट होताहै । सोवड वाले मकान का बहुत साफ और सूखा होना आवश्यकीय है । सब प्रकार की गडबड और शोर गुल बन्द रखना

चाहिये। रोगी और रोगी के घरवाले सबहीको चाहिये कि बिलकुल न घबडावे। पेटके ऊपर तेल मलकर उसको मुलायम रखना जरूरी है। प्रसवके उपरान्त २। १ मात्रा आर्निका देनेसे शरीरका कष्ट और दर्द [प्रसव के उपरान्त जो दर्द होता है] दूर होता है।

गर्भधारण के समय अन्तिम ऋतुके उपरान्त गिननेसे प्रायः २७३ और २८० दिन के भीतरही प्रसव होता है। प्रसव का दर्द उत्पन्न होते ही सोवड में सब आवश्यकीय वस्तु एकत्रित कर रखनी चाहिये। जब दर्द बहुत होने लगे तब स्त्री को धीरे २ सूतिका गृह अर्थात सोवड में लेजाना चाहिये। होशियार और समझदार दाई के हाथसे प्रसव कराना चाहिये। सोवड में २। १ घडी बूढ़ी स्त्रियोंका रहना उचित है। जच्चाके पास उसकी माका रहना उचित नहीं। जच्चाके पास बैठकर बालक पैदा होने की अशुभ घटना और प्रसव कष्ट आदिका व्यर्थ वार्तालाप कभी न करना चाहिये। स्त्रीको चरपाईके ऊपर बाईं करवट सुलाकर छाती की ओर दोनो घुटने झुकाने चाहिये। प्रसव द्वार आदि निकटवर्ती स्थान नारियल के तेल से चिकने रखने चाहिये। दो एक स्त्री जच्चा के शरीर पर हाथ रख माथे ओर पीठकी ओर बैठानी चाहिये। प्रसवका दर्द होनेके समय बीच बीचमें थोडा २ गरम दूध दिया जासकता है।

प्रसूतिकाक्षेप।

प्रसव का दर्द होनके समय किसी २ स्त्रीको [विशेष

कर जिसको मृगीका रोग हो वा जिसकी वायु प्रधान धातु हो] वायठे आने लगते हैं । पीड़ा अचानक हो उठती है। रोगी अचानक वेहोश होजाताहै, चहरा और सब शरीरके पट्ठे वांयठोंके कारण ऐंठने लगते हैं, दोनो आंखें चारो ओर घूमने लगती हैं, जीभ बाहर निकल आती है, मूहसे खून मिले हुये झाग निकलने लगते हैं, हाथ पैर इतने जोरसे ऐंठने लगते हैं कि पकड़े नहीं जासकते । रोगका आक्रमण ५ मिनटसे लेकर २० मिनट तक रहता है । पीछे वायठे बन्द होकर चैतन्य बहुत कुछ अथवा सम्पूर्ण हो आताहै, सांघातिक रोगमें चैतन्य फिर विलकुल नहीं होता, वायठे कुछ घन्टे रहकर सन्तान उत्पन्न होती है और तब वायठे कम हो जाते हैं । यह रोग बहुत कठिन और सांघातिक है ।

चिकित्सा ।— एकोनाईट ३, ६ शक्ति ।— रोगके आक्रमण करनेकी आशंका होनेही पहलीही अवस्थामें इसका प्रयोग करना चाहिये। भय पाकर रोग, चहरा लाल, सूखा और गरम शरीर, प्यास ओर वेचैनी, मनमें अत्यन्त भय और घबराहट, मृत्यु होनेका भय।

वेलेडोना ३,६ शक्ति ।—चहरा लाल, आंखें विगड़ी हुई, आधी- वेहोशी, पासके आदमियोंको मारने काटने और उत्पात करनेमें प्रवृत्ति, सब शरीरके अवयव और चहरेका वायठेके आनेसे विगड जाना, मूहसे झाग निकलना और वेमालुम मलमूत्र निकल जाना, गिरजाने का भय।

हायोसायमस ६, ३० शक्ति ।—चहरेके पट्ठोंका

ओर आखोंके पलकोंका फड़ककर वायठे आना, सब शरीर पट्ठोंका फड़कना, हाथके अगूठे [अंगुष्ठ] का हथेली की ओर खिचना, बिलकुल बेहोशी और भागने की इच्छा करना छातीमें कष्ट मालूम होना और घरघराहट के साथ श्वास आना जाना, बेमालूम मल मूत्र निकल जाना।

इगनेशिया ६ शक्ति।—चिल्लाकर और सब शरीर*कांपकर अचानक नींदसे जाग उठना, वायठे, चहरेके पट्ठे और मूहके कोनेका फड़कना, गहरी सास लेना।

ओपियम ३,६ शक्ति।—भय पाकर रोग, सब शरीरका वायठोंके साथ कांपना और पट्ठोंका बिगड़ना, वायठों के बाद नींद आना और धड़ धड़ाहट के साथ श्वास आना जाना। सब इन्द्रियों का स्थिरसा होजाना और बिलकुल बेहोशी, नीलेसे रगका, सूजा हुआ चहरा, बेमतलब बकना।

स्ट्रामोनियम ६ शक्ति।——रोगी जागकर जो कुछ पहले देखे उसीसे डरजावे, प्रधानतः दोनो हाथोंमें विशेषकर ऊपर के शरीरमें वायठे होकर रोग आरम्भ हो, दांत किड़किड़ाना, बहुत बकना और बोली तोतली होजाना, अनेक तरहसे हंसी उत्पन्न करने वाला मुह बनाना, हसना, गीत गाना और लम्बी सास लेना, तेज उजेला और शरीरसे कुछभी छूनेसे रोगका फिर लौट आना।

औषध प्रयोग।—२०।३० मिनटके अन्तरसे दवा देनी चाहिये।

प्रसवके अन्तमें चिकित्सा ।

सन्तान उत्पन्न होने और फूल गिरनेके बाद कपडे से कसकर पेट बांध देना चाहिये । प्रसव द्वार आदि दर्दसे फूल उठेतो आर्निका लोशन (एक औंस गरम पानी में २० बूंद) से इन सब स्थानों को भिगो रखना चाहिये । प्रसव के उपरान्त २ । १ मात्रा आर्निका ६ सेवन करनेको देना चाहिये, उससे शरीरकी सब ग्लानि दूर होती है । बिलकुल विश्राम करना अत्यन्त आवश्यकीय है नहींतो रक्तस्राव हो सकताहै और अनेक प्रकारके स्त्री रोग उत्पन्न हो सकते हैं । प्रसव के उपरान्तही दो तीन दिन तक बिलकुल विश्राम आवश्यकीय है ! कुछ दिन तक जबतक कि छातियोंमें दूध उत्पन्न नहो दूध साबू- दाना अथवा बार्ली आदि हलका पथ्य देना चाहिये । इसके उपरान्त क्रमशः स्वाभाविक भोजन खानेको दिया जाय । ३ । ४ सप्ताहतक सीढियोंपर उतरना चढना अनुचित है । सोवडमें सफाई और हवाका आनाजाना रखना चाहिये । सब प्रकारके बदबूदार पदार्थ और मैला आदि उसी समय मकान से बाहर फेंक देना चाहिये । सोवडके काम की चीजें चिथडे और साफ करनेके कपडे सफाईके साथ चूनकर रखने चाहिये । प्रसवके उपरांत यह सब स्वच्छ कपडे और चिथडे काम में आतेहैं ।

जब तक स्त्री सोवडमें रहे बहुत लाल मिरच मसाले घी आदि खाना केवल अनावश्यकीयही नहीं है किन्तु स्वास्थ्यको बिगडनेवालाहै इनसब न पचने वाली चीजो के खानेसे परिपाक शक्ति कमजोर होती है और शीघ्रही उद रामय होजाताहै, यह उदरामय क्रमश पुराना पडने

लगताहै। इसीको स्त्रियों के प्रसूत का रोग कहते हैं। शरीर को सुखाने के लिये घी और लाल मिरच खाना और सेकना बहुत ही बुरी रिवाज है, वास्तव में कुछ नहींहै केवल भ्रमहै। जिस प्रकार गावोंमें स्त्री और बालक को धूप और अग्नि से तपाते हैं यह बहुत कष्टदायक और बहुत नुकसान पहुचाने वाला है।

१— प्रसव के अन्तमें रक्तस्राव।

स्वाभाविक प्रसव में जब सन्तान उत्पन्न होतीहै तब फूल जरायुके भीतर रहताहै। जबतक इस प्रकार रहे तबतक रक्तस्राव की कुछ आशङ्का नहीं। जैसे ही फूल गिरने का दर्द आरम्भ हो वेसेही थोडा बहुत रक्तस्राव होने लगता है, पीछे जरायु सुकड जातीहै और रक्तस्राव बन्द होताहै। सहज प्रसव में अधिक रक्तस्राव नहीं होता।

चिकित्सा।— बेलेडोना ६ शक्ति।— गरम रक्तस्राव, रक्तस्राव के साथ ऐसा मालुम होकि भीतर के सब यन्त्र आदि प्रसव द्वार में बाहर निकल पडेंगे, इस प्रकारका भीतर की ओर बाहर से दाब पडना, ऐसा मालुम होकि पीठ टूटी जातीहै।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति।— लाल काला और जमा हुआ स्राव, दोनो पेरोंमें दर्द मालुम होना मानो फटे जातेहैं, रोगी के स्वभावमें बहुत चिडचिडापन और जरासी बातमें क्रोधित होउठना।

चायना ६,३० शक्ति ।—भयङ्कर रक्तस्राव, काला और जमाहुआ रक्त, हात पैर और शरीर ठंडा और नीले रंग का, सिरदर्द, कान में भौंरे शब्द, आखोंसे दिखलाई न पडना, चक्कर। रक्तस्राव के कारण दुर्बलता की यह प्रधान औषधहै ।

इपीका ६,३० शक्ति ।—लगातार उजले लाल रंगका रक्तस्राव और ढूडी के पास काटने के समान दर्द, जी मिचलाना, अत्यन्त कमजोरी और पखे की हवा चाहना ।

पलसाटिला ६ शक्ति ।—क्रियारहित जरायु, प्रसव का दर्द बहुत कम और पर्य्यायक्रमसे रक्तस्राव, छाती धडकना, रोने की इच्छा ।

औषध प्रयोग ।—आवश्यकता के अनुसार १० १५ वा २० मिनट के अन्तरसे एक २ मात्रा औषध देनी चाहिये। आराम होने पर ठहर २ कर ।

सहकारी उहाय ।—जब अधिक रक्तस्राव होता हुआ दीख पडे तब जरायु के स्थान [तलपेट] को हातसे दाब कर पेट, प्रसव द्वार आदि स्थानों को ठंडे पानीके भींगे हुये कपडे से तर रखना चाहिये, इससे फायदा दीख पडता है। कमरके नीचे तकिया लगाकर नितम्ब और जाघोंको ऊचा रखना चाहिये, मस्तक और कधोंको नीचा कर स्त्री को सुखादेना चाहिये। रोगीको बिलकुल स्थिर और शीतल रखना चाहिये, सब प्रकारकी उत्तेजनाओं से रक्षा करना उचितहै ।

२— प्रसवान्तिक वेदना।

(प्रसवके पीछेके दर्द)

यह दर्द बहुत कुछ स्वाभाविकहै। गर्भ धारणके समय जरायु बहुत कुछ बढजातीहै। प्रसवके पीछे जरायुका सुकड़ना ही इस दर्दका कारणहै जिनके जितनी अधिक सन्तान हुईहै उनको उतनाही अधिक दर्द होताहै। किसी स्त्री को यह दर्द बिलकुल ही नहीं होता और किसी के बहुत ही भयङ्कर और कष्टदायक होताहै।

चिकित्सा।—आर्निका ६,३० शक्ति।—सब शरीर में ऐसा दर्द मानों चोट लगीहै, दर्द इतना कुछ अधिक नहीं किन्तु सब शरीर में दडफल, मूत्राधार के ऊपर दाब मालूम होना और पेशाब बन्द होना। प्रसव के अन्त में इसकी २। १ मात्रा सेवन करनेसे प्रसवकी यन्त्रणा और ग्लानि दूर होतीहै।

बेलेडोना ६ शक्ति।—ऐसा दर्द मानों प्रसव द्वार से भीतर के सब यन्त्र आदि सब बाहर निकल पडेंगे, दर्द *अचानक उठना और अचानक बन्द होना, पेटमें अत्यन्त* खेंचन, निद्रालुता किन्तु नींद न आना।

कैमोमिला ६, १२ शक्ति।—तडफना, बेचैनी, अत्यन्त कष्टदायक दर्द के कारण स्त्रीका पागल की तरह होजाना, बिलकुल सहन न सकना और काले से रंग का स्राव।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।—पेटमें काटने के

समान दर्द होना, जरायु में बहुत प्रबल सुकड़ का दर्द, प्रत्येक बार दर्द होने के समय दस्त की हाजत ।

पलसाटिला ६ शक्ति ।—पेटके दर्द के समान बहुत तेज दर्द पीठ तक फैलाहुआ । सन्ध्या होनेके समय दर्द बढना, मुहमें बुरा स्वाद और उलटी करने की इच्छा ।

सिकेली ६ शक्ति ।—कमजोरी, दुर्बल शरीर वाली स्त्री, अथवा जिसके अधिक सन्तान हुईहैं, जरायुका बहुत ज्यादा सुकडना ।

इनके सिवाय कोफिया, जेलसीमीनम, सैवायना, और जानथक्साईलम आदि इस रोग की उत्तम औषधिहैं ।

औषध प्रयोग ।—आधे वा एक घन्टेके अन्तरसे एक२ मात्रा ।

३—फूल न गिरना ।

कभी कभी बालक पैदा होनेके उपरान्त फूल गिरने में कुछ देर होजातीहैं । फूलको जोरसे कभी न खीचना चाहिये । इससे रक्तस्राव और रक्तस्राव से मृत्यु होसकतीहै ।

चिकित्सा ।—वेलेडोना ६ शक्ति ।—चहरे का लाल रंग, दोनों आंखें लाल, बहुत गरम रक्तस्राव, जरायुके मुहका सुकडना ।

इपीका ६ शक्ति ।—बराबर जी मिचलाना, नाभिके चारों ओर फाटनेके समान दर्द, रक्तस्राव होना और फूल न गिरना ।

पलसाटिला ६ शक्ति।—जरायु का सुकड न सकना अथवा आक्षेपिक सुकडने के कारण फुलका अटक रहना, ठहर २ कर रक्तस्राव होना, बेचैनी।

सेवाइना ६ शक्ति।—फूल अटक रहने परभी प्रसव के पीछे का बहुत दर्द, साथ ही पतला और जमा हुआ रक्तस्राव।

औषध प्रयोग।—१५।२० मिनट के अन्तर से एक२ मात्रा।



४—प्रसवके अन्तमें मूत्रस्राव।

प्रसवके पीछे कभी कभी पेशाव बन्द होजाताहै। इससे स्त्री को बहुत कष्ट होताहै। जिस स्त्रीको प्रसव में अत्यन्त कष्ट और विलम्ब होताहै उसी का पेशाव बन्द होताहै।

चिकित्सा।— आर्निका ६, ३० शक्ति।— कष्टदायक प्रसव के उपरान्त मूत्ररोध, अथवा प्रसव में अधिक जोर या चोट लगनेसे मूत्ररोध। कमर में चोट लगने के समान दर्द।

बेलेडोना ६ शक्ति।—पेशाव बन्द और बार बार पेशाव की हाजत, बहुत थोड़ा पेशाव होना, मूत्राधार के स्थान में (तलपेट) तर्राना, ऐसा मालूम होना मानो पीठ टूट जायगी।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति ।—वारवार पेशाव होने का कष्टदायक और निष्फल वेग, स्वाभाविक कोष्ट वद्ध धातु ।

पलसाटिला ६ शक्ति ।—पेशाव वन्द और तलपेट लाल, गरम और तर्राना, खांसनेसे अथवा टहलनेसे वेमालुम पेशाव निकलजाना ।

हायपोसायमस ६ शक्ति ।—मूत्रधार में पक्षाघात [लकवा] ।

ओपीयम ३,६ शक्ति ।—पेशाव और दस्त विलकुल वन्द, पेशाव और दस्त दोनो की हाजत न होना ।

औषध प्रयोग ।—२।३ घन्टे के अन्तर से एक२ मात्रा ।

सहकारी उपाय ।—तलपेट को किसी गरम चीज से सेकना चाहिये अथवा गरम पानी एक टप में भरकर उसमें कमर तक स्त्रीको डुवादेना चाहिये, इससे कभी२ फायदा दीखता है ।

५—प्रसवके-पीछे कोष्टवद्ध ।

प्रसवके पीछे कोष्टवद्ध एक मामुली वातहै । यदि ३।४ दिनतक दस्त साफ न हो और उससे यदि पेटमें दर्द आदि लक्षण दिखलाई पडें तो मायपोनिया देना चाहियें । इसके उप-

रान्त आवश्यकता होने पर नक्सवोमिका और सलफर पर्याय-क्रमसे दिये जातेहैं ।

६– उदरामय ।

प्रसव के पीछे पेटका रोग बहुतही सांघातिक हो उठता है इसलिये रोग उत्पन्न होतेही सावधानीसे उसकी चिकित्सा करनी चाहिये ।

चिकित्सा ।–पलसाटिला ६ शक्ति ।–रातमें दस्तहों, तेल के पदार्थ खाने से रोग ।

चायना ६ शक्ति ।–अत्यन्त दुर्बलता रहने पर ।

सहकारी उपाय ।–सोवडमें खानेपीनेकी गडबडी से प्राय उदरामय होजाताहै । सोवडमें बहुत घी आदि मसाले खानेकी कुरीति जबतक न उठ जायगी तबतक इस रोगके कम होनेकी सम्भावना नहींहै । आवश्यकता के अनुसार दूध चावल अथवा दूध साबूदाना अच्छा पथ्य है ।

विशेष विवरण के लिये उदरामय चिकित्सा देखो ।

७—स्तन्य ज्वर ।

(मिल्कफीवर)

प्रसव के ३।४ दिन पीछे स्तनोंमें दर्द होताहै और स्तन कडे होकर ज्वर होजाताहै, इस ज्वर के पीछे स्तनों में दूध उतर आताहै । इसलिये इसको स्तन्य ज्वर कहतहै ।

चिकित्सा ।—एकोनाईट ६ शक्ति ।—सूखा और गरम शरीर, अनिद्रा, मस्तकमें गरमी मालुम होना और प्यास, बेचैनी और मनमें निराश, स्तन कड़े, गुठलेदार और स्तनों का तर्राना। रोगके आरम्भमें इस औषधकी कुछ मात्रा देनेसे फिर किसी और औषधके देनेकी अधिक आवश्यकता नहीं रहती।

बेलेडोना ३,६ शक्ति ।—स्तन बहुत भारी, कड़े और लाल, चहरा और आखें लाल, लपकन के साथ सिरदर्द, उजाला और शब्द सह्य न हो, कभी कभी एकोनाईट-और बेलेडोना पर्य्यायक्रमसे देने से आवश्यकता पड़तीहै।

ब्रायोनिया ६ शक्ति ।—यह उत्तम औषध है।

८— स्तनोंमें अधिक दूध होना ।

स्तनोंमें अत्यन्त अधिक दूध पैदा होजाने से दर्द होने लगताहै। इस दर्द को निवारण करनेका यत्नपूर्वक उपाय करना चाहिये।

चिकित्सा ।—ब्रायोनिया ६ शक्ति ।—दूध इतना पैदा हो जाताहै कि स्तन सूज जाते हैं और तरांने लगते हैं।

कैलकेरिया ६,१२ शक्ति ।—अत्यन्त अधिक दूध, दूध क्रमागत निकलने लगे।

चायना ६ शक्ति ।—बहुत दूध निकलनेके कारण कमज़ोरी होने पर यह औषध देनी चाहिये।

९—स्तनोंमें दूध जमजाना।

यदि दूध थोडा हो, दूध उत्पन्न होनेमें विलम्ब हो अथवा दूध जम जावे तो नीचे लिखी हुई औषधें प्रयोग करनी चाहिये।

चिकित्सा।— पलसाटिला ६ शक्ति।— दूध विलम्बसे उत्पन्न हो अथवा अचानक जमजावे तो यह उत्तम औषधहै।

कैल्केरिया १२ शक्ति।— स्तनोंकी पूर्णता और वृद्धि, किन्तु दूध थोडा। पलसाटिला के उपरान्त यह दवा दी जाती है।

कैमोमिला १२ शक्ति।— मन कडे, दाबनेसे दर्द होना, दूध जम जाना (क्रोधके कारण), इग्नेशिया (शोक के कारण), डलकामारा (सर्दी लगनेके कारण)।

साइलेशिया ३० शक्ति।— दूध अच्छा न हो, बालक उस दूधको पीना न चाहता हो और पीकर उल्टी कर देता हो।

लैकेसिस् ३० शक्ति।— दूध पतला हो, देखने में नीले रंगका, बालक पीतेही उल्टी करदेता हो।

१०—स्तन प्रदाह।

लक्षण।— पहले स्तनमें दर्द होताहै और थोडासा फूल जाताहै, पीछे सर्दी लगकर ज्वर हो आताहै।

स्तनको हाथसे देखनेसे मालुम हो सकताहै कि किसी एक विशेष स्थानमें अत्यन्त दर्द होताहै; वहां हाथभी नहीं लगाया जाता। उस स्थानसे सूजन सब स्तनमें फैल जाती है, स्तन बहुत प्रदाहित होजाताहै और उसका लाल रंग होजाता है। इस समय उचित औषध प्रयोग करने से सूजन बैठ सकती है। यदि इस विषयमें किसी प्रकार की सुस्ती कीजावे तो प्रदाह क्रमशः बढकर स्तन पकजाता है और उसमें मवाद पडजाती है। स्तन जब पकजाताहै तो बहुतही कष्टदायक होताहै और अच्छा होनेमें बडी देर लगती है। कभी कभी उसमें सर पडजाती है और भयानक कष्ट होता है।

कारण।—स्तनमें दूध जमजानेसे फिर वह निकल नहीं सकता। भोजनका अनियम, स्तनमें अत्यन्त दूध जम जाना, सर्दी लगना अथवा चोट लगना, क्रोध आदि मानासिक आवेगके कारण यह रोग उत्पन्न हो सकताहै।

चिकित्सा।— एकोनाईट ३,६ शक्ति।— सर्दी लगकर ज्वर आतेही यह औषध सेवन करनेसे रोग बढ नहीं सकता।

बेलेडोना ३,६ शक्ति।—प्रदाहकी अवस्थामें जब स्तन उजले लाल रंगका हो, और ज्वर, सिर दर्द आदि लक्षण हों।

आर्णिका ६ शक्ति।—चोट लगकर रोग उत्पन्नहो, स्तनका अत्यन्त तर्राना, चाहे जैसे बिछौनेपर सोने सभीमें कडापन मालुमहो।

ब्रायोनिया ६ शक्ति ।—स्तन सूजा हुआ, कडा और भारी मालूम हो, चयके मारने के समान दर्द, शरीर सूखा और ज्वर । रोगके प्रारम्भमें एकोनाईटके उपरान्त फायदा करता है ।

हीपर-सलफर १२,३० शक्ति ।——मवाद पैदा होजानेके उपरान्त लपकनके समान दर्द, सर्दी और कम्पके साथ ज्वर इत्यादि लक्षणों में दिया जाता है ।

फासफोरस ६,१२ शक्ति ।——पकजानेपर और बहुतसा मवाद निकलते रहनेपर दिया जाता है । इन लक्षणोंमें मर्क्युरियसभी दिया जाता है ।

साईलेशिया १२,३० शक्ति ।—मवाद बदबूदार, पतला और पानीके समान तथा बहुतसे मुह होनेपर ।

फाईटोलेका ३ शक्ति ।—यह प्रदाहकी अवस्थामें तथा पक जानेपर सबही समय दिया जाता है । इस रोगकी यह एक उत्तम औषध है । यह खाने और लगाने दोनो कामोंमें आती है । इसके मूल अरकका लोशन (एक आउन्स पानीमें २० बूंद औषध) बनाकर ऊपर लगानेसेभी फायदा करताहै ।

औषध प्रयोग ।—आवश्यकता होनेपर २ । ३ घंटेके अन्तरसे एक एक मात्रा औषध देनी चाहिये । अथवा ३ । ४ घंटेके अन्तरसे ।

सहकारी उपाय ।—दूध जमतेही यदि बालकका

पिला दिया जायतो फिर रोग उत्पन्न नहीं होसकता। यदि स्तन में दर्द होता होतो चोली पहननी चाहिये जिससे स्तन लटकने न पावे । गरम पानीसे सेकना अच्छा है।

—०—

११—क्लेदस्राव ।

(लोकिया)।

प्रसव होनेके उपरान्त कुछ दिनतक जरायुसे एक प्रकार का क्लेद (मैल) सा निकलता रहताहै । फूल गिरतेही यह स्राव आरम्भ होजाता है । यह पहले पतला रक्त होताहै और परिमाण में अधिक होता है। २।३ दिनके उपरान्त इसकी सुरत बदल जातीहै और रजस्राव के रक्त के समान दिखलाई देने लगताहै। ८।१० दिनके उपरान्त इसकी पीलीसी रंगत होती है और २।४ दिन बाद फिर सफेदसी रंगत होकर अन्तमें बन्द होजाताहै । कभी यह स्राव बहुत होताहै और कभी कम होता है, अथवा कभी कभी बहुत दिनतक रहताहै । अचानक इस मैले पडनेके बन्द होजानेमें अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न होजाते हैं।

चिकित्सा ।— एकोनाईट ३,६ शक्ति ।—स्राव बहुत दिनतक होता रहे अथवा लाल रंगका हो और बहुतहो, कम अवस्थाकी और रक्तप्रधान धातुकी स्त्रियोंके लिये यह उपकारी है। मनमें भय और चिन्ता होना इसका विशेष लक्षण है।

ब्रायोनिया ६ शक्ति ।—स्राव बन्द होना, साथही सिर दर्द मानों सिर फट जावेगा, भीतरसे मस्तक पूर्ण और भारी मालुमहो। साथही कपाल और रगोंमें दाब रखनेके समान मालुमहो, हिलने चलनसे सबही लक्षणोंका बढना।

कैलकेरिया-कार्ब १२,३० शक्ति ।—स्राव बहुत दिन तक रहे, विशेषकर उन स्त्रियोंको जिनको बहुत जल्दी जल्दी और अधिक ऋतुहो, रक्तशून्य और ढीले शरीर की स्त्रियोंके लिये उपयोगी है।

पलसाटिला ६,३० शक्ति ।—अचानक स्राव बन्द, इसीसे ज्वर हो किन्तु प्यास नहो, स्तनका दूध अचानक जम जावे, कोमल प्रकृतिकी शीघ्र रोदेने वाली स्त्रियोंके लिये विशेष उपकारी है। सन्ध्या के समय बढना।

रस्टक्स ६,३० शक्ति ।—स्राव बहुत दिनतक ठहरने वाला और काला, पानीके समान और बदबूदार, माथेमें धवके मारतेहों, सोनेसे माथेका कष्ट बढना और उठनेसे कम होना।

सिकेली ६ शक्ति ।—पतला बदबूदार स्राव, दर्द नहो अथवा प्रसव वेदनाके समान दर्दहो, दुबली पतली स्त्रियों के लिये विशेष उपकारी है।

औषध प्रयोग ।—दिनमें २।३ बार। यदि २।३ दिन में फायदा न दिखलाई पडे तो औषध बदल देनी चाहिये।

सहकारी उपाय ।—बहुत साफ सुथरा रहना

पूर्ण आवश्यकताहै। अचानक स्राव बन्द होकर कष्ट होने लगे तो गरम पानीमें फलालेन भिगोकर सेकनेसे फायदा मालूम होताहै। जबतक स्राव लाल रंगकाहो अथवा स्राव बहुत दिन तक रहेतो बहुत चलना फिरना बन्द करना चाहिये। बहुत चलने फिरने से अथवा परिश्रम करने से रोग पुराना आकार धारण करलेता है और फिर उसी का प्रदर रोग होजताहै। जबतक स्राव बिलकुल बन्द नहो बडी सावधानी रखनी चाहिये।

१२– सूतिका ज्वर।
(पिउर पारेल फीवर)

प्रसवके उपरान्त यदि बडे जोरसे ज्वर होतो बडे भय का कारण होताहै। यही सूतका ज्वर अनेक समय मारात्मक होजाताहै। प्रसवके उपरान्त ३ या ४ दिनमें पहले कम्प वा शीतसे ज्वर होताहै। शरीरमें उत्ताप, प्यास, पूर्ण और तेज नाडी, पेटमें अत्यन्त दर्द और तर्गना यहांतक कि रोगी उस को स्पर्श भी न करनेदे, पेटका सर्वदा फूलारहना, भूख न लगना, जीमिचलाना, यहांतक कि उलटीभी होना। स्तनोंका दूध जम जाताहै तथा क्लेद स्रावभी बिलकुल बन्द होजाता है अथवा बहुतही अधिक दुर्गन्धमय स्राव होने लगता है।

यह रोग कभी कभी ऐसा सांघातिक आकार धारण करताहै दोही चार घटोंमें मृत्यु होजाती है। यह रोग बहुत कठिन और सांघातिक होताहै इसलिये इसकी चिकित्साका भार किसी अच्छे डाक्टरके हातमें देना चाहिये। इसरोगकी संक्षिप्त चिकित्सा नीचे लिखतेहैं।

चिकित्सा।— एकोनाइट ३,६ शक्ति।— कम्प अथवा सर्दीके साथ ज्वर, सूखा और गरम शरीर, पूर्ण और तेज नाड़ी, प्रबल प्यास, जरायुमें अत्यन्त दर्द, यन्त्रणा और मृत्युभय, स्राव बिलकुल बन्द अथवा सामान्य हो, पेशाब बन्द।

आर्निका ६ शक्ति।—बाहरी चोट लगने से अथवा बहुत कष्टके साथ और छेड़ा छेड़ी करनेसे प्रसव के उपरान्त रोग होने पर, मानो सब शरीर में दर्द होता है, जिस बिछौने पर रोगी सोता हो वह उसको कड़ा मालुम हो इसलिये बराबर इधरउधर करवट बदलते रहना।

आर्सेनिक ६,३० शक्ति।——रोगके बढे हुये आकार धारण करने पर, जलनके साथ दर्द, आगके समान जलन मालुम होना, बहुत कष्ट, घबराहट, बेचैनी, मृत्युभय, कमजोरी का बहुतही जल्दी आना और जीवनी शक्तिका ह्रास, बहुतही ठण्डा पानी पीनेकी इच्छा किन्तु थोड़ा २ पानी पीना, शरीर उघाड़नेकी इच्छा न होना, रात्रिमें विशेषकर आधी रातके उपरान्त बढना।

बेलेडोना ६,३० शक्ति।——पेटका अत्यन्त तनाव, सामान्य छूनेसे वा हिलनेसे कष्ट होना, पेटके भीतर खैंचनेके समान दर्द, दर्द जैसे अचानक आवे वैसेही अचानक चला जाय, रोगी कराहता हो और गोंगों शब्द करताहो। सोते समय रोगी चमक उठताहो और उछल पड़ताहो; स्राव बन्द वा बहुतही कम और बदबूदार, मस्तकमें रक्ता धिक्य, चहरा और आँखें लाल, लपकन के साथ, शिर

दर्द और थकना, उजाला और शब्द न सह सकना।

ब्रायोनिया ६ शक्ति—पेटमें सुई चुभोनेके समान दर्द, स्राव बन्द और शिर दर्द, मुह सूखा हुआ, प्यास, उठकर बैठनेसे जीमिचलाना और चक्कर आना, स्थिर भावसे रहना चाहे, सामान्य हिलने चलनेसेही कष्ट मालुम हो।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।—जनन-यन्त्र और पेटके भीतर बोझ और जलन मालुम होना, स्राव बन्द अथवा बहुतही ज्यादा, साथही कमरमें अत्यन्त दर्द, कोष्ठबद्ध, बारम्बार दस्तकी हाजत होना किन्तु दस्त न होना, प्रात कालके समय बढना।

रस्टक्स ६ शक्ति।—प्रसव के उपरान्त जरायु प्रदाह, स्थिर भाव रह न सकना, बहुतही इधर उधर करवट बदलना, नीचेका अङ्ग बेबस, पैर हिला न सकना, जीभ सूखी हुई, अग्रभाग लाल, विकारके लक्षण, रात्रिके समय स्थिर रहनेसे बढना, विशेषकर आधीरातके उपरान्त।

सिकेली ६ शक्ति।—सर पडने की सम्भावना, ज्वर और ठण्ड मिली हुई, जननेन्द्रियसे काला पतला बद बूदार स्राव निकलना, विना दर्द के उदरामय और बहुत कमजोरी, दुबली पतली स्त्री, नंगे रहने की इच्छा।

लैकोसिस ३० शक्ति।—सूतिका ज्वर, स्रावमें अत्यन्त दुर्गन्ध, पेशाव बन्द, चहरेपर स्याही, बेहोशी।

औषध प्रयोग।—आवश्यकता के अनुसार आधे १

या २ घन्टेके अन्तरसे एक २ मात्रा।

सहकारी उपाय।—गरम पानीमें फुलालेन भिगो कर बार बार सेकनेसे बहुत फायदा दीखताहै। रोगीको स्थिर रखना चाहिये और मकानमें स्वच्छ वायु आती रहनी चाहिये। साबूदाना वा बारलीके समान पतला लघु पदार्थ खानेको दिया जाय।

२२-वां अध्याय।

शिशु-चिकित्सा।

शिशु-शुश्रूषा।

शिशुरोग चिकित्साका वरणन करनेमें पहिले हालके पैदा हुये बालककी किस प्रकार चिकित्सा करनी चाहिये यही लिखते हैं। यह विषय बहुतही सामान्य होने परभी हमारे देशमें सर्वदा लापरवाही के साथ एक ओर पडे रहतेहैं और इसीसे अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हुये दिखाई देतेहैं।

साद्योजात शिशु।

(हालका पैदाहुआ बालक)।

प्रसवके उपरान्त शिशु-शुश्रुषा एक प्रधान कार्य है। प्रसव वेदनाके समय सबका ध्यान केवल स्त्रीकी ओर

रहताहै, प्रसवके उपरान्त बालक की ओर प्रधानतः ध्यान आता है। बालक उत्पन्न होते ही उसको रक्त और मैलेके स्थानसे हटाकर स्वच्छ हवाकी ओर लेजाना चाहिये। यदि बालक का मुह, आख आदि झिल्लीसे बन्द होतो अगुली और कपडे से सावधानी के साथ साफ करदेनी चाहिये। स्वस्थ बालक पैदा होतेही बडे जोरसे रोउठता है। यह रोना अच्छा है, इससे फेंफडा वायुसे फूलता है और फैलताहै। जो बालक पैदा होतेही न रोये उसे रुलानेकी चेष्टा करनी चाहिये।

पैदा होनेपर बालकका न रोना।

प्रसव वेदना यदि बहुत देरतक रही होतो बालक पैदा होतेही नहीं रोसकता, वह दम बन्द होकर मुर्देके समान पडा रहताहै। यदि यह बात होतो बालकके शरीरको फ्लालेन वा किसी मोटे कपडेसे ढककर छाती और चहरेपर ठडे पानीके छींटे देने चाहिये। यदि इससे चैतन्य न होतो अगुलियोंसे बालकके नाकके दोनो छिद्रोंको बन्द कर उसके मुहमें जोरसे और सावधानीसे फूक देना चाहिये। इससे फेंफडा फैलनेपर छातीको दोनो हाथसे आहिस्ते २ दावना चाहिये, इससे फेंफडेकी वायु बाहर होजायगी। ऐसा करते २ नाभिरज्जू (नाल) में फडकन और हृत्पिण्ड की क्रिया आरम्भ होजाती है, और फिर कोई चिन्ता नहीं रहती। इसके उपरान्त बालक स्वयही शीघ्र चेत उठताहै। पैदा हुआ बालक मरे के समान पडा हुआ देखकर

मरा हुआ निश्चय करके समय नष्ट नहीं करना चाहिये इस समय शीघ्र यत्नवान होनेसे बुद्धि और कौशलके प्रभाव द्वारा बालक अनायासही चेत जाताहै।

नाभि छेदन।

बालकका श्वास अच्छी तरह आने जाने लगे और नाभि रज्जूका फडकना बिलकुल बन्द होजाय उस समय नाभि की नलीको काटना चाहिये। २।३ अगुल लम्बा छोडकर मोटे और कडे सून से वा कपडेकी चीरसे नाभिरज्जूके दोंनो ओर दो कडी गाठ देकर बीचमें सावधानीसे काटना चाहिये। इसको काटनके उपरान्त जब तक बालक को स्नान न कराया जाय तब उसके शरीर गरम कपडे से ढका रखना चाहिये।

बालकको स्नान कराना।

नाल काट देनेके उपरान्त बालकके सब शरीरमें, विशेष कर बगल, रान आदि जोडके स्थानोंमें, नारीयलका तेल अच्छी तरह सावधानी से मलकर थोडे गरम पानीमें स्नान कराना चाहिये। तल मलनेसे बालकके शरीरका मैला बहुतही सहजमें उठ जाता है। स्नान कराकर सूखे कपडे से सब शरीर अच्छी तरह पोंछ देना चाहिये और सब शरीर ढककर कोमल और स्वच्छ शय्यापर सुला-देना चाहिये। बालकको स्नान कराते समय विशेष कर शीतकालमें अथवा रात्रिके समय सरको गरम

रखनेके लिये एक कोनेमें थोडी आग जलाना चाहिये । बालकको प्रतिदिन, यदि प्रतिदिन सम्भव न होतो एक २ दिन के अन्तरसे स्नान कराना चाहिये । पहले थोडे गरम जलसे स्नान कराया जाय और पीछे क्रमश ठण्डा पानी सह्य कराना चाहिये ।

इस बातपर पूरा ध्यान रखना चाहिये कि बालक के कपडे लत्ते खूब साफ रखे जायें । साफ कपडे दरिद्र मनुष्य के घरमें भी इकट्ठे किये जासकते हैं । बालकके व्यवहार किये हुये कपडोंको प्रतिदिन साबुनसे अथवा और किसी साफ करने वाली चीजसे धोकर धूपमें सुखा देने चाहिये । भोजन, शैया, वायु, और गृह आदि सबहीमें सफाई रखना बालकका जीवन है । इनमेंसे किसी बातमेंभी यदि त्रुटि हुई तो थोडेही समयमें बालक रोगग्रस्त होजाताहै ।



नाभि ।

एक साफ कपडेको चार तहकर उसके बीचमें कैंचीसे एक बडा छेदकर देना चाहिये । इस छेदमें नाभिको पिरो कर कपडेको पेटपर फैलाकर लगा देना चाहिये । एक और छोटा कपडेको नारियलके तेलमें भिगोकर अंगुलीसे जिस प्रकार कपडा लगाया जाताहै उसी प्रकार नाभि के चारों ओर लगाकर नाभिको पेटपर ऊपरकी ओर लम्बीकर पेटके ऊपर रखदेनी चाहिये और एक मोटे कपडेसे पेटको चारों ओर जकडकर बांध देना चाहिये । ध्यान रखना चाहिये कि कपडा बहुत कसकर न बंधजावे जिससे बालकको कष्टहो ।

प्रतिदिन कमसे कम एक बार नाभिके कपड़ेको बदल ना चाहिये। दीपकके ऊपर उंगली गरम कर नाभि सेकने का हमारे देशमें एक बहुतही बुरा रिवाज है। उसके सेक का जो होता है सो हो होता है परन्तु काजल लगकर नाभि मैली युक्त होजाती है। ऐसा करनेसे शीघ्रही नाभि पक उठती है और बालकको बहुत कष्ट देताहै। पहलेतो यह जाननेकी आवश्यकता है कि नाभिके सेकनेकी कोई आवश्यकता नहींहै। बालका कपड़ा लगात लगाते नाभि सूखकर अपने आपही ठीक होजाता है। नाभि उचल जानेपर गरम नारियलके तेलके सिवाय और किसी प्रकारके सेककी आवश्यकता नहीं है। दूसरे, यदि सेकनेकीही आवश्यकता हो इस प्रकार सेंकना चाहिये जिससे काजल आदिसे नाभि मैली न हो सके।

पहला दस्त।

बालक पैदा होनेपर थोडी देर बाद स्वयमही दस्त आताहै। दस्तका रंग गाढा हरा वा काला, टहसदारसा होताहै। यह केवल पित्त मिला हुआ आंतोंका श्लेष्मा होताहै। पैदा होनेके उपरान्त दस्त होनेमें कभी कभी कुछ देरभी होजाती है और इससे पेटमें दर्द अनिद्रा आदि होता है। माताके स्तनका पहला दूध बालकके लिये . . होता है, इसलिये जितनी जल्दी होसके बालकको . दूध पिलाना चाहिये। इस प्रकार दूध पिलाने . यदि बालकको दस्त न होतो नवसपोसिका ६

रखनेके लिये एक कोनेमें थोडी आग जलाना चाहिये । बालकको प्रतिदिन, यदि प्रतिदिन सम्भव न होतो एक २ दिन के अन्तरसे स्नान कराना चाहिये । पहले थोडे गरम जलसे स्नान कराया जाय और पीछे क्रमश: ठण्डा पानी सह्य कराना चाहिये ।

इस बातपर पूरा ध्यान रखना चाहिये कि बालक के कपडे लत्ते खूब साफ रखे जायें । साफ कपडे दरिद्र मनुष्य के घरमें भी इकट्ठे किये जासकते हैं । बालकके व्यवहार किये हुये कपडोंको प्रतिदिन साबुनसे अथवा और किसी साफ करने वाली चीजसे धोकर धूपमें सुखा देने चाहिये । भोजन, शैया, वायु, और गृह आदि सबहीमें सफाई रखना बालकका जीवन है । इनमेंसे किसी बातमेंभी यदि त्रुटि हुई तो थोडेही समयमें बालक रोगग्रस्त होजाताहै ।



नाभि ।

एक साफ कपडेको चार तहकर उसके बीचमें कैंचीसे एक बडा छेदकर देना चाहिये । इस छेदमें नाभिको पिरो कर कपडेको पेटपर फैलाकर लगा देना चाहिये । एक और छोटा कपडेको नारियलके तेलमें भिगोकर अंगुलीसे जिस प्रकार कपडा लगाया जाताहै उसी प्रकार नाभि के चारों ओर लगाकर नाभिको पेटपर ऊपरकी ओर लम्बाकर पेटके ऊपर रखदेनी चाहिये और एक मोटे कपडेसे पेटको चारों ओर जकडकर बांध देना चाहिये । ध्यान रखना चाहिये कि कपडा बहुत कसकर न बंधजावे जिससे बालकको

प्रतिदिन कमसे कम एक वार नाभिके कपडेको बदल देना चाहिये। दीपकके ऊपर उगली गरम कर नाभि सेकने का हमारे देशमें एक बहुतही बुरा रिवाज है। उसके सेक ता जा हाता है सो हा होता है परन्तु काजल लगकर नाभि मैला खूब होजाता है। ऐसा करनेसे शाघ्रही नाभि पक उठती है और बालकको बहुत कष्ट देताहै। पहलेतो यह जाननेकी आव श्यकता है कि नाभिके सेकनेकी कोई आवश्यकता नहींहै। तलका कपडा लगाते लगाते नाभि सूखकर अपने आपही ठीक होजाता है। नाभि उचल जानेपर गरम नारियलके तेलके सिवाय और किसी प्रकारके सेककी आवश्यकता नहीं है। दूसरे, यदि सेकनेकीही आवश्यकता हो इस प्रकार सेकना चाहिये जिससे काजल आदिसे नाभि मैली न हो सके।

पहला दस्त।

बालक पैदा होनेपर थोडी देर बाद स्वयम्ही दस्त जाताहै। दस्तका रग गाढा हरा वा काला, लहसदारसा होताहै। यह केवल पित्त मिला हुआ आंतोंका श्लेष्मा होताहै। पैदा होनेके उपरान्त दस्त होनेमें कभी कभी कुछ देरभी होजाती है और इससे पेटमें दर्द अनिद्रा आदि कष्ट होता है। माताके स्तनका पहला दूध बालकके लिये दस्तावर होता है, इसलिये जितनी जल्दी होसके बालको माताका दूध पिलाना चाहिये। इस प्रकार दूध पिलाने परभी यदि बालकको दस्त न होतो नक्सवोमिका ६ शक्तिकी

ग्लोब्यूल २।३ बार खिलानी चाहिये। ऐसा करनेसे तुरन्त ही बालकको दस्त होगा और पेटका दर्द इत्यादि सब बन्द होकर बालकको नींद आजावेगी।

बालकका आहार निद्रा।

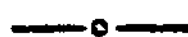
पहलेही कहा जाचुका है कि २।३ दिनतक माताके स्तनका दूध नहीं उतरता, तथापि पैदा होतेही दो चार घंटे बाद बालक को स्तन पान कराना चाहिये। इसमें आहार और औषध दोनोंही काम होते हैं। पहलेतो इससे बालक दूध पीना सीखता है। दूसरे, यदि बालक स्तन पान करने लगताहै तो शीघ्रही दूध उतर आताहै। तीसरे, प्रसवसे पहले माताके स्तनमें जो दूध उत्पन्न होताहै वह प्रकृतिका एक पूरा चमत्कार है। इस दुधसे बालककी क्षुधा निवारण होतीहै और यह रेचक कार्यभी करता है। इस दूध को पीतेही बालकको दस्त हो जाता है।

बालकको उत्पन्न होनेके उपरान्त माताके इस दूधके सिवाय और कुछभी न देना चाहिये। देखा जाताहै कहीं कहीं पैदा होतेही बालक को शहद देते हैं। यह बिलकुल व्यर्थ है। माताका दूध पीनेके उपरान्त जब बालक सोजावे तब उसको किसी प्रकार न छेड़ना चाहिये। बालक के सोजानेपर आनन्दमें आकर आत्मीय स्वजन किसीको दिखाने के लिये उसको बिछोनेसे नहीं उठाना चाहिये। जबतक वह सोकर स्वयम् न जगउठे तबतक उसे बिलकुल न छेड़ना चाहिये। यह विचार कर कि बालक बहुत देरसे सोताहै उसको बारबार जगाकर निद्रामें बाधा न डालनी

चाहिये। आहारकी अपेक्षा मालुम होताहै बालकके लिये निद्रा अधिक आवश्यकीय है। जागनेके उपरान्त जबतक माता के स्तन में दूध उत्पन्न नहो गायका दूध गरम कर पिलाना चाहिये।

बालकके लिये माताका दूध विशेषकर पहले कुछ महीनों तक प्रधान आहार है। आवश्यकता होनेपर गौका दूध दिया जासकता है। यदि गौका दूध दिया जाय तो बहुत ही सामान्य बातोंपर ध्यान देना होता है। पहले, एकही गौका दूध देना चाहिये। दो तीन गायोंका दूध मिलाकर अथवा एक दिन एक गौका और दूसर दिन दुसरी गौका दूध पिलाना उचित नहीं है। दुसरे, थोडेही दिनकी ब्यायी हुई गौका दूध अच्छा होता है क्योंकि उस समय दूध पतला रहता है। यदि दूध गाढा होतो उसमें आधा पानी मिलाकर पिलाना चाहिये। क्रमश जब बालक बडा होने लगे तो दूधमें पानी मिलानेकी आवश्यकता नहीं। तीसरे, प्रत्येक बार ताजा दूध यदि पिलाया जासकेतो अच्छा है।

बालक के आहार का समय और परिमाण एकसा रखना चाहिये। ध्यान रहे कि बालक सर्वदा भूखसे नहीं रोता इसलिये बालकको रोतेही दूध वा स्तन दान कराना अन्याय है। उपर का दूध हो चाहे माताका दूध हो ठीक समय परही पिलाना चाहिये। आहारके दोषसे बालकको उदरामय हो जाता है और दूध उलट पडता है। अजीर्णकी औषध केवल खिलाने का ध्यान रखना चाहिये।



उपरी बाधा।

हमारे देशमें लोकमें बालकका "उपरी बाधा" एक

प्रधान रोगहै । यह धनुष्टकार रोगके सिवाय और कुछ नहीं है । मैले घरमें रहना, अपवित्र वायु सेवन, आहार दोष, नाभिमें मवाद पडजाना आदिही इसरोगके प्रधान कारण हैं । हमारे देशमें सोवडमें ये सब दोष वर्तमान रहते हैं, इसलिये यहां इस रोगका अधिक प्रादुर्भाव दिखलाई पडता है । विलायत आदि देशोंमें यह रोग बिलकुल नहीं होता और बालकको अकाल मृत्युभी बहुतही कम होती है । उपरी बाधा होने पर गांवोंमें जो स्यानेका इलाज होताहै वह केवल भ्रममूलक है । सोवड और उसके साथ भूत, प्रेत सैयद, जमैया आदि अपदेवता ओंका विश्वास भी नितान्त भ्रममूलक है । हमारे देशकी स्त्रियोंके मनसे जितना यह भ्रम दूर हो उतनाही देशका मङ्गल है।

इस रोगके आरम्भ होनसे पहले बालक बहुत रोने लगता है । उपरान्त दांती बन्द होजातीहै । यह इस रोगका पहला स्पष्ट चिन्ह है । बालक पीछे मुह फाडकर नहीं रोसकता और माताका दूध नहीं पीसकता है । क्रमशः आक्षेप शुरू होताहै । ठहर ठहरकर यह आक्षेप होता रहताहै । बालकके हाथ पैर कडे पडजाते हैं, मुह जोरसे बन्द करलेता है और एक प्रकारका शब्द करताहै । सब शरीर कडा पडजाता है और मुहसे झाग निकलने लगतेहै। इस प्रकारके बायठे थोडी देर रहकर बन्द होजाने पर बालक थोडी देरके लिये स्वस्थ मालुम होने लगता है । इस प्रकार होते होते बहुत देर बाद, यहांतक कि कभी कभी ३।४ दिन बाद रोगके साथ युद्ध करते करते जीवन समाप्त होजाता है । यह रोग जैसा दुःसाध्य है वैसाही देखनेमें कष्टदायक होता है।

यह रोग यदि पूरी तरहहो और प्रबल हो उठे तो इसका आराम होना असम्भव है, किन्तु यदि रोगके आरम्भमेंही मालुम होजावे और उपयुक्त औषध दी जावे तो कभी कभी अच्छाभी होजाताहै । वेलेडोना, सिकूटा, नक्सवोमिका, ओपियम, हायोसायेमस आदि औषधें लक्षणोंके अनुसार परीक्षा कर देनी चाहिये ।

चक्षुप्रदाह ।

(आंख दुखना) ।

बालकोंकी प्राय आंखे दुखने लगती है । सोवडमेंभी प्राय. यह रोग होते हुए दीख पडता है । सोवडमें धूआ करना इस रोगका प्रधान कारण है । पहले आंखके पलकमें रोग आरम्भ होताहै, और पीछे आंखपर आताहै । पहले, देखा जाता है कि प्रातःकाल के समय आंखके पलक चुपक जातेहैं, आंख बाहरसे लाल होजाती हैं और फूल उठती हैं । पलकोंको खोलकर देखने से भीतर सुर्खी मालुम होतीहै और मवाद पडता हुआभी दीख पडता है । बालक उजालेकी ओर देख नहीं सकता, उजाला दीखतेही जोरसे आंखें बन्द करलेता है । जैसे जैसे रोग बढजाता है वैसेही वैसे साथके और उपद्रव होने लगते हैं, यथा—भूख न लगना, नींद न आना, रोते रहना, बेचैनी और दुबलापन । यदि इस रोगकी ठीक चिकित्सा न होतो आंखें नष्ट होसकती हैं ।

चिकित्सा ।— एकोनाईट ३,६ शक्ति ।— तेज उजेला अथवा ठंडी हवा लगनेसे यदि रोग उत्पन्न

हो, सब आंख बहुत लाल और आंखसे पानी गिरना, ज्वर, बेचैनी, अनिद्रा, रोना इत्यादि ।

बेलेडोना ३,६ शक्ति ।—अत्यन्त प्रदाह, आंखका बहुतही लाल रंग, बालक उजाला न सहसकता हो, आँख सूजी हुई और कभी कभी पलकों से खून निकलना ।

अर्जेन्ट-नाईट्रिक ३,६ शक्ति ।—बहुत अधिक मवाद गिरना, मवाद पडकर दोनों पलकोंका फूलजाना ।

कैलकेरिया-कार्ब १२,३० शक्ति ।— गण्डमाला दूषित धातु, पलकों में सूजन और सुर्खी, रात्रि में पलकों का चीपक जाना, आखों से बहुत मैल निकालना । यह औषध रक्तशून्य ढीले शरीर वाले के लिये उपयोगी है ।

कैमोमिला ६ शक्ति ।—ठण्डी तर हवा लगनेसे रोग, सर्दीमें रोग बढना [डलकामाराके समान], आंखोंसे रक्त पडना, फूल उठना और प्रातःकाल के समय चुपक जाना, बालक अत्यन्त रोनाहो और शान्त करनेके लिये बार बार गोदीमें लेकर फिरना पड़े ।

मर्क्यूरियस ६ शक्ति ।—आंखोंके पलक अत्यन्त सूजे हुये और नीचे मवाद जम जाना, गण्डमाला या प्रमेह दोषके कारण चक्षुप्रदाह, आखोंके चारों ओर और पलकके किनारे पर फोडे अथवा फुसी ।

सलफर ३० शक्ति ।—गण्डमाला दोषसे आंख दुखना, आंखोंमें अत्यन्त खुजली और सब शरीरमें खुजली, आंखों-के सब कोनोंमें घावके समान, जिन बालकोंके माता पिता-

आंखो चर्म रोग हो उनके लिये यह औषध उपकारी है।

यूफ्रेशिया ६ शक्ति।—बहुतसा और जलन पैदा करने वाले आंसू निकलना, गाढा पीले रंग का मवाद निकलना, उससे पलक आदि स्थानोंमें घाव होना।

पलसाटिला ६ शक्ति।—स्राव बहुतसा किन्तु किसी प्रकारके घाव न होना।

औषध प्रयोग।—दिनमें ३। ४ मात्रा। यदि एक औषधसे २। ३ दिनतक फायदा न होतो बदल देनी चाहिये।

वाह्य प्रयोग।—गरम दूधमें पानी मिलाकर आंखों को दिनमें कई बार धो देना चाहिये। आंखोंमें और कोई औषध न लगानी चाहिये। सर्वदा आंख साफ रखनी चाहिये।

नाक रुकजाना।

बालकोंको एक प्रकारकी सर्दी होजाती है उससे नाक बन्द होकर माताका दूध पीनेमें कष्ट होताहै और हापनी आजाती है। सोते समयभी बालकका बहुत कष्ट होताहै क्योंकि नाकसे श्वास न निकलनेमें एक प्रकारका शब्द होता है, और बालकका बार बार दमसा घुटकर जग पडताहै। किसी किसीको सर्दीके और और लक्षणभी दिखलाई पडतेहैं और नाकसे श्लेष्माभी गिरता है।

चिकित्सा।— कैमोमिला ६ शक्ति।—जब नाकसे जल- अथवा श्लेष्मा गिरताहो, सर्दी लगनेसेही

वालकको रोगहो [डल्कामाराकेभी यही प्रधान लक्षण हैं], वालक अत्यन्त चिड़चिड़ा और ठिनकनाहो और रोताहो, शान्त करनेके लिये सर्वदा गोदीमें लेकर फिरना पड़े।

डल्कामारा ६ शक्ति ।—नाक बहुत सूखी हुई, सामान्य सर्दी लगनेसे अथवा ठण्डी हवा लगने से रोग हो।

नक्सवोमिका ३,१२ शक्ति ।—सर्दी रात्रिमें अथवा प्रातःकाल अधिक, रात्रिके समय नाक अत्यन्त सूखी हुई मालुम हो, फू-फूं कर श्वास निकलताहो, कोष्ठवद्ध।

ऐन्टिम-टार्ट ६ शक्ति ।—नाक सूखी हुई और गलेमें श्लेष्मा घड़ घड़ करताहो।

नाक सूखी हुई और बन्द होतो गरम तेल नाकमें लगाने से बहुत आराम मालूम होता है।

औषध प्रयोग ।—३।४ घंटे के अन्तरसे एक एक मात्रा।

पीलिया।

नवप्रसूत (हाल पैदाहुए) वालकको कभी कभी यह रोग होते हुए देखा जाता है। शरीर पीला पड़जाता है और ३।४ दिनतक ऐसाही रहकर और कोई उपद्रव हुए विना अपने आपही चलाजाता है। किन्तु कभी कभी शरीरके सिवाय आँखें और पेशावभी पीला होजाता है और मल मिट्टीके समान काला होने लगता है। पेट बढ़ जाता है, और वालक बहुत रोता है। ऐसे अवसर पर

सावधानी से औषध देकर चिकित्सा करनी चाहिये।

चिकित्सा।— एकोनाईट ३, ६ शक्ति।— बालकका शरीर गरम, बेचैनी, अनिद्रा, कष्ट इत्यादि।

कैमोमिला ६ शक्ति।— सर्दी लगनेसे रोग हो, चहरा और आँखें पीली, सफेद और बदबूदार मल, रोने वाला बालक।

चायना ६,१२ शक्ति।— सब शरीर पीला, पेट फूलजाना, यकृतके स्थानोंमें दबानेसे दर्द, मल सफेद, अजीर्ण और दर्द न हो।

मर्क्यूरियस ६ शक्ति।— पूरा पीलिया, मल अत्यन्त पीला, सफेदसा मल, अत्यन्त वेग और कांखना, बहुत और तेज बदबू वाला पेशाब।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।— यकृतका स्थान ऊंचा और कड़ा, कोष्टबद्ध, बार बार दस्त जानेकी हाजत, बालक अत्यन्त रोने वाला हो और पेटमें दर्द हो।

औषध प्रयोग।— ३।४ घंटेके अन्तरसे एक एक मात्रा।

मुखक्षत।

(छाले)।

पहले लाल लाल फुन्सिया विशेषकर होट, गाल, मसूड़े और मुहके और और स्थानोंमें दिखलाई पड़तीहैं। शीघ्रही ये सफेद सफेद होजातीहैं, ठीक दूध जमनेके समान दिखलाई

पडती हैं। इस सफेद लेपको हटादेने से उसके नीचे साफ लाल रंगके घाव दिखलाई पडतेहैं। कभी कभी ऐसे घाव तमाम मुहके भीतर होजातेहैं और यदि रोग सांघातिक होतो ये गले और आंतों तक फैल जातेहैं। यह रोग सांघातिक नहीं होता किन्तु कष्टदायक अवश्यहै, इससे बालक माता का दूध नहीं पीसकता और ऊपर का दूध पीना नहीं चाहता। मुंहमें दर्द रहनेके कारण बराबर लार गिरा करती है। धातुगत दोषके कारण और कभी खाने पीने और पेटके दोष के कारण यह रोग होताहै।

चिकित्सा।— एकोनाईट ३,६ शक्ति।— शरीर गरम, माथाभी गरम, बराबर बेचैना, रोना और हात काटना, हरा पानीके समान उदरामय।

आर्सेनिक ६,३० शक्ति।— भीतरसे मुह सुर्खी की झलक लिये हुये नीले रंगका और प्रदाहित, मुहसे बदबू, अत्यन्त बेचैनी, उदरामय, हरा पानी के समान मल और दुर्बलता।

कैलकेरिया-कार्ब १२,३० शक्ति।— गण्डमाला धातु, विशेषकर दांत निकलने के समय रोगहो, ब्रह्मरन्ध्र (माथेके तालुए) में हड्डी उत्पन्न नहो, चहरे और मस्तक पर अधिक पसीने, सफेदसा कडा बिना पचा हुआ मल, दोनों पैर ठण्डे और गीले।

कैमोमिला६, शक्ति।— सोते समय बालक चमक उठे और उछल पडे, अनेक प्रकारकी वस्तु लेनेकी इच्छा करे किन्तु देने पर फेंकदेता हो, अत्यन्त अस्वस्थ मालुम

होना और सर्वदा गोदीमें चढकर फिरनेकी इच्छा करना।

मार्कूरियस ६ शक्ति ।—जीभ प्रदाहित, सूजी हुई और किनारों में छाले, मसूढ़ों से खून गिरना और छाले, मुह से बहुत लार गिरना, आम मिलाहुआ पतला मल, पेटमें कटन और कांखना।

नाईट्रिक पेसिड ६ शक्ति ।—सब मुहमें दुर्गन्ध युक्त छाले, मुहसे सड़ी हुई बदबू निकलना, लार गिरना, होंट, मुह और गालमें जहां यह लार लगे वहीं घाव हो जावें, मसूढे से खून गिरताहो, पिता माताके देहमें यदि उपदश दोष होतो यह दवा औरभी फायदा करती है।

सलफर ६,३० शक्ति ।—मोटा सफेद मैल, मुह में छाले और घाव, जलन और दर्द होना, लार या रक्त मिली हुई लार गिरना, आम मिला हुआ हरासा उदरामय, दस्त से मलद्वार के इधर उधर बिगड जाना, बालक अधिक समय न सो सकता हो, बार बार जाग उठना।

हल्कामारा ६ शक्ति ।—सर्दी लगनेसे रोग।

बोराक्स ६ शक्ति ।—इस रोगकी यह एक उत्तम औषध है। स्तन पान करते करते दर्दके कारण बार बार स्तन छोडना, स्तन पान करनेसे अथवा ऊपरका दूध पीनेसे रोना।

औषध प्रयोग ।—दिनमें ३।४ मात्रा।

सहकारी उहाय ।—सुहागेको जलाकर शहदके

साथ लगानेसे कभी कभी आराम दीख पडताहै। बालकके मुहको कभी कभी कपड़ेसे साफ करदेना चाहिये। यदि बालकके पेटमें दोष होतो उस ओर विशेष ध्यान रखना चाहिये।

शरीर फटजाना।

बालकोंके शरीरका चमडा स्थान स्थानमें विशेषकर गरदन पर, कान, पीठ, बगल वा रान आदि स्थानोंमें फट जाता है अथवा छिलकर घाव होजाते हैं। मोटे बालकोंकोही प्रायः यह अधिक होता है। चमडे के अस्वास्थ्य के कारण प्रायः यह रोग उत्पन्न होताहै, अतएव नीचे लिखी हुई औषधें करनी चाहिये।

चिकित्सा।—कैलकेरिया-कार्ब १२,३० शक्ति।—ढीली शरीर, मोटे बालकोंके लिये उपकारी है।

कार्ब-वेज १२,३० शक्ति।—प्रत्येक ग्रीष्म काल में फटजाना, घाव होना।

कैमोमिला ६ शक्ति।—घाव के चारों ओर लाल रंगके उद्भेद, बालक अत्यन्त रोताहो और सर्वदा गोदीमें चढकर फिराना पडे।

ग्राफाईटिस ६,१२ शक्ति।—कान के पीछे घाव, घावसे लसदार चिटचिटा रस निकलना।

लाईकोपोडियम १२,३० शक्ति।—घावे से सहजही रक्त गिरना और बदबू निकलना, कोष्ठबद्ध, मल

कठिन, थोडा और कष्टसे निकलता हो, पेशाब में लाल रंग का पदार्थ नीचे जमजावे।

सलफर ६, ३० शक्ति।—अशुद्ध चमडा, शरीर में मवाद भरी हुई फुन्सियां, शरीरमें अत्यन्त खुजली, विशेषकर घाव के स्थानों में।

सीपिया १२,३० शक्ति।—चर्म अशुद्ध, बहुतही सामान्य चोट लगनेसे उस में घाव होजावें।

औषध प्रयोग।—दिन में एक या दो मात्रा।

सहकारी उपाय।—सफाईही इस रोग को निवारण करने का प्रधान उपाय है। रोग होने पर घावों को थोडे गरम पानी से बार बार धोकर साफ करना चाहिये। साबुन से धोना उचित नहीं। धोने के उपरान्त सावधानी से साफ कपडे से पोंछ देना चाहिये, रगडना नहीं। धोने क पानी में एक आउन्समें १० बूंद के हिसाब कैलेंडुला मिला लेना चाहिये। घावों में नारियल का तेल लगाया जासकताहै।

कोष्ठबद्ध।

बालकों की कोष्ठबद्ध धातु प्राय पिता माता से होजाती है। कभी कभी खाने पीने के दोष से अथवा कभी कभी यकृतके विकार से भी कोष्ठबद्धता होजाती है। यकृत दोष से मल में पित्त न रहने के कारण मल कठिन, सूखा, और कीचड के समान काला होता है। माता के आहार के दोष से स्तन

पान करने वाले बालकों कोष्ठबद्धता होजाती है। बालकों को जुलाब कभी न देना चाहिये।

चिकित्सा।— ब्रायोनिया ६ शक्ति।— बालक के होट सूखे हुए, दूध पीते ही उलट देना, सूखा, कड़ा, काला मल।

कैलकेरिया-कार्ब १२,३० शक्ति।—कड़ा, बिना पचाहुआ, सफेदसा मल, दोनों पैर सर्वदा ठंडे और गीले रहैं, शरीर में रक्त कम और ढीले शरीर। मोटे बालकों को विशेष फायदा करता है।

लाईकोपोडियम १२,३० शक्ति।—मल अत्यन्त कठिन, थोडा और अत्यन्त कष्टसे निकलताहो, पेटके भीतर जोरसे गड़ गड़ गौं-गौं शब्द।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।—मल बड़ा, कड़ा और कष्टसे निकलताहो, बार बार दस्त जानेकी हाजत, पेटमें दर्द, बेचैनी, माताके घी मसाला मिले हुए खाद्य खाने आदिसे यदि बालकको कोष्ठबद्ध का रोग होतो यह विशेष उपयोगी है।

ओपियम ६ शक्ति।—उदरामयके उपरान्त अथवा जुलाब देनेके उपरान्त कोष्ठबद्ध, मल काला छोटा कड़ा गुठलेदार।

मैगनेशिया-म्युरेटिक ३,६ शक्ति।— मल गुठलेदार, मलद्वारके पास आतेही टूट पड़े, बारम्बार दस्तकी हाजत।

प्लम्बम १२,३० शक्ति।—बकरीकी मेंगनी के

समान गुठलेदार मल।

ग्राफाईटिस ६,१२ शक्ति।—अत्यन्त मोटा मल किन्तु आम से लिहसा हुआ, सब शरीरमें सरस फुन्सियां।

औषध प्रयोग।—प्रतिदिन २ बारके हिसाब से ३ दिन तक औषध सेवन करना चाहिये, उपरान्त २ दिन तक औषध बन्द रखी जाय। उसमें से कुछ फायदा न होतो औषध बदल देनी चाहिये। यदि माताको कोष्ठबद्ध होतो माताकोभी औषध देना आवश्यकीय है।

उदरामय।

(तरुण)

उदरामय बाल्यावस्थामें एक साधारण रोग है। अचानक पेटमें दर्द होकर अथवा बिना दर्दके क्रमश उदरामय आरम्भ होसकता है। उदरामय होतेही औषध देकर बन्द करना उचित नहीं क्योंकि प्राय बिना पचा हुआ मल और खाया हुआ पदार्थ निकल जाना ही आवश्यकीय होजाता है। बालकोंके उदरामय में मल हरा, पानीके समान, सफेदसा अथवा कालासा अनेक प्रकारके रंगोंका होता है।

पेट के दोष और भोजन के अनियम के कारण उदरामय उत्पन्न होता है। माताके दूधके दोषके कारणभी कभी कभी बालक को उदरामय होजाता है। माता के भोजन क-

अनियम और क्रोध आदि कारणों से दूध दूषित होने पर बालक उस दूध को पीकर रोगी होजाता है। इस के अतिरिक्त दांत निकलना, सर्दी या ओस लगना, अत्यन्त गरम होना आदि कारणों से भी बालक के पेट में दोष उत्पन्न होता है।

चिकित्सा।—एकोनाईट ६ शक्ति।—सूखा गरम शरीर, साथही उत्तेजना और बेचैनी, पानी के समान सफेद मल, पेशाब लाल।

बेलडोना ६ शक्ति।—बालकको नींद आती हो किन्तु बेचैनी और अस्वस्थता, अत्यन्त कराहना और नींद से चमक उठना, थोडा थोडा हरासा मल, चहरा लाल।

ब्रायोनिया ६ शक्ति।—गरमी के दिनों में उदरामय, थोडे हिलने चलने से ही दस्त।

कैलकेरियाकार्ब १२, ३० शक्ति।—मल सफेदसा वा पतला, सोने से माथे पर बहुत पसीना, मोटा थलथला ढीला शरीर।

कैमोमिला ६ शक्ति।—मल हरा, पानी के समान, मलद्वार छिल जावे और पेट में दर्द, गरम पतला मल, मल में सड़े अण्डे के समान दुर्गन्ध, बालक अत्यन्त चिड़चिड़ा, बहुत रोता हो, केवल सर्वदा गोदी में चढकर फिरना चाहे, दांत निकलने के समय उदरामय, रात्रि के समय बढना।

डलकामारा ६ शक्ति।—मल पीलासा, हरासा,

पानी के समान वा सफेदसा, वर्षा के दिनों में अथवा सर्दी लगने से रोग।

इपीका ६ शक्ति।—मल झागदार, कभी कभी घास के समान हरा आम, अत्यन्त जी मिचलाना, उल्टी और दर्द, दूध छोड़ने के समय बालकों के पेटका रोग।

मैगनेशिया-कार्ब ६ शक्ति।—खट्टी बदबूदार उदरामय, बहुत मल, मल हरा, आम और पानीके समान, घुली हुई भागके पानीके समान, खट्टी उल्टी।

मार्कूरियस ६ शक्ति।—मल गाढा हरा आम, झागदार अथवा रक्त मिला हुआ, दस्त जाते समय और पीछे अत्यन्त वेग, मुह के भीतर सफेद घाव।

पाडोफाईलम ६ शक्ति।—बिना दर्द के उदरामय, बहुतसा पानी के समान मल, अथवा पीले रंग का आम मिला हुआ मल, खड़ियाके समान सफेद बिना पचा हुआ मल, कभी पीले रगका और बदबूदार आम दिहसा हुआ रहताहै, दस्त जानेसे पहले पेटके भीतर पानीके शब्दके समान कलकल और गड़गड़ शब्द, दस्त जाते समय कांच निकल आना, प्रातःकाल रात्रिमें और गरमीके दिनोंमें बढ़ना।

सल्फर ३० शक्ति।—मल परिवर्तनशील (बदलने वाला अर्थात कभी एक तरहका और कभी दूसरी तरह का), पीले रगका, हरा, विना पचा हुआ, प्रात काल के समय अंधेरेमें ही उदरामय, कोई दर्द न रहना, घाव पैदाकरने वाला मल इसलिये मलद्वार छिलजाना।

चायना ६,१२ शक्ति ।—विना दर्दके विना पचा हुआ सड़ा बदबूदार मल, बहुतही ज्यादा, एक दिनके अन्तर से बढ़ना, पेट फूला रहना ।

कालोसिन्थ ६ शक्ति ।—पेटमें अत्यन्त दर्द, छातीकी ओर पेटको दाबकर टहलनेसे आराम मालुम होना, विना पचा हुआ मल, दूध पीते पीते अथवा दूध पीनेके उपरान्त ही दस्त । मल पीले रंगका, झागदार, थोड़ा २ किन्तु बार २, छिछड़ेदार, पेटमें मरोड़के साथ दस्त होना ।

पलसाटिला ६ शक्ति ।—पेटमें दर्द और उदरामय, रात्रिके समय अधिक दस्त होना, केवल स्वच्छ हवाकी इच्छा करे, इसलिये घरके भीतर रहना न चाहता हो, बाहर आतेही शान्त होजावे, मल इतना परिवर्तनशील कि दो दस्त भी एकसे नहो ।

रियम, ६ शक्ति ।—खट्टी बदबूदार मल, बालकके शरीर से भी खट्टी बदबू निकलतीहो, उदरामय और उल्टी, कठिन से पचनेवाली चीज खानेसे अथवा सर्दी लगनेसे उदरामय, प्राय ही अम्लके लक्षण रहतहों, पेटमें दर्द और रात्रिमें बढ़ना ।

आईरिस ६ शक्ति ।—पैत्तिक दस्त और उल्टी, मल द्वारपर जलन ।

मल अजीर्ण— कैलकेरिया १२ (जमाहुआ दूध निकलताहो), अफाईसिट १२ (पतला अधपचा हुआ बदबूदार), फासफोरस ६ [अत्यन्त कमजोरी], आर्सेनिक ६ (खानेहीदस्त) पेंन्टिमक्रूड ६ वा १२ [बड़े बड़े दूधके जमेहुए टुकड़े] ।

मल रक्त मिलाहुआ — सलफर [रक्तके छींटे रहतेहैं],

फासफोरस, मर्क्युरियस, नक्सवोमिका, पाडोफाईलम।

मल पित्तयुक्त—फासफोरस (पीला रंग), आईरिस, मर्क्युरियस [हरा]।

मल सफेद—कलकेरिया [खड़ियाके समान], ऐन्टिम क्रुड, फासफोरस, मैगनेशिया कार्ब, पाडोफाईलम, लाईकोपोडियम।

उदरामयके साथ मलद्वारका छिलजाना—आर्सेनिक फासफोरस, म्राफाईटिस, मर्क्युरियस।

पर्यायक्रमसे कोष्ठबद्ध और उदरामय—नक्सवोमिका, लाईकोपोडियम, फासफोरस, सलफर।

औषध प्रयोग।—विशेष आवश्यकता मालुम होने पर २। ३ घंटेके अन्तरसे औषध देनी चाहिये। प्रत्येक बार दस्त होनेके उपरान्त एक एक मात्रा औषध देना कुछ बुरा नियम नहीं है। यदि इतना आवश्यक नहो तो दिनमें २। ३ बार औषध देनाही यथेष्ट है।

पथ्य।—पथ्यकी सुव्यवस्थाही उदरामय रोगकी एक प्रधान चिकित्सा है। बालक और बालककी माता दोनो कीही खाने पीनेकी सावधानी रखनी चाहिये। सामान्य उदरामयमें दूधमें आधा पानी मिलाकर दिया जासकता है। अनेक समय दूध बन्द कर केवल सागूदाना और बार्लीका पानी ही देना आवश्यक होता है। किसी किसी समय दूधके साथ सामान्य चूनेका पानी मिलाकर देनसेभी फायदा होता पड़ता है।

उदरामय ।
(पुराना)

नये उदरामय कभी कभी चिकित्सा वा खाने पीनेके पसे पुराना पडजाताहै । कभी कभी धातुगत दोषसेभी ाना उदरामय देखा जाता है । बालक जो कुछ आहार रे वह बिना पचा हुआही मलके साथ बाहर निकल ता है। शरीर क्रमश दुबला, पेट और मस्तक मोटा, शरीर रक्त न्य, हाथ पैर फूले हुए, परिशेष उदरामय निवारित न होनेस लक मृत्यु के पजेमें पडताहै । इस प्रकारके उदरामयका हुतही कठिनता से इलाज होता है। यदि प्रथमावस्थामें ावधानी न कीजाय तो ऐसी सांघातिक अवस्था उत्पन्न ती है फिर किसी औषधसे फायदा नहीं होता।

चिकित्सा ।— आर्सेनिक ३० शक्ति ।— त्यन्त प्यास, उलटी, पेटमें दर्द और फूल उठना, भोजन परान्तही उदरामय की विशेषता, विशेषकर आधी रातके परान्त, कमजोरी और दुबलापन, बेचैनी, अनिद्रा, चहरा कशून्य, हाथ पैर ठंडे और फूलेहुए।

कैलकेरिया-कार्ब १२,३० शक्ति ।—देह दुबली, पेट ौर माथा मोटा, गण्डमाला दूषित धातु, थोडी सर्दी गनेही सर्दी होजाना, और सब गाँका फूल उठना, ोडे, माथेमें बहुत पसीने आना विशेषकर सोते समय।

कार्बो-वेज ३० शक्ति ।—नवृत्रार उदरामय, दस्त ो पादही प्यास, पेटमें अत्यन्त वायु सञ्चय।

सीना ३० शक्ति ।——कृमि दोष और उदरामय, निद्रितावस्था में चमक उठना, दांत किड़ किड़ाना और खुर्राटे ।

चायना ३० शक्ति ।——खानेके उपरान्तही दस्त होना, पीले रंगका पानीके समान बिना पचा हुआ मल, सड़ी हुई गन्ध, पेट फूलना, भूख न लगना, दुर्बलता ।

आयोडियम ३० शक्ति ।—छाछके समान दस्त, सड़ा हुआ और बदबूदार, भोजनके उपरान्त पेटका* दर्द कुछ कमहो, बेचैनी, किसीसे कम नहो, भोजन कईवार करताहो और अधिक खाताहो तथापि दुबलापन कम नहो। बहुतही कमजोरी और दुबलापन, जिनकी गले, बगल, रान, और गरदन आदिकी गांठें सर्वदा आक्रान्त हों उनके लिये विशेष उपकारी है ।

नेट्रम-सल्फर ६ शक्ति ।—पीले रंगका पतला मल, अधिक वायु और बहुत शब्दके साथ ऐसा दस्तहो कि चारों ओर छींटे उड़तेहों । प्रात काल सवेरे सोकर उठके थोड़ी देर बादही दस्तहो (बहुत सवेर सोकर उठतेही जल्दी दस्त जानेके लक्षण में सलफर), जिगर बढ़ा हुआ और उसमें दर्द होना, बदबूदार वायु निकलना, नसोंके फाने फकजाना ।

फासफोरस ३०,२०० शक्ति ।—सफेद या हरा पानीके समान मल, खुले हुए मलद्वारसे लगातार मल रिसता रहे, कभी कभी आरव साथ बहुतसा दस्तहो, पीनेके उपरान्त दूध पेट में जाकर गरम होतेही उल्टीके साथ निकल जाये, रोगी खातेही सो जाये । फासफोरस देनेसे पहल २ । १

मात्रा ऊंचे क्रमकी नक्सवोमिका देलेना अच्छा है ।

सोरिनम ३० शक्ति ।—बहुत सड़ी हुई बदबूदार कालासा पतला मल, थोड़ेसे परिश्रमसेही बहुत पसीने आना और रातमें पसीने, शरीरसे बहुत दुर्गन्ध निकलना, स्नान करने परभी बदबू दूर न होना, दिनरात केवल रोना, बालक सोनेकी इच्छा न करताहो ।

सलफर ३०,२०० शक्ति ।—बहुत सवेरे जल्दीसे दस्त आना, चर्मरोग, राक्षसी क्षुधा, बालकको जो कुछ मिले उसेही पकड़कर मुहमें रखले, मलद्वारका छिलजाना, हाथ और पैरोंके तलवे बहुत गरम, वारम्वार चिल्लाकर जग उठताहो, शरीरमें दुर्गन्ध, स्नान करना न चाहताहो, अत्यन्त कमजोरी और दुबलापन ।

खाज खुजली दब जानेपर यदि उदरामय होतो हीपर ३० वा सलफर ३० शक्ति देना चाहिये ।

औषध प्रयोग ।—प्रातःकाल और सन्ध्या समय केवल दोबार । अधिक औषध देना अथवा बार बार औषध बदलना दूषनीय है । सोच समझकर औषध निश्चय करनी चाहिये और देनेके उपरान्त थोड़ी देरतक उसके फलाफलकी परीक्षा करनी चाहिये ।

पथ्य ।—आधा दूध और आधा पानी अच्छा पथ्य है किन्तु उसमें मीठा नहीं डालना चाहिये । वार्ली आरारोट आदिभी अच्छे पथ्य हैं । यदि सह्य होसके तो पुराने चावल पथ्य में दिये जासकते हैं ।

दूध उलट देना वा उल्टी।
(वोमिटिंग)

दूध उलट देना या उल्टी बालकोंके लिये अत्यन्त कष्टदायक रोग होताहै। माताका दूध या साधारण दूध पीनेके उपरान्तही यदि दूध जमकर निकल आवे तोभी सहज-साध्य समझना चाहिये किन्तु यदि दूध बिना जमे योंही निकल आवे तो रोगको कुछ कष्टसाध्य समझना चाहिये।

चिकित्सा।— **ऐन्टिम-क्रूड ६,१२ शक्ति।**— दूधके समान सफेद लेपसे लिहसी हुई जीभ, अत्यन्त प्यास, पाकाशय दाबनेसे दर्द, जी मिचलाना, अपाक, मन्दाग्नि, पित्तकी उल्टी और उदरामय।

इपीका ६ शक्ति।—भोजनकी अनिच्छा और श्लेष्मा वमन, स्तनका दूध सह्य नहो, पीतेही उलटी होजावे।

नक्सवोमिका ६,१२,३० शक्ति।—खाने पीनेसे अनिच्छा, उल्टी में थोडी या सडी गन्ध, हरा पैत्तिक पदार्थकी उल्टी, कोष्ठबद्ध।

इथूजा ३,६ शक्ति।—जमा हुआ अथवा जैसे का तैसा दूध उल्टी होकर निकल जाना, दूध उलटते ही सो जावे और जागने पर फिर स्तन पान करे, दूध पहले सह्य नहो।

पलसाटिला ६ शक्ति।—कठिन से पचन वाली चीज खानेसे उलटी, पेटका दोष।

रियम ई शक्ति ।—दस्त और उलटी में खट्टी बदबू ।

रक्तवमन—आर्निका, आर्सेनिक, इपीका, नक्सवोमिका ।

दूध उलट देना—कैलकेरिया, सिना, इपिका, नक्सवोमिका, साइलेशिया, सल्फर ।

पित्तवमन ।—ब्रायोनिया, कैमोमिला, चायना, इपिका, नक्सवोमिका, पलसेटिला ।

औषध प्रयोग ।—तीन तीन घंटेके अन्तरसे एक एक मात्रा ।

सहकारी उपाय ।—खानेकी चीज बदल देना और कुछ कम खिलाना उचित है । यदि गौका दूध सह्य न होतो उसमें पानी मिला देना चाहिये अथवा गधीका दूध देना चाहिये । उलटी करनेके उपरान्त २ । १ घंटे तक खानेको कुछ न देना चाहिये । जो बालक माताका दूध पीताहो उसको अधिक स्तन पान नहीं करने देना चाहिये । दूध गरम करके पिलानेसे सह्य होता है । दूध पिलानेके उपरान्त बालक को अधिक हिलाना चलाना न चाहिये । यदि प्रतिदिन ठंडे पानीसे स्नान कराना सह्य होजावे तो अच्छा है ।

पेटका दर्द ।

(कलिक)

यह बालकोंको बडा कष्टदायक रोग होताहै । माताके दू[illegible] दोष, बहुत ज्यादा अथवा कठिनाई से पचने वाला भोजन, दोष, कोष्टबद्ध, सर्दी आदि अनेक कारणों से यह

रोग पैदा होताहै। रोग अचानक आरम्भ होताहै, बालक शरीर तोडताहै, पैरोंको छातीकी ओर ऊचे करताहै और बीच बीचमें पैरोंको लटक देताहै, पेटमें गडगड होतीहै और बालक अत्यन्त कष्ट पाताहै। कभी कभी बालक इतना रोताहै कि रोते रोते चहरा नीला पडजाता है और शरीर कांपने लगताहै। कभी कभी डकार आनेसे अथवा वायु निःसरन होनेसे दर्द कमभी होजाता है।

चिकित्सा।— एकोनाईट ३,६ शक्ति।— यदि किसी मानसिक आवेग यथा अचानक आनन्द अथवा भयके कारण रोग उत्पन्नहो। इससे यदि कुछ फायदा न दिखलाई पडे तो ओपयम देना चाहिये।

कैमोमिला ३०,१२ शक्ति।—पेट फूलनेके साथ पेटमें दर्द, पेट फूलजाना और कडा पडजाना, भयङ्कर चिल्लाना, हाथ पैर पटकना, सब शरीर ऐंठना, सर्वदा गोदी में लेकर खिलाना पडे, पेटका दोष, पीलासा, हरासा अथवा पानीके समान मल।

चायना ६,१२ शक्ति।—प्रतिदिन तीसरे पहर किसी एकही समय दर्द आरम्भ हो [सन्ध्याके समय होनेसे पलसाटिला], बालक चिल्लावे और उपरान्तही हसे।

कालोसिन्थ।—बराबर चिल्लाना, शरीर मरोडना और पैर सकोडना, बालक उलटा हो पडे और सीधा न करने दे।

इपीका ६,१२ शक्ति।—अचानक बहुत चिल्लाउठे

रिपम ई शक्ति ।—दस्त और उलटी में खट्टी बदबू।

रक्तवमन—आर्निका, आर्सेनिक, इपीका, नक्सवोमिका।

दूध उलट देना—कैलकेरिया, सिना, इपिका, नक्सवोमिका, साइलेशिया, सलफर।

पित्तवमन।—ब्रायोनिया, कैमोमिला, चायना, इपिका, नक्सवोमिका, पलसेटिला।

औषध प्रयोग ।—तीन तीन घंटेके अन्तरसे एक एक मात्रा।

सहकारी उपाय ।—खानेकी चीज बदल देना और कुछ कम खिलाना उचित है। यदि गौका दूध सह्य न होतो उसमें पानी मिला देना चाहिये अथवा गधीका दूध देना चाहिये। उलटी करनेके उपरान्त २। १ घंटे तक खानेको कुछ न देना चाहिये। जो बालक माताका दूध पीताहो उसको अधिक स्तन पान नहीं करने देना चाहिये। दूध गरम करके पिलानेसे सह्य होता है। दूध पिलानेके उपरान्त बालक को अधिक हिलाना चलाना न चाहिये। यदि प्रतिदिन ठंडे पानीसे स्नान कराना सह्य होजावे तो अच्छा है।

पेटका दर्द।

(कलिक)

यह बालकोंको बडा कष्टदायक रोग होताहै। माताके दूधका दोष बहुत ज्यादा अथवा कठिनाई से पचने वाला भोजन, कांई, कोष्ठबद्ध, सर्दी आदि अनेक कारणों से यह

ोग पैदा होताहै। रोग अचानक आरम्भ होताहै, बालक
ारीर तोडताहै, पैरोंको छातीकी ओर ऊंचे करताहै और
ीच बीचमें पैरोंको लटक देताहै, पेटमें गडगड होतीहै
ौर बालक अत्यन्त कष्ट पाताहै । कभी कभी बालक इतना
ोताहै कि रोते रोते चहरा नीला पडजाता है और शरीर
ांपने लगताहै । कभी कभी डकार आनेसे अथवा वायु
ने.सरन होनेसे दर्द कमभी होजाता है।

चिकित्सा ।— एकोनाईट ३,६ शक्ति ।—
ादि किसी मानसिक आवेग यथा अचानक आनन्द अथवा
ायके कारण रोग उत्पन्नहो । इससे यदि कुछ फायदा न
देखलाई पडे तो ओपयम देना चाहिये।

कैमोमिला ३०,१२ शक्ति।—पेट फूलनेके साथ
ेटमें दर्द, पेट फूलजाना और कडा पडजाना, भयङ्कर
चेल्लाना, हाथ पैर पटकना, सब शरीर ऐंठना, सर्वदा गोदी
मे लेकर खिलाना पडे, पेटका दोष, पीलासा, हरासा अथवा
ानीके समान मल।

चायना ६,१२ शक्ति ।—प्रतिदिन तीसरे पहर
केसी एकही समय दर्द आरम्भ हो [सन्ध्याके समय होनेसे
एलसाडिला], बालक चिल्लावे और उपरान्तही हसे।

कालोसिन्थ ।—बराबर चिल्लाना, शरीर मरोडना
और पैर सकोडना, बालक उलटा हो पडे और सीधा
न करने दे।

इपीका ६,१२ शक्ति ।—अचानक बहुत चिल्लाउठे

मानो पेटके भीतर छुरीसे कटा जाताहै, सडी घदबूयाला हरा आगदार मल, जीमिचलाना और उलटी।

नक्सवोमिका ६,१२ शक्ति।—न पचने वाला अथवा कठिनतासे पचने वाला पदार्थ खानेसे पेटमें दर्द, कोष्ठबद्ध, बारम्बार दस्तकी हाजत किन्तु दस्त न होना, अथवा बहुतही थोडा दस्त होना, माताके आहारका दोष यथा घी मसाला आदि मिली हुई चीजें खाने से बालकके पेटमें दर्द।

पल्सटिला ६ शक्ति।—दर्द सन्ध्याके समय अथवा एक दिनके अन्तर से होता हो [इस लक्षण में चायना भी फायदा करता है], पेटके भीतर गड़गड़ शब्द होना।

बेलेडोना ६ शक्ति।—बालक अचानक रो उठे, फिर थोडी देर बादही अचानक चुप होजावे, ऐसा मालूम हो कि कुछ नहीं हुआ है, बालक रोताहो और कराहता हो।

सीना ६,३०,२०० शक्ति।— नाभि के ऊपर ठीक एकही स्थान में दर्द, दाबकर रखने से दर्द कमहो, बालक सोही जावे अथवा जगनाही रहे कभी शान्त नहो, शरीर पर हाथ न लगाने दे, कृमि दोष।

दुःख शोकातुरा माताका दूध पीनेसे यदि बालक के पेट में दर्द हो तो इग्नेशिया ३० शक्ति। आमाशय के कारण पेट में दर्द हो, आमरक्त मिला हुआ दस्त होने से आराम मालुम हो तो मार्कुरियस ६ शक्ति देना चाहिये।

औषध प्रयोग।—१५।२० मिनट के अन्तर से एक एक मात्रा।

सहकारी उपाय ।—पेटपर नमक की पोटली गाकर सेकने से आराम दीखता है। यदि कोष्ठबद्ध हो तो स्त कराना चाहिये। कभी कभी पिचकारी से दस्त कराना डता है। पथ्य हलका और सहज में पचने वाला देना डा जरूरी है।



अस्थिरता वा अनिद्रा ।
(रेस्टलेसनेस)

पेटके दोष के कारण बालक तड़फता है, सो नहीं सकता। जिस प्रकार बालक के आहार पर दृष्टि रखनी चाहिये उसी प्रकार बालक की माता के आहार पर भी दृष्टि खनी चाहिये।

चिकित्सा ।—बेलेडोना ६ शक्ति ।—बालक को तन्द्रा हो किन्तु सो न सके, बालक अचानक चमक उठे और चिल्लाकर रोवे, सिर गरम।

कैमोमिला ६ शक्ति ।—पेट में वायु पैदा हो, हाथ पैर अचानक नाच उठें, ज्वर (ज्वर हो तो ऐकोनाईट, भी फायदा करता है), बालक अत्यन्त चिड़चिड़ा और बहुत रोता हो, सर्वदा गोदी में घूमना चाहे।

कफिया ३,६ शक्ति ।—शरीर की गर्मी बढ़ जाना, किसी तरह से सोना न चाहे, केवल रोने और ठिनके, यदि इस से नींद न आवे और चहरा लाल होवे तो ओपियम ६ शक्ति देना चाहिये।

स्ट्रामोनियम ६ शक्ति ।—बालक अन्धेरे मकान में किसी तरह न सोता हो, किन्तु उजाले और प्रकाश वाले घर में शीघ्र ही सोजावे ।

रोना ।

रोनाही बालक की भाषा है । कष्ट, दर्द और आवश्यकता सब ही बालक रोकर प्रकाशित करते हैं । अतएव प्रत्येक माता का कर्तव्य है कि इस भाषा का अर्थ अच्छी तरह समझे । जो बालक की भाषा नहीं समझ सकती वह बालक को पालन करने के योग्य नहीं है । जो भाषा समझने पर भी बालक की इच्छा के अनुसार अथवा उसकी आवश्यकता के अनुसार कार्य नहीं करती वह निष्ठुर है ।

बालक कभी कभी बहुत ही ज्यादा रोते हैं । यह बात नहीं है कि जब बालक रोता है तब भूख ही के कारण रोता है । अतएव जब बालक रोने लगे तबही उसको दूध पिलाने की चेष्टा करना व्यर्थ है और अन्याय है । बालक के रोने पर उसके रोदन करने के कारण को जानना चाहिये और देखना चाहिये कि वह वास्तव में भूखा है और कोई वस्तु मांगता है या उसको किसी प्रकार का कष्ट है । यदि बालक बेचैनी के साथ रोता हो तो विरक्ति या असुविधा समझना चाहिये, पेट की तरफ पैर करके रोता हो तो पेट में दर्द समझना चाहिये, मुह में अंगुली देकर रोता हो तो दांत निकलने का कष्ट और खांसते समय रोवे तो छाती में दर्द समझना चाहिये ।

यदि बिना कारण बालक अचानक रो उठे तो अच्छी तरह देखना

कहीं उसके शरीर में चींटी आदि तो नहीं काटती अथवा कोई चीज उस के शरीर में चुभती तो नहीं है।

चिकित्सा।—ऐकोनाईट ३,६ शक्ति।— शरीर सूखा और गरम, बालक अत्यन्त तड़पता हो, सो न सकता हो और बहुत ठिनकता हो।

बेलेडोना ३,६ शक्ति।— बालक बहुत देर तक रोता रहे, ऐसा मालुम हो कि नींद आती है किन्तु सो न सके, अचानक नींद से चमक उठे और भयङ्कर चिल्लाहट करे।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति।— बालक रोता हो और अत्यन्त बेचैन हो, शान्त करने के लिये बराबर गोदी में लेकर टहलाना पड़े, ज्वरसा मालुम हो, दांत निकलने के समय यह औषध बहुत फायदा करती है।

काफिया ३,६ शक्ति।— बालक एक बार हँसे और एक बार रोवे, बिलकुल ही न सोता हो, निद्रा के कुछ लक्षण न दिखाई दें।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।— कोष्ठबद्ध और पेट फूलने के साथ पेट में दर्द, नींद न आना और बेचैनी, बालक प्रतिदिन रात को ३।४ बजे के समय जगे और उस समय गोदी में बैठना चाहे, जिन बालकों की माता घी मसाले आदि के पकवान खाती है।

औषध प्रयोग।— प्रति १ या दो घण्टे के अन्तर से एक मात्रा।

सहकारी उपाय ।—पेट पर गरम पानी का फलालेन से सेक, गरम तेल की पेटपर मालिश, पैरों के ऊपर उलटा लिटाकर आहिस्ते २ पीठ को हाथ से थपथपाने से फायदा दीख पडता है ।

मस्तकमें घाव ।

बालकों के मस्तक में कभी कभी मैले घाव होजाते हैं । उनके ऊपर पापडी पडजाती हैं । खुजली चलती है और क्रमश बढजाते हैं । पापडी उचेल डालने से नीचे लाल रंग का घाव दीख पडताहै । इस रोगके प्रधान कारणों में से सफाई न रखना, मैले कपडे पहनना, मस्तकको सर्वदा गरम कपडेसे ढके रखना आदि हैं । जिन बालकोंके मस्तक सर्वदा धोये पोंछे जाते हैं उनको प्राय यह रोग होते हुए नहीं देखा जाता ।

सफाई रखना और स्वच्छ वस्त्र पहनानाही इस रोगकी प्रधान चिकित्सा है । यदि यह रोग स्पष्ट रीतिसे दिखाई देतो सलफर ३० प्रात काल और सन्ध्याके समय दिनमें दो मात्राके हिसाब से देनेसे कुछ दिनमें बिलकुल जाता रहता है । मस्तकको नारियलके तेलसे भिगो रखना चाहिये उपरान्त गरम जलसे धोनेमे क्रमश. पापडी उचल जातीहै । एकहा दिनमें सब पापडी उचाट देनेकी चेष्टा न कर प्रतिदिन इस प्रकार करना अच्छा है । जोरसे कभी पापडी उचाटनेकी चेष्टा न करनी चाहिये क्योंकि इससे रोग कम

होनेके बदले अधिकही होताहै ।

"शिरोदद्" चिकित्सा देखो ।

कान के पीछे पकना ।

मोटे ताजे बालकोंके शरीरमें, कभी कभी कानके पीछे एक प्रकारसे फट जाता है अथवा घाव होजाते हैं । कानके पीछे होनेसे उसको 'कान लगना' कहतेहैं, यदि शरीरके किसी और स्थान में होतो "छाजन" कहते हैं । इन सब घावोंको जलसे न धोकर सूखा रखनाही अच्छा है किन्तु साफ रखनेके लिये कभी कभी गरम पानीसे धो डालना चाहिये । धोकर सूखे कपडेसे पोंछ डालना चाहिये । ऐसे घावोंमें साबन लगाना अच्छा नहीं ।

चिकित्सा ।—कैलकेरिया १२,३०, गाफाईटिस १२या३० वा सलफर ३० इनमेंसे कोई औषध लक्षण अनुसार सुबह और शामको देनेसे जल्दी आराम करतीहै ।

छाजनकी चिकित्सा देखो ।

इठना ।

(कन्वलशन)

बाल्यावस्थामें सब स्नायुविधान इतना उत्तेजनशील रहता है कि सामान्य कारणसेही बालकको बांयठे [कन्व

दशन] आकर बालक इठ जाताहै । ४ वर्षकी अवस्था तक यह रोग अधिक होताहै ।

लक्षण ।—कभी कभी बांयठे आनेसे पहले बेचैनी, रोना, नीचेका जावडा कपना, सोते समय अचानक चमक उठना, आदि पूर्व लक्षण दिखलाई पडतेहैं, किन्तु साधारणत विना किसी प्रकारके पूर्व लक्षणकेही अचानक रोग उपस्थित होताहै । दांती भिचजाती है, मुहसे झाग निकलने लगते हैं, चहरा विगड जाता है, आखोंकी टकटकी बध जाती है, आंखे डवडवा आना, आंखकी पुतली वढजाना, चहरा नीले रगका होजाना, शरीरके साथ श्वास चलना, हाथ पैरोंका इठना । यह मूर्छा २ । १ मिनट रहनेके उपरान्त चली जाती है अथवा कभी जल्दी और कभी कुछ ठहर ठहरकर वार वार इसी प्रकार बांयठे आते हैं ।

साधारणत' बालकको यदि सामान्य आक्षेप होतो प्राणों की आशका तो नहीं रहतीहै किन्तु देखनेमें बडा भयकर मालुम होता है । परन्तु यदि किसी कठिन रोगके साथ अथवा शेषावस्थामें आक्षेप अथवा मूर्च्छा उपस्थित होतो उसे अशुभ लक्षण जानना चाहिये ।

कारण ।—अनेक कारणोंसे बालकोंका इठ जाना सम्भव है । उनमेंसे दात निकलनेके कारण उत्तेजना, खसरा आदि उद्भेदोंके कारण ज्वर, अचानक खसरा आदि उद्भेदों का बैठ जाना, कीडे, आहार, और पेटका दोष, मस्तकमें चोट लगना, मानसिक आवेग आदि प्रधान कारण हैं ।

चिकित्सा ।— एकोनाइट ३,६ शक्ति ।—

प्रबल ज्वर, सूखा गरम शरीर, बेचैनी और यन्त्रणा, दांत निकलने अथवा वर्लिडयोक उपद्रव के कारण रूठ जाना, दांत किड़किड़ाना, और हिचकी लना।

आर्निका ६,३० शक्ति।—चोट लगनके कारण यथा मस्तकमें चोट, गिरने या धक्का लगनेसे रोग।

बेलेडोना ३,६ शक्ति।—मस्तक अधिक गरम, चहरा लाल, दोनों आंखें लाल, आखोंकी पुतली फैली हुई, सोते समय चमक उठना और उछल पड़ना, तन्द्रा होना किन्तु सो न सकना, चहरा आदि बिगड़ा हुआ, दांत पीसना और मुहसे झाग निकलना, वायठोंके उपरान्त तन्द्रा। जो बालक थोड़ी अवस्थामेंही अधिक बुद्धिमान मालुम होते हैं और अधिक चतुर चालाक दीख पड़ते हैं उनके रूठ जाने पर बेलेडोना अधिक उपयोगी है।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति।—— हाथ पैरोंका खिचना, जीभ और आखोंकाभी आक्षेप, सोते समय उछलना और फड़कना, चहरा लाल, अथवा एक कनपटी लाल और दूसरी फीकी, बालकके स्वभाव में अत्यन्त चिड़चिड़ापन और रुलाई, शान्त करनेके लिये सर्वदा गोदीमें लेकर टहलाना पड़े, कपाल और मस्तक पर गरम पसीना, सर्वदा कराहट और पानी पीने की इच्छा।

सीना ६,३०,२०० शक्ति।—छाती का बांयठे, उपरान्त ही हाथ पैर आदि सब शरीर का कड़ा पड़जाना,

सर्वदा नांक खुरचना, बारम्बार थूक निगलना मानों गले में कुछ अटक रहा है, सूखी खखराली खांसी, पेशाब थोड़ी देर बाद ही यदि रखाजाय तो सफेद दूध के समान होजाय। जिन बालकों को पेट में कीडों का उपद्रव रहता है उनके लिये अधिक उपयोगी है।

हायोसायमस ६ शक्ति।—बांयठे और साथ ही सब पट्ठों का फड़कना, विशेषकर चहरे और आंखों के पट्ठोंका, कांपना और मुह से झाग निकलना, अचानक भय पाने से रोग हो तो [ओपियम] सोने से खांसी का बढ़ना, उठकर बैठे होजाने से आराम (पलसाटिला के समान]।

इग्नेशिया ६ शक्ति।—नींद आते ही ऊचे स्वरसे चिल्लाता हुआ सब शरीर कांपते कांपते अचानक चमक उठना, किसी एक स्थान अथवा अंग विशेष में बांयठे, आक्षेप प्रतिदिन अथवा एक दिन के अन्तर से ठीक उसी समय लौट-कर आवें।

ओपियम ६ शक्ति।—सब शरीर कांपना और हाथ पैर पटकना, बांयठों के पहले या बांयठों के समय ऊचे स्वरसे चिल्लाना, बालक स्तब्ध सा हो रहें, और बेहोशी की हालत हो, धर्राटे के साथ गहरा श्वास आना जाना, भय के कारण बायठे [ऐकोनाईट, जेलसीमीनम]।

स्ट्रामोनियम ६ शक्ति।—भय पाने के कारण बांयठे और बेमालुम मल मूत्र निकल जाना, सोकर उठने पर जो कुछ चीज पहले दीख पड़े उसी से भय पाना, दूसरा

आदि उद्भेद बैठ जाने पर अथवा निकलने में विलम्ब होने से रोग।

दांत निकलना कारण होतो—बेलेडोना, एकोनाइट कैमोमिला।

मानसिक उद्वेग कारण हो तो ऐकोनाइट [भयसे], कैमोमिला [क्रोधसे], ओपियम [भयसे]।

अजीर्ण कारण हो तो इपीका (उल्टियां हों तो), नक्सवोमिका (कोष्ठबद्ध हो तो), पलसाटिला [आहारका दोष हो तो]।

मस्तिष्क रोग यदि कारण हो तो ऐकोनाइट, बेलेडोना, जेलसीमिनम।

यदि खसरा बैठ जाने के कारण रोग हो तो ब्रायोनिया, बेलेडोना। कीड़े कारण हो तो सीना, इग्नेशिया।

औषध प्रयोग।—बायठांके समय ३ । ४ छोटी गोली १५ । २० मिनटके अन्तरसे जब तक आराम न हो जीभ पर रखनी चाहिये। उपरान्त रोगके लौट आनेकी आशंका जबतक रहे २ । ३ घंटेके अन्तरसे एक एक मात्रा औषध देनी चाहिये।

सहकारी उपाय।—रोग उत्पन्न होतेही शरीर और कपड़ोंको खोल डालना चाहिये, मस्तक ऊंचाकर मस्तकपर, मुखपर, चहरेपर, आंखोंपर छातीपर ठंडे पानीके छींटे लगाने चाहिये। बहुतसे आदमी इकट्ठे होकर हवाको बन्द न करें। भोजनके दोषसे होतो उल्टी कराना चाहिये और कोष्ठबद्ध होतो गरम पानी और साबुनकी पिचकारी लगाना अच्छा है।

थायठे आतेही घुटनेतक गरम [जितना गरम सह्यहो] पानीमें १० । १५ मिनट तक डुवा रखना चाहिये । पैर निकाललेने पर अच्छीतरह सूखे कपडेसे पोंछकर फुलालेन इत्यादि गरम कपडेसे ढका रखना चाहिये और मस्तकपर ठण्डे पानीकी पट्टी बार बार बदलते रहना चाहिये।

दांत निकलना।

(डेन्टिसन्)

दांत निकलनेका कोई रोग नहीं है, यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है । किन्तु दात निकलनेके समय बालकको अनेक प्रकारके कठिन रोग उत्पन्न होते हैं और कभी कभी बालकोंको उसमें प्राणभी जाते रहते हैं । इस लिये दांत निकलनेका समय बालकोंके लिये बडी आशङ्काका समय होता है।

दात निकलनेका समय कोई निर्दिष्ट नहीं होता किन्तु ६ महीनेका होतही प्राय सामने नीचेके दो दांत दिखलाई देतेहै और प्राय उसके एक महीने बाद ऊपरके दो दात दिखलाई पडते है । २॥ वर्षके भीतर बालकोंके प्राय २० दांत निकल आते है।

इन बीस दांतोंको चलित भाषामें 'दूधके दांत' कहते हैं। ये दात स्थायी नहीं रहते, इन अस्थायी दातोंके गिर जानेपर उनके स्थानपर ६ से १३ वर्षकी अवस्थाके भीतर स्थायी दात निकलती है । जिनको 'अक्ल डाढ' कहते है वह १७ से२१ वर्ष के भीतर निकलती है । इस समय ऊपर नीचेके दांत

तब मिलाकर १६। १६ के हिसाबसे कुल ३२ होतेहैं।

यदि दांत निकलने में विलम्ब हो अथवा बालक दुर्बल शरीर का हो तो दांत निकलने के समय अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। मसूढ़ा लाल, सूजा हुआ और दर्द, बालक को जो चीज मिले उसीको पाते ही काटने लगे और अपनी मुट्ठीको मुह के भीतर देकर काटता रहे, मुह से लार गिरती रहे, ज्वर हो, बालक रोवे और ठिनके, अच्छी तरह नींद न आवे, खासी हो, विशेषकर रात्रि में निद्राके समय उदरामय दिखलाई पड़े। कभी कभी वांयठे होते हुए भी देख जाते हैं।

चिकित्सा।— एकोनाईट ३,६ शक्ति।— सर्वदा बचैनी, किसी अवस्थामें रहनेपरभी शांत नहो, बालक सर्वदा रोता रहे, ठिनकता रहे और किसी प्रकार शान्त नहो, शरीर सूखा और गरम, निद्रामें व्याघात. माथा गरम, प्रबल प्यास, हरा पानीसा उदरामय, अथवा कोष्ठबद्ध।

एपिस ६,३० शक्ति।—नींदसे चिल्लाकर और रोकर जग उठे, पेशाव थोड़ा, हरा पीलासा उदरामयका मल, प्रात काल अधिक; अधिक जम्हाई ले और अस्वस्थ मालुम हो।

वेलेडोना ३,६ शक्ति।—बालक कराहता हो, भय पाकर नींदसे जाग उठे, टकटकी लगाकर देखता रहे, सोते समय चमक उठे और उछल पड़े, चहरा और दोनों गाल लाल, मस्तक गरम, वायठे, उपरान्त गहरी नींद, मसूढे सूजे हुए और लाल।

ब्रायोनिया ६,१२ शक्ति ।—मुह और होंट सूखे हुए, बालक स्थिर भावसे रहना चाहताहो, कोईभी आहारकी वस्तु पेटमें जातेही तत्क्षणात् जैसीकी तैसी निकल पड़े, पानीकी प्यास, सूखा कड़ा मल, अनेक चीजोंकी इच्छा करे किन्तु देनेपर फेंकदे ।

कैलकेरिया-कार्ब १२,३० शक्ति ।—बड़ा माथा, ब्रम्हरन्ध्रकी हड्डी उत्पन्न होनेमें देरी लगे, गण्डमाला दूषित धातु, सोते समय माथेपरही अधिक पसीने आवें, दोनों पैर ठण्डे और गीले, खड़ियाके समान सफेद मल, अथवा पतला सफेदसा, खट्टी उलटी, पेट मोटा, शरीर दुबला, भूख अच्छी ।

कैमोमिला ६, १२ शक्ति ।—अत्यन्त चिड़चिड़ा पन, रुलाई और बेचैनी, सोते समय चमककर और चिल्ला कर रो उठे और तड़पे, सर्वदा गोदीमें लेकर यदि न टहलाया जाय तो शान्त नहो, ज्वरामय, मल हरा, पीला या सफेदसा आमहो, दुर्गन्ध ।

काफिया ३ शक्ति ।—बालक किसी तरह न सोवे, सर्वदा ठिनके, एकबार रोवे और थोड़ीही देर बाद हंसे, ज्वरभाव, नींद न आनेके कारण बालक दुर्बल होजावे ।

ग्राफाईटिस ६,१२ शक्ति ।—चमड़ेकी अवस्था अच्छी नहो, कानके पीछे, गरदनमें और हाथ पेर आदिकी उंगलियो के बीच में छिल जानके समान, मस्तक और मुखमण्डल पर उद्भेद, उसमे रसदार चुपकना रस निकलना, कोष्ठबद्ध, गुठलेदार मल ।

हायोसायेमस ६ शक्ति।—बालक मुहमें उंगली दे, मसूढ़ोंसे दाबता रहे मानों कुछ चबाता है, बांयठ, चहरेके पट्ठोंका विशेषकर आखोंके बायंठ, गहरी निद्रा, अस्पष्ट बकना और बिछोने खेंचना, बेमालुमे पीले रङ्गका पानीके समान मल।

इग्नेशिया ६ शक्ति।—चिल्लाकर रोता हुआ नींद से उठे और सब शरीर कांपता रहे, किसी एक स्थान अथवा अंगका आक्षेपिक फड़कना, बालकको अत्यन्त कष्टहो, इसीसे रोवे और लम्बी सांस ले, मलमें रक्त और आमहो, कांच बाहर निकल आवे।

इपीका ६ शक्ति।—लगातार जी मिचलाना और उलटी, उदरामय, मल घासके समान हरे वा नीलेसे रंगका उबला वा झागदार, खांसी, मानो दम अटका जाताहै, छातीके भीतर श्लेष्मा घड़घड़ करता हो।

मैगनेशिया-कार्ब ६ शक्ति।—हरा और खट्टी गंध वाला उदरामय—दीर्घस्थायी अर्थात् बहुत दिन ठहरने वाला हो, बारम्बार खट्टी वस्तुकी उलटी होना।

मार्कूरियस ६ शक्ति।—बहुत लार गिरना, मसूढ़े लाल, कभी कभी होठ और मुहमें छाले, उदरामय, अधिक वेगके साथ हरा आम मिला हुआ अथवा रक्त मिला हुआ मल, पीला और तीव्र गन्धका पेशाब, रात्रिके समय बढ़ना।

नक्सवोमिका ६, १२, ३० शक्ति।— बालक

अत्यन्त चिडचिडे स्वभावका और बहुत रोने वाला हो, भूख न लगना किन्तु प्यास अधिक, कोष्ठबद्ध, कष्टसे बडा मल अथवा बार बार थोडा थोडा आम मिला हुआ मल, जिन बालकोंका माताके दूधकी जगह गायका दूध पिलाया जाताहै अथवा जिन बालकोंकी माता गरम मसाले आदि मिले हुए गरम पदार्थ सर्वदा खाती हैं उनके लिये विशेष उपयोगी है, प्रातःकालके समय बढना ।

पाडोफाइलम ६ शक्ति ।—अधखुली आंखें, कराहना, सोते समय तडपना और दांत किडकिडाना, माथा इधर उधर करना, हरा पानी के समान वा सफेद खडिया के समान मल, अत्यन्त दुर्गन्ध और बारम्बार उबकाई आना, प्रातःकालके समय का उदरामय, कांच बाहर निकल आना ।

साईलेशिया १२,३० शक्ति ।—मोटा माथा, ब्रम्हरन्ध्र की हड्डी निकलनें में देर होना, गण्डमाला दूषित धातु (फैलकेरियाके समान), माथे में बहुत खट्टी बदबू [फेलकेरिया और मार्कुरियस के समान], पेट कडा, गरम और फूला हुआ, कोष्ठबद्ध, थोडा दस्त होकर ही मल मलद्वार में फिर घुस जावे ।

सल्फर ३०,२०० शक्ति ।—चहरा फीका, रक्त शून्य, ब्रम्हरन्ध्र में हड्डी उत्पन्न नहो, शरीर में उद्भेद निकल पडे, अत्यन्त खुजली, उदरामय, मल सफेदसा, हरासा अथवा रक्त मिला हुआ आम, मलद्वार का छिल जाना, प्रातःकाल होते ही उदरामय, बार बार खाई हुई चीज की उलटी होना, बार बार अवसन्न भाव ।

दांत निकलने के समय बालकों को साधारणतः जो रोग होते हैं उनका विवरण नीचे देते हैं—

१-कोष्ठबद्ध।

चिकित्सा।—ब्रायोनिया ६ शक्ति।— मल सूखा हुआ, बड़ा और कड़ा, दस्त जाते में कष्ट, आहार करते ही उल्टी।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति।— बार बार दस्त के लिये जाता हो किन्तु दस्त न होता हो, आतों की क्रिया का ह्रास, उतनी हाजत न होना, भूख न लगना, बालक ठिन ठिन करता हो।

ओपियम ३ शक्ति।— अचानक अत्यन्त कोष्ठबद्ध, आंतों की क्रिया बन्द और बिलकुल वेगशून्य।

२-बांयटे और मूर्च्छा।

बालकों के इठ जाने का प्रकरण देखो।

३-उदरामय।

चिकित्सा।—कैमोमिला १२ शक्ति।— उत्तम औषध है। पतला हरे रंगका बदबूदार मल, बालक अत्यन्त रोता हो, सूखी खांसी, सोते समय चमक उठना, जगने से सर्वदा गोदी में लेकर टहलाना पड़े, खट्टे दूधकी उल्टी, अनिद्रा।

इपीका ६ शक्ति।— अत्यन्त पेट भरगया हो और उल्टिया होती होंतो, मल झागदार, अनेक तरह

के रंगोंका अथवा घास के समय हरे रंगका।

मार्क्यूरियस-सल ६ शक्ति।—मुंहसे अत्यन्त लार गिरती हो, दस्त जाते समय अत्यन्त वेगहो, रक्त आमाशय, जीभ, गले और मसूढ़ोंमें घाव, पेट कड़ा और फूला हुआ।

पलसाटिला ६ शक्ति।—अपरिपाकके कारण उदरामय, अक्षुधा, दस्तोंका रात्रिके समय बढ़ना।

पाडोफाइलम ६ शक्ति।—जो दांत निकलेहों उनका किडकिडाना, उदरामय, हरा वा सफेद खड़ियाके समान मल, झागदार, अजीर्ण मल, अत्यन्त भूख किन्तु पेटमें कुछभी पहुचतेही दस्तहो।

४—ज्वर।

चिकित्सा।—एकोनाईट ३, ६ शक्ति।—सबसे पहले देनी चाहिये, विशेषकर बेचैनी, प्यास, मसूढ़े फूलना, दर्द होना और प्रदाह, माथा गरम आदि लक्षण होने पर।

बेलेडोना ३,६ शक्ति।—क्रुद्ध बालक।

कैमोमिला १२ शक्ति।—एकोनाईटके उपरान्त देना चाहिये, विशेषकर यदि बालक सर्वदाही ठिनठिनाताहो और गोदीमें चढकर घूमना चाहताहो।

जैलसीमीनम ६,१२ शक्ति।—अनिद्रा, चिल्लाकर रोना और इधर-उधर करवट बदलना।

ब्रायोनिया ६ शक्ति।—शरीरमें दर्द, अत्यन्त खांसी,

श्वास कष्ट, फोफुवड, जो कुछ खाया जाय उसीकी उल्टी हो जावे।

वेलेडोना ३,६ शक्ति ।—मस्तकमें रक्ताधिक्यके साथ चहरे और आंखोंका लाल रंग, हाथ पैरोंमें बांयठ, अधखुली आंखोंसे सोना।

ज्वरके समय बहुतही लघु आहार देना चाहिये। दूध धन्द्कर थोडा थोडा वार्लीका पानी देना चाहिये।

९—अनिद्रा और बेचैनी।

चिकित्सा ।— **वेलेडोना ६ शक्ति**——सोनेकी इच्छाहो किन्तु नींद न आती हो और चमककर और रोकर जग पडना।

एकोनाइट ३,६ शक्ति ।—ज्वर रहनेपर।

कैमोमिला ।—पेटका दोष, पेट अफरजाना अथवा आहारका अनियम। प्राय: कफिया और ओपियमसे फायदा मालुम होताहै। यदि और कोई विशेष उपसर्ग नहीं तो अनिद्राके लिये कफिया बहुत अच्छी औषध है।

सहकारी उपाय ।—नींद के समय अन्धेरे मकान में स्थिर भाव से सुलाकर माथे पर हाथ फेरने और आहिस्ते आहिस्ते थपकारते हुए सुरके साथ गानेसे प्राय शीघ्र निद्रा आजाती है।

१०-देरसे दांत निकलना।

चिकित्सा ।—**कैल्केरिया कार्ब १२,३० शक्ति** ।—

देर से दांत निकलने के कारण उदरामय, शरीर दुबला और कमज़ोर, सोते समय सब शरीर की अपेक्षा मस्तक पर अधिक पसीने, पेट बड़ा, गलेकी सब गांठों का फुलजाना।

साइलेशिया १२, ३० शक्ति।— कृमिदोष, अत्यन्त लार गिरना, मसूढ़ों में हाथ देकर खींचना, रात्रि के थोड़ा थोड़ा ज्वर और मस्तक अत्यन्त गरम, सन्ध्या के समय मस्तक में बहुत खट्टी बदबू वाले पसीने।

प्रायः सामान्य नियमों से जैसे कड़ी चीज काटने के लिये देने से फायदा होजाता है। दांत निकलने में अत्यन्त कष्ट हो तो नश्तर से सामान्य थोड़ासा काट देने से भी दांत निकल आकर सब कष्ट दूर होता है।

दांतों में कीड़ा लगना।

बालकपन में किसी किसी के दांत नष्ट होकर बहुत कष्ट देते है। रोग के कारण दांत नष्ट होते है किन्तु साधारणतः लोग खयाल करते कि दांतों में कीड़े लगजाते हैं। वास्तव में कीड़ोंका दांतों से कुछ सम्बन्ध नहीं है।

चेष्टा करनेसे दांतों का नष्ट होना निवारित होसकता है। इस रोग के प्रधान कारण —[१] दो दांत ऊपर नले मिले निकलना [२] दांतों की उपयुक्त चालना न होना। बालकको कोई कड़ी चीज चबाने को अथवा रौंधने को देनी चाहिये। यदि उपयुक्त चालना नहो तो जावड़े की हड्डी परिपक्व नहीं होती;

मसूढा नरम रहता है और सहज ही रक्त पडता है, दांत भी सहजही शिथिल होकर गिरजाते है। [३] धातुगत दुर्बलता। जिन बातोंसे शरीर की साधारण स्वस्थता में विघ्न पडता है उन्ही सब बातों से शरीर के सब यन्त्र दुर्बल होत हैं।

चिकित्सा।—क्रियोजोट ३,६ शक्ति।—

मुह और पाकाशय से खट्टी बदबूदार रस निकलना, बारम्बार उल्टी, मसूढों में टनटनाहट के साथ दर्द। दांतों में कीडा लगने की यह एक प्रधान औषध है। अत्यन्त कष्ट हो तो क्रियोजोट के मूल असली अरक में थोडी रुई भिगोकर दर्द करने वाले दांत के भीतर लगा देने से शीघ्र ही कष्ट दूर होजाता है।

मार्कूरियस ६ शक्ति।—दांत हिलना, मसूढे से दांत झुक पडे और मसूढे से खून गिरता हो, अधिक लार गिरना, मुह से बदबू आना।

साईलेशिया १२,३०,२०० शक्ति।—दांत नरम, सहज ही टूट जावे, रिकेट [हड्डी और परिपोषणादि का बिगडना] दोष वाली धातु।

स्टाफिसेग्रिया ६ शक्ति।—दांत काला होजावे, दांत हिलता हो, मसूढा रक्तशून्य, सूजा हुआ और टन टनाहट।

सहकारी उपाय।—कारणके प्रति ध्यान रखने से ही दांत में कीडा लगना अच्छा होसकता है। दांतोंको

साफ रखना अत्यन्त अवश्यकीय है । मीठा जितना कम खाने को दिया जाय उतना ही अच्छा है । मुह बन्द करके सोना दन्त रक्षा का एक प्रधान उपाय है अतएव बाल्यावस्था से ही बालक को मुह बन्द कर सोने की आदत डलवानी चाहिये ।

प्रदर स्राव ।

(ल्यूकोरिया)

छोटे छोटे बालक और बालिकाओंके पेशाव और योनि द्वारा कभी कभी श्वेत प्रदरके समान एक प्रकारका मवाद गिरते हुए देखा जाताहै । सफाई और सुथरापन न रखनेसेही यह रोग होता है, कीडोंकी उत्तेजना अथवा धातुगत दोष सेभी उत्पन्न होसकता है ।

चिकित्सा ।—कैलकेरिया-कार्ब ११,३० शक्ति ।— गण्डमाला दुषित धातु, शरीर मोटा थलथला, दोनों पैर ठंडे और गीले ।

ग्राफाईटिस १२,३० शक्ति ।—स्राव अधिक, बालक का चर्म असुस्थ, कानके पीछे और शरीरके जिस जिस स्थानमें चर्ममें सलवट पडें उसी उसी स्थानमें घाव होजावें ।

नक्सवोमिका ६,३० शक्ति ।—बदबूदार स्राव, कपडे में पीले रंगका दाग लगना स्वाभाविक कोष्ठबद्ध धातु ।

पलसाटिला ६,३० शक्ति ।—दूध के समान प्रदर, सब स्थान सूजे हुए ।

मार्क्युरियस ६ शक्ति।—एक अच्छी औषध है।

सीना ३०,२०० शक्ति।—क्रमिदोष रहने पर।

सलफर ३०,२०० शक्ति।—अशुष्य चर्म, शरीर में सूखा खाज, प्रसरस्राव की यन्त्रणा, उससे सब स्थानों में घाव हों।

औषध प्रयोग।—प्रातःकाल और सन्ध्याके समय दिनमें २ बार।

सहकारी उपाय।—थोड़े गरम पानीसे स्थानको धोना, स्वास्थ्यकर चीज भोजन, खुली साफ हवामें यथोचित व्यायाम करना अत्यन्त आवश्यकीय है।

कृमि।

चिकित्सा।—ऐन्टिम क्रूड ६ शक्ति।—सफेद लेपसे ढकी हुई जीभ, सफेद और आमके साथ उदरामय।

सीना ६,३०,२०० शक्ति।—नाक खुरचना, आंखों के चारों ओर काला मण्डलाकार दाग, सोते समय तड़पना और अचानक चिल्लाकर रो उठना, जी मिचलाना और उलटी, पेटमें दर्द, मलद्वारमें खुजली, सफेद गाढ़ा पेशाब, कीड़ोंके कारण मृगी के धायठे अथवा और कोई वायु रोग होतो सीना फायदा करता है।

मार्क्यूरियस ६ शक्ति ।—सफेसा अथवा हरासा रक्त मिला हुआ मल और कांखना, मुह से दुर्गन्ध निकलना, अधिक लार गिरना, रात्रि के समय तड़पना ।

सलफर ६,३० शक्ति ।—कीड़ों के कारण पेट दर्द, कोष्ठबद्ध ।

आर्टिका १ शक्ति ।—कीड़ों के कारण मलद्वार मे अत्यन्त खुजली, विशेषकर रात्रि के समय । इस के अतिरिक्त आर्सेनिक, कैलकेरिया, इग्नेशिया, पलसाटिला, सेन्टोनाइन और टिउक्रियम आदि औषधों की कभी कभी आवश्यकता होती है ।

औषध प्रयोग ।—प्रात काल और सन्ध्या के समय दिन में २ बार ।

सहकारी उपाय ।—शीघ्र ही आराम की आवश्यकता होने पर नमक के पानी की पिचकारी देना अच्छा है । मलद्वार पर सरसों का तेल लगाये रखना अच्छा है। आहार पर विशेष ध्यान रखना चाहिये ।

और और लक्षण कीड़ों के उपद्रव के बयान में देखो ।

बिछौने में पेशाब कर देना ।

बहुतेरे बालकों को यह बहुत ही बुरा रोग होजाता है । सर्वदा इस रोग का कारण निर्णय करना अति कठिन है। प्राय मूत्र धारण करने की शक्ति का कम होजाना ही इस रोग का कारण होता है । पेट में कीड़े रहने से भी यह रोग होता है ।

चिकित्सा।—वेलेडोना ६ शक्ति।—यदि केवल रात्रि समय रोग हो तो यह औषध मूत्रधारण करने की शक्ति बढाती है। सोते समय चिल्लाना, गौं गौं करना वा चमक उठना।

सीना ६,३० शक्ति।—कीडों के कारण होनेमें।

कास्टिकम ६ शक्ति।—पहली नींद के समय बेमालूम पेशाब होजाना।

फासफोरिक एसिड ३, ६ शक्ति।—बहुत ही ज्यादा पानी के समान बिना रंगका पेशाब।

फेरम फास ६ शक्ति।—रात्रि में ५।६ बार बिछौने पर पेशाब करना।

जेलसीमिनम १२ शक्ति।—चाहे रात्रि में हो चाहे दिन में पेशाब न रोक सकना।

मूलेन आयेल।—यह नयी निकाली हुई औषध बालकों के बिछौने पर पेशाब करने के रोग की सर्वोत्तम औषध है। यदि और और औषधोंसे फायदा न हो तो प्रत्येक मनुष्य को इस औषध की परीक्षा करना उचित है।

सहकारी उपाय।—कडे बिछौने पर सुलाना चाहिये। बालक को चित्त न सोने दे। बालक को सुलाते समय नितम्बों के नीचे तकिया अथवा और किसी कपडे लपेट कर ऊंचाकर सुलाना चाहिये सोते समय थोडे

गरम पानी से कमर आदि स्थानों को पोंछ देना अच्छा है । खुली हुई हवा में खूब कसरत करना बहुत उपकारी है । परन्तु शरीर को थकाना बिलकुल न चाहिये ।

अवारित मूत्रस्राव का प्रकरण देखो ।

ज्वर ।
(फीवर)

बालकों के ज्वर में ऐसा कोई विशेष फरक नहीं है । अनेक कारणों से ज्वर हो सकता है । उन्हीं कारणों पर दृष्टि रख कर चिकित्सा करनी चाहिये ।

चिकित्सा ।—बालकों के ज्वर की प्रधान औषध ऐकोनाईट, कैमोमिला, काफिया, जेलसीमीनम, बोराक्स इग्नेशिया, मार्कुरियस, नक्सवोमिका और पाडोफाईलम है ।

एकोनाईट ३,६ शक्ति ।—अत्यन्त उत्ताप और प्यास, अनिद्रा अथवा निद्राके समय बेचैनी, सोते सोते बालक कष्ट से अचानक चमक कर रो उठे ।

बेलेडोना ३,६ शक्ति ।—अत्यन्त कांपना, चमक और उछल पड़ना, चहरा लाल, दोनों आंखें लाल, चहरेकी गरमी, मस्तक में अधिक रक्तागम ।

बोराक्स ६ शक्ति ।—बालकको नीचा झुकानेसे डर मालुमहो, बालकका मस्तक, चहरा और हाथोंके तलवे अत्यन्त गरम, प्रात कालकी निद्राके समय पसीना, गोदी में लेनेसे सर्दी मालुम हो ।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति ।—शरीरकी अत्यन्त गरमी और लाल वर्ण, बारम्बार पानी पीनेकी इच्छा, अत्यन्त बेचैनी, विशेषकर रात्रिके समय तड़फना, कराहना, चिल्लाना, मस्तक में यहांतक कि बालाके अन्दरभी गरम पसीना, श्वास जल्दी जल्दी, खांसी, श्लेष्माके कारण घड़ घड़ शब्द।

काफिया ३ शक्ति ।—ज्वर वैसा कुछ, अधिक नहो किन्तु अनिद्राही प्रबल उपसर्ग हो, नींद न आवे अथवा सोते समय तड़पताहो और बारम्बार चमककर जग पड़ताहो, ठिनकना, एकबार हसना और थोड़ी ही देर बाद फिर रोना।

जेलसीमीनम ६,१२ शक्ति ।—रात्रिको तकलीफ बढ़ना, चहरा मानों कालेसे रंगका लाल होरहा है, अत्यन्त स्नायविक बेचैनी, सिर घूमना, बालकको सर्वदा गिरजाने का भय रहना, थोड़ेही दिनमें अधिक दुर्बल, माथा सीधा कर उठ वा बैठ न सकना, उजाला वा शब्द सह्य न कर सकना।

इग्नेशिया ६ शक्ति ।—चिल्लाकर रोकर नींद से जागना, और सब शरीर का कांपते रहना, बालकों क गायठें, हात पैरों का इठना।

मार्कूरियस ६ शक्ति ।—पाकाशय और पट आदि स्थानोंको दबानेसे दर्द, हरा आम मिला हुआ मल और दस्तकी हाजत, चहरा कुछ पीलासा, पेशाब लाल रंगका और बदबूदार, मुहमें छाले, ज्वर रहने परभी पसीने आना,

उन पसीनोंसे ज्वरको कुछ आराम न होना ।

नक्सवोमिका ६,१२ शक्ति ।—बालक अत्यन्त क्रोधी और रोने वाला, बिलकुल भूख न लगना, पेटमें वायु उत्पन्न होना और पाकाशयमें दर्द, कोष्ठबद्ध अथवा कष्टके साथ बड़ा मल, प्रातःकालके समय रोग बढ़ना, जिगरका दोष ।

पाडोफिलम ३,६शक्ति ।——अल्प विराम ज्वर, यकृतकी अत्यन्त अधिक क्रिया के कारण पैत्तिक ज्वर, दांत निकलने में प्रातःकालके समय हरा और खट्टा उदरामय, प्यास रहना किन्तु भूख नहीं, बालक जो कुछ खावे वह अम्ल होजावे और खट्टी डकार उठना ।

सीना ६,३०,२०० शक्ति ।—— कीड़ों के कारण ज्वर और कीड़ोंका उपद्रव होनेपर ।

सर्दी ज्वर—एकोनाईट, ब्रायोनिया, जेलसीमीनम, मार्कुरियस, नक्सवोमिका ।

प्रवल ज्वर—एकोनाईट, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कैमोमिला, जेलसीमीनम, मार्कुरियस, रस्टक्स ।

पेटके दोषके कारण ज्वर—इपीका, नक्सवोमिका, पाडोफाईलम, पलसाटिला ।

पैत्तिक लक्षणका प्रधान ज्वर—बेलेडोना, ब्रायोनिया, मार्कुरियस, पलसाटिला, रस्टक्स, कैमोमिला, नक्सवोमिका ।

कृमि लक्षण प्रधान ज्वर—सीना, मार्कुरियस, स्पाईजीलिया, सल्फर ।

औषध प्रयोग।—आवश्यकता के अनुसार ३। ४ घंटेके अन्तरसे एक एक मात्रा।

सहकारी उपाय।——अत्यन्त प्यास होतो थोड़ा थोड़ा पानी देना उचित है, क्योंकि प्याससे बालक माता का दूध अधिक न पी ले यहभी ध्यान देनेकी बात है। ज्वर में दूध बन्द कर वार्ली अथवा साबूदानेका पानी पथ्य है।

यकृत पीड़ा।

आजकल बालकोंके विशेषकर शहरों में यकृत का एक प्रधान रोग हो उठाहै। यदि इस रोगकी आरम्भमें ही चिकित्सा न कीजावे तो प्राय प्राणोंका संशय हो जाताहै। गाँवोंकी अपेक्षा शहरोंमें और दरिद्र लोगोंकी अपेक्षा धनी मनुष्योंके घरमें ही इस रोगकी प्रधानता पायी जाती है। उसका यथेष्ट कारणभी है। पहिले बालकों को यकृत पीड़ा इतनी अधिक नहीं पाई जाती थी, किन्तु आजकल ज्वर होते ही यकृत पर पहले ध्यान देना पड़ता है कि कोई रोग तो नहीं है। बहुतसे पिता माताओं जिन्होंने एक बार यकृत पीड़ाके कारण अपनी सन्तान खो दी है, इस रोगका नाम सुनतेही घबरा उठते हैं। वास्तव में बातभी यहहै कि यदि बालक को यकृत पीड़ा हो जावे तो विशेष यत्न, शुश्रूषा और चिकित्सा के बिना आराम नहीं होता। यह क्रमश: बढ़ने लगता है, भीतर भीतर ज्वर थोड़ा थोड़ा रहता है, बालक बहुत रोता

है, ठिनकता है और क्रमश' शरीर दुवला और कमजोर होने लगता है। पेट में दोष रहता है, दस्त साफ नहीं होता, क्रमश' आंख और शरीर पीला पडजाता है, यकृत वढकर पेट के प्राय' सब स्थानों में जम कर बैठ जाता है, प्रवल ज्वर आता रहता है, हाथ पैर फुल उठते हैं, अन्त में बालक बहुत दु ख भोग भोगकर मरजाताहै।

कारण।——इस रोग के प्रधान कारण—(१)खाने पीने का दोष। बहुत छोटेपनसे, उपयुक्त-समय आने से पहले ही मिष्टान्न, आलू, मछली आदि चीज आदर के साथ खिलाना अत्यन्त अनुचित है। इस प्रकार के दुष्पाच्य भोजन उदरामय और यकृत की क्रिया को विगाडते हैं। शहरों में गायके दूध का दोष भी इस रोग का प्रधान कारण है। [२] माता के दूध का दोष। माता के स्वास्थ्य के उपर बालक का स्वास्थ्य विलकुल निर्भरहै, इस बातको सब जानते हैं। माता का स्वास्थ्य अच्छा हो तो दूध भी निर्दोष रहता है। माता के आलस्य और विलासिताके-दोष से तथा अम्ल और अजीर्ण रोग से दूध दूषित होजाता है, इस दूषित दूधके अच्छी तरह न पचने से क्रमश यकृत में विकार पैदा होने लगता है। [३] उपयुक्त व्यायाम का न करना। बडे लोगों के घरों में और शहरों में बालक प्राय नौकरों की गोदी में ही चढे रहते हैं इस से उनको चलने फिरने और खेलने का अवसर नहीं मिलता। परि-णाम यह होता है कि उचित व्यायाम के अभाव से यकृत दोष उपस्थित होता है। इस के सिवाय बालक रात दिन घरों में बन्द रहने के कारण स्वच्छ हवा से वञ्चित रहते

हैं। ग्रामों में और दरिद्र मनुष्यों के घरों में ये सब कुनियम नहीं होने पाते, इस कारण वहां ये रोग बहुत ही कम होते हैं। (४) दस्तावर औषध आदि का प्रयोग। बालकों को बारम्बार जुलाब देना बिलकुल अन्याय है।

चिकित्सा।—इस रोग की प्रधान औषध नीचे लिखे अनुसार हैं। ब्रायोनिया, कैलकेरिया, कैमोमिला, चेलीडोनियम, चायना, जेलसीमीनम, आयोडीयम, काली-कार्ब, लेकेसिस, मार्कुरियस, नक्सवामिका, पाडाफाइलम, सोडीनम, सीपिया, सलफर।

ब्रायोनिया ३,६ शक्ति।—कोष्ठबद्ध मल कठिन और सूखा, खांसी, चहरा पीला, जीभ सफेद सी, प्यास।

कैलकेरिया-कार्ब १२,३० शक्ति।—सोते समय चबाने के समान मुंह चलाना, गण्डमाला दूषित धातु।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति।—यकृत में थोडा थोडा दर्द, श्वासकष्ट, शरीर पीला, जीभ का रंग पीला, कडवा स्वाद, यन्त्रणा।

चेलीडोनियम ६ शक्ति।—कंधों में दर्द, जी मिचलाना, कोष्ठबद्ध, अथवा दुर्बल करने वाला उदरामय, यकृत का दर्द, खाने के उपरान्त आराम।

चायना ६ शक्ति।—यकृत में दर्द, दाबने से अधिक, यकृत बढी हुई और कडी, पेट फूला रहना, शरीर पीला, रात्रि में और भोजन के उपरान्त बढना।

जलसीमीनम ६,१२ शक्ति।—ज्वर और यकृत का दोष।

आयोडियम ६,१२ शक्ति।——यकृतमें दर्द, भूख न लगना, देहमें कमजोरी और दुबलापन, उदरामय, यकृत में दर्द और दाबनेसे दर्द।

काली कार्ब १२,३० शक्ति। ——यकृत बढ़ी हुई, कठिन और दर्द होना।

लैकेसिस १२,३० शक्ति।——यकृत बढ़ी हुई, चमड़ा पीला, जब रोग बढ़ता हुआ दीख पड़े तब देना चाहिये।

मार्क्यूरियस ६ शक्ति।——यकृत बढ़ी हुई, कठिन-दाबनेसे दर्द, दाहिनी ओर न सो सकना, जीभ पीले मैलसे ढकी हुई, पीलिया, प्रबल पिपासा, रातमें बेचैनी, गर्मीके समय शरीरमें खुजली।

नक्सवोमिका ६,१२ शक्ति।——यकृत बढ़ी हुई, कठिन, दर्द होना, कोष्ठबद्ध, अधिक येलोपैथिक औषध व्यवहार करनेके उपरान्त।

पाडोफाईलम ३ शक्ति।—यकृत प्रदाह, कोष्ठबद्ध उदरामय, पीलिया।

सीपिया १२,३० शक्ति।——यकृतकी क्रियामें विकार, पेटकी दाहिनी ओर लगातार दर्द होना, कपाल और आँखें पीली, चद्दरेमें मुहासे के समान पीले रंगके

दाग, आलस्य, भूख न लगना अथवा खातेही तृप्ति, पेट फूल जाना।

औषध प्रयोग।——इस रोगके लिये औषध तजवीज करना कठिन है। कोई औषध तजवीज कर कुछ अधिक दिन तक उसको देकर देखना चाहिये। दिनमें २।३ बार औषध देनी यथेष्ट है।

सहकारी उपाय।—यकृत के स्थान को दिन में २।३ बार सेकने से फायदा दीख पडता है। शरीर को ढककर स्वच्छ हवा में व्यायाम करना अत्यावश्यक है। बालक का सर्वदा गोदी में न रखकर मकान के भीतर खेलने देना चाहिये। दूध सुपथ्य नहीं है, अतएव कम करदेना चाहिये। बार्ली या माबूदाना खानेको दियाजाय। मीठा जितना कम दिया जाय उतना ही अच्छा है। साधारण मिठाई की अपेक्षा दूध और शकर अच्छा है। मानाको अधिक तेल अथवा घी मिले हुए पदार्थ खाना उचित नहीं। मेलिन्स फूड पुष्टिकारक और बलकारी है।

घुघराली खांसी।

यह बालको ही का रोग है क्योंकि ७ वर्ष की अवस्था से ऊपर फिर यह रोग प्राय नहीं होता। श्वासपथ की श्लैष्मिक झिल्ली का प्रदाह ही घुघराली खांसी है। यह दो प्रकार की होती है, एक सामान्य और दूसरी साघातिक।

सामान्य प्रकारका रोग अचानक आरम्भ होता है। बालक रात्रि में अच्छा भला सोता हो, २४ घण्टे उपरान्त अचानक

सूखी खांसी उठकर जाग पड़ता है, श्वासकष्ट, साईं साईं शब्द तथा घुघराली खांसी के और और लक्षण आकर उपस्थित होजाते हैं। यद्यपि इस रोग को देख कर भय होता है किन्तु इस प्रकार की घुघराली खांसी ऐसी कुछ भयङ्कर नहीं होती। यदि सावधानी से इलाज किया जाय तो शीघ्र ही अच्छी होजाती है।

सांघातिक की घुघराली खांसी क्रमश आरम्भ होती है। पहले सब लक्षण सामान्य सर्दीके दिखलाई पड़ते हैं जैसे खांसी, स्वरभङ्ग, गले में दर्द, ज्वर, नाड़ी तेज और कुछ श्वासकष्ट। थोड़े समयके उपरान्त ही खांसी की शकल बदल जाती है—सूखी, स्वरभङ्ग के साथ घुघराली खांसी के समान। जैसे जैसे रात्रि होती जाती है बालकके रोग के लक्षण भी बढ़ते जाते हैं, ज्वर बढ़ता है, श्वासक्रिया अत्यन्त कष्टकर और तेज होजाती है, खांसी के शब्द में खनखनाहट का शब्द होता है, रोगी बेचैन, चहरे पर तकलीफ और बेचैनी मालूम पड़ती है। समस्त रात्रि इसी प्रकार कष्टके उपरान्त प्रातःकाल कुछ कमी होती है और रात्रि की अपेक्षा दिन भर अच्छा रहता है। बालक हंसता है, खेलता है किन्तु फिर जैसे ही रात्रि होने लगती है सब कष्टदायक लक्षण लौट आते हैं। खांसी, शब्द के साथ श्वास चलना, मस्तक पीछे की ओर खिंचा हुआ, बालक हाथ से गला पकड़कर दबाता है और ऐसा मालूम हो मानो दम बन्द होजावेगा, चहरे और मस्तक पर ठंडे पसीने, ज्वर भीतरी पड़ने लगता है, नाड़ी पहले तेज और जोरकी रहती, पीछे क्षीण, अधिक द्रुत (तेज) और विषम [टेढ़ी] होती है, बालक

क्रमश खाट पकड लेता है और अवसन्न होजाता है अन्त में क्लान्त अथवा दम बन्द होकर प्राण त्याग देता है।

चिकित्सा।— ऐकोनाईट ३,६ शक्ति।— रोग की प्रथमावस्था में देना चाहिये—प्रबल ज्वर, सूखा गरम शरीर, अत्यन्त बेचैनी, ठंडी पश्चिमी हवा लगने से रोग, निगलने से बालक रो उठे मानो गले में दर्द है, श्वास निकालने में जोर का शब्द किन्तु श्वास लेने में नहीं, प्रत्येकबार श्वास निकालने के उपरान्त ही स्वरभङ्ग के साथ सूखी खांसी।

बेलेडोना ३,६ शक्ति।—मस्तक में उत्ताप, चहरा और आंखें लाल, गले में भयानक दर्द, गले पर हाथ रखने से ऐसा मालूम हो मानो दम बन्द होता है, सूखी घबराहट के साथ आक्षेपिक खांसी, कराहना, निद्रालु किन्तु सो न सकता हो, सोते समय चमक कर उछल पडना।

कैलकेरिया १२,३० शक्ति।— मोटा थलथला शरीर, माथे पर अधिक पसीने आना, श्वास लेने में शब्द और कष्ट, उस से बालक तकलीफ से रो उठे, नींदके उपरान्त बढना (लैकेसिसके समान), गण्डमाला दूषित धातु।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति।—सर्दी से पैदा हुई घुंघराली खांसी, अधिक स्वरभङ्गता, गले में सांई सांई और घड घड शब्द, सूखी खांसी, रात्रि में यहातक कि

निद्रावस्था में ही अधिक हो, बालक अत्यन्त चिड़चिड़ा, रोने वाला, केवल गोदी में बैठ कर ही टहलना चाहे।

हीपर सलफर ६,१२ शक्ति।—सरल घड़ घड़ शब्द के साथ सांस रोकने वाली खांसी, ऐसा मालूम हो मानों सब वायुपथ श्लेष्मा से परिपूर्ण हो रहा है [ऐन्टिमटार्ट के समान], प्रबल खांसी का आक्रमण, ऐसा मालूम हो मानों बालक का दम बन्द हो जावेगा अथवा बालक को उल्टी होजावेगी, बालक शरीर से कपड़ा हटाने की इच्छा न करे और शरीर के किसी स्थान में ठंड लगते ही खांसी उठे, निद्रालुता और बहुत पसीने।

काली बाईक्रामिक ३,६ शक्ति।—साघातिक प्रकार की घुनगाली खांसी, रोग क्रमशः उपस्थित हो, पहले थोड़ा श्वासकष्ट और स्वरभंग के साथ खांसी, जैसे जैसे रोग बढ़ता जाय वैसे ही वैसे श्वासकष्ट अधिक होता जाय, श्वास वायु आने जाने में ऐसी मालूम हो मानो किसी धातु के बने हुए नल में होकर आती जाती है; स्वरभंग, घन् घन् शब्द के साथ सूखी खांसी, टांसिल गांठ और श्वासनली का लाल रंग, सूजी हुई और एक कृत्रिम पर्दे से ढकी हुई, मस्तक पीछे की ओर खिंचा हुआ, श्वासनलीके बीच में शब्द सुना जाय।

लैकेसिस १२,३० शक्ति।—रोग की सांघातिक अवस्था में जब फेफड़े के पक्षाघात की आशङ्का हो, लैरिंक्स छूने से अत्यन्त दर्द, बहुत ही सामान्य दाब लगने नहीं आक्षेपिक

श्वास रोकने वाली खांसी होना, गले में कुछ भी कसकर बांधना सहन न होना, सोते समय तड़पना और कराहना, सोने के उपरान्त कष्ट और दुःख का बढ़ना।

फागफोरस ६,१२ शक्ति।—अत्यन्त स्वरभङ्ग, लैरिन्क्स में दर्द इस से बात कहने में कष्ट होना अथवा बात न कह सकना, खांसते समय सब शरीर कांपना, घुंघ राली खांसी के उपरान्त स्वरभङ्ग रह जाने पर यह औषध दी जाती है।

स्पांजिया ३, ६ शक्ति।— सामान्य घुंघराली खांसी और खरखरी शब्दयुक्त खांसी, सा सा शब्द के साथ खांसी जैसे- लकड़ी काटते समय करोंत का शब्द होता है अथवा श्वासरोधक आक्रमणत, जब तक मस्तक पीछे की ओर न किया जाय श्वास न लियाजासके, खांसी सूखी।

ऐन्टिमटार्ट ३,६ शक्ति।—रोग की शेष और सांघातिक अवस्था में, प्रत्येकबार खांसते समय मालूम हो कि थोड़ा कफ निकला है किन्तु वास्तव में बिलकुल न निकले (इपीका के समान), कष्टक साथ श्वासक्रिया, तेज, छोटी, स्वरभङ्ग के साथ या सांई सांई शब्द के साथ, बहुत ही कष्ट से छाती फैलाई जासके, बहुत ही तकलीफ और ऐसी दुबलता कि रोगी खाट पकड़ले, कपाल और कभी कभी सब शरीर ठंडे पसीने से तर होजावे।

औषध प्रयोग।—यदि रोग कठिन आकार धारण करे तो आराम होने तक १५।२० मिनट के अन्तर से

एक एक मात्रा औषध देनी चाहिये । रोग यदि इतना भयङ्कर न होतो दो दो घण्टे में एक बार ।

सहकारी उपाय ।—गरम पानी का सेक इस रोग में विशेष उपकारी है । गरम पानी में कपडा भिगोकर, इस को निचोड लेना चाहिये फिर उस से सेक कर सूखी फलालेन बाध देनी चाहिये । वारम्वार इस प्रकार सेकते रहना चाहिये । घुटने तक गरम पानी से डुबो रखने से विशेष फायदा दीख पडता है । जैसे जैसे पानी ठडा होता जाय उस में और गरम पानी मिलाते रहना चाहिये । प्रत्येकबार इसी प्रकार १५।३० मिनट तक डुबा-रखना चाहिये । पैर पानी से निकाल लेने पर अच्छी तरह सूखे कपडे से पोंछकर सुखा लेने चाहिये और पीछे गरम कपडे से ढक रखने चाहिये ।

जिस मकान में रोगी हो उस में बहुत आदमियों का रहना उचित नहीं है । बहुत सी स्वच्छ वायु की अधिक आवश्यकता है, इसके सिवाय इस बात पर भी ध्यान रखना चाहिये कि प्रवल वायु शरीर में न लगे । साबूदाना, बार्ली आदि हलका पथ्य फायदा करता है ।

दूध छोडदेना ।

हमारे देश में वालक से माता का दूध छुडवा देने का कोई निर्दिष्ट समय वा नियम नहीं है । साधारणत: जब तक फिर सन्तान नहो वालक को स्तन पान कराया जाता है । यह बहुत बुरी रिवाज है । वालकके दांत निकलते ही

और एक वर्ष की अवस्था होते ही माता का दूध छुडा देना उचित है। बालक को दूध छुडाने समय यह देख लेना चाहिये कि बालक सुस्थ शरीर है अथवा नहीं और दांत निकलने के उपद्रव होते हैं वा नहीं। यदि माता का शरीर पीडित और दुर्बल हो अथवा स्तनदुग्ध दूषित हो तो जितनी जल्दी दूध छुडा दिया जाय उतना ही अच्छा है। यदि बालक दुर्बल हो अथवा किसी प्रकार का रोग उस के शरीर में हो तो जब तक सुस्थ और सबल न होजाय माता का दूध छुडाना उचित नहीं। इस विषय में जो कुछ लिखागया है उससे स्पष्ट मालुम होसकता है कि दूध छुडाने से पहले माता और सन्तान दोनों की शरीर के और स्वास्थ्य सम्बन्धीय दशा पर ध्यान रख कर दूध छुड-वाना चाहिये। बालक का दूध छुडवाना एक सामान्य विषय नहीं है।

बालक का दूध छुडाना निश्चय होने पर क्रमशः दूध छुडाना और दूसरी उपयुक्त खाने की चीज का अभ्यास कराना उचित है। अचानक दूध छुडा देने से माता और सन्तान दोनोंही के लिये हानिकारक हो सकता है। बालकको दूध छोडनेका अभ्यास कराना कुछ सहज काम नहीं है। यदि बालकको मातासे जुदा न रखा जायके विशेषकर रात्रि के समय तो कदापि दूध नहीं छोडा जा-सकता। बालकको लेकर एक बिछौने पर सोना नहीं होता। किसी दूसरी होश्यार स्त्रीके ऊपर बालकके खाने, सोने और आहार आदिका भार देना पडता है। यदि स्तन में अधिक दूध होतो इतनी जल्दी स्तन त्याग कराये बिनाभी चल सकताहै, किन्तु यदि कराना ही होतो यही

सावधानी से कराना उचित है, नहीं तो स्तनों में दूध जमकर रोग उत्पन्न हो सकता है।

हम पहले ही कह चुके हैं कि एक ओर जैसे बालकका दूध छुड़ाया जाय दूसरी ओर उसी प्रकार दूधके बदले कोई उपयुक्त खाद्य खिलानेका अभ्यास कराना उचित है। दूसरी किसी चीजके खानेकाभी अभ्यास सावधानी से कराना चाहिये। यदि इस विषयमें सावधानी न की जाय और चाहे जो चीज खानेको देदीजाय तो शीघ्रही उदरामय आकर उपस्थित हो जाता है। हमारे देशमें इतने बालकोंको जितनी कठिनाई भोगनी पड़ती है और देशमें उतनी नहीं भोगनी पड़ती इसका कारण यही है कि हमारे देशमें बालकको दूध छुड़ाते समय जो कुछ खानेको दिया जाता है वह उसके लिये उपयुक्त, सहजमें पचने वाला और पुष्टिकर है अथवा नहीं इसपर पहलेहीसे कोई ध्यान नहीं देता। बालकके ऊपर दादा, दादी अथवा नानी, नाना, लाड़ कर मिष्टान्न अथवा और दुष्पाच्य वस्तु खानेको देदेते हैं और उदरामयको बुला लेते हैं। इस बेजा लाड का कुफल हाथोंहाथ मिलताहै। बालक शीघ्रही रोगी होजाताहै, जैसे बालक सदा खाने को मांगता रहता है उसी प्रकार उदरामय होने पर सर्वदा मल त्याग करता रहता है। इस प्रकार बालक क्रमश दुबला और कमजोर होता जाता है, चल नहीं सकता, पेट क्रमश बढ़जाता है, यकृत पर क्रमश रोगका असर पड़ता है, थोड़ा थोड़ा ज्वर भी होने लगता है। इस सांघातिक रोगसे बालककी रक्षा करना प्राय. कठिन हो जाताहै।

यदि स्त्री फिर गर्भवती हो और स्तनोंमें दूध होतो यह दूध सन्तानको कभी नहीं देना चाहिये । यह दूध सन्तानके लिये विषतुल्य । यह दूध बहुतही कठिनता से पचता है । गर्भावस्था का दूध पीना भी इस रोग का एक दूसरा कारण होता है । गर्भसंचार के पहले ही बालक से दूध छुड़वा देना चाहिये, किन्तु यदि गर्भसंचार बहुत शीघ्र हो तो गर्भसंचार हुआ है यह जानते ही बालक को माता के स्तन का दूध कभी न पीने देना चाहिये ।



दूध पिलाने वाली धाय तजवीज करना ।

यदि किसी कारण विशेषसे बालक को माता का दूध न पिलाया जासके अथवा दुर्भाग्यके कारण बालक मातृहीन होजाय तो धाय की आवश्यकता होती है । ऐसी दशा में ऊपर का दूध पिलाने की अपेक्षा धायका दूध पिलाना अच्छा है । दूध पिलाने वाली धायको तजवीज करना और अच्छी धायका मिलना बड़ा कठिन है । धायका बिल्कुल आरोग्य होना आवश्यक है । धाय और उसकी सन्तानकी अवस्था गाता और उसकी सन्तानकी अवस्थासे बहुत कुछ मिलती जुलती होनी चाहिये । धायका सब तरह चर्म रोग और धातुगत दोषसे रहित होना उचित है, जैसे दाद, खाज, घाव, गाठ सूजना, गण्डमाला, उपदंश, प्रदर, यक्ष्मा इत्यादि । धायके स्तन के दूधकी परीक्षा करलेना उचित है । धाय दयार्द्रचित्त, स्नेहवती, साफ स्वच्छ रहने वाली अवश्य होनी चाहिये । जो धाय बालकसे प्यार नहीं रखती वह राक्षसीके समान है ।

ठीक धाय मिल जानेसेही निश्चित होना उचित नहीं धायके दैनिक आहार व्यवहार आदिके प्रतिभी विशे ध्यान रखना आवश्यक है। धायको दुष्पाच्य पदार्थ औ अताईकी दवा नहीं खानी चाहिये, असल बात यह है कि बालक की माताके समान उसको भी सब तरह सावधानी से रखना भी आवश्यकीय है, नहीं तो धाय के दोष से प्राय बालक रोगी होजाता है।

तेईसवां अध्याय।

आभिघातिक(चोट आदि लगनेकी)चिकित्सा।

जलना।

जलन तीन प्रकार होता है। (१) केवल जलजाना, उस से रक्ताधिक्यता, चमडे का प्रदाह, सुर्खी आदि उत्पन्न होती है किन्तु फफोला नहीं पडता। [२] फफोला पडता है, चर्म का प्रबल प्रदाह उत्पन्न होता है। [३] गला हुआ घदबूदार घाव होजाता है, उस में कभी केवल चर्म पर ही असर होता है और कभी चमडे के नीचे वाले सब तन्तुओं पर भी असर होता है, इत्यादि। तीसरे प्रकार का जलना ही सब से अधिक सांघातिक होता है। हाथ पैर आदि में जल जाने से यदि उसी समय गरम पानी में डुबादिया जाय तो जलन बहुत कम होजाती है।

जितना गहरा और जितने ज्यादा बीच में जल जावे उतनाही अधिक कष्टदायक और और प्राण नाशक होताहै। यदि

है। छोटे छोटे बालकों की वांयठे आकर मृत्यु होती है। बड़े मनुष्यों के जल जाने से उतना साघातिक नहीं होता किन्तु विसारा अथवा सर पड़ते ही भय का कारण हो जाता है। मस्तक अथवा पेट जल जाना विपदजनक होता है।

चिकित्सा।—चिकित्सा के विषय में सब से आवश्यकीय विषय यह है कि जले हुए स्थान को वायु से रक्षा करनी चाहिये, अतएव किसी स्थान के जलते ही औषधादि ऊपर लगाकर उसी समय उस को ढक देना चिकित्साका एक प्रधान अङ्ग है। इस के लिये बहुत सी औषधों का व्यवहार होता है। यथा—

१। पेलफाइल।—जल जाने पर जब तक फफोला न उठे तब तक इस औषध का ऊपरी प्रयोग करनेसे विशेष उपकार दीख पड़ता है।

२। कैन्थेरिस।—ऊपर ही ऊपर जल जाने से अर्थात् बहुत गहरा न जलने से इस औषध का ऊपरी प्रयोग करना बहुत फायदा करता है। एक बोतल पानी में १० बूंद औषध मिलाकर इस पानी में कपड़ा भिगोकर जले हुए स्थान पर सर्वदा ढके रखना चाहिये। उपरान्त जलन आदि कष्टकर लक्षण सब दूर होने पर जले हुए स्थान पर सामान्य मरहम या मक्खन लगादेना चाहिये।

३। मैदा और तेल।—यह सर्वदा सहज में ही पाई जासकती है। किसी स्थान में जलते ही उस के ऊपर नारियल का तेल डाल कर ऊपर से मैदा अच्छी तरह बुरक देनी चाहिये और जले हुए स्थान को पूरे तरह पर ढक देना चाहिये।

४। ग्लीसरिन। मुह गला अथवा पाकाशय आदि स्थानोंके जल जाने पर यह एक अच्छी औषध है। ग्लीसरिन और पानी बराबर बराबर मिलाकर उसकी कुल्ली करानी होगी। इस प्रकारके जलनेके लिये आर्टिका यूरेन्स (एक ड्राममें १। २ बूद औषध) मिलाना के लिये अच्छी औषध है।

५। आर्टिका यूरेन्स।——सब प्रकारके जलने के लिये ऊपरही ऊपर सामान्य जलना हो अथवा गहरा और सांघातिक जलना हो, यह अत्यन्त मूल्यवान औषध है। व्यवहार पहले लिखे हुए कन्थेरिसके समान। घाव पर इसका मरहम लगाने से घाव शीघ्रही सूख जाता है।

जल जानेके बाद ज्वर आदि धातुगत ज्वर लक्षण कभी कभी दिखलाई देतहैं उसके लिये नीचेकी औषध की आवश्यकता होती है। नीचे लिखी हुई औषधें लक्षणोंके अनुसार देनी चाहिये।

एकोनाईट ३,६ शक्ति।——सर्दी लगकर प्रबल ज्वर, गरम सूखा शरीर और अत्यन्त प्यास, अत्यन्त भय, घबराहट, बचैनी और स्नायविक उत्तेजना।

आर्सेनिक ६,३० शक्ति।——काले रङ्गका पानी के समान बदबूदार उदरामय, बहुतही जल्दी कमजोरी होना और ऐसी शिथिलता कि रोगी खाट पकडले और जीवनी शक्तिका कम होना, अत्यन्त प्रबल प्यास, बार बार थोड़ा थोड़ा पानी पीना, बहुत घबराहट, बेचैनी और मृत्युभय।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति।——सांघातिक, जल जानेके उपरान्त वायटे, दर्दसे पागल के समान होना,

बहुतही असहिष्णु (सहन करनेकी शक्ति न रहना) और अधीर, किसी बातका भलमनसातके साथ उत्तर न दे सकना, चहरे और मस्तकपर गरम पसीने।

चायना ६,३० शक्ति।——बहुत स्थानको घेरकर मवाद उत्पन्नहो, इसीसे कमजोरी, बिना दर्दके उदरामय, काले रंगका मल, पानीके समान, विशेषकर रात्रिके समय।

साइलेशिया ६,३० शक्ति।——जब घाव इत्यादि सूखतेहों किन्तु धीरे सूखें, अथवा स्थान स्थानमें मांस वृद्धि हो उठे।

सलफर ३० शक्ति।——जब स्थान स्थान में मांस वृद्धि दिखलाई पड़े अथवा घाव सूखनेका कोई ढग दिखलाई न पड़े, घावके चारों ओर अत्यन्त खुजली, जलन और प्रदाह।

यदि कोई स्थान जल जावें तो उसको उसी समय रूईसे ढक देना चाहिये। जले हुए स्थानमें हवा लगाना बिलकुल निषिद्ध है। यदि बहुतसा स्थान जलगया होतो उसको एक साथ खोलकर साफ करना उचित नहीं, थोड़ा थोड़ा खोलना और उतनाही साफ करलेना। जबतक दुर्गन्ध उत्पन्न नहो, रोगीको कष्ट मालुम नहो, रुई मैली नहो, तबतक घावके स्थानको खोलकर रुई आदि जितनी कम बदली जायगी उतनी जल्दी जले हुए स्थानमें चमड़ा उत्पन्न हो जायगा। यदि बड़े बड़े फफोले पड़ जायें तो सावधानीसे सुईसे तोड़कर पानी निकाल देना चाहिये, इस घावपर त्वचा

रखना चाहिये कि चमड़ा न उड़जाय। घाव धुलनेके समय ध्यान रखना चाहिये कि किसी प्रकार अङ्ग विकृति नहो जाय।

—o—

सर्दीसे हाथपैर फटना।

शीत ऋतुमें सर्दी लगकर हाथ, पैर, कान, नाक, आदि स्थान एक प्रकार फट जाते और उसमें दर्द होता है। यह कभी कभी थोड़ा बहुत फूल जाताहै, खुजली चलती है, जलन होती है और नरीता है। यदि अधिक गहरा फट जावे तो चमड़ेके नीचे रस उत्पन्न होजाता है और यह रस निकल जानेपर एक प्रकारका घावसा रहजाता है। इस घावको कठिनतासे आराम होता है।

चिकित्सा।—अत्यन्त जलन और खुजली, तथा पानी भरा हुआ छाला होतो १ छटाक पानीमें १५।२० बूंद टिंचर वैन्थेरिस मिलाकर लोशन तयार करलेना चाहिये तथा इस लोशनसे दर्दके स्थानको सर्वदा धोना चाहिये। यदि जलन हो और कुछ कुछ होती होतो इसी प्रकार आर्निका लोशन फायदा करता है।

लक्षणों के अनुसार नीचे लिखी हुई औषध खानी चाहिये।—

आर्सेनिक ६,३० शक्ति।——गरम और उजले लाल रंगका स्थान हो, उसमें जलन हो, घाव होना, पैरकी अंगुलियों तकमेंभी इसी प्रकार घाव फैला हुआ।

फासफोरस ६,३० शक्ति।——विशेषकर हाथ

पैरोंकी अंगुलियों में फटजाना और घाव होना, घाव नील से लाल रंगका, अत्यन्त खुजली और जलन होना।

पलसाटिला ६ शक्ति ।——उत्तम औषध है।

सलफर ६,३० शक्ति ।—पैरकी अंगुलियों में घाव और फफोले।

—o—

घाव अथवा कटजानेसे घाव।

कोई स्थान कट जानेसे नीचे लिखे हुए नियमों पर ध्यान रखना चाहिये —

[१]—खून गिरना बन्द करना चाहिये। यह अनेक प्रकार से किया जासकता है, जैसे घाव के स्थान को दबा रखने से, ऊंचा कर रखने से ठण्डा पानी अथवा बरफ लगाने से इत्यादि। यदि कोई धमनी कट जाय तो उस में से बड़े जोर से रक्त निकलने लगता है। ऐसे अवसर पर धमनी के मुंह को बांध देना पड़ता है। घाव के स्थान पर कैलेन्डुला लोशन प्रयोग करना चाहिये। इस से खून गिरना बन्द होगा और मवाद न पड़ेगी।

[२]-घावके स्थानको साफ पानी से साफ करना चाहिये। जिन किसी चीज से कटजाता है प्राय उसका कुछ अंश मास के भीतर रहजाता है। अतएव घाव के स्थान को बांध देने से पहले अच्छी तरह परीक्षा कर देखनी चाहिये कि उस के भीतर किसी प्रकार का मैल, बाल, कांचका टुकड़ा,

कांटा अथवा लकड़ी आदिकी कोई फांस तो नहीं रहगयी है।

[३]—घाव के दोनों मुहों को इकट्ठा कर बांध देना चाहिये। इस से बहुत शीघ्र मुह बन्द रहने के कारण घाव सूख जाता है।

[४]—घाव के स्थान को स्थिर रखना चाहिये। हाथ पैर कट जाने पर काम करना अथवा घूमना निषिद्ध है।

[५]—घावके स्थानको प्रतिदिन स्वच्छ रखना चाहिये। साफ करने के समय पहले गरम पानी से, घाव के ऊपर के सब कपड़े और घाव भिगोकर सावधानी से खोल डालने चाहियें। यदि इस प्रकार न किया जाय और जल्दी और जोर से कपड़े खाले जाय तो रोगी को कष्ट होता है और अधिक रक्तस्राव होकर घाव सूखने में देर लगजाती है।

चिकित्सा।—टिंक्चर कैलेण्डूला, मूल अशल अरक,–सब प्रकार के घावों पर अथवा कट जाने पर इसका ऊपरी प्रयोग फायदा करता है। दश भाग पानी में एक भाग औषध मिलाकर उस में कपड़ा भिगोकर सर्वदा घाव के ऊपर ढके रखना चाहिये। इस प्रकार करते रहने से घाव शीघ्र सूख जाता है और उस में मवाद नहीं पड़ने पाती।

ऊपर लगाने की दवाइयों के सिवाय कभी कभी खाने के लिये भी दवा देने की आवश्यकता होती है। पर्यायक्रम से एकोनाईट, वा आर्निका व्यवहार करने से प्राय: फायदा होजाता है। घाव में अत्यन्त दर्द हो, सूज गया हो, मस्तक में रक्ताधिक्य के कारण सिर दर्द आदि लक्षणों में बेले-

होना, घाव पक उठने पर हीपर-सलफर और सूखने में विलम्ब हो तो साईलेशिया देना चाहिये।

ऐकोनाईट ३,६ शक्ति।—ज्वर, भय और मानसिक उद्वेग, रक्तप्रधान धातु वाले मनुष्य के लिये उपयोगी है।

आर्निका ३,६ शक्ति।—ऊपरी चोट आदि लगकर कैसे भी धातुगत लक्षण उपस्थित हों इस औषध के सेवन करने से आराम होता है। तरोंता, मानों पिचल आनेके समान [रसटक्स भी उपकारी है], चाहे जैसे बिछोने पर सोवे सभी कड़े मालुम हों।

कैमोमिला ६,१२ शक्ति।—बहुत मवाद पैदा हो और अत्यन्त दर्द, घाव सूखना न चाहता हो, बहुत अधीरता और कष्ट न सह सकना।

चायना ६,३० शक्ति।—अधिक रक्तस्रावके कारण दुर्बलता और ग्लक्षय (फासफोरिक एसिड भी उपकारी है), मूर्च्छा, चहरे पर मुर्दापन और रक्तशून्य, रक्तस्रावके कारण लपकन और सिर दर्द।

हीपर सलफर १२,३० शक्ति।—अत्यन्त सामान्य कटा घावभी पक उठे, गण्डमाला दूषित मनुष्यके लिये उपकारी है।

घाव से बहुत सहजमें रक्तस्राव हो—एकोनाईट, आर्निका, चायना, फासफोरस।

घावमें बहुत मवाद पैदा होनेपर—चायना, मार्क्युरियस,

पलसाटिला, सलफर, हीपर सलफर।

सड़ाहुआ घाव—आर्सेनिक, चायना, लैकेसिस, साईलेशिया, कार्बं बज।

गांठका घाव—कोनियम, आयोडियम, फासफोरस, हीपर-सलफर, मार्कुरियस।

औषध प्रयोग।—जब एकोनाईट, आर्निका वा चायनाकी तरह कोई औषध प्रयोग करनेकी आवश्यकता होतो आधे घंटे वा एक घंटेके अन्तरसे देनी चाहिये। और और औषधोंका दिनमें २ । ३ बार सेवन करना यथष्ट है।

मोच।

असावधानीसे पैर पड़नेपर अथवा अचानक कोई चीज उठानेसे हाथ पैरोंमें मोच आजाती है। इससे मोच आनेके स्थानमें अत्यन्त दर्द होता है और कभी कभी सूजनभी बहुत आजाती है।

चिकित्सा।——जबतक सूजन और दर्द कम नहो तबतक गरम पानीमें डुबा रखना चाहिये अथवा गरम जलसे सेकना चाहिये। पानी ठंडा होजाने पर उसमें और भी गरम पानी मिलाते रहना चाहिये। जिस स्थानमें दर्दहो उसको बिलकुल स्थिर रखना चाहिये, उपरान्त आर्निका, एकोनाईट, रस्टक्स, रुटा वा हाईपेरीकम आदि औषधोंमें से लक्षणोंके अनुसार किसीकाभी लोशन बनाकर

कपडेमें भिगोकर दर्दके स्थानपर लगाना चाहिये। साथही आर्निका वा रसटक्स दवाकोभी देनी चाहिये। जैसे जैसे दर्द कमहोता आवे थोडी थोडी हाथपैरोंको हिलानेकीभी चेष्टा करनी चाहिये। जबतक दर्द बिलकुल आराम नहो हाथसे काम और पैरसे चलना निषिद्ध है। दर्द बिलकुल अच्छा नहो और थोडा थोडा रहजाय तभीसे चलना फिरना शुरू करदिया जाय अथवा काम शुरू करदिया जाय तो दर्द अच्छा नहोकर वातके समान रहजाता है।

आर्निका—भीतर चोट।

एकोनाइट—गरमी, सुर्खी, सूजन, साथही ज्वर, प्यास, बेचैनी इत्यादि।

रसटक्स—मोच आजाना, साथही सूजन और अत्यन्त दर्द, विश्राम करनेमे दर्द बढना और सर्दीमे कम होना। भारी चीज उठाकर पीठसे जोर लगानेसे मोच-आजानेपर रसटक्स उपकारी है।

हाईपेरीकम—रसटक्सके समान किन्तु जब सब स्नायुओं पर असर हो तब यह विशेष उपकारी है।

यदि रोग पुराना होजावे तो नीचे लिखी औषधोंकी आवश्यकता होतीहै—कैलकेरिया कार्ब अथवा फासफोरस (जोडों की कमजोरी), ब्रायोनिया (हिलनेमे दर्द बढना), आयोडियम (जोडोमें रस एकत्रित होना)।

भीतर चोट।

किसी भीतरी चीजमे ऐसी चोट लगे जिससे बाहरी

न फटे उसको भितर चोट कहते हैं। थोड़ी चोट लगनेसे उस स्थान में रक्त जम जाताहै और काला पड़जाता है किन्तु यदि अधिक चोट हो और चमड़ीके नीचे गहरी चोट बैठे तो प्राय: वह स्थान पक जाता है।

चिकित्सा।—९ भाग पानिमें १ भाग टिञ्चर आर्निका मिलाकर उसमें कपड़ा भिगोकर चोटके स्थानपर सर्वदा ढके रखना चाहिये। यदि चोट अधिक मालुम होतो साथही आर्निका ६ वा ३० शक्ति २। ३ घंटेके अन्तरसे एक एक मात्रा पिलानी चाहिये। यदि हड्डी में चोट लगेतो रूटा, स्तन वा किसी गांठमें चोट लगे तो कोनियम देना चाहिये। प्रदाह होतो एकोनाईट। पकनेकी आशङ्का होतो ३। ४ घंटे के अन्तरसे एक एक मात्रा हीपर सलफर ६ वा ३० देना चाहिये। किसी किसी जगह दर्दके स्थानपर पुल्टिस लगाना आवश्यक होताहै। अबतक दर्द और सूजन रहे तबतक इस स्थानको स्थिर रखना आवश्यक है।

—०—

मस्तकमें चोट।

गिरनेसे अथवा मस्तकमें चोट लगनेसे मस्तककी क्रियामें किसी प्रकार गड़बड़ उत्पन्न होनेसे उसको मस्तिष्काघात कहते हैं। सामान्य चोट लगनेसे मस्तिष्क स्तम्भित और अधिक चोट लगनेसे प्राण नाश हो सकता है।

मस्तिष्कमें जोरकी चोट लगनेसे तीन प्रकारकी अवस्था होते हुए देखी जाती है—। प्रथम, हाथ पैर ठंडे, शरीर

रक्तशून्य, नाडी और श्वासक्रिया दुर्बल, आंखकी पुतली फैली हुई । यह अवस्था एक घंटेसे लेकर ३ घंटे तक रह सकती है । द्वितीय, रोगी बेचैन, कराहना, करवटें बदलना, और उलटी करना । आवाज देनेसे रोगी जागे और उत्तर दे। यह अवस्था कुछ घंटे तक रहसकती है । तृतीय, निद्रितावस्था यथा नाडी पूर्ण और अनियमित, शरीर गरम, चहरा लाल, आंखकी पुतली सुकडी हुई, रोगीको गहरी नींद । इस निद्रासे वह सहजमें न जगाया जासके । यह अवस्था एक दिनसे लेकर एक सप्ताह तक रहसकती है ।

चिकित्सा ।—यदि मकानसे कुछ दूर यह दुर्घटना होतो रोगीको घरजाने में जितनी होसके सावधानी कीजाय कि हिल न सके और स्थिर भावसे लाया जाय । पालकी में अथवा हाथोंमें आहिस्ते आहिस्ते लाना चाहिये । रोगी अच्छी तरह आरामके साथ मस्तक नीचाकर सुलाना चाहिये और शरीर में पूरी गर्मी लानेके लिये कम्बल आदि उढाकर उसको पूरा विश्राम करने दे । किसी प्रकारका प्रश्न, शब्द, उजाले आदि से उसको तग न करना चाहिये । इस बातका पूरा प्रबन्ध आवश्यकीय है। रोगीके विश्राम में किसी प्रकार बाधा न पडनी चाहिये । जब प्रतिक्रिया आरम्भ हो उस समय रोगीका मस्तक और दोनों कन्धे ऊंचे करदेने चाहिये । मस्तकपर ठंडा पानी लगाना चाहिये । मकान ऐसाहो जिसमें मनुष्योंकी भीड भाड नहो और तरीहा । २ । ३ सप्ताहतक विशेष सावधानीकी आवश्यकता है । सब प्रकार मानसिक श्रम और मानसिक आवेग बिलकुल वर्जनीय है।

चोट लगतेही आर्निका सेवन कराना चाहिये । यदि होश आनेके साथही ज्वर उपस्थितहो तो आर्निकाके साथ एकोनाईट पर्यायक्रमसे देना चाहिये। यदि विकारक लक्षण उपस्थितहो यथा सिरमें दर्द, मुखकी सुर्खी आदि दीखपडे तो एकोनाईट, और बेलेडोना पर्यायक्रमसे देना पडताहै। घर्राटेके साथ सांस आना, कोष्ठबद्ध आदि होतो ओपियम। यदि रोगी थकना होतो हायोसायमस। आवश्यकता के अनुसार १,२ वा ३ घंटेके अन्तरसे औषध देनी चाहिये।

हड्डी टूटना।

लक्षण।—गिरजानेसे हाथ पैरोंमें जोरसे चोट लगने के कारण हड्डी टूट सकती है। हड्डी टूट जानेपर वह अङ्ग टेढा पडजाता है अथवा छोटा होजाता है। यदि ऊपरके हिस्सेको एक हाथसे पकडकर और नीचेके हिस्सेको दूसरे हाथसे पकडकर हिलाया जायतो दोनों हिस्से अलग अलग अच्छी तरह हिल सकते हैं। इस तरह हिलानेसे टूटे हुए स्थानकी दोनों हड्डियोंके रगड जानेसे एक प्रकारका शब्द होता है। इसी शब्दको सुनकर अच्छी तरह समझा जा सकता है कि हड्डी टूट गयी है। इसके सिवाय उस स्थानमें दर्द होता है और शक्ति नहीं रहती।

चिकित्सा।—हड्डी टूटतेही उस स्थानको अच्छी तरह दोनों हाथोंसे जोरसे पकडकर टूटे हुए दोनों हिस्सों को एक दूसरेके साथ मिलाकर टूटे हुए स्थानके और पतले और कडे लकडी के टुकडोंसे ...

बांध देना चाहिये । (इन लकडीके टुकडोंको स्प्लिंट कहते हैं) । लकडीके टुकडोंसे बांधनेके उपरान्त इस बातका बन्दोबस्त करदेना चाहिये कि टूटा हुआ स्थान हिलने न पावे । यदि हाथ टूट गया होतो ऊपर लिखे हुए तरीकेसे बांध देनेके उपरान्त गलेमें एक कपडा बांधकर हाथ लटका देना पडता है । यदि पैर टूट गया होतो छोटी छडी अथवा छातेसे यदि अच्छी लकडी न मिले तो) टूटे हुए स्थानको अच्छी तरह ठीक बैठाकर तीन चार जगह तिनचार रुमालोंसे पैरको जोरसे बांध देना चाहिये। बांधते समय सावधानीसे बांधना उचित है, क्योंकि यदि बहुत जोरसे बांधा जायगा तो उस स्थानके रक्त सञ्चालनमें बाधा पडेगी । अधिक जोरसे बांधनेपर रक्त न चल सकनेके कारण फूल उठताहै और अत्यन्त कष्ट मालुम होताहै । जबतक दोनों टूटे हिस्से अच्छी तरहसे न जुड जाय तबतक हाथ पैर आदि चलाना अथवा लकडी खोलना न चाहिये ।

सेवन करनेकी औषधोंमें सिमफाईटम बहुत उत्तम औषध है । दिनमें २ । ३ बार सेवन करनी चाहिये । यदि प्रदाह होतो एकोनाईट वा बेलेडोना । हड्डीके भीतर तेज दर्द होतो मेजेरियम वा पेसिड फासफोरिक । हड्डी जुडनेमें देर होतो कलकेरिया और साइलेशिया उत्तम औषध हैं ।

कीडेका काटना और डंक चुभना ।

चिकित्सा—डंक चुभनेपर मार उस जगहीके

भीतर टूटकर रहजाता है अतएव पहले उसको निकाल डालना चाहिये । सुई, अथवा चाबीके छेदसे दाबनेपर जब डंक ऊपरकी ओर निकल आवे तब उसको नाखुन से बाहर निकाल डालना चाहिये । डंक चुभने के स्थान पर चुनेका पानी, कपूरका अर्क अथवा प्याजका रस लगानेसे जलन कम होजाती है । आर्निका या लीडम पैलसटार लोशन तयारकर उसपर लगाना चाहिये ।

कान और आंखमें कीडे आदिका प्रवेश ।

कभी कभी कान आंख आदि स्थानोंमें कीडे आदि घुस कर अत्यन्त कष्ट देते हैं । आंखके भीतर किरकिटी, कीडा आदि अथवा कोई छोटा बालके टुकडा पडनेसे रोगीको बैठाकर और उसके पीछे खडे होकर आंखके ऊपर एक पेन्सिल रखकर आंखके किनारेके बालोंको पकडकर आहिस्ते आहिस्ते पलकको ऊपरकी ओर लौट देना चाहिय । आंखके नीचेके पलकमें यदि गिरा होतो सहजही निकाला जासकता है । आंखमें, यदि चुनेकी फास गिरी होतो पानीके छींटे देने न चाहियें । आंखसे गिरी हुई चीज निकल जानेपर रोगीको आधे आधे घंटेके अन्तरसे ऐकोनाईट सेवन कराना चाहिये और कैलेन्डुला लोशन में कपडा भिगोकर आंखके ऊपर रखना चाहिये । यदि आंखमें कोई कांच गिरजावे तो हाथसे रगडना उचित नहीं है ।

कानके भीतर कीडा आदि प्रवेश करेतो गरम तेल डालने से मरजाता है । गरम तेल डालनेसे पहले थोडा

तेल उंगलीमें लगाकर कानसे छुला देखना चाहिये कि सहन होता है अथवा नहीं। यदि और कोई चीज जैसे किसी फलका बीज, कौडी, छोटी पेन्सिल आदि कानमें गिरजावे तो बडी सावधानीसे उसको चींमटीसे पकडकर निकाल डालनी चाहिये।

चोटसे शरीर नीला पडना।

चिकित्सा।—२।४ मात्रा आर्निका सेवन करनेके लिये देनी चाहिये। चोट लगतेही यदि आर्निका लोशन प्रयोग किया जाय तो नतो दर्द होने पाता है न नीले पडताहैं। यदि नीले पडभी जाय तो हैमोमेलिस अच्छी औषध है।

विष भक्षण।

जहर अथवा कोई जहरीली चीज खाई है यह जानतेही तुरन्त सुचिकित्साका प्रबन्ध करना चाहिये। एक पलके बराबर समयभी नष्ट करना अन्याय है, क्योंकि देर करनेसे रोगीका जीवन सशयमें पड़जाता है।

यदि दो प्रकारके विषाक्त पदार्थ खाये होंतो दो जुदे जुदे उपायोंका अवलम्बन करना पडता है। जहरीली चीज खायी है यह जानतेही बहुतेरे मनुष्य उलटी कराने वाली चीजें पिलाकर उल्टी कराते हैं। किसी किसी जहरके खानेसे उल्टी कराना उचित है और किसी किसी

पर बिलकुलही उचित नहीं है। इस बातको अच्छीतरह जाननेकी आवश्यकता है।

१। जब मुह, होंठ आदि स्थानोंमें किसी प्रकारके घाव वा जलनके लक्षण नहीं तब उल्टी करानेकी औषध देनी चाहिये।

२। और जब ऊपर लिखे हुए लक्षण सब वर्तमान हों तब उल्टी कराने वाली दवा बिलकुल न देनी चाहिये। ऐसे अवसर पर चूनेका पानी, अथवा खड़िया या मैगनशिया घोलकर पिलाना चाहिये। यदि उसी समय ये सब चीजें न मिलें तो राख, भीतोंकी धूल, अथवा साबुन पानीमें घोलकर पिलाना चाहिये।

हमारे देशमें अफीम खानेके कारण दुर्दशाग्रस्त अवस्था प्राय देखनेमें आती है। किसीने अफीम खायी है यह बात मालुम होनेही इस बातका पूरा बन्दोबस्त रखना चाहिये कि वह सो न जावे। अफीम खाने वाला यदि एक बार सो जावेगा तो फिर उसको किसी प्रकार जगाया न जाया सकेगा—वह निश्चयही सदा सर्वदाके लिये सो जावगा। अतएव उसको जगाये रखनेके लिये दो आदमी पकड़कर खड़ा करदें और एक सिरेसे लेकर दूसरे सिरतक टहलावें अथवा दौड़ावें। इस प्रकार करते करते जब उसकी निद्रा लुप्त दूरहो तब उसको बैठाना उचित है। पहले उलटी कराने वाली औषध खिलाकर अथवा स्टमक पम्पद्वारा पाकस्थलीसे अफीम निकाल डालनेकी चेष्टा करनी पड़ती है। तूतिया, नमक, अथवा राई सरसों [मस्टाड] गरम पानीमें घोलकर पिला देनेसे उसी समय उल्टी होती है।

शक्तिमर्दा प्रतिषेधक औषध टिंचर बेलडोना प्रति १५। २० मिनटके अन्तरसे १० बूंदके हिसाबसे देनी चाहिये। गहरी काफी [कहवा] भी उपकारी है।

इतिश्री

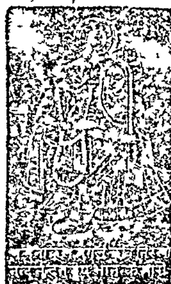
सम्पूर्णम्।



अगरचन्द भैरोदान सेठिया ।

जैन [illegible] ।

बीकानेर (राजपूताना)



हिन्दीभाषा की होमियोपैथिक पुस्तकें स्वर्गीय डाक्टर जगदीशचन्द्र लाहिड़ी की बनाई हुई

गृहचिकित्सा

वङ्गभाषा के संस्करण गृहचिकित्सा के अनुसार द्वितीय बार मुद्रित।

मूल्य ॥=) डाक महसूल साथ वी० पी० = आना।

प्राय २३० पृष्ठों में पूर्ण। इसका कागज और टाईप अति उत्तम है। इस पुस्तक में साधारण रोगों की होमियोपैथिक चिकित्सा, अत्यन्त सरल रीति से लिखी गई है। प्रत्येक रोग की चिकित्सा के साथ उस के दूर करने के सहकारी उपाय लिखे गये हैं। यह पुस्तक हरेक गृहस्थी के काम में आसके इस लिये ऐसी कोई भी बात इस में लिखने से बाकी नहीं छोड़ी गई। बालकों और स्त्रियों की चिकित्सा भी इस में लिखी गई है। कुछ थोड़ी पढ़ी हुई स्त्रियां भी इस पुस्तक की सहायता से अपने बच्चों के सामान्य रोगों का इलाज आप कर सकती हैं। हमारे दरिद्र भारतवासियों के पञ्चांग के समान यह पुस्तक अवश्य अपने घर में रखनी चाहिये। भारतमित्र, वेंकटेश्वर आदि प्रधान प्रधान समाचार पत्रों ने इस की प्रशंसा मुक्तकण्ठ से की है।

सर्व साधारण लोगों के सुभीते के लिये और विदेशीय ग्राहक महाशयों के लिये बांकीपुर पटना और मथुरा ब्रांच के औषधालय में हामियोपैथिक औषधियों के सिवाय एलोपैथिक औषधि भी दुसरे स्थान में रखकर विक्रय करते है। सम्पूर्ण औषधें विलायत को सीधा ओर्डर भेजकर मगाते है इस लिये और औषधालयों की अपेक्षा उत्तम औषध और बहुत कम नफे पर विक्रय करते हैं। सिवाय हामियोपैथिक, एलोपैथिक औषधों के और भी उपयोगी सामान जैसे थर्मामेटर [बुखार जानने का यन्त्र] पिचकारी नश्तर आदि डाक्टरी चिकित्सा करने के औजार इत्यादि सामान भी मौजूद रहते है।

साधारण औषधें की सूची

	१ ड्राम	२ ड्राम	४ ड्राम	१ औंस
अभिश्रअर्क [मदरटिंचर]	|=)	||=)	१)	१||)
१ नम्बर से १२ तक	|)	|=)	||=)	१)
३०	|=)	||)	|||)	१|)
२००	१)	१||)	२||)	४)
५००	२)	३)	४)	५)
१०००	३)	४)	५)	६)

ट्राइट्युरेशन या चूर्ण

१ दसमिकसे ६ दशमिक तक	|||)	|||)	१|)	२)
२४X	|||)	१)	१||)	२||)
३०X	१)	१||)	२||)	४)
टिंचर ट्राइट्युरेशन	|=)	||)	|||)	१|)